थामस जेफर्सन और अमरीकी प्रजातंत्र

(Thomas Jefferson and American Democracy)
By Max Beloff

मूल लेखक

मैक्स बेलोफ

पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड

बम्बई १

मूल्य : ६५ नये पैसे

प्रथम अग्रेजी सस्करण ग्रेट ब्रिटेन मे इग्लिश युनिवर्सिटीज प्रेस लि०, लदन, के लिए हेजेल, वाट्सन एड विने लि०, ऐलसबरी और लदन, द्वारा १९४८ मे मुद्रित ।

सर्वाधिकार सुरक्षित ।

मूल ग्रथ का प्रथम हिन्दी अनुवाद ।

पुनर्मुद्रण के समस्त अधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित ।

प्रथम हिन्दी सस्करण—१९६०

प्रकाशक जी० एल० मीरचदानी, पर्ल पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड,
२४९, डा० दादाभाई नवरोजी रोड,
वम्बई १

मुद्रक अनत जे० शाह,
लिपिका प्रेस, कुर्ला रोड, अधेरी ।

प्रस्तावना

१७०

इस वर्ष के वसन्त मे मेरी प्रथम अमरीकी यात्रा के पूर्व वर्तमान पुस्तक प्रूफ सशोधन की स्थिति मे पहुँच गयी थी। मेरी इस यात्रा से मेरा पूर्व विश्वास और भी दृढ हो गया कि अमरीकी इतिहास-लेखन-क्षेत्र मे प्रवेश के लिए किसी गैर-अमरीकी का प्रयास करना एक प्रकार से धृष्ठता ही होगी। जहाँ तक जेफर्सन के अध्ययन का सम्वन्ध है, यह निस्सन्देह सत्य है, क्योकि अमरीकी इतिहास का सम्भवत ऐसा कोई युग नही है, जिसमे इससे अधिक पाण्डित्य दिखाया गया है अथवा इससे अधिक आशाजनक परिणाम निकले है। इस छोटी सी पुस्तक मे पाठको के लाभार्थ जेफर्सन के सिद्धान्तो एव विचारधारा की स्थिति का कुछ आभास देने का प्रयास मात्र किया गया है। मै तो केवल अमरीका के अपने उन मित्रो की कृपा की ही अपेक्षा कर सकता हूँ, जिनके हाथो मे यह पुस्तक जा सकती है और आशा करता हूँ कि वे इसे अमरीका के अतीत मे ब्रिटेन की वढती हुई अभिरुचि का प्रतीक मात्र समझेगे—ऐसी रुचि जिसे, दोनो देशो के बीच वढती हुई पारस्परिकता मे अपने सर्वोत्तम योगदान द्वारा प्रोत्साहन देने का प्रयास करना ब्रिटिश विश्वविद्यालयो मे इस क्षेत्र के क्रियाशील लोगो का अधिकार होगा। हमारे अमरीकी मित्रो के सहयोग पर ही हमारे प्रयासो की सफलता अवलम्बित है। मैं सप्रमाण कह सकता हूँ कि यह ऐसा सहयोग है, जिस पर ब्रिटिश विद्वान विश्वासपूर्वक भरोसा कर सकते है।

दी यूनिवर्सिटी आफ
मिन्नेसोटा,
मिन्नियापोलिस
जून-अगस्त—१९४८

मैक्स बेलोफ

विषय-सूची

—०—

भूमिका

वर्तमान ग्रन्थ से सम्बद्ध एक दूसरी पुस्तक की समीक्षा मे सर अर्नेस्ट बार्कर ने लिखा, "ऐसे महापुरुषो की संख्या नगण्य है, जिन्हे अपने युग के सार स्वरूप मे गिना जा सकता है अथवा युग के साथ उनकी इतनी घनिष्ठता स्थापित हो गयी है कि उनकी चर्चा करते समय उनके युग का विश्लेषण भी करना पडे।" निस्सन्देह इस दायरे मे गिने-चुने लोग ही आते हैं, किन्तु यह कहना निश्चय ही अतिशयोक्ति होगी कि ऐसा एक भी ऐतिहासिक पुरुष इस कोटि मे आता ही नही। थामस जेफर्सन का जीवन-चरित्र और अमरीकी विचारधारा को समझने मे उसका महत्व, ऐसी धारणा के प्रतिकूल कम से कम एक विश्वसनीय उदाहरण है। यदि ऐसे ही एक दूसरे महापुरुष लिंकन के इस कथन को स्वीकार किया जाय कि अमरीकी राष्ट्र का जन्म स्वाधीनता के लिए हुआ और उसका उत्सर्ग इसी मे निहित है कि सभी मनुष्य समान रचे गये है तो अमरीकी लोकशाही को समझने के लिए ऐसे महापुरुष की जीवनी से बढ कर और कौनसी भूमिका हो सकती है, जिसने स्वय इस 'स्वाधीन राष्ट्र' के जन्म की घोषणा की और संविधान रचा। परन्तु केवल 'स्वाधीनता की घोषणा' के रचयिता के तौर पर ही थामस जेफर्सन को हम उसके युग के सार के रूप मे ग्रहण नही कर सकते। उस दस्तावेज पर हस्ताक्षर किये जाने के बाद भी जेफर्सन आगामी पचास वर्षो तक जीवित रहे जिनमे तीस से अधिक वर्ष उनके सक्रिय जनसेवा का काल रहा, जिसमे न तो उनकी राजनीतिक चेतना और न बौद्धिक प्रतिभा ही धूमिल हुई।

अभी हाल ही प्रिंसटन यूनिवर्सिटी के तत्वावधान मे प्रारम्भ किया गया उनके पत्रव्यवहार का अन्तिम संस्करण पूरा हो जायगा, तब सर्वप्रथम आधुनिक इतिहास के इस महान् निर्माणकारी युग पर सांगोपांग एक मात्र तत्कालीन विवेचना का प्राप्त होना सम्भव है। विचारधारा मे अन्य विशेषताओ की तरह पृथक्तावाद के जनक के अलावा जेफर्सन कुछ और भी थे। उनका यह पृथक्तावाद इस कारण उत्पन्न नही हुआ था कि वे बाहरी विश्व से अपरिचित थे। राजनीतिक एवं बौद्धिक, दोनो ही पक्षो मे जेफर्सन के क्रिया-कलापो ने अधिक अन्तर्राष्ट्रीय इतिहास के निर्माण मे महत्वपूर्ण योग दिया।

जो लोग स्वय इतिहास के व्यावहारिक मूल्य मे विश्वास रखते है, उनके लिए अतलान्तक इतिहास का अध्ययन मुख्य विपय है अथवा होना ही चाहिए।

स्वय अमरीकी राष्ट्र के दृष्टिकोण से तथा समस्त पश्चिमी जगत् के दृष्टिकोण से भी जेफर्सन के दीर्घकालिक जीवन के अन्तर्गत उस युग का समावेश हो जाता है, जो महान परिवर्तनो की दृष्टि से वास्तव मे एक असाधारण युग था। कुछ लोगो ने जेफर्सन की असगतियो एव विरोधाभासो की ओर सकेत कर उनकी सामाजिक एव राजनीतिक विचारधाराओ के महत्व को कम आँकने का प्रयास किया है। किन्तु जिस व्यक्ति ने अमरीकी और फ्रासीसी राज्य क्रान्तियो को देखा, जिसने नेपोलियन और 'पवित्र गठवन्धन' का युग देखा, जिसने पुरानी दुनिया मे औद्योगिक क्रान्ति के प्रारम्भिक दिन तथा नये विश्व के आन्तरिक विस्तार का श्रीगणेश देखा, और फिर भी जो अपनी पूर्व धारणाओ मे पूर्ण और असदिग्ध विश्वास रखता रहा, उसने सीखने और भुला देने की अपनी असमर्थता मे स्वय 'वोरवनो' को भी मात कर दिया। जेफर्सन की सामाजिक और राजनीतिक विचारधारा को, जो उनके प्रारम्भिक जीवन मे ही दृढ हो गयी थी व्यावहारिकता की कसौटी पर कसा गया और जहाँ कही वह खरी नही उतरी उसमे सशोधन किया गया। वौद्धिक सतर्कता के साथ-साथ यह व्यावहारिक सद्भावना ही जीवनी लेखको के जेफर्सन के प्रति आकर्षित होने का वास्तविक रहस्य है और यही उनके जीवनवृत्तान्त को उनके युग की समस्याओ के मनन के लिए एक अनुपम और उपयुक्त भूमिका बना देती है।

चूँकि जीवनी-लेखक स्वय अपने को तथा अपने पाठको को इन परिवर्तनो की ओर दृष्टिपात से वचित नही कर सकता है इसीलिए जेफर्सन के जीवनकाल मे घटित कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तनो पर विचार करना उपयुक्त ही होगा। थामस जेफर्सन का जन्म १७४३ मे हुआ था। इसी वर्ष उनके वादशाह जार्ज द्वितीय ने मेरिया थेरेसा की ओर से फ्रासीसी सेना के विरुद्ध युद्ध मे कार्टरेट की प्रवल सेना का नेतृत्व किया था। इसमे इगलिश, हनोवारियन और हेसियन सेनाए सम्मिलित थी। फ्रासीसी सेना ने सम्राट चार्ल्स सप्तम का समर्थन किया था। व्रिटिश इतिहास मे यह युद्ध 'आस्ट्रियन उत्तराधिकार का युद्ध' और अमरीकी इतिहास मे 'वादशाह जार्ज का युद्ध' के नाम से प्रसिद्ध है, जैसे इस युद्ध का अमरीकी राष्ट्र के निर्माण से सम्वध मात्र भी न हो। यह युद्ध अमरीका और यूरोप दोनो ही जगह हुआ क्योकि जेफर्सन के जन्म के दिन अमरीकी द्वीप और आसपास के दूसरे द्वीप यूरोप के तीन प्रमुख साम्राज्य और दो या

तीन छोटे-छोटे राज्यो के अग थे।

अमरीकी मुख्य भूमि पर इनसे पृथक तेरह ब्रिटिश उपनिवेश थे। उन्हीं मे से एक उपनिवेश वर्जीनिया जेफर्सन की जन्मभूमि भी था। इन उपनिवेशो की कुल आवादी लगभग साढे बारह लाख थी। उन्ही से लगा न्यू फ्रास (कनाडा) का फ्रासीसी उपनिवेश था, जिसकी आवादी लगभग ५४ हजार थी। इससे भी कम आबादी लुइसियाना के फ्रासीसी उपनिवेश की थी, जो कनाडा और न्यू आर्लियन्स के बीच सम्बन्ध जोडता था और दक्षिण की ओर फ्लोरिडा के स्पेनिश उपनिवेश से सम्बन्ध स्थापित करता था। फ्लोरिडा उस साम्राज्य की चौकी के रूप मे था, जो महाद्वीप के समूचे मध्य और दक्षिणी भागो मे फैला हुआ था, बीच मे केवल पुर्तगाली ब्राजील और एक-दो दूसरे छोटे-छोटे द्वीप पडते थे।

१८२६ मे जेफर्सन का देहान्त हुआ। उस समय इगलैण्ड के राजसिहासन पर आसीन जार्ज द्वितीय के प्रपौत्र के प्रति उनकी राजभक्ति समाप्त हो चुकी थी और न उस सप्तवर्षीया राजकुमारी विक्टोरिया के प्रति भी उस प्रदेश के लोगो की राजभक्ति रह गयी थी, जिसके शासनकाल मे भूमण्डल मे ब्रिटिश साम्राज्य का और भी विस्तार हुआ था। कनाडा अब उसी साम्राज्य का अग था, किन्तु लुइसियाना और फ्लोरिडा अमरीकी गणतत्र, सयुक्तराज्य अमरीका के अग बन चुके थे। जबकि पहले इन तेरह उपनिवेशो को आपस मे जोडनेवाली कडी केवल मात्र दूरवर्ती साम्राज्य के प्रति उनकी समान राजभक्ति थी, परन्तु अब एक सघीय गणराज्य ऐसे चौबीस राज्यो को एक सूत्र मे पिरोये हुए था। अब इस बस्ती की सीमा बढते-बढते उन पहाडो के पार तक चली गयी थी, जो अटलाटिक के समानान्तर फैले हुए थे और उधर मिस्सीसिपी तथा विशाल झीलो के आगे तक चली गयी थी। आबादी अब साढे बारह लाख से बढकर लगभग एक करोड दस लाख तक पहुँच गयी थी।

दक्षिण के राजनीतिक मानचित्र मे भी भारी परिवर्तन हुए। स्पेन और पुर्तगाल के साम्राज्यो का पतन हो गया। उनके स्थान पर अनेक स्वतत्र किन्तु अस्थिर प्रजातन्त्रो की तथा ब्राजील के नये साम्राज्य की स्थापना हुई। अपनी मृत्यु के तीन वर्ष पूर्व जेफर्सन ने उस गम्भीर मत्रणा मे भाग लिया था, जिसके परिणामस्वरूप मनरो-सिद्धान्त की घोषणा हुई और जिसके द्वारा अमरीका इस बात के लिए वचनबद्ध हुआ कि वह दक्षिणी अमरीका को अपने प्रभाव मे लाने वाले किसी भी साम्राज्यवादी शक्ति के प्रयास का विरोध करेगा।

इसी के आधार पर रूस को भी चेतावनी दी गयी कि अलास्का उपनिवेश के दक्षिण की ओर और अधिक रूसी विस्तार को अमैत्रीपूर्ण कार्य समझा जायगा। अलास्का मे रूस के अधिक विस्तार का अर्थ यह होता कि अमरीका का आवद्ध सागर वाले राष्ट्र के निर्माण का स्वप्न अधूरा रह जाता। १९ वी शताब्दी में अमरीकी इतिहास का जो स्वरूप था, वह इस तरह प्रकट हो गया।

जेफर्सन के जीवनकाल मे यूरोप मे जो परिवर्तन हुए वे इतने स्पष्ट परिलक्षित नही होते। नेपोलियन-युग के बाद बारबोन, हैब्सबर्ग, रोमनोव और होहेनजोलन राजघरानो की प्रतिद्वन्द्विताएँ यूरोप की राजनीतिक अस्थिरता को समाप्त करने मे महत्वपूर्ण साबित होने लगी थीं, परन्तु यह स्थिरता केवल ऊपरी दिखावा-मात्र थी। परन्तु फ्रासीसी राज्यक्रान्ति का भूत अभी दूर तक छाया हुआ था। इन राजघरानो के विवादो का उतना महत्त्व नही था, महत्व इन राजघरानो के उन गठबन्धनो का था जो लोकतत्र, राष्ट्रवाद और समाजवाद की विश्रखल शक्तियो के विरुद्ध राजवशो मे एकता स्थापित करते थे। निकोलस प्रथम और मेटरनिक के समय का यूरोप पन्द्रहवे लुई और मेरिया थेरेसा के यूरोप से भिन्न था। इग्लैण्ड भी, जिसने क्रान्ति का प्रतिकार किया और अपनी पार्लियामेट मे सुधार भी नही किया, जार्ज द्वितीय के इग्लैण्ड से भिन्न था। केनिंग की यह पाखण्डभरी घोषणा जो उसने जेफर्सन की मृत्यु के ९ महीने बाद की कि पुरानी दुनिया के सन्तुलन को ठीक रखने के लिए नयी दुनिया को स्वीकार किया गया, कार्टेरेट जैसी नही थी।

इन राजनीतिक परिवर्तनो के साथ साथ यात्रिक प्रगति इतनी तेजी से हुई, जितनी मानव-इतिहास मे पहले कभी नही हुई थी। सत्रहवी शताब्दी मे विज्ञान के महत्वपूर्ण सिद्धान्तो की घोषणा के बावजूद, जहाँ तक प्राकृतिक शक्तियो पर मनुष्य के नियत्रण का विषय है, जेफर्सन का युग अधिक विकसित नही था। १७४३ मे जब जेफर्सन का जन्म हुआ तब न्यूकोमेन का भाप-इजिन ही औद्योगिक क्राति एव भाप-युग का श्रीगणेश मात्र था। उस समय जेम्स वाट की अवस्था सात वर्ष की थी और रिचार्ड आर्क राइट की दस वर्ष। बेंजामिन फ्रैंकलिन ने अभी बिजली का प्रयोग आरम्भ भी नही किया था। जेफर्सन की मृत्यु के कुछ महीनो पहले ही जबकि अटलाटिक और विशाल झीलो को मिलाने वाली एरी नहर का औपचारिक रूप से उद्घाटन हुआ, अमरीका के आन्तरिक जलमार्गो पर भाप-चालित नौकाएं ...र पर चलती थीं और इसके सात वर्ष बाद अटलाटिक को पार करने-

वाले प्रथम प्रयोगात्मक जलपोत का निर्माण हुआ। १८२६ मे ही अमरीका मे पहली बार सफल रूप से रेल इजिन का निर्माण हुआ। यद्यपि बिजली का उपयोग अभी आरम्भ नही हुआ था, तथापि गैस-बत्ती का प्रयोग आमतौर पर होने लगा था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि एली व्हिटने ने परस्पर बदलने योग्य पुर्जो द्वारा उत्पादन-प्रणाली का प्रदर्शन करके उच्च स्तरीय सामूहिक उत्पादन की सम्भावनाओ को प्रकट करके टेकनिकल प्रगति मे अमरीका के अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान का श्रीगणेश किया था और जेफर्सन की लोकतत्र सम्बधी महत्वपूर्ण मान्यताओ को अत्यन्त प्रभावशाली चुनौती दी गयी। स्वय जेफर्सन के दक्षिण मे, जहा १८ वी शताब्दि मे तम्बाकू की ही प्रधानता थी, वहा रूई की प्रधानता हो गयी और इस तरह दक्षिणी बगान तथा लकाशायर की सूती मिलो के बीच तथा निग्रो गुलाम और इग्लिश सूती यत्रचालक के बीच जो सम्बन्ध स्थापित हो गया था, उसीसे १९ वी शताब्दि के सामाजिक इतिहास का स्वरूप विकसित हो चला था।

भौतिक विज्ञान मे प्रगति के साथ-साथ अन्य विचारधाराओ मे भी कम महत्वपूर्ण विकास नही हो रहे थे। जेफर्सन की युवावस्था मे १८ वी शताब्दि की फ्रासीसी दार्शनिक एव सामाजिक विचारधाराएँ चरमसीमा पर पहुच चुकी थी। जब जेफर्सन ५ वर्ष के थे, तब माण्टेस्क्यू ने 'एस्पिरिट डेस लायस' प्रकाशित किया, जब वे ७ वर्ष के थे, तो 'विश्वकोश' प्रकाशित हो चुका था, जब १५ वर्ष के थे तो क्रेसने का 'टैब्ले एकोनामिक', १९ वर्ष के थे तो 'एमिले' और 'कण्ट्राट सोशल', २१ वर्ष के थे तो वोल्टेयर का 'डिक्शनेअर फिलासाफिक' प्रकाशित हुआ। दर्शनशास्त्र मे यह काल डेविड ह्यूम का युग था। यह तर्क और शकाओ का युग था।

१८२६ मे रोमाण्टिक एव ऐतिहासिक प्रवृत्ति का युग आरम्भ हो गया था। दार्शनिक जगत मे हिगल का प्रभुत्व था। जेफर्सन के युवाकाल मे समाज का अध्ययन इकाई के रूप मे होता था, जबकि अब उसके विभिन्न अगोका पृथक पृथक अध्ययन जारी हो चला था। एडम स्मिथ जे बी से, माल्थस और रिकार्डो ने आधुनिक अर्थतत्र की नीव डाल दी थी। जेफर्सन ने इनके तर्को को 'गदला' बताया था। लियोपोल्ड वान राक ने अपना प्रथम ग्रन्थ प्रकाशित किया था और वैज्ञानिक इतिहास के युग का सूत्रपात हो चुका था। नये युग मे बौद्धिक समन्वय का जो प्रयास चल रहा था, वह १८ वी शताब्दि के प्रयास से बिल्कुल भिन्न था। जेफर्सन की बौद्धिक प्रतिभा से प्रभावित होने

वाला अन्तिम व्यक्ति युवक अगस्ट कोम्ते था।

जिस समय जेफर्सन युवावस्था मे पहुचे थे, उस समय उत्तरी अमरीका के रेड इडियनो से सदा सीमायुद्ध का भय वना रहता था। पोण्टियाक-विद्रोह के समय उनकी अवस्था २४ वर्ष की थी। यह रेड इडियनो का अन्तिम स्वातन्त्र्य युद्ध था। परन्तु वे उस काल तक जीवित रहे, जब रेड इडियन (सुदूर पश्चिम को छोड कर) मनोरजन के विषय वन चुके थे। जिस वर्ष जेफर्सन की मृत्यु हुई, फेनिनमोर कूपर ने 'दि लास्ट आफ दि मोहिकन्स' प्रकाशित किया। नयी दुनिया की राजनीतिक स्थिरता के साथ ही साहित्यिक मुक्ति का भी युग आरभ हो गया।

यूरोप मे जेफर्सन के मित्रो मे केवल लफायत ही एक ऐसे थे—वे उससे चौदह वर्ष छोटे थे—जो इतनी लवी अवधि के सार्वजनिक मामलो की गहरी जानकारी का दावा कर सकते थे। कुछ ऐसे वार्तालाप है, जिन्हे जानने का लोभ इतिहासकार कदाचित ही सवरण कर सके। १८२४ मे जेफर्सन और लफायत के वीच के ये वार्ताप्रसग भी ऐसे ही है। लफायत एक पखवाडे तक जेफर्सन के यहाँ ठहरे थे। किन्तु लफायत जेफर्सन से कम रोचक था, और कोई भी विश्वास कर सकता है कि उम्र मे वडे जेफर्सन ने ही लफायत को अधिक जानकारी दी।

जेफर्सन की विभिन्न रुचियो और उनके असाधारण क्षेत्र को देखते हुए मूल विषय आँखो से ओझल नही हो जाना चाहिए। ऊपर दर्शाये गये राजनीतिक व सामाजिक परिवर्तनो मे किसी मे भी जेफर्सन की अधिक रुचि नही थी। लफायत जैसे तलवार के धनी और जेफर्सन जैसे विचारसृष्टा ने पचास वर्ष पहले जिन प्रयोगात्मक सभावनाओ का श्रीगणेश किया था, उसे मूर्त रूप देने मे ही जेफर्सन अधिक सलग्न था। जबकि महाद्वीप मे आवादी वहुत कम थी और न इतना विशाल जनसमाज ही था, सीमाओ पर ईर्ष्यालु शत्रुओ का भय भी नही था, ऐसी सुविधाजनक स्थिति मे भी क्या अमरीकियो के लिए एक ऐसे समाज का निर्माण करना सम्भव न था, जिसमे 'स्वतन्त्रता की घोषणा' के महान सिद्धान्तो को मूर्त रूप दिया जा सके। राजतन्त्र, गुरुडम तथा यूरोप की धार्मिक रूढियो एव परम्पराओ से मुक्त होने के वाद क्या किसी मानवीय प्रतिभा का एकाकी प्रयास ऐसे समाज का निर्माण कर सकता है, जिसमे इतिहास मे पहले पहल जीवन, स्वतत्रता तथा सुख-समृद्धि की वाते लोगो को विना उपहास के आकृष्ट कर सके ?

निग्रो-समस्या-सम्बन्धी अपनी पुस्तक 'एन अमेरिकन डिलेमा' मे गुन्नार मीरडाल ने अमरीकी समाज के विकास को एक स्थायी लोकतान्त्रिक आदर्श और कुछ तथ्यो (जिसमे अमरीकी निग्रो की स्थिति भी एक है) के बीच बार-बार होनेवाले सघर्ष के रूप मे बताया है, जिसमे सामजस्य की स्पष्टत सम्भावना नही है। आदर्श और व्यवहार तथा सामाजिक सिद्धान्तो और सामाजिक तथ्यो के बीच इस तरह के विरोधाभासो का स्वरूप जेफर्सन की जीवनी और रचनाओ मे सर्वत्र पाया जाता है। इससे जिस तनाव की भावना का आभास मिलता है, उससे जेफर्सन को अध्ययन करने वाला अनिवार्यत यह महसूस करने लगता है कि १८ वी शताब्दि का यह महापुरुष मानो इसी युग का समकालीन था, जबकि उस काल के दूसरे लोगो के बारे मे वह यह महसूस नहीं करता है।

किन्तु यह तो चित्र का केवल एक पक्ष है। जेफर्सन के हृदय मे एक दूसरा उद्देश्य था, जिसे वे लोकतान्त्रिक प्रगति के साथ आबद्ध मानते थे। यह उद्देश्य शाति का उद्देश्य था। 'बादशाह जार्ज का युद्ध', जो उनके जन्म से जारी हुआ, उन युद्धो का केवल अशमात्र ही था, जिन्होने निरन्तर आधी सदी से अधिक दिनो तक यूरोप और अमरीका को शस्त्रसज्जित रखा।

'बादशाह जार्ज के युद्ध' के पूर्व रानी एनी का युद्ध हुआ था (स्पेनिश उत्तराधिकार का युद्ध) और उसके पहले बादशाह विलियम का युद्ध (लीग आफ आग्सबर्ग का युद्ध)। यद्यपि १८ वी शताब्दि युद्धो की शताब्दि थी, तथापि यह एक ऐसा युग था, जिसमे शान्ति की मृगतृष्णा भी बनी रही। १७१३ मे प्रकाशित दि अबे डी सेटर पियरे की "प्रोजेट डि पेक्स परपिचुले" और १७९५ मे प्रकाशित काण्ट के 'जुम एविजेन-फ्रायडेन' से प्रकट होता है कि शाति की यह विचारधारा सारी शताब्दि भर मौजूद थी। इन सुदूरगामी योजनाओ के अतिरिक्त भी उन अतरराष्ट्रीय वकीलो का निरन्तर प्रयास चल रहा था, जो युद्ध को तथ्य रूप मे स्वीकार करते हुए युद्ध की स्वीकृत प्रणाली को अधिक उदार बना कर तथा तटस्थता के सिद्धान्त की व्याख्या करके उसे मूर्त रूप देकर युद्ध की विभीषिका को हल्का करना चाहते थे। जेफर्सन को अपनी प्रौढावस्था प्राप्त होते ही यह विश्वास हो गया कि युद्ध वास्तव मे यूरोप के राजाओ और अभिजाततत्रों की बुद्धिहीन प्रतिस्पर्धाओ के कारण ही अधिकतर होते है। अमरीकी जनता, स्वभाग्य-निर्णायक होने के नाते तथा अपनी भौगोलिक सुरक्षा के कारण तटस्थता और पृथकता की बुद्धिमत्तापूर्ण नीति अपना कर मानव जाति के इस भयङ्करतम

अभिशाप से अपने को मुक्त रख सकती है और युद्ध के प्रत्यक्ष एव अप्रत्यक्ष दोनो ही दुष्प्रभावो मे बच सकती है अर्थात् युद्धकाल मे शस्त्रीकरण पर अपार व्यय से तथा शान्ति-काल मे विशाल स्थायी सेना के खर्च से बच सकती है। एक बार पुन जेफर्सन का जीवन उसके युग के वास्तविक तथ्यो तथा इस स्वाभाविक वृत्ति कि उदार लोकशाही मे युद्ध की आवश्यकता नही रहती है के बीच के द्वन्द्व को प्रकट करता है। क्योकि एक राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ के रूप में जेफर्सन को जिन युद्धो का सामना करना पडा—ऐसे युद्ध जिनका आरम्भ क्रान्तिकारी फ्रास द्वारा यूरोप के राजाओ को चुनौती देने पर हुआ,—वे, आधुनिक अर्थो मे, उन युद्धो की अपेक्षा अधिक स्थायी, उग्र और पूर्ण थे, जो उनकी युवावस्था मे निरकुश राजाओ द्वारा सीमित आधार पर लडे गये थे। मार्शल डिसैक्स से लेकर नैपोलियन तक, फ्रेडरिक द्वितीय से लेकर स्कार्नहार्स्ट और जीनेसेनू तक तथा फ्रिजी सशस्त्र जलपोतो से लेकर महाद्वीपीय प्रणाली तथा 'आर्डर्स इन कौसिल' तक सक्रमण की जो स्थिति रही, वह किसी भी शान्तिप्रिय व्यक्ति के लिए उत्साहवर्द्धक नही थी। फिर एक बार आदर्श और वास्तविकता—बाह्य जगत् तथा जेफर्सन के उद्विग्न एव जिज्ञासु मन मे ऐसा ही सघर्ष हुआ। यह ठीक उसी प्रकार का धर्मसकट था, जैसा कि उनके दो उत्तराधिकारियो वुडरो विल्सन और फ्रैकलिन डी रूजवेल्ट के समक्ष उपस्थित हुआ था। ये दोनो ही व्यक्ति अमरीकी प्रेसीडेण्ट थे और उस दल के, जो जेफर्सन को सस्थापक और सरक्षक मानता है, नेता के रूप मे उत्तराधिकारी थे। यह सयोग की ही बात है कि जेफर्सन जैसे पृथकतावादी व युद्ध से दूर रहने वाले व्यक्ति के उत्तराधिकारी और शिष्य जेम्स मेडिसन ने अत मे देश को युद्ध मे झोक दिया।

इस प्रकार जेफर्सन की असगतियो का कारण केवल इतना ही नही था कि उन्होने एक असाधारण परिवर्तन-काल मे एक असाधारण एव दीर्घकालिक सक्रिय जीवन व्यतीत किया था, बल्कि उसके कुछ और गम्भीर कारण भी थे। जिन असमजसो के विरुद्ध उनकी बुद्धि जूझ रही थी वे स्थायी थे। अधिकाश मूलभूत राजनीतिक समस्याओ की भाँति उनका भी अस्थायी समाधान मिल ही जाता था और बाद मे फिर ये समस्याएँ नये और उग्र रूप मे उठ खडी होती थी। हो सकता है कि इस अपूर्ण विश्व मे इन्हे टालने के लिए यही व्यावहारिक हो, किन्तु अस्थायी समाधान के लिए भी सैद्धान्तिक जानकारी की आवश्यकता होती है। किसी राजनीतिक विचारधारा मे कौन से तत्त्व अस्थायी और कौन से स्थायी, इसका भेद जानना राजनीतिज्ञ का प्रमुख कार्य होता है

और उसके इस कार्य मे इतिहासकार अच्छा सहायक सिद्ध हो सकता है। जब तक अमरीकी जनता जेफर्सन के सिद्धान्त को ठुकरा नही देती—और इस विचार-धारा का प्रभाव क्षीण होने का कोई लक्षण भी नही है—तब तक थामस जेफर्सन के अध्ययन को केवल कोरा शास्त्रीय अभ्यास ही नही माना जा सकता।

अध्याय २

प्रशिक्षण—काल

(१७४३–१७७३)

मनोवैज्ञानिको का कहना है कि चरित्र का गठन जीवन के प्रारम्भिक वर्षों मे होता है और अनुभव भी यही बताता है कि किसी मनुष्य के विश्वासो का आधार अधिकतर प्रौढावस्था मे पहुँचने के पहले के वर्षो मे ही सुदृढ होता है। ये विश्वास प्राय उसकी अचेतन मान्यताए होती है, जिन पर उसकी विचार-धारा और क्रियाकलाप आधारित होते है। फिर भी, इतिहासकार जिन पुरुषो को ऐतिहासिक नायक मानकर चलता है, उनके जीवन की इस चारित्रिक रचनात्मक अवधि के बारे मे बहुत कम जान सकता है, अपवादस्वरूप कुछ ऐसे लोगो को छोडा जा सकता है जो अपनी वशानुगत परिस्थितियो के कारण ऐतिहासिक घटनाचक्र मे महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर लेते है। भले ही विश्व घटनाचक्र से सम्बन्धित किसी महापुरुष के निधन के पश्चात् उसकी कीर्ति से आकर्षित हो उसके प्रारभिक जीवन के बारे मे खोज-बीन की भी आवश्यकता उत्पन्न हो, तो भी इस प्रकार उपलब्ध अधिकाश जानकारी पर उस महापुरुष की कीर्ति की छाया पडी रहेगी। प्रारभिक जीवन की जानकारी मिल सकती है, परन्तु प्रश्न यह है कि क्या उसे विश्वसनीय कहा जा सकता है ? जब किसी राजनीतिक नेता के बारे मे विचार किया जाता है, तो उसके वयस्क जीवन के प्रारम्भिक वर्षो के बारे मे भी प्राय. प्रश्न उठता है। केवल एकमात्र अपवाद जेफर्सन के महान प्रतिद्वन्द्वी अलेक्जेण्डर हेमिल्टन जैसे असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्तियो के अतिरिक्त, यहाँ तक कि क्रान्ति के युग मे भी राजनीतिक नेतृत्व शायद ही कभी किसी युवा पुरुष को प्राप्त हुआ है। किसी भी पर्यवेक्षक को ऐसे स्पष्ट कारण दृष्टिगत नही होगे कि क्यो एक तरुण युवापुरुष को, जब कि उसका सामाजिक स्तर उचित है तो उसे इस उम्र के बाद यशप्राप्ति मिलनी चाहिए

अथवा नही (कहने का तात्पर्य यह है कि युवावस्था के इन क्रियाकलापो की ओर किसी का गभीरता से ध्यान भी नही जाता है)। किसी भी जीवनी-लेखक के लिए प्राय दो ही चारे हो सकते है, या तो वह अपनी कथावस्तु के नायक के प्रारम्भिक जीवन की शीघ्र छानवीन करे या प्रौढावस्था के जीवन की प्रसिद्ध घटनाओ के आधार पर उसके साथ ऐसी किम्वदन्तियो को मिलाने का प्रयास करे, जो उसके जीवन-चरित्र के अनुकूल हो। जेफर्सन के जीवन-चरित्र लेखक ख्यातिप्राप्त हेनरी एस रण्डाल ने जेफर्सन की जीवनी सम्वन्धी अपनी दो हजार पृष्ठो की पुस्तक मे केवल ७६ पन्नो मे ही उनके जीवन के प्रथम तीस वर्षो पर प्रकाश डाला। यह पुस्तक तीन भागो मे (१८५८ मे) प्रकाशित हुई। इनके वाद के चरित्र-लेखको ने दूसरे पहलू की उपेक्षा नही की है, क्योकि जेफर्सन, जो अपने जीवन-काल मे ही विवादास्पद व्यक्ति वन चुके थे, अपने निधन के वाद भी अनुमान और कल्पनाओ का विषय वनने से नही वच सकते थे।

रण्डाल द्वारा लिखी गयी जीवनी के वाद जेफर्सन और औपानिवेशिक वरजीनिया के इतिहास के अध्ययन मे काफी वृद्धि हुई है। इतिहास और पुरातत्व के विद्वानो ने रण्डाल द्वारा प्रस्तुत जीवनचरित्र मे तथा उनकी प्रारम्भिक पृष्ठ-भूमि की कुछ कमियो और त्रुटियो को धीरे धीरे दूर कर दिया है। १९४३ मे श्रीमती मेरी किम्वाल ने अपनी पुस्तक 'जेफर्सन, दि रोड टू ग्लोरी—१७७४—१७७६' मे जेफर्सन के प्रारम्भिक जीवन का तथा उनके राजनीतिक जीवन की प्रारम्भिक अवस्थाओ का पर्याप्त विवरण देने के लिए सर्वप्रथम नयी सामग्री का पूर्ण उपयोग किया है। उन्ही के शब्दो मे इस प्राप्त सामग्री के वारे मे यह कहा जा सकता है, सामाजिक और शैक्षणिक प्रभाव, परिवार और मित्रो की पृष्ठभूमि तथा अन्य ऐसे ही वातावरण का जेफर्सन के जीवन पर प्रभाव पडा। एकान्तप्रिय एकाकी व्यक्ति जो पुरानी चप्पले और सादे वस्त्र पहने उस लोकतत्र को व्यावहारिक रूप देने मे निमग्न था, जिसका वह उपदेश दिया करता था, परन्तु जेफर्सन के इस चित्र का दूसरा पहलू भी है कि युवावस्था मे तरुण जेफर्सन चटकदार रगीन कोट पहननेवाला सुन्दर तरुण, हार्दिक प्रेमी और विश्वासी पति तथा आदर्श युवक था, जो समय आने पर देश को जरूरत पडने पर एक महान दार्शनिक और उत्साही जनसेवक के रूप मे प्रकट हुआ।

महान लोकप्रिय नेता जेफर्सन स्वय जन्म, पालन-पोषण या रुचियो से जनता के व्यक्तियो मे से नही थे। वास्तव मे उनका प्रारम्भिक जीवन,

जिसका ऊपर उल्लेख किया गया है, एक सामान्य व्यक्ति जैसा जीवन था, इस अर्थ मे सामान्य कि वे भूस्वामियो और दास-स्वामियो के उस सम्पन्न बगान-मालिक वर्ग मे पैदा हुए थे, जिसका औपनिवेशिक वरजीनिया के राजनीतिक एव सामाजिक जीवन पर प्रभुत्व था। जेफर्सन निस्सन्देह स्थानीय अभिजातवर्ग वालो मे से एक थे। भले ही यह वर्ग यूरोप के अभिजातवर्ग के ऐश्वर्य और सपत्ति की तुलना मे नगण्य ही क्यो न हो, फिर भी स्थानीय समाज मे इस वर्ग की जो स्थिति थी तथा पैतृक सपत्ति की जो सुरक्षा उन्हे प्राप्त थी, उस ओर उगली नही उठाई जा सकती थी।

सच पूछा जाय तो समय को देखते हुए उनकी पैतृक सम्पत्ति अभी अधिक पुरानी भी नही थी और यद्यपि उनका परिवार कई पीढियो से उपनिवेश मे सम्मानपूर्वक स्थापित हो गया था, फिर भी उनके पिता ने (१७०८ मे जन्म) १८ वी शताब्दि के मध्य मे भूमि मे अपनी पूजी का बडी कुशलता से विनियोग कर प्रचुर सम्पत्ति अर्जित की। उनके पिता पीटर जेफर्सन ने एक 'सर्वेयर' के रूप मे काफी ख्याति प्राप्त की। एक विशाल भूमिधर समाज मे यह बडा ही महत्वपूर्ण व्यवसाय था। १८ वी शताब्दी के मध्य मे बगान-मालिक समुदाय के बुद्धिमान तथा परिश्रमी लोग प्रारम्भिक उपनिवेशो की अनुर्वर समुद्रतटवर्ती जमीनो को छोडकर ब्लू रिज पर्वतमालाओ की ओर उर्वर भूमि मे जाकर बसने का प्रयास कर रहे थे। पीटर जेफर्सन एक मैनेजर और पाच ओवरसियरो की सहायता से लगभग चार हजार एकड भूमि पर खेती करके तथा कुछ अन्य सम्पत्तियो को खरीद कर निश्चय ही सभी दृष्टियो से एक धनाढय पुरुष बन गये थे और उन्हे यदि औपचारिक शिक्षा नही के बराबर मिली थी, तो भी बौद्धिक रुचियो और व्यावहारिक गुणो का उनमे किसी भी तरह का अभाव नही था।

सन् १७३९ मे जेन के साथ विवाह हो जाने के बाद पीटर जेफर्सन की स्थिति और भी दृढ हो गयी। जेन इशाम रनडोल्फ की पुत्री थी, जिनका परिवार वर्जीनिया के अभिजातवर्ग मे पहली श्रेणी का था और जिनको स्वय जनता मे भी काफी ख्याति प्राप्त थी। जेफर्सन परिवार की भाँति रनडोल्फ परिवार ने भी पश्चिम की ओर किये जाने वाले सामान्य अभियान मे भाग लिया था। १७३७ मे पीटर जेफर्सन ने टुकाहो के विलियम रनडोल्फ से अल्बे मार्ली काउण्टी मे एक जमीदारी खरीदी, जिसका नाम शेडवेल रखा। यही पर वे बस गये और यही १३ अप्रेल, १७४७ को उनके तीसरे बच्चे और प्रथम पुत्र थामस का जन्म हुआ।

थामस जेफर्सन ने ७७ वर्ष की अवस्था मे अपनी आत्मकथा मे एक स्थल पर लिखा है कि उनके पिता देश के उस भाग मे तीसरे या चौथे प्रवासी थे और स्वय उनके जन्म के दो वर्ष बाद के अभिलेखो से पता चलता है कि उस काउण्टी मे केवल १०६ गोरे निवासी, केवल १ रेड इडियन १७७ निग्रो और रहते थे। यद्यपि अल्वेमार्ले काउण्टी ऐसा क्षेत्र था, जहा लोग अभी हाल ही मे आकर छुटपुट बस गये थे, फिर भी इस को सीमाप्रदेश नही कह सकते। वास्तविक सीमा तो अभी भी पश्चिम की ओर एक सौ मील पर थी, जहाँ रेड इडियनो के विरुद्ध स्थायी प्रतिरक्षा की व्यवस्था की गयी थी और यदि जेफर्सन का प्रारम्भिक जीवन महत्वपूर्ण रहा हो, तो भी इस प्रारम्भिक जीवन का वातावरण सीमाप्रदेश जैसा नही था। जमीदारो के परिवार आपसी घनिष्ठता और सम्वधो द्वारा एक दूसरे से सम्बद्ध थे। यही जेफर्सन की सामाजिक पृष्ठभूमि थी। ये परिवार यथासम्भव शीघ्र ही उस सास्कृतिक व सामाजिक स्तर को पाने के लिए प्रयत्नशील थे, जो पहले से व्यवस्थित बस्तियो मे प्रचलित था। अभी हाल मे की गयी खुदाई से पता चला है कि जेफर्सन का जन्मस्थान देश की सीमा पर नही था, बल्कि वह नियमित रूप से आयोजित एक विशेष ढग की सस्कृति का केन्द्र था।

अल्वेमार्ले काउण्टी की बिखरी आबादी वर्जीनिया के लिए कोई नयी बात नही थी, यद्यपि उस शताब्दी के मध्य के दशको मे उत्तर की ओर से बडी तेजी से प्रवासियो का निष्क्रमण हुआ था। कहा जाता है कि पीटर जेफर्सन के स्वर्गारोहण के पूर्व के वर्ष १७५६ मे औपनिवेशिक वर्जीनिया की जनसख्या २ लाख ९२ हजार थी, जिसमे से १ लाख २० निग्रो थे। औपनिवेशिक वर्जीनिया के अन्तर्गत आज का केण्टकी और पश्चिमी वर्जीनिया भी आ जाता था। थामस जेफर्सन ने अपनी पुस्तिका 'नोट्स आन वर्जीनिया' मे वर्जीनिया का क्षेत्रफल १२१५२५ वर्गमील बताया है, जो ब्रिटिश द्वीपसमूह के एक तिहाई के लगभग होता है। यदि हम अलेघनीज पर्वतश्रेणियो के पश्चिम के क्षेत्र को जेफर्सन के युवावस्थाकाल के औपनिवेशिक क्षेत्र से बाहर माने तो यह क्षेत्र लगभग ४१ हजार वर्गमील रह जायगा। जनसख्या की सघनता लगभग सात व्यक्ति प्रति वर्गमील थी, जो आज के इडाहो की जनसख्या के लगभग थी। १७५६ मे इगलैड और वेल्स की आबादी लगभग १२० व्यक्ति प्रति वर्ग मील के हिसाब से थी।

जेफर्सन के व्यक्तित्व और दृष्टिकोण के निर्माण मे उनके प्रारम्भिक जीवन के वातावरण का विशेष हाथ था। खुले मैदान के खेलो और घुडसवारी

का सर्वोपरि शौक, प्राकृतिक सौदर्य के प्रति स्वाभाविक आकर्षण, और सबसे अधिक महत्वपूर्ण यह भावना कि खुली और स्वच्छ जगह मे ही सुखपूर्वक जीवन निर्वाह, कृषियोग्य भूमि पर अधिक लोगो का भार तथा शहरो मे बढती हुई भीड को यूरोप के लिए अधिक जटिल समस्याओ और तकलीफो का कारण मानना, ये जेफर्सन के उपरोक्त दृष्टिकोण को बनाने और उसके जीवन मे इन बुनियादी तत्वो के अकुर पैदा करने मे बहुत कुछ ग्रामीण वातावरण का हाथ होना कहा जा सकता है।

परन्तु देहात को अपना घर मानने के पूर्व थामस जेफर्सन का दीर्घकाल तक समुद्रतट के प्रति आकर्षण रहा, क्योकि १७४५ मे जब पीटर जेफर्सन ने अकस्मात् विलियम रनडोल्फ के अनाथ पुत्र का अभिभावकत्व ग्रहण किया तो वे टुकाहो स्थित रनडोल्फ के मकान पर चले गये, जो शेडवेल से केवल ५० मील दूर था, किन्तु वहाँ पहुचने मे दो या तीन दिन लग जाते थे। यही पर जेफर्सन ने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। १७५२ मे जब उनका परिवार शेडवेल वापस चला आया तो थामस को अपनी पढाई जारी रखने के लिए डोवर क्रीक स्थित पादरी डगलस के 'लेटिन स्कूल' मे भेजा गया।

१७५७ मे पीटर जेफर्सन का अचानक असामयिक निधन हो गया। उनका १४ वर्षीय पुत्र अब उस परिवार का मुखिया बन गया, जिसमे उसकी माता के अतिरिक्त, ६ बहने और एक छोटा भाई था। चूकि अब शेडवल और आसपास की जमीदारी की जिम्मेदारी थामस पर आ गयी, इसलिए उसके अभिभावको की स्वाभाविक इच्छा उसे घर के निकट रखने की हुई और अब जेफर्सन को फ्रेडरिकविले मे पादरी जेम्स मारी द्वारा सचालित स्कूल मे भेजा गया जो जेफर्सन के घर से लगभग १२ मील दूर था। इसमे सन्देह नही कि मारी के पुस्तकालय मे ही सर्वप्रथम जेफर्सन को पुस्तको की दुनिया मे प्रवेश करने का अवसर मिला और कदाचित् मारी ने ही जेफर्सन मे वह वैज्ञानिक जिज्ञासा उत्पन्न की, जो जीवनपर्यन्त उनके साथ रही।

अध्ययन मे जेफर्सन की इतनी पर्याप्त रुचि थी कि उपनिवेश मे उपलब्ध शिक्षा-क्षेत्र से उन्होने पूरापूरा लाभ उठाने की चेष्टा की, क्योकि तत्कालीन लिखे गये उनके एक पत्र से हम कह सकते है कि उन्ही की खुद की इच्छा पर ही उन्हे विलियम्सबर्ग स्थित कालेज आफ विलियम एण्ड मेरी मे पढने के लिए भेजने का निर्णय किया गया।

कालेज आफ विलियम एण्ड मेरी की स्थापना १६९३ मे हुई थी और

उच्चतर शिक्षा की अमरीकी सस्थाओ मे हारवर्ड के बाद उसी का स्थान था। १८ वी शताब्दि के वर्जीनिया मे एक छोटे से समुदाय मे उच्चतर शिक्षा पाना कोई साधारण बात नही थी। १७२७ से ही कालेज के अन्तर्गत चार पृथक् स्कूल थे, १५ वर्ष तक के बच्चो के लिए एक 'ग्रामर स्कूल', एक दर्शनशास्त्र का स्कूल, एक स्नातकोत्तर अध्यात्मवादी स्कूल जिसका मूल उद्देश्य आग्लिकन धर्मप्रचार के लिए लोगो को प्रशिक्षित करना था और एक रेड इडियन स्कूल भी था। दर्शनशास्त्र के स्कूल मे बी ए की डिग्री के लिए चार वर्ष का कोर्स रखा गया था। किन्तु जेफर्सन ने १५ वर्ष के बजाय, जो कि वहाँ भर्ती होने की सामान्य उम्र थी—१७ वर्ष की अवस्था मे वहाँ प्रवेश किया और दो ही वर्ष तक वहाँ रहे।

कालेज मे दो वर्ष का समय जेफर्सन ने किस प्रकार व्यतीत किया, इस बारे मे जानकारी कालेज-जीवन के एक सहपाठी तथा स्वय जेफर्सन की अपनी आत्मकथा से मिलती है, जिसमे उन्होने उस प्रसिद्ध व्यक्ति के महत्वपूर्ण प्रभाव का उल्लेख किया है, जिसने उनके अध्ययन का निर्देशन किया था

"यह मेरा सौभाग्य था—और कदाचित् इसीने मेरे जीवन का भाग्य-निर्णय भी किया—कि स्काटलैण्ड के डा० विलियम स्माल गणित के तत्कालीन प्राध्यापक थे। वे विज्ञान की अधिकाश उपयोगी शाखाओ के उद्भट विद्वान, पत्रव्यवहार मे प्रवीण, व्यवहारकुशल तथा व्यापक और उदार विचार के व्यक्ति थे। मेरा अहोभाग्य था कि वे मेरे प्रति शीघ्र ही आकर्षित हो गये और उन्होने स्कूल के कामो से फुर्सत पाने के समय मुझे अपने सहवास मे रखा। उनके साथ वार्तालाप करके मुझे पहली बार विज्ञान की व्यापकता तथा सृष्टि की क्रमबद्धता के बारे मे जानकारी मिली। सौभाग्य से कालेज मे मेरे पहुचने के बाद ही दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक का स्थान रिक्त हुआ और उन्हे अस्थायी तौर पर वहाँ नियुक्त किया। उन्होने पहली बार कालेज मे नीतिशास्त्र, अलकार शास्त्र और साहित्य पर नियमित व्याख्यान दिये।"

जिन लोगो को १७ वर्ष की वयमे ही एक उच्च कोटि के शिक्षक के प्रभाव मे आनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है, वे शायद ही इस अपूर्व सम्मान को एक वृद्ध पुरुष का भावनात्मक प्रवाह समझेगे और जेफर्सन भी भावुकतावादी नही थे। उनके शिष्यो की श्रद्धाजलियो के अतिरिक्त डा स्माल के बारे मे और कुछ भी ज्ञात नही है। वर्जीनिया के रगमच पर उनका अल्पकालिक दर्शन हुआ। वे प्रोफेसर नियुक्त हुए और १७६४ मे उन्होने पदत्याग कर दिया।

अपने जीवन के शेष दिन उन्होने बर्मिंघम मे बिताये और एरास्मस डार्विन तथा जेम्स वाट जैसे लोग उनके मित्रो मे थे।

जैसा कि जेफर्सन ने कहा है, स्माल के द्वारा ही उनका अन्य व्यक्तियो से परिचय हुआ, जो इस छोटी-सी राजधानी के, जिस मे लगभग दो सौ मकान थे और जिसकी कुल आबादी निग्रोसहित लगभग एक हजार थी, गौरवतुल्य थे।

इन दोनो व्यक्तियो मे एक तो उपनिवेश के एक अत्यन्त ख्यातिप्राप्त विद्वान वकील जार्ज वाइथ थे, जिनकी अवस्था उस समय लगभग ३४ वर्ष की थी और दूसरे थे लार्ड फाकियर, जो १७५८ से ही शाही लेफ्टिनन्ट गवर्नर थे। वे बडे ही योग्य और प्रगतिशील विचारो के थे और उस समय उनकी आयु लगभग ५० वर्ष की थी।

यदि चारो व्यक्ति, जैसा कि जेफर्सन ने कहा है, एक मित्रमडली के अभिन्न अग बन गये तो इससे यह कल्पना नही करनी चाहिए कि जेफर्सन, जो इस मे सबसे छोटे थे, दम्भी थे और रात-दिन उन्ही की सगति और बातचीत मे लगे रहते थे। फाकियर ने उन्हे सगीतप्रेमी बनाया, यद्यपि अपने दूसरे शौक ताश के खेल की ओर उन्हे वे आकृष्ट नही कर सके। जेफर्सन वायालिन पर गाने-बजाने मे अवश्य निपुण हो गये, किन्तु वे पढाई-लिखाई के बाद अपना अधिकाश समय ऐसे ही मनोरजनो मे लगाते थे, जो एक सुन्दर, सुडोल ओर सम्पन्न युवक की प्रवृत्तियो के अनुकूल होते है, जैसे नाटक, नृत्य, घुडदौड, मुर्गो की लडाई। इनमे उनका प्रथम असफल प्रणय भी शामिल है। अपनी स्वाभाविक लोकप्रियता और साहसिक भावनाओ के कारण जेफर्सन के जीवन-निर्माण-काल मे कही भी कलक या धूमिलता नही है, उन अवगुणो और दूषित प्रवृत्तियो का समावेश भी नही हो सका, जो प्राय लोग महापुरुषो के प्रारम्भिक जीवन मे अनिवार्य मान बैठते है। जेफर्सन निस्सन्देह एक अद्‌भुत निष्कलुष युवक थे और उनकी सबसे बडी विशेषता यह थी कि वे तत्कालीन समाज के उत्कट प्रलोभनो के शिकार नही हुए अर्थात् वे न तो शराबी बने और न जुआडी।

लगभग आधी शताब्दि बाद उन्होने अपने एक १६ वर्षीय पौत्र को लिखा था—"जब कभी कोई प्रलोभन उपस्थित होता तो मै यह सोचकर आत्मसयम का आश्रय लेता कि इन परिस्थितियो मे डा स्माल, वाईथ या उनके अभिभावक पेटोन रनडोल्फ क्या करते।" यह व्याख्या वास्तव मे युवको के लिए एक सीख के रूप मे काम कर सकती है। जान पडता है कि जेफर्सन की बौद्धिक

शक्ति मे इतनी गम्भीरता आ गयी थी कि वे यह अनुभव करने लगे कि मनोरजन उतना ही अच्छा है, जितना स्वास्थ्य तथा सन्तुलित सामान्य जीवन के लिए आवश्यक हो। इससे अधिक मनोरजन समय और बुद्धि का अपव्यय है। इसके अतिरिक्त, युवक की तरह अपने को प्रतिष्ठित स्थान पर पाकर तथा उसकी जिम्मेदारियो से कतराना सारहीन समझ कर उन्होने अपने आपको अपनी योग्यता के अनुसार इनके अनुकूल बनाने का दृढ निर्णय किया।

कालेज छोडने के समय तक जेफर्सन की विचारधाराए काफी स्पष्ट हो चुकी थी। एक तो वे अब शास्त्रीय विद्वान हो चुके थे, दूसरे उन्होने यूनानी और लेटिन लेखको का गहन अध्ययन किया था, जिसका प्रमाण उनकी पुस्तको और साहित्य से मिलता है। डा एडरीने कोच ने अपनी हाल की पुस्तक जेफर्सन का दर्शनशास्त्र' मे लिखा कि उनके नैतिक सिद्धान्तो का मूलाधार इपिक्यूरिन्स तथा स्टोइक विचारधाराओ के लेखको से प्रभावित था। उनकी राजनीतिक विचारधारा और नैतिक दृष्टिकोण की नीव भी इसी पर आधारित थी।

आधुनिक दर्शनशास्त्र मे उन पर अधिकतर लाक के महान व्यक्तित्व की छाया थी, कालेज छोडने के कुछ वर्षो बाद जेफर्सन को बोलिगब्रोक की दार्शनिक कृतियो के अध्ययन का अवसर मिला और हो सकता है कि उसीसे उन्हे अपने छात्र-जीवन की आग्लिकन रूढिवादिता से छुटकारा पाकर अपने सम-कालीन बुद्धिजीवियो की हेतुवादी आस्तिकता की ओर अग्रसर होने का प्रोत्साहन मिला, परन्तु नैतिकता को भी परिस्थिति के आधार पर कस कर तर्क के तराजू पर तौलने की यह प्रणाली उसके लिए कष्टकर व असुविधाजनक सिद्ध हुई जिसके लिए नैतिक सिद्धान्त बुनियादी तौर पर मार्गदर्शन के लिए महत्वपूर्ण थे। इसी के परिणामस्वरूप जेफर्सन ने बादमे १८ वी शताब्दि के उन अग्रेज और स्काटिश दार्शनिको के अतरात्मा से उत्प्रेरित नैतिक सिद्धान्तो के आधार पर अपने हेतुवादी दर्शन मे सशोधन किया। १७८७ मे जेफर्सन ने अपने भतीजे को लिखे पत्र मे उद्घोपित किया, "मेरी राय मे तो नैतिक दर्शन पर भाषण सुनना समय का अपव्यय करना है। जिसने हमारी सृष्टि की, यदि उसने हमारे नैतिक आचरण के नियमो को भी विज्ञान का विषय बनाया होता तो वह अवकचरा व उटपटाग स्रष्टा सिद्ध होता। आज एक वैज्ञानिक की दृष्टि मे हजारो ऐसे है वैज्ञानिक नही है। एक हलवाहे और प्राध्यापक को नैतिकता का उपदेश ५। हलवाहा यही निर्णय करेगा कि यह बात अच्छी और बहुत अच्छी

है, क्योकि वह कृत्रिम नियमो की भूलभूलैया मे नही पडा है।

यद्यपि दार्शनिक विचारधारा के विकास के साथ जेफर्सन का सम्पर्क सदा बना रहा, तथापि उनकी विशेष रुचि 'प्राकृतिक दर्शन' मे अर्थात् भौतिक विज्ञान और विशेषकर प्राणी-विज्ञान मे रही। उनकी रुचि भूगर्भशास्त्र, प्राणी-शास्त्र अथवा वनस्पति-शास्त्र मे थी, जो प्राय उनके व्यक्तिगत कथनो तथा उनके अध्ययन एव पत्र-व्यवहार मे प्रकट होती थी, किन्तु यह रुचि विशुद्धत सैद्धान्तिक नही थी। उनका विश्वास था कि मानव समाज के उचित अध्ययन का साधन मानव है और यह विश्वास उस शताब्दि के पूर्णतया अनुकूल ही था। अपने वैज्ञानिक अध्ययन के परिणामस्वरूप उन्होने या तो मानव जीव-विज्ञान एव मानव समाज पर विचार किया या उदाहरणार्थ, कृषि मे व्यावहारिक उपयोग किया, जिससे मानव समृद्धिशाली होकर नैतिक स्तर मे ऊपर उठ सके। जेफर्सन के विचारो मे उपयोगितावाद अधिकाश मात्रा पाया मे जाता है।

इसी प्रकार जेफर्सन की गणित मे वास्तविक अभिरुचि थी और प्राक्कलन तथा भौगोलिक व प्राकृतिक उपयोगिताओ के कारण गणित का विशेष महत्व भी था।

यद्यपि जेफर्सन ने न केवल शास्त्रीय भाषाओ का, अपितु फ्रासीसी, स्पेनिश तथा इटालियन और परिणामस्वरूप ऐंग्लो-सैक्सन भाषाओ का पढना भी सीखा और यद्यपि वे उद्भट पाठक और पुस्तको के अथक सग्रहकर्ता बने और रहे, फिर भी उनकी विशुद्ध साहित्य-सम्बधी कृतियो मे विशेष रुचि कभी नही रही और उपन्यास तो वे कदाचित् ही पढते थे। दर्शनशास्त्र, इतिहास, कानून और राजनीति मे उनकी स्थायी बौद्धिक रुचि बनी रही।

जेफर्सन जैसे नवयुवक के लिए उसकी शिक्षा की अन्तिम सीढी कुछ कानूनी शिक्षा-प्राप्ति ने ही थी। कानून की जानकारी की यह आवश्यकता औपनिवेशिक वर्जीनिया मे वकालत करने के उत्साह के कारण नही थी। जबकि कुछ ही लोग कानून के पण्डित हो सकते थे, तो भी अधिकाश लोगो को थोडी बहुत कानून की जानकारी होनी ही चाहिए, क्योकि सभी नवोदित विकासशील समाज मे सम्पत्ति पर अधिकार-सम्बन्धी विवाद अधिकाशत हुआ ही करते और वे अधिक पेचीदगीपूर्ण होते थे।

वर्जीनिया का कानून भी इतना सरल नही था कि कोई उसका पूर्ण विशेषज्ञ बन सके। इसमे सामान्य अंग्रेजी कानूनी प्रथाओ के साथ-साथ इग्लैंड के कानून और

स्थायी कानूनो का जटिल सम्मिश्रण था, जिनकी व्याख्या भी इगलैड और उपनिवेश के दोनो ही न्यायालयो ने की थी। यहाँ भी जेफर्सन बडे भाग्यशाली थे, वे जार्ज वाइथ (George Wythe) के शिष्य बन गये, जो न केवल उस उपनिवेश के ख्यातिलब्ध वकील थे, अपितु अनेक अर्थो मे अत्यन्त प्रसिद्ध एव विद्वान नागरिक थे। वाइथ के निर्देशन मे जेफर्सन को न केवल वकील की दैनिक कार्यप्रणाली का अनुभव हुआ, बल्कि अग्रेजी कानून तथा अग्रेजी सावैधानिक विचारधारा के मूल सिद्धान्तो का गम्भीर ज्ञान भी प्राप्त हुआ। उनके स्वाभाविक परामर्शदाता थे सर एडवर्ड कोक, जिनकी तुलना इगलैड के सर विलियम ब्लैक से की जा सकती है।

सामान्य कानूनी नियम-उपनियमो और रिपोर्टो के अतिरिक्त, जेफर्सन ने इस समय यूरोपीय लेखको के बुनियादी कानून और अन्तरराष्ट्रीय कानून का भी अध्ययन किया। इन लेखको का अमरीका की कानूनी और सावैधानिक विचारधारा पर अत्यधिक प्रभाव पडा और इनकी छाप जेफर्सन पर भी अत्यन्त स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। बुनियादी कानून विशेषज्ञ का प्रभाव मानव समाज के नैतिक विधानो की सामान्य सहिता के अस्तित्व की उस कल्पना के अनुकूल है जो जेफर्सन को दार्शनिक अध्ययन से प्राप्त हुई थी। इस प्रकार जेफर्सन प्रकृतिदत्त अधिकारो की पुष्टि के लिए दुहरा सबल पा गये और यही विचारधारा बाद मे उनके राजनीतिक सिद्धान्तो का आधार बनी। न्यूटन और लाक, कोक और वैटेल की इन कृतियो का सम्मिलित विचारधाराओ का प्रभाव विस्फोटक सिद्ध होता है, किन्तु इस बात का कोई प्रमाण नही है कि ढेरो पुस्तके पढने मे लीन—जिनमे से कई उन्ही के शब्दो मे नीरस थी—तथा उन्हे अपने पुस्तकालय मे जमाने तथा उनमे से कुछ उपयोगी पुस्तको को छाँटने मे व्यस्त जेफर्सन को इस बात की रचमात्र भी जानकारी नही थी।

जेफर्सन ने १७६७ के आरम्भ मे वकालत शुरु की। तीन या चार वर्ष तक उन्होने निस्सन्देह बडी तत्परता से सफल वकालत की, यद्यपि एक अच्छे वक्ता के रूप मे वे कभी नही चमके। जब उन्होने अपनी राजनीतिक गतिविधि आरम्भ की तो उत्तरोत्तर उनकी वकालत की उपेक्षा होती गयी और अन्त मे उन्होने १७७४ मे अपनी वकालत अपने चचेरे भाई एडमन्ड रण्डोल्फ को सौप दी।

अनेक दृष्टियो से वाइथ के शिष्य के रूप मे और स्वतत्र वकील के रूप मे जेफर्सन का जीवन वैसा ही था, जैसा कि उनके कालेज के दिनो मे था। जक आमोद-प्रमोद का वातावरण, उन परिवारो के युवको की सगति,

ही लगन और रुचि से कानून का व्यवसाय अपनाया। किसी भी युवक वकील की भाति जेफर्सन ने विधानमण्डल के वादविवादो मे और उसकी कार्रवाइयो मे भाग लिया था, किन्तु इससे अधिक वे आगे नही बढे। फिर भी ये वर्ष वर्जीनिया के इतिहास मे वडे महत्वपूर्ण सिद्ध हुए और भविष्य के लिए भी ये अत्यन्त महत्वपूर्ण थे।

वर्जीनिया मे जिस प्रकार की शासन-प्रणाली थी, वैसी ही शासन-प्रणाली ब्रिटेन के अधिकाश अमरीकी उपनिवेशो मे थी। कार्यकारी सत्ता शाही गवर्नर और उसकी परिषद के हाथ मे थी, अर्थात् ब्रिटिश सम्राट के मनोनीत अधिकारियो के हाथ मे थी, जो ह्वाइट हाउस के निर्देश पर कार्य करते थे। विधानमण्डल अर्थात् प्रतिनिधि-सभा सरकारी राजस्व का स्रोत मात्र थी। उसका चुनाव ब्रिटिश लोकसभा की तरह सीमित मताधिकार के आधार पर होता था, किन्तु प्रारम्भिक समुद्र तटवर्ती उपनिवेशो के भूस्वामियो को विशेष महत्व दिया जाता था। प्रतिनिधि सभा (House of Burgesses) की वैधानिक सत्ता तीन प्रकार से सीमित थी, गवर्नर और उनकी परिषद को एक प्रकार से लार्ड-सभा की तरह सशोधन और निषेधाधिकार के उपयोग का अधिकार था। वादशाह प्रिवी कोसिल की एक समिति की सलाह पर उसकी कार्रवाइयो पर भी निषेधाधिकार का उपयोग कर सकता था। अग्रेजी कानून के प्रतिकूल ठहरा कर उसके कार्यो को इग्लैण्ड मे अपील द्वारा चुनौती दी जा सकती थी। फिर भी, इन दशको मे इग्लैण्ड के साथ वर्जीनिया के सम्बन्धो का इतिहास कभी दुखद नही रहा। तम्बाकू की महत्वपूर्ण फसल के लिए ग्रेट ब्रिटेन का बाजार सदा खुला रहता था और शाही पार्लमेण्ट के व्यापारिक विधि-विधानो का उसके अर्थतत्र पर उतना बुरा प्रभाव नही पडा, जितना कि उसके उत्तर की ओर अन्य उपनिवेशो पर पडा। यह सत्य है कि एक विशेष फसल पर निर्भरता के फलस्वरूप वडे वडे खेत-स्वामी उन अग्रेज व्यापारियो के साथ ऋण के बन्धनो से बुरी तरह बध गये थे, जो उनकी फसल खरीद कर उनकी आवश्यकताओ की पूर्ति करते थे और इन भूस्वामियो को उन्होने ऋण की सुविधाए प्रदान करके इस ऋणग्रस्तता को और भी दृढ बना दिया। जीवन-निर्वाह और सस्कृति का स्तर अत्यन्त ऊँचा हो जाने के कारण बगान-मालिको को अपने व्यय की पूर्ति के लिए ऋण लेना अनिवार्य हो गया था। फिर भी, सरकार और सपन्न प्रतःशाली बगान-मालिक वर्ग सदा एक साथ रहे।

औपनिवेशिक वर्जीनिया मे वास्तविक विभाजन स्वय वहा के समाज के

अन्तर्गत पैदा हुए संघर्ष के कारण था और यह संघर्ष छिछले पानी वाले प्रदेश के बड़े बड़े बगान-मालिकों तथा ऊपरी क्षेत्र के उन किसानों के बीच था, जो प्राय उन भूस्वामियों के ऋणी रहा करते थे। सच पूछा जाय तो यह विभाजन १७ वी शताब्दि मे ही और १७६७ मे नाथानियल बेकन के असफल विद्रोह के के समय से ही था। धार्मिक मतभेदों से यह सामाजिक भेदभाव और भी दृढ हो गया, क्योंकि बड़े बड़े भूमिपति प्रचलित गिरजाघरों के प्रति आस्था रखते थे और अनेक नवागन्तुक, विशेषकर स्काटलैण्ड, अल्स्टर और यूरोपीय महाद्वीप से आये हुए लोग, प्रेसबीटेरियन, बैप्टिस्ट अथवा अन्य दूसरे मतों से सम्बन्ध रखते थे। यद्यपि बड़े-बड़े भूमिपतियों के साथ १६९९ से ही धार्मिक उदारता प्रदर्शित की गयी थी, फिर भी प्रचलित चर्च के विरोधियों से भी चर्च की सहायता के लिए कर वसूल किया जाता था जबकि उनके अनुयायियों की संख्या उत्तरोत्तर तेजी से घट रही थी।

दिया। जेफर्सन के पुराने शिक्षक मौरी ने (चर्च के लिए) इस अतिरिक्त रकम की प्राप्ति का दावा कर दिया। हेनरी ने इस वात पर जोर दिया कि सम्राट को यह कानून रद्द करने का कोई अधिकार नही है और उसकी कार्रवाई से ग्रेट ब्रिटेन और उसके उपनिवेशो के बीच सन्धि भग हुई है। हेनरी के इस दावे के फलस्वरूप स्थानीय न्यायालय ने पादरी को नाममात्र की क्षतिपूर्ति का निर्णय दिया और इस प्रकार स्थापित चर्च की सत्ता और ब्रिटेन से उसे प्राप्त समर्थन, दोनो ही को चुनौती दी गयी।

वर्जीनिया मे नये राजनैतिक नेताओ का अभ्युदय ठीक उस समय हुआ, जब समस्त अमरीकी उपनिवेशो के मामलो मे सुदूरगामी सकट उत्पन्न हो रहा था। इस प्रकार की कुछ घटनाओ का घटना कदाचित् अनिवार्य हो गया था क्योकि उपनिवेशो की जनसख्या और शक्ति बढ गयी थी और पृथक समुदायों के रूप मे वे अपने हितो के प्रति अधिक सचेत हो गये थे। पृथक ब्रिटिश विभागो के द्वारा सम्राट का सत्ता-सचालन अधिकाधिक उत्पीडक सिद्ध हो रहा था। किन्तु औपनिवेशिक शासन पर जो प्रतिवन्ध लगा दिये गये थे, उनके पीछे दीर्घकालिक परम्परागत समर्थन था, जवकि शाही प्रतिनिधियो के लिए सम्पन्न उपनिवेशवादियो के साथ हाथ में हाथ मिलाकर कार्य करना प्राय सम्भव था। कई मानो मे ब्रिटेन ने स्वाययत्त शासन पर जो अकुश लगाये, मसलन आतरिक प्रदेश मे जनसख्या प्रसार को रोकना जिससे रेड इडियन व 'फर' (लोमडी के चर्म-रोमो) व्यापार सुरक्षित रहे, कागजी मुद्रा के प्रचलन को रोक कर औपनिवेशिक साख को कायम रखना, अफ्रीका से गुलाम-व्यापार को सुरक्षित रखना आदि उद्देश्यो को औपनिवेशिक प्रभुतासंपन्न तत्वो ने स्वीकार किया यहाँ तक कि उन्होने इनका स्वागत भी किया। किन्तु अधिकाश उपानिवेशो मे औपनिवेशिक व्यापार को ब्रिटिश आयात्-निर्यात-कर और नौकानयन कानूनो के हितो की वलिवेदी पर चढाने के कारण गम्भीर आपत्ति की गयी। इसका मुख्य कारण यह था कि इन कानूनो को अधिकाधिक कडा कर दिया गया साम्राज्यीय प्रणाली के अन्तर्गत उपनिवेशो के वाजारो को जो सुरक्षा प्राप्त थी, वह १७५० के वाद तम्बाकू से होनेवाले लाभ मे कमी के कारण असतुलित हो गयी। अन्त मे उपानिवेशो मे कतिपय उद्योगो का निषेध भी अधिकाधिक चिन्ता का कारण वन रहा था।

१७६० मे, जब जेफर्सन विलियम और मेरी कालेज मे भर्ती हुआ, णाली काफी दृढ हो चुकी थी और अन्ततोगत्वा इसके भग होने

के जो कारण थे, वे इतने अधिक उलझे हुए हैं कि इस प्रणाली को ठप्प करने वाली विभिन्न क्रियाशील शक्तियो के सापेक्ष महत्व के बारे मे इतिहासकारो मे मतैक्य नही हो पाया है। यह तो विल्कुल स्पष्ट है कि उपनिवेशो के विकास के साथ ब्रिटिश शासन-प्रणाली मे भी परिवर्तन हुए जिनसे साम्राज्यीय प्रणाली के पाखण्ड का नग्न रूप प्रकट हो गया और ऐसे सघर्षो का जन्म हुआ, जिनका समाधान स्पष्टत सहकारी तौर पर स्वीकृत सिद्धान्त के आधार पर ही हो सकता था। अब यह मूल भावना काफी क्षीण हो चुकी थी कि उपनिवेशो के सभी निवासी अपने पूर्वजो की भाति ब्रिटिश सम्राट की प्रजा है, क्योकि प्रारम्भिक उपानिवेशो की विशुद्ध आग्ल जनसख्या मे अब मिश्रण हो रहा था। इस स्थिति मे अधिक महत्वपूर्ण वात यह थी कि ब्रिटिश प्रजा की भाति उपनिवेशो के निवासियो से भी यह अपेक्षा की जाती थी कि वे ब्रिटिश पार्लमेण्ट की सत्ता स्वीकार कर ले, जबकि पार्लमेण्ट मे उनकी अपनी कोई आवाज नही थी। १७वी शताब्दि के उत्तरार्द्ध की घटनाओ ने ब्रिटिश सविधान के रूप को निर्णायक रूप मे बदल दिया था और १८वी शताब्दि के मध्य तक पार्लमेण्ट की प्रभुता ब्रिटिश राजनीतिक विचारधारा की एक मृतप्राय रूढिगत भावना वन चुकी थी। जिन प्रवासियो ने शानदार क्रान्ति अथवा उसके कारण घटित घटनाओ मे भाग नही लिया था और जो अपनी सरकारो को दौत्य-सम्बन्ध अथवा सधि द्वारा ब्रिटिश राजसत्ता के साथ मर्यादित समझते थे, वे इस परिवर्तन को विना सन्देह के स्वीकार नही कर सकते थे और एक वार तो अत्यन्त गम्भीर मतभेद के मसले उत्पन्न हो गये ये। यह अनुमान कि ब्रिटिश सविधान दैवी आदेश का एक अग है और चूकि पार्लमेण्ट की नीति समस्त साम्राज्य को लाभ पहुचाने की हे, इसलिए सब कुछ ठीक है, इस तरह की मान्यता को अमरीका की अपेक्षा ब्रिटन मे स्वीकार करना अधिक सरल था। एक दृष्टि से साम्राज्यवादी नीति पूर्णतया विफल हो चुकी थी। युद्धकाल मे भी प्रवासी वस्तियाँ सम्पूर्ण साम्राज्य को दृष्टिगत रखकर अपने हितो पर विचार करना नही चाहती थी। इतना ही नही, वे अपने-अपने उपनिवेश के सकीर्ण दायरे से अधिक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने को भी तैयार नही थे। यही क्रान्तिकारी आन्दोलन सफल होने वाला था, जबकि साम्राज्यवादी प्रशासन विफल हो चुका था।

वस्तुत उपनिवेशो को पार्लमेण्ट के बहुमत के अधीन रखने तथा सैद्धान्तिक न हो तो भी व्यावहारिक रूप से उनकी सरकारो को अपनी मातहती मे रखने के दो परिणाम निकले। पहली वात तो प्रवासी यह महसूस करने लगे

कि जहाँ तक नीति-निर्धारण का प्रश्न है, उनके हितों पर पार्लमेण्ट के कूटनीतिज्ञों व निहित स्वार्थो का व्यापक प्रभाव रहता है और सारी नीतियाँ वेस्टमिस्टर के शक्तिशाली 'कूटनीतिज्ञो' के कपट-छल से सचालित होती है। दूसरी बात यह है कि उन दिनो राजनीति भी एक व्यवसाय की चीज बन गयी थी और दूहरे ब्रिटिश विभागो की स्थापना मानो अमरीका मे अपने-अपने सम्बन्धियो या पिट्ठुओ के लिए आश्रय ढूंढने की सुखद भूमि बन गयी थी। साम्राज्य के साथ बधे रहने के प्रति विक्षोभ का एक प्रमुख कारण यह भावना भी थी कि उपनिवेशो की सरकारो का उपयोग ब्रिटिश शासक वर्ग के निकम्मे और अयोग्य सदस्यो को भरने के लिए किया जा रहा है। १७५६ तक इस परिस्थिति मे जो प्रमुख प्रवृत्तियाँ सक्रिय थी, वे इस कारण से दब गयी कि युद्धकाल मे उपनिवेशो को अपनी प्रतिरक्षा के लिए शाही सरकार पर ही अवलम्बित रहना पडता था, किन्तु उस वर्ष अग्रेजो और फ्रासीसियो के बीच पुन युद्ध हो जाने पर उत्तरी अमरीकी महाद्वीप की परिस्थितियो मे शीघ्र परिवर्तन हुआ। १७५८ मे लुइसबर्ग का किला अग्रेजो के हाथो मे चला गया। १७५९ मे क्यूबेक पर भी अधिकार कर लिया गया। १९६३ मे पेरिस की सन्धि के अनुसार फ्रास ने कनाडा और केप ब्रेटन द्वीप को अग्रेजो को और फ्लोरिडा को स्पेन को दे दिया। फ्लोरिडा की क्षतिपूर्ति के रूप मे स्पेन को फ्रास से मिस्सीसिपी के पश्चिम लुइसियाना का विशाल प्रदेश और उसके डेल्टा के पूर्व का एक भू-भाग प्राप्त हुआ। फ्रासीसी घेरेबन्दी का खतरा समाप्त हो गया।

अब ब्रिटेन और उसके प्रारम्भिक उपनिवेशो के बीच सम्बन्ध इस बात पर निर्भर करता था कि वह अपने जीते हुए प्रदेशो का निबटारा किस प्रकार करता है और किस ढग से व्यय पूरा करता है। इन दोनो ही समस्याओ का समाधान इस प्रकार किया गया कि अमरीका मे व्यापक असतोप फैल गया। उपनिवेश के वर्तमान सीमा-क्षेत्र और मिस्सीसिपी के बीच भूमि को निबटाने की समस्या विभिन्न उपनिवेशो के परस्पर-विरोधी दावो के कारण और जटिल हो गयी। प्राचीन मानचित्रो मे अनिश्चित रेखाकन होने के कारण विरोधी दावे प्रस्तुत किये गये। स्वय वर्जीनिया ने मिस्सीसिपी तक फैली भूमि के लिए दावा पेश किया। जार्ज वाशिंगटन और लीज जैसे अनेक वर्जीनियावासी वहाँ बसने की योजना बना रहे थे। अन्य भूमि-कम्पनियाँ भी, जिनके अग्रेज और अमरीकी सदस्य थे, इनके लिए अपने-अपने दावो पर जोर दे रही थी। किन्तु ब्रिटिश मन्त्रिगण और अधिक भीतर की ओर बस्तियाँ बसाने की नीति लाभ-

दायक नही समझते थे। वे नोवास्कोशिया और फ्लोरिडा मे ब्रिटिश प्रवासियो को वसाना चाहते थे। उनको भय था कि पश्चिमी अमरीका के प्रवासी न तो लाभप्रद ग्राहक होगे और न अनुशासित प्रजा। वे इसे अच्छा समझ रहे थे कि उसे रेड इडियनो के अधिकार मे छोड दिया जाय और ब्रिटेन की उस नवप्राप्त कनाडियन प्रजा से रोयेदार चमडे के व्यापार को प्रोत्साहन दिया जाय, जिससे उनका अर्थतत्र उनकी घरेलू सस्थाओ की तरह ही ठोस और स्थिर वन रहे।

सन् १७६३ मे पोण्टियाक के नेतृत्व मे रेड इडियन विद्रोह ने यह सिद्ध कर दिया कि साम्राज्य की सरकार ने रेड इडियन खतरे की कल्पना भी नही की थी। उसका तात्कालिक परिणाम अक्तूबर, १७६३ की घोषणा थी, जिसके द्वारा पश्चिमी भूमि औपनिवेशिक गवर्नरो के नियत्रण के वाहर चली गयी और जिसके द्वारा अलेघनी (Alleghany) जल-सीमारेखा के पश्चिम के क्षेत्र मे वस्ती वसाने को निषिद्ध करार दे दिया गया। वास्तव मे, यह एक अस्थायी व्यवस्था थी, ताकि इस वीच एक नयी नीति को कार्यान्वित किया जा सके। नयी नयी वस्तियाँ वसाने की योजनाए थी, जिनसे वाद मे ब्रिटिश सरकार को 'मुक्ति-लगान' (Quit Rent) के रूप मे विशेष आय की आशा थी, किन्तु लन्दन मे मत्रिमडल मे परिवर्तन के कारण कुछ भी न हो सका और अस्थायी व्यवस्था स्थायी वन गयी। इस वीच भूमि कम्पनियाँ अभी भी इगलैण्ड का राज-नीतिक समर्थन प्राप्त करने मे अपनी सारी शक्ति लगा रही थी, यद्यपि वाशिंग-टन ने यह विश्वास करके कि १७६३ का समझौता नही टिकेगा, अपने साथी

केवल इग्लैण्ड के करदाताओ पर पडा है। पोण्टियाक के विद्रोह से उपनिवेशों मे स्थायी सेना रखने की आवश्यकता प्रतीत होती थी और इसमे खर्च भी पडने वाला था। इसके लिए दो कानून बनाये गये। १७६४ के शक्कर कानून द्वारा औपनिवेशिक व्यापार पर नये कर लगाये गये और सीरा की चुंगी मे कमी करके उसकी वसूली के लिए उचित व्यवस्था की गयी। सीरे की चुगी उपनिवेशो के आयात पर एक बहुत बडा भार था। १७६५ के स्टाम्प कानून द्वारा अनेक प्रकार के कानूनी और तिजारती दस्तावेजो पर तथा समाचार-पत्रो, जन्त्रियो, परचो और ताशो पर भी कर लगा दिये गये। उपनिवेशो मे यह महसूस किया गया कि व्यक्तिगत व्यापारियो पर आर्थिक भार के अतिरिक्त, इन कार्रवाइयो से उपनिवेशो मे सिक्को का निरन्तर अभाव और भी बढ जायगा और आयात की गयी वस्तुओ के लिए दाम का भुगतान करना असम्भव हो जायेगा, क्योकि नये करो की आमदनी नकदी के रूप मे ब्रिटेन भेज दी जायेगी और वही खर्च की जायगी। जबकि इन दोनो कानूनो का सभी उपनिवेशो पर प्रभाव पडा, वर्जीनिया को १७६४ के मुद्रा कानून के बारे मे दूसरी ही शिकायत रही। इस कानून से उसके बीजक का व्यवहार बन्द कर दिया गया और युद्ध-काल मे उसने जो बीजक जारी किये थे, उन्हे वापस लेने के लिए विवश होना पडा।

इस तरह की ब्रिटिश नीति ने वर्जीनिया के प्रतिभाशाली नेताओ को जो विधान सभा पर छा गये थे अवसर प्रदान किया प्रतिनिधि-सभा के पुराने नेता स्टाम्प कानून के विरुद्ध आवेदनपत्र भेज कर सन्तोष के साथ बैठे हुए थे। किन्तु अधिवेशन के अन्त तक, मई सन् १७६५ मे, जब सदन मे उपस्थिति बहुत ही कम थी, पेट्रिक हेनरी ने अपने भाषण मे जो अनेक प्रस्ताव पेश किये जिनमे स्पष्ट रूप से घोषणा की गयी थी कि ब्रिटिश सविधान का सिद्धान्त यही है कि चुने हुए प्रतिनिधियो के अतिरिक्त और कोई उन पर कर नही लगा सकता और वर्जीनियानिवासी केवल वही कर देगे जो स्वय उनकी असेम्बली द्वारा लगाये जायेगे। यह भाषण एक प्रकार से देशद्रोहात्मक था। जान, पेटोन रण्डोल्फ और जार्ज वाइथ जैसे प्रतिभाशाली व्यक्तियो ने उग्र भाषा के उपयोग का विरोध किया और अनुरोध किया कि वर्जीनिया ने पिछले वर्ष जो समझौतावादी आवेदन पत्र भेजा था उसके उत्तर की प्रतीक्षा करनी चाहिए। किन्तु आर एच. ली और मुख्यत पीडमोण्ट के सदस्यो के समर्थन से हेनरी अपने सात प्रस्तावो मे से पाच को पारित कराने मे सफल हुए, यद्यपि इनमे से एक बाद मे रद्द कर

दिया गया। उपनिवेश के समाचार-पत्रो मे सातो प्रस्ताव प्रकाशित हुए, मानो वर्जीनिया असेम्बली ने उन्हे पारित कर दिया हो और इस प्रकार क्रान्तिकारी नेताओ की ख्याति उपनिवेशो मे बढ गयी।

बाद की सकटकालीन घटनाओ मे आकर्षण का केन्द्र बगान उपनिवेशो के बजाय न्यू इग्लैण्ड हो गया और अक्तूबर, १७६५ मे न्यूयार्क मे जो स्टाम्प-कानून काग्रेस (एक अन्तर-उपनिवेश-कान्फ्रेन्स) हुई, उसमे वर्जीनिया का कोई प्रतिनिधि नही था। उपनिवेश के प्रबल विरोध और अमरीकी व्यापार से सम्बन्धित लन्दन के व्यापारियो के दबाव के फलस्वरूप स्टाम्प कानून रद्द कर दिया गया। औपनिवेशिक बहिष्कार का उनके व्यापार पर बहुत ही बुरा प्रभाव पडा था। साथ ही साथ एक घोषणात्मक कानून पास हुआ, जिसमे स्पष्ट रूप से उन सिद्धातो का खण्डन किया गया, जिनकी पेट्रिक हेनरी ने घोषणा की थी और सभी मामलो मे चाहे वे कैसे भी हो उपनिवेशो को आबद्ध करने के पार्लमेण्ट के अधिकार पर बल दिया गया। अगले वर्ष पार्लमेण्ट के इरादो को और भी स्पष्ट कर दिया गया। उपनिवेशो के कुछ लेखको ने बाह्य करो द्वारा व्यापार को नियमित करने के पार्लमेट के अधिकार और उपनिवेशो मे आन्तरिक कर लगाने के उसके गलत दावे के बीच जो भेद था उसको स्पष्ट किया था। चार्ल्स टाउनशेण्ड ने इस आधार पर नये आयात-शुल्क लागू किये और इसी आय मे से औपनिवेशिक गवर्नरो और न्यायाधीशो का वेतन और औपनिवेशिक प्रतिरक्षा का व्यय देने की व्यवस्था की गयी। इस प्रकार औपनिवेशिक धारासभाओ के राजस्व को अपने हितो मे खर्च करने के जो राजनीतिक अधिकार थे उन पर गभीर प्रभाव पडा। एक बार फिर, उपनिवेशो मे विरोध की लहर दौड गयी। इस बार मेसाचुसेट्स ने इस मामले मे नेतृत्व किया। जनवरी, १७६८ मे वहाँ की विधानसभा ने नये करो का विरोध करते हुए ब्रिटिश सरकार को एक आवेदन-पत्र भेजा। साथ-ही-साथ उसने अन्य उपनिवेशो का समर्थन प्राप्त करने के लिए उन्हे एक परिपत्र भेजा। २१ मार्च को जब असेम्बली की बैठक हुई तो उसने उस परिपत्र का अनुकूल उत्तर दिया और मेसाचुसेट्स की अपील की पुष्टि करते हुए उसने भी एक परिपत्र भेजा। ब्रिटिश सरकार ने कडी कार्रवाई करने का निर्णय किया और मेसाचुसेट्स असेम्बली को अपना परिपत्र रद्द करने का आदेश दिया गया। जब उसने इन्कार कर दिया तो उसे भग कर दिया गया। १७६७ मे न्यूयार्क असेम्बली के वैधानिक अधिकारो को निलम्बित कर दिया गया, इसका कारण यह था कि उस उपनिवेश ने १७६५ के रसद कानून के अनुसार

सामानो की पूर्ति करने से इन्कार कर दिया। प्रवासियो ने इसे स्वशासन के परम्परागत अधिकार पर एक और कुठाराघात समझा। ब्रिटिश दृष्टिकोण यह था कि स्थानीय प्रतिनिधिमूलक समस्याओ के अस्तित्व से उपनिवेशो मे पार्लमेंट के अधिकार किसी भी प्रकार प्रभावित नही होते। उसका यह अर्थ लगाया गया कि स्वायत्त सस्थाओ को स्वय पार्लमेंट से सत्ता प्राप्त होती है और इस सत्ता को वह कभी भी वापस ले सकती है। नये अमरीकी चुगी-कमिश्नर-मडल की नियुक्ति तथा जहाजी न्यायालयो के अधिकारो मे वृद्धि से इस बात की और भी पुष्टि हो गयी कि ब्रिटिश नीति एक ऐसे साम्राज्य की रचना की दिशा मे कार्य कर रही है जो एक ही केन्द्र से सचालित और प्रशासित हो, इसके लिए स्थानीय हितो एव अधिकारो का कोई महत्व नही दिया जाय।

दूसरी ओर ब्रिटिश कार्रवाइयो के प्रतिरोध के आन्दोलन को सर्वत्र समर्थन नही मिल सका। विरोधपत्रो का ही कोई परिणाम नही निकला। अब आर्थिक बहिष्कार का ही एकमात्र स्पष्ट मार्ग रह गया, क्योकि इससे ब्रिटिश मत्रिमण्डल इग्लैण्ड मे अत्यन्त सकट मे पड सकता था। न्यू इग्लैण्ड और मध्यवर्ती उपनिवेशो के क्रान्तिकारी राजनीतिज्ञो ने इस उद्देश्य के लिए औपनिवेशिक व्यापारियो को सगठित करने का यथाशक्ति प्रयास किया और विशेषकर धनी व्यापारियो के कडे विरोध के बावजूद भी बोस्टन, न्यूयार्क फिलाडेल्फिया तथा अन्य नगरो के व्यापारियो ने मार्च, १७६९ के बीच ब्रिटिश माल के आयात न करने का समझौता किया। अनेक क्रान्तिकारी प्रदर्शन हुए ब्रिटिश अधिकारियो के ही विरुद्ध नही, बल्कि औपनिवेशिक जनता के उन तत्वो के विरुद्ध भी, जो राष्ट्रीय हित के कार्यो मे ढुलमुल से प्रतीत होते थे और मुख्यत क्रान्तिकारी या देशभक्त पत्रो मे इस बहिष्कार को राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप मे प्रस्तुत भी किया गया। वास्तव में, आयात-विरोधी समझौते के कुछ समर्थको की स्पष्ट इच्छा यह थी कि बहिष्कार द्वारा स्थानीय उद्योगो का समर्थन किया जाय ताकि स्वय उपनिवेश ब्रिटेन से आर्थिक रूप से स्वतत्र हो जायँ। यह इच्छा एक ही सयुक्त और आत्मभरित साम्राज्य की कल्पना के इतनी विपरीत थी कि निहित स्वार्थो पर इनका प्रतिकूल प्रभाव पडे बिना न रहा। अन्त मे जो निश्चय किया गया, उसका न केवल उपनिवेशो और मातृभूमि के भावी सम्बन्धो पर प्रभाव पडा, अपितु उसने स्वय उपनिवेशो के भावी आन्तरिक विकास मे पर्याप्त योग दिया। अल्प स्वार्थपरता के आधार पर अनुदारवादियो ने आयात-विरोधी आन्दोलन का विरोध किया। आर्थिक

ातिबन्धो के परिणामस्वरूप अमरीकियो ने अन्त मे इग्लेण्ड के अपने अधिकाश मेत्रो को खो दिया। इन प्रतिबन्धो का समर्थन विशेषत यह कह करके किया गया कि इनमे औपनिवेशिक आत्मनिर्णयता को बल मिलेगा। इन ारिस्थितियो मे ब्रिटिश सरकार को कठोर कार्रवाई करने के लिए आवश्यक समर्थन भी प्राप्त हो गया। इसी प्रकार और भी कड़ी दमनकारी कार्रवाई के लेए ब्रिटिश सरकार को उत्तेजित करने के लिए प्रयास किये गये, उदाहरणार्थ नुगी वसूली मे हस्तक्षेप किया गया। इनके फलस्वरूप उपनिवेशो मे उत्तेजन चरम सीमा तक पहुच गया, किन्तु समझौते के ससदीय समर्थको को निराशा हुई। जिन ब्रिटिश राजनीतिज्ञो ने उपयोगिता के आधार पर सरकारी कार्रवाइयो की अत्यन्त तीव्र आलोचना की थी, उन्होने अपने आन्दोलन का औचित्य सिद्ध करने का प्रयास किया। प्रवासी जितना ही अधिक अपने अधिकारो पर बल देते थे, उनके वास्तविक अभाव-अभियोगो की सुनवाई के लिए अवसर उतना ही कम होता जाता था।

सम्राट को आवेदन पत्र भेजने और ऐसा करने मे उपानिवेशो का साथ देने का हमारा असन्दिग्ध अधिकार है और देशद्रोह सम्बन्धी सभी मुकदमे उपनिवेश के अन्तर्गत ही चलाये जायँ ताकि ब्रिटिश न्यायालयो मे, जैसा कि ब्रिटिश पार्लमेण्ट के हाउस के मसविदे मे रखा गया है उसमे यह भी सुझाव था कि हेनरी अष्टम के काल के उस कानून को जो लवे समय से उपयोग मे नही था उसे फिर से जारी किया जाय। यह भी निश्चय किया गया कि इनमे से अतिम मुद्दे को एक आवेदन पत्र के रूप मे जिसे सम्राट को भेजा जाय तथा सभी प्रस्तावो को अन्य उपनिवेशो की असम्बलियो मे उनकी सहमति के लिए वितरित किया जाय। ब्रिटिश सरकार ने इस खुली चुनौती के परिणामस्वरूप प्रतिनिधि-सभा को ही भग कर दिया जैसी कि पहले से आशका की जाती थी।

विघटित प्रतिनिधि-सभा के अधिकाश सदस्यो की एक सभा खुली जगह मे हुई, जिसमे एक आयात-विरोधी समझौता तैयार किया गया, जो वर्जीनिया असोसिएशन के नाम से प्रकाशित हुआ। इस समझौता-पत्र का प्रारूप जार्ज मेसन ने तैयार किया था, जिस पर जार्ज वाशिगटन, पेट्रिक हेनरी, आर एच ली और स्वय जेफर्सन के भी हस्ताक्षर थे। इससे तात्कालिक गर्मागर्मी का वातावरण ठडा पड गया और सम्राट के प्रति वफादारी की शुभकामनाओ के साथ सभा की कारवाई समाप्त हुई। असोसिएशन का व्यापक रूप से समर्थन किया गया, किन्तु कुछ धनी भू-स्वामियो और व्यापारियो ने, जो अधिकतर ब्रिटिश फर्मो के एजेण्ट थे, इसका विरोध किया। दूसरी ओर आयात बन्द हो जाने से उन वडे वडे बागान-मालिको को मितव्ययिता और छँटनी के लिए उपयुक्त अवसर मिला, जो भारी आर्थिक मन्दी के युग के वाद वहुत-कुछ ऋणग्रस्त हो चुके थे।

प्रतिनिधि-सभा के वाद के चुनाव-परिणामो ने उन सदस्यो के सार्वजनिक समर्थन की पुष्टि कर दी, जिन्होने 'असोसिएशन' स्वीकार किया था और शीघ्र ही इस वात के प्रमाण मिले कि ब्रिटिश सरकार भी समझौने के मार्ग पर चलने को तैयार है। ७ नवम्बर, १७६९ को प्रतिनिधि सभा की वैठक फिर वुलायी गयी और गवर्नर ने सूचना दी कि ब्रिटिश मन्त्रिमण्डल चाय को छोडकर अन्य सभी चीजो पर से टाउनशेड-करो को हटाना चाहता है और राजस्व वढाने के उद्देश्य से अमरीकियो पर और अधिक कर लगाने का इरादा न तो रहा है और न है।

विधान सभा का अधिवेशन २१ दिसम्वर तक चलता रहा और शेप अवधि

मे केवल घरेलू समस्याओ पर विचार किया गया। इससे जेफर्सन को एक प्रस्ताव के समर्थक के तौर पर गुलामो को मुक्त करने सम्बन्धी कमेटी मे काम करने का अवसर मिला। कमेटी गुलामो को मुक्त करने के सुझाव का तीव्र विरोध करनेवाली सिद्ध हुई और उसने तत्सम्बन्धी कानून को उदार बनाने के बजाय उसे और कठोर बनाने का निर्णय किया। निग्रो समस्या पर जेफर्सन को प्रचलित भावना का सामना करने मे विचित्र कठिनाई का अनुभव हुआ।

आगामी तीन वर्ष अपेक्षाकृत शान्ति से बीते। मार्च, १७७० मे बोस्टन मे ब्रिटिश सेनाओ से जो सघर्ष हुआ और जिसे बोस्टन हत्याकाड के नाम से प्रचारित किया गया, उससे व्यापारियो को सर्वत्र विश्वास हो गया कि जनता की उत्तेजनात्मक शक्ति उत्तरोत्तर बढती जा रही है और उनके उचित अभाव-अभियोगो का राजनीतिक उद्देश्यो के लिए दुरुपयोग किया जा रहा है। न्यूयार्क प्रथम उपनिवेश था, जिसने आयात-विरोधी समझौते की निन्दा की और उसे आमतौर पर लागू नही होने दिया गया। टाउनशेड करो को रद्द करने का वादा पूरा किया गया और चाय पर जो कर कायम रखा गया, उसे या तो चुपके-चुपके अदा किया गया या उसे शातिपूर्वक टालने की कोशिश की गयी। १७७२ के वसन्त तक क्रान्तिकारी आन्दोलन मृतप्राय-सा प्रतीत होता था।

किन्तु यह ऊपरी शान्ति और उदारवादियो की विजय एक प्रकार से मायाजाल था। प्रवासियो और ब्रिटिश पार्लमेण्ट के बीच जो सघर्ष प्रारम्भ हो चुका था, वह आर्थिक अभाव अभियोगो से भी अधिक गम्भीर था। निर्णायक समस्या तो राजनीतिक थी अर्थात् उपनिवेशो मे सार्वभौमिकता का क्या स्थान है? जब तक इसका निर्णय नही हो जाता, तब तक स्थायी समझौता नही हो सकता था।

इस समय इन पुस्तको के प्रति अमरीकियो मे जो सामान्य उत्साह था, उसमे उनका हाथ नहीं था और फिर भी उन्होने माण्टेस्क्यू के अनेक प्रमुख सिद्धान्तो के प्रति बाद मे आलोचनात्मक रुख अपनाया।

इस समय जेफर्सन घरेलू आराम और शान्तिपूर्ण अध्ययन का जो जीवन व्यतीत कर रहे थे, उसका राजनीतिक सघर्ष के पुनरारम्भ से शीघ्र ही अन्त हो गया। मेसाचुसेट्स के सैमुएल एडम्स की निर्बाध प्रचारात्मक एव सगठनात्मक गतिविधियो से इसके लिए पृष्ठभूमि तैयार हो गयी थी। सैमुएल एडम्स की पत्रव्यवहार समितियो का उपयोग एक सगठित राजनीतिक दल के निर्माण के लिए किया जा रहा था। यह दल आनेवाले सघर्ष मे औपनिवेशिक सरकार और ऐसे निहित स्वार्थी तत्वो से निपटने को तैयार था जो आन्दोलन मे समुचित भाग नही ले रहे थे।

जून, १७७२ मे रोड आइलैण्ड तट से परे एक चुगी उगाहने वाले जलपोत के विनाश की प्रथम प्रत्यक्ष दुर्घटना घटी। इसके परिणामस्वरूप सन्दिग्ध व्यक्तियो का पता लगाने और उन पर मुकदमा चलाने के उद्देश्य से उन्हे इग्लैण्ड स्थानान्तरित करने की व्यवस्था करने के लिए एक विशेष आयोग नियुक्त किया गया, किन्तु यह काम ऐसा था जिसे उपनिवेशो की जनता के तनावपूर्ण रुख के कारण पूरा नही किया जा सका।

१७७२ मे जेफर्सन प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन मे सम्मिलित होने में असफल रहे, किन्तु ४ मार्च, १७७३ को जब उसका दूसरा अधिवेशन आरम्भ हुआ तब उन्होने अपना स्थान पुन ग्रहण किया।

उन्होने शीघ्र ही प्रतिनिधि सभा के उग्रवादी पक्ष के सक्रिय नेताओ मे अपना स्थान बना लिया और इसीलिए १२ मार्च को जो प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया, उसमे उनका भी हाथ था। इस प्रस्ताव मे एक स्थायी पत्रव्यवहार और जाँच-समिति की नियुक्ति की व्यवस्था थी। समिति के ग्यारह सदस्यो की सूची मे जेफर्सन का नाम अन्तिम था। इस समिति ने प्रतिनिधि-सभा के निर्देश पर कार्य किया। उसने अन्य उपनिवेशो की प्रतिनिधि सभाओ को पत्र भेज कर अपने परम्परागत कानूनी और सावैधानिक अधिकारो पर जो सकट पैदा होने वाला था उस ओर अपनी चिंताए व्यक्त की और सुझाया कि अन्य प्रतिनिधि-सभाए भी इसी प्रकार की समितियाँ नियुक्त करे। इस अवसर पर गवर्नर की प्रतिक्रिया उतनी उग्र नही रही और अधिवेशन ग्यारह दिनो तक और चलता रहा। फिर सदन की बैठक अनिश्चित कालके लिए स्थगित कर दी गयी और ५ मई

१७७४ के पूर्व पुन नही बुलायी गयी।

उस समय तक अमरीकी राजनीतिक आकाश मे सघर्ष के वादल छा गये थे। ब्रिटिश सरकारने चाय-कर को कार्यान्वित करने तथा शक्तिशाली ईस्ट इडिया कम्पनी को उसके आर्थिक सकट से मुक्ति पाने मे सहायता करने के प्रयास मे एक नया कानून पास किया, जिसके द्वारा अमरीका को पुर्ननिर्यातित चाय पर सारा चुगी कर माफ कर दिया गया और स्वय कम्पनी को प्रत्यक्ष व्यापार करने की अनुमति दी गयी। इससे अमरीकी व्यापारियो के लिए खतरा उत्पन्न हो गया और कर के वावजूद भी चाय के लिए खरीददार मिलने की सम्भावना तो थी ही। इसके फलस्वरूप डच तस्कर व्यापारियोको अपनी चाय कौडियो के भाव वेचना पडता। फलस्वरूप तस्कर व्यापारी, व्यवसायी और उग्रवादी देशभक्त इस सामान्य दृढ निश्चय मे एकसाथ जुट गये कि चाय के आयात को वोस्टन में वलात् रोकना चाहिए।

क्रातिकारियो (Radical) द्वारा गवर्नर थामस हचिन्सन का पत्रव्यवहार प्रकाशित कर दिये जाने से पहले ही से तीव्र असन्तोप फैला हुआ था। इस पत्रव्यवहार मे कुछ ऐसी वातें थी, जो अमरीकी स्वाधीनता के लिए खतरनाक थी। इसीलिए वोस्टन ने नेतृत्व की वागडोर अपने हाथ मे ली। १६ दिसम्वर, १७७३ को रेड इडियनो के भेष मे देशभक्तो के एक दल ने वोस्टन वदरगाह मे तीन जहाजो से आयातित चाय को छीन कर पानी मे फेक दिया। 'वोस्टन टी पार्टी' का अनुकरण अन्य वन्दरगाहो मे भी किया गया। ब्रिटिश सरकार की सत्ता के लिए यह घटना स्पष्टत खुली चुनौती के रूप मे थी। यह ऐसी चुनौती थी जिसकी उपेक्षा नही की जा सकती थी और इग्लैड के लोग भी चाहते थे कि सरकार उसकी उपेक्षा न करे। १५ मार्च, १७७४ को ब्रिटिश

अध्याय–३

अमरीकी स्वतन्त्रता

(१७७४—१७७६)

'वोस्टन टी पार्टी' के साथ जिन नाटकीय घटनाओ का सिलसिला आरम्भ हुआ और जिनका अत स्वतन्त्रता की घोपरणा के साथ हुआ, वे इतनी सामान्य थी कि कोई अत्यन्त सतर्क इतिहासकार भी कल्पना नही कर सकता था कि १८ वी शताब्दी के अन्तिम चतुर्थाश के आरम्भ में ही ये उपनिवेश ग्रेट ब्रिटेन से पूर्णतया अलग हो जायेगे और एक नये अमरीकी राष्ट्र का जन्म होगा। क्रान्ति का जो स्वरूप समकालीनो की आँखो के सामने आया, उस समय इतना अस्वाभाविक और शकास्पद था जितना बाद मे उसका वृत्तान्त पढने से वह इतना जटिल और शकास्पद नही लगता है।

अमरीकी रगमच पर जिस प्रकार कई घटनाए घटी और घटनेवाली थी, अमरीकी क्रान्ति के सामने उनका कोई उदाहरण नही है। पहले भी अत्याचारियो के विरुद्ध जन-विद्रोह हो चुके थे और जान रशवर्थ ने जिन ग्रन्थो मे चार्ल्स प्रथम के विरुद्ध युद्ध के अभिलेख सग्रहीत किये थे, उनका अध्ययन उन लोगो ने वडी गम्भीरता से किया, जो सावैधानिक दृष्टान्तो की खोज मे थे। प्रथम अमरीकी युद्धपोत का नाम ओलिवर क्रामवेल रखना भी कुछ अर्थ अवश्य रखता है। पहले की विद्रोहजनित हलचले अभाव-अभियोगो को दूर कराने तथा एक राज्य के अन्तर्गत सुधरी हुई शासन-प्रणाली की स्थापना के लिए की गयी थी। जहा कही भी विद्रोह किसी विदेशी अत्याचारी के विरुद्ध हुआ था, जैसा कि स्पेन के फिलिप द्वितीय के विरुद्ध डच विद्रोह, वहा विद्रोही सदा ही नये सिरे से थोपी गयी दासता के विरुद्ध पुरानी स्वाधीनता और स्वशासन की भावना से प्रेरणा पाया करते थे।

किन्तु इस मामले मे अमरीकी एक ऐसे मार्ग पर जा रहे थे जिसका मार्ग निर्धारण पहले कभी भी नही हुआ था। उनकी कोई राजनीतिक स्थिति नही थी और वे एक प्रवल और सफल साम्राज्य के अतर्गत विशिष्ट समुदायो के सदस्य मात्र थे। जिन समुदायो से उनका सम्वन्ध था, उनकी मिल कर काम करने की कोई परम्परा नही थी और उस समय सचार-साधनो के अभाव मे उनके परस्पर घनिष्ठ सपर्क मे आने की सम्भावना भी नही थी। यह सत्य है कि उनकी

सख्या हाल ही मे बहुत बढ गयी थी और जेफर्सन के जन्म के समय से कदाचित् दुगुनी हो गयी थी। १७७० मे कुल जनसख्या लगभग २२ लाख थी और एक दशक बाद लगभग २७ लाख ८० हजार हो गयी थी। इन दस वर्षों मे वर्जीनिया की आबादी पाच लाख से अधिक हो चली थी और पेनसील्वानिया, मेसाचुसेट्स तथा उत्तरी कारोलिना की आबादी तीन लाख तक पहुँच गयी थी। किन्तु १७८० मे भी मेरीलैण्ड की जनसख्या मुश्किल से ढाई लाख के करीब रही होगी और न्यूयार्क तथा कनेक्टिकट की आबादी केवल दो लाख थी। इन समुदायो की वास्तविक शक्ति का अनुमान लगाते समय इस बात को भी ध्यान मे रखना चाहिये कि क्रान्ति के समय २५ लाख अमरीकियो मे पाच लाख नीग्रो गुलाम थे और वर्जीनिया मे तो कुल आबादी के चालीस प्रतिशत नीग्रो दास थे।

इन उपनिवेशो मे ऐसे नगरो की सख्या बहुत ही कम थी, जिनसे सार्वजनिक उद्देश्यो के लिए राजनीतिक चेतना तथा सक्रिय सहयोग की भावना को प्रोत्साहन मिल सके। १७७४ मे केवल पाच ऐसे अमरीकी नगर थे जिनकी आबादी १२ हजार से अधिक थी, फिलाडेलफिया की आबादी ४० हजार थी और औपनिवेशिक अमरीका का वह बौद्धिक तथा व्यापारिक केन्द्र था, न्यूयार्क की जनसख्या २५ हजार से ३० हजार तक थी, बोस्टन की २० हजार तथा चार्ल्सटन और न्यू पोर्ट मे से हर एक की लगभग १२ हजार। दक्षिण के दूसरे सबसे बडे नगर बाल्टीमोर की आबादी लगभग ६ हजार थी। न तो वर्जीनिया और न उत्तरी कारोलिना ही इतना बडा होने का दावा कर सकते थे। पाचो प्रमुख नगरो मे शहरी और ग्रामीण समुदाय की मिलीजुली अद्भुत आबादी थी और चार्ल्सटन के अतिरिक्त सभी नगरो के अधिकाश निवासी अपनी जीविका के लिए ग्रेट ब्रिटेन के साथ व्यापार पर अवलम्बित थे। इस सम्बन्ध मे बोस्टन पोर्ट विधेयक के रचयिताओ का अनुमान सही ही था।

इसके अतिरिक्त, औपनिवेशिक समाज के आर्थिक ढाचे पर राजनीतिक अधीनता का बहुत ही कम प्रभाव पडा था, जैसा कि स्वतत्रता के प्रारम्भिक वर्षो के आर्थिक इतिहास से प्रकट होता है। अमरीकी उपनिवेश स्वय ग्रेट ब्रिटेन को कच्चा माल दिया करते थे और उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रो के लिए खाद्यान्न तथा अन्य सामग्री की पूर्ति किया करते थे। इसका कारण यह था कि आबादी बहुत कम थी। पूंजी तथा उसको सग्रहित करने तथा सचालित करनेवाली सस्थाओ का नितात अभाव था और आर्थिक मामलो मे लोग पुराने ढर्रे पर ही चल रहे थे। अमरीकियो ने वास्तव मे ग्रेट ब्रिटेन की उस महान प्रगति की

उपेक्षा ही की, जो उसने कृषि एव औद्योगिक तत्र मे प्राप्त की थी। राजनीतिक स्वतत्रता की प्राप्ति मात्र से अमरीकी आर्थिक स्थिति की इन कमजोरियो को न दूर किया जा सकता था और न किया ही गया। सच पूछा जाय तो साम्राज्य से निकल जाने से उपनिवेशो की आर्थिक कठिनाईयाँ कुछ बातो मे घटने के बजाय निश्चय ही बढ गयी। अन्य देशो के साथ मुक्त व्यापार से वचित होने का एक मात्र कारण ब्रिटेन की व्यापारिक नीति नही थी, फ्रास और स्पेन के प्रतिद्वन्द्वी साम्राज्यो मे आर्थिक नीति और भी कठोर और प्रतिबन्धात्मक थी।

उपनिवेशो मे ब्रिटिश सरकार ने अतर्वर्ती प्रदेशो मे बस्तियो के विस्तार पर जो रोक लगायी थी उसे उचित ही कहा जा सकता है क्योकि रेड इडियनो का खतरा था और उनसे सामना करने के लिए इन प्रवासियो को सदा ही अपने सीमित साधनो व शस्त्रो पर निर्भर रहना पडता था और उपनिवेशो को इन पर काबू पाने मे बडी कठिनाई होती थी।

यही कारण है कि क्रान्ति के कारणो का विश्लेपण करते समय कथित आर्थिक अभाव-अभियोगो को उसका आधार नही ठहराया जा सकता। अनेक समकालीन इतिहासज्ञो के अनुसार, समझौते के पक्ष मे भी आर्थिक तर्क उतने ही प्रबल थे, जितने विरोध के पक्ष मे। यह कहना कि, व्यापारियो ने अधिक बाजारो की प्राप्ति के लिए और बडे बडे भूस्वामियो ने अपने ऋण के भार से मुक्त होने के लिए बगावत की, स्थिति के महत्वपूर्ण पहलुओ तथा अन्य क्रान्तिकारी आन्दोलनो के अध्ययन से प्राप्त शिक्षा की अवहेलना करना है।

हममे से जिन लोगो ने यूरोप और बाहरी जगत के राष्ट्रीय आन्दोलनो के विकास और उनकी सफलताओ को अपनी आँखो देखा है, उन्हे यह स्मरण कराने की आवश्यकता नही कि राजनीतिक सगठन के बन्धन के रूप मे आर्थिक अथवा राजनीतिक स्वार्थो के बन्धन कितने कमजोर होते है। जान पडता है कि प्रत्येक समाज के जीवन मे ऐसा समय आता है जब उसमे इतनी पर्याप्त मनोवैज्ञानिक आत्मनिर्भरता की भावना पैदा हो जाती है कि पराधीनता की कल्पना ही असह्य हो उठती है, कम से कम एक सजग और सक्रिय अल्पसख्यक समुदाय के लिए, और कार्रवाई के साधनो के रूप मे युग के राजनीतिक सिद्धान्त नया अर्थ ग्रहण कर लेते है। यदि ऐसे अल्पसख्यक समुदाय को दृढ नेतृत्व प्राप्त हो जाय तो बहुमत के सकोच की उपेक्षा की जा सकती है और शारीरिक हिंसा की धमकी से सक्रिय विरोध को भी दबाया जा सकता है। इस प्रकार

का नेतृत्व इतना चतुर अवश्य होगा कि वह समाज के आन्तरिक क्षोभ से अपना लाभ उठाने के लिए अनुदारवाद की सज्ञा समाज मे विशेपाधिकार प्राप्त तत्वो से देगा तथा विशेपाधिकारी तत्वो को प्रतिक्रियात्मक शक्ति ठहरायेगा और प्रतिक्रियात्मक तत्वो का अर्थ राष्ट्रीय हित के प्रति देशद्रोही समाज के रूप मे प्रस्तुत करेगा।

इस राजनीतिक प्रवचना के भाष्यकारो मे अमरीकी क्रान्ति के नेता भी प्रथम कोटि मे आते है। इनमे वर्जीनिया और मेस्साचुसेट्स पूर्णतया भिन्न दो समाजो के नेता थे, जिन्होने आपस मे मिलकर काम किया। उपनिवेशों की भौगोलिक बाधाओ के वावजूद उन्होने क्रान्तिकारी आन्दोलन के गठन मे जिस शीघ्रता से अपूर्व सफलता प्राप्त की वह आश्चर्यजनक है। उनकी इस सफलता का प्रमुख कारण यह है कि वे स्वयं उन समुदायो के सक्रिय सदस्य थे जो अपने सीमित और सकीर्ण दायरे मे आत्मनिर्भरता और स्वशासन के वास्तविक शिक्षालय थे। राजनीतिक कूटनीतिज्ञता और सुव्यवस्थित शासन-संचालन उनके लिए कोई अनोखी चीज नही थी। यद्यपि उन्होने अपने राजनीतिक विरोधियो पर दवाव डाले और ज्यादतियाँ भी की, तथापि अमरीकी क्रान्ति के इन नेताओ ने अपना अथवा अपने अनुयायियो का नियत्रण कभी नही खोया। दूसरी बात उनकी सफलता के बारे मे यह है कि उन्होने जिस राजनीतिक विचारधारा के अनुसार साम्राज्य के विरुद्ध हथियार उठाना तर्कसंगत ठहराया, उसके प्रति अधिकाश लोगो का आकर्पण था। जेफर्सन के प्रसिद्ध जीवन-चरित्र-लेखक फ्रामिस डब्लू हर्स्ट जैसे कुछ तत्कालीन ब्रिटिश इतिहासकारो ने लिखा है कि ग्रेट ब्रिटेन के विरुद्ध इस तरह की शत्रुता, जो उस युग के अमरीकी अभिलेखो से अभी भी प्रकट होती है, अनुचित थी, क्योकि सभी बातो को देखते हुए समूची ब्रिटिश जनता अमरीकी हितो के विरुद्ध नही थी। इस प्रश्न पर जार्ज तृतीय और लार्ड नार्थ ने ब्रिटिश समाज के उन अधिकांश तत्वो का प्रतिनिधित्व किया था जो १८वी शताब्दि की पार्लमेण्ट मे छाये हुए थे। जसा कि हमने देखा है, एक वार सार्वभौमिकता की समस्या के उग्ररूप धारण कर लेने पर उसे स्वीकार करना प्राय असम्भव हो जाता था। उग्र मत वाले, जिनकी अमरीकी क्रान्ति के प्रति सहानुभूति थी, अल्पसख्यक थे, फिर भी उनका प्रभाव नगण्य न था। ब्रिटिश परपराओ के भविष्य के लिए निश्चय ही यह बात महत्वपूर्ण है कि उनके अप्रतिनिधिमूलक रूप की आलोचनाएँ की गयी, तार्किक आधार पर उनके अधिकारपत्रो की छानबीन की गयी और राजनीतिक उत्तरदायित्व

की दुहाई देकर उनके परम्पराधिकारो को ठुकरा दिया गया। जब हम टाम पेन की अपेक्षा बर्क का अध्ययन करते हैं तो उसका कारण ऐतिहासिक न होकर साहित्यिक होता है। समस्त यूरोपीय महाद्वीप पर और विशेषकर फ्रास पर अमरीकी क्रान्ति का महत्वपूर्ण बौद्धिक प्रभाव पडा।

ब्रिटिश साम्राज्य के दूरवर्ती उपनिवेशो मे इन घटनाओ की गहरी प्रतिक्रियाए हुई। इसका एक कारण तो यह था कि प्रवासियो ने अपने युद्ध का वह भाग जीत लिया, जिसे सही शब्दो मे अमरीकी स्वातत्र्य युद्ध कहा जा सकता है, दूसरा कारण यह था कि उन्होने अपने मामले को विश्व के समक्ष बडे ही सुन्दर ढग से रखा। प्रथम तथ्य के लिए अर्थात् विजय के लिए वे जार्ज वाशिङ्गटन की सैनिक एव राजनीतिक योग्यताओ के तथा फ्रास के आकस्मिक समर्थन के ऋणी थे, और दूसरे तथ्य के लिए वे मुख्यत एक दूसरे वर्जीनियन थामस जेफर्सन के ऋणी थे। मई, १७७४ मे वर्जीनिया की प्रतिनिधि-सभा के अधिवेशन के साथ जेफर्सन के राजनीतिक एव बौद्धिक प्रशिक्षण-काल का अन्त हो जाता है और आगामी दो वर्षो मे उन्हे अपने राजनीतिक कार्य की क्षमता तथा अपनी प्रचारात्मक योग्यता का परिचय देने का पर्याप्त अवसर मिला।

प्रतिनिधि-सभा की प्रारम्भिक बैठको मे कोई विशेष बात देखने मे नही आयी और सदन का साधारण काम-काज बडी शान्ति से सम्पन्न हुआ। बोस्टन बन्दरगाह कानून के समाचार ने मानो क्रान्ति आरम्भ करने की कार्रवाई के लिए सकेत कर दिया। पहले की तरह ही जेफर्सन, पेट्रिक हेनरी, रिचर्ड हेनरी ली तथा कुछ अन्य लोगो के क्रान्तिकारी गुट ने इस बात पर जोर दिया कि वर्जीनिया को मेस्साचुसेट्स का साथ देना चाहिए। यह तो स्पष्ट है कि वर्जीनिया के अधिकाश लोगो के लिए दूरवर्ती न्यू इग्लैण्ड वालो के साथ सम्मिलित हित की बात किसी भी प्रकार समझ मे नही आने वाली थी। उन्हे यह समझाना आवश्यक था कि बोस्टन के विरुद्ध जो दडनीय कार्रवाइया की गयी है, वे अमरीकी स्वाधीनता के उन्मूलन के साधारण षडयत्र का अगमात्र हैं। इसके लिए एक उपाय सोचा गया, जिसके लिए जेफर्सन भी कुछ न कुछ जिम्मेदार थे। प्रतिनिधि-सभा के मच का प्रचार के साधन के रूप मे उपयोग किया गया और एक दिन व्रत और प्रार्थना की घोषणा की गयी। प्रतिनिधि-सभा के एक अनुदारवादी सदस्य और धार्मिक समिति के अध्यक्ष राबर्ट निकोलस कार्टर को आवश्यक प्रस्ताव प्रस्तुत करने के लिए समझाया

गया और प्रस्ताव तत्काल पारित हो गया। यद्यपि इस प्रस्ताव मे किसी भी प्रकार का क्रान्तिकारी पुट नही था, फिर भी गवर्नर इस चुनौती की उपेक्षा नही कर सकता था और उसने २६ मई को प्रतिनिधि-सभा को भग कर दिया।

१७६९ की प्रणाली पुन अपनायी गयी। प्रतिनिधियो की एक बैठक रैले टैवर्न मे हुई और ब्रिटेन के साथ व्यापार को सीमित करने के लिए एक नया प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। उन्होने यह भी प्रस्ताव रखा कि सभी उपनिवेशों के प्रतिनिधियो की एक सामान्य सभा ५ सितम्बर को फिलाडेल्फिया मे बुलायी जाय और भावी कार्रवाई पर विचार किया जाय। इस बीच वर्जीनिया मे इस सभा के लिए अपना प्रतिनिधि चुनने और भावी कार्रवाई के सम्बन्ध में उन्हे निर्देश देने के लिए एक विशेष सम्मेलन बुलाया गया।

१ जून को प्रार्थना-दिवस मनाया गया और उसका अनुकूल प्रभाव पडा। नये सम्मेलन मे पुरानी प्रतिनिधि सभा के सदस्य रखे गये जो अपनी अतीत की कार्रवाइयो के लिए जनता के समर्थन का दावा कर सकते थे और भविष्य के लिए समादेश प्राप्त कर सकते थे।

अल्बेमार्ले काउण्टी के लिए जेफर्सन स्वय चुने गये। चुनाव के लिए निर्वाचको ने कई प्रस्ताव स्वीकृत किये, इन प्रस्तावो की भाषा शैली और शब्दो के चयन को देखते हुए सन्देह नही रह जाता कि उनके रचयिता स्वय जेफर्सन थे। वास्तव मे राजनीतिक समस्याओ की पहुंच के बारे मे जेफर्सन की यह विशेषता थी कि प्रस्तावो का आरम्भ सामान्य सिद्धान्तो के एक वक्तव्य से होता था जो वास्तविक विषय से भी अधिक दूरगामी होता था—"निश्चय किया कि ब्रिटिश अमरीका के कई राज्यो के निवासी उन कानूनो के अधीन हैं, जिन्हे उन्होने अपने प्रथम प्रवास मे अपनाया तथा उन कानूनो के भी अधीन है, जो उनकी स्वीकृति से स्थापित और मनोनीत उनकी प्रतिनिधि-सभाओ द्वारा समय-समय पर बनाये गये। यह कि दूसरी किसी भी प्रतिनिधि-सभा को उन पर अपनी सत्ता जमाने का कोई अधिकार नही है और यह भी कि ये अधिकार उन्हे मानव जाति के सामान्य अधिकारो के रूप मे प्राप्त है, जिनकी पुष्टि उन्हे प्राप्त राजनीतिक सविधानो द्वारा तथा सम्राट के कतिपय समझौता-पत्रो द्वारा भी हुई है।"

इसलिए, जेफर्सन के लिए यह आवश्यक नही था कि वे अपने तर्क को औपनिवेशिक अधिकार-पत्रो तथा आदर्शो की कानूनी व्याख्या तक सीमित रखते। स्वशासन के लिए प्रवासियो के दावे का आधार अपनी स्वीकृति से

शासित होने के मानव के अधिकार मे निहित है। अमरीकी उपनिवेशो, अथवा जेफर्सन के शब्दो मे, अमरीकी प्रदेशो की स्वाशासित सस्थाओ के वैधानिक स्वरूप इन प्राकृतिक अधिकारो का समर्थन और पुष्टि करते है। तर्क का यह उच्च स्तर इस प्रकार था —

"निश्चय किया गया कि उनके इन प्राकृतिक एव वैधानिक अधिकारो पर ग्रेट ब्रिटेन की पार्लमेट ने आक्रमण किया है और मेसाचुसेट्स खाडी के प्रान्त मे बोस्टन नगर के निवासियो के व्यापार को छीनने के लिए हाल ही मे एक कानून पास करके उसने विशेष रूप से ऐसा किया है, यह कि इस प्रकार अवैधानिक सत्ता ग्रहण करना साधारणतया ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकारो के लिए खतर-नाक है और उसे उसके (साम्राज्य के) सम्मिलित हित के रूप मे समझा जाना चाहिए, और यह कि जब, जहाँ और जिस किसी द्वारा भी इस प्रकार के उनके सांविधानिक अधिकारो पर आक्रमण होगा, हम उनके पुनस्सस्थान और आश्वा-सन के लिए ईश्वर-प्रदत्त अपने सभी अधिकारो के उपयोग मे हम साम्राज्य के किसी भी भाग मे अपने सहयोगी जनो का साथ देने के लिए सर्वदा तत्पर रहेगे।"

प्रस्तावो मे इस बात का जोरदार समर्थन किया गया था कि यदि बोस्टन-बन्दरगाह कानून और उसके साथ ही अमरीकी व्यापार पर कर अथवा प्रतिबध लगानेवाले तथा आन्तरिक उत्पादनो का निषेध अथवा नियन्त्रण करनेवाले कानून रद्द नही कर दिये जाते तो ग्रेट ब्रिटेन के साथ पूर्ण सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया जाय।

अकस्मात् बीमार पड जाने से स्वय जेफर्सन वर्जीनिया-सम्मेलन मे उपस्थित नही हो सके और न फिलाडेलफिया मे उपनिवेश का प्रतिनिधित्व करने के लिए नियुक्त सात प्रतिनिधियो मे उनका नाम ही रखा गया। किन्तु उनकी विचार-धारा के उपेक्षित होने का खतरा नही था, क्योकि उन्होने अपने वक्तव्य की दो प्रतिया भेजी थी, जो उनकी इच्छा थी कि साधारण काग्रेस के प्रतिनिधियो द्वारा निर्देश के रूप मे स्वीकार किया जाय। यद्यपि इस प्रस्ताव की ओर सम्मेलन का ध्यान आकृष्ट नही किया गया, तथापि एक निजी बैठक मे पेटोन रन्डोल्फ ने उसे पढ कर सुनाया।

अल्बेमार्ले-प्रस्तावो की भाँति, प्रस्तावित निर्देशो का रूप उससे भी कही अधिक उग्र हो गया, जिस रूप मे वे वर्जीनिया अथवा अन्य उपनिवेशो मे सामा-न्यत. स्वीकृत हुए थे, क्योकि अधिकाश लोग अभी भी कर थोपने के अतिरिक्त

सभी मामलों में पार्लमेंट की सत्ता स्वीकार करने को तथा साम्राज्य के हितार्थ साधारण कानून के अंतर्गत उसके अधिकार को स्वीकार करने को तैयार थे। प्राकृतिक अधिकारों का तर्क इतना साहसपूर्ण और राजनीतिक विचारविमर्श के सामान्य क्षेत्र में इतना दूर था कि उपनिवेश के दावों के आधार के रूप में उसे तुरन्त स्वीकार नहीं किया जा सकता था। फिर भी, यह दस्तावेज 'ब्रिटिश अमरीका के अधिकारों पर संक्षिप्त दृष्टिकोण' के नाम से मुद्रित हुआ। लेखक का नाम नहीं दिया गया, किंतु उसे छिपाने का भी प्रयास नहीं किया गया और यह कहा जा सकता है कि उसके प्रकाशन के दिन से जेफर्सन की राष्ट्रीय ख्याति बढ़ गयी।

प्रकाशन के समय को देखते हुए 'संक्षिप्त दृष्टिकोण' वास्तव में एक महत्व-पूर्ण दस्तावेज प्रतीत होता है। इससे सिद्ध होता है कि जेफर्सन का राजनीतिक दर्शन कितना दृढ़ हो चुका था और वे अपने राजनीतिक अध्ययन को किस रूप में क्रियान्वित करने जा रहे थे। राजतन्त्र के रूप और मूल, उसकी समुचित मर्यादाएं, शासनतन्त्र के लिए आपसी नियमन और इस प्रकार पृथक होने और विद्रोह के अधिकारों को सिद्ध करने के प्रयास में प्राचीन, मध्ययुगीन और अर्वाचीन इतिहास के व्यापक सिद्धान्तों को इसमें प्रस्तुत किया गया है।

किये है, जिससे प्रशासन के विशाल तंत्र को, जो जनता के उपयोग के लिए है, उन्हे सहायता मिल सके, फलस्वरूप उन पर जनता का निर्देशन भी है।

असाधारण रूक्षता से व्यक्त किये जाने पर भी सीमित राजतत्र की यह भावना वास्तव मे उन व्हिग-सिद्धान्तो से परे नही जाती, जो १६८८-८९ की क्राति के समय से इग्लैड मे प्राय. स्वीकार किये गये थे।

जब जेफर्सन उपनिवेशो के साथ इगलैण्ड के सम्बन्धो पर विचार करते हैं तब उनकी शानदार स्थिति स्पष्ट हो जाती है, क्योकि अमरीका मे ब्रिटिश उपनिवेशो की स्थापना स्वतत्र अग्रेजो ने स्वदेश-त्याग एव सार्वजनिक सुख-समृद्धि को प्रोत्साहित करनेवाले विधि-विधानो के अन्तर्गत नये समाज की स्थापना के अपने प्राकृतिक अधिकार का उपयोग करके की थी। 'सुख-समृद्धि ही सरकार का उद्देश्य है', यही एक नयी बात थी। इस उपनिवेशीकरण-अभियान की समरूपता जेफर्सन को ब्रिटेन की ऐग्लो-सेक्सन विजय मे मिली। अमरीका के प्रवासी इग्लैण्ड के निवासियो के प्रति राजनीतिक आस्था के लिए उसी प्रकार बाध्य नही थे, जिस प्रकार से इगलैण्ड के निवासी ऐंग्लो-सेक्सनो के मूल देशो के शेप निवासियो के प्रति बाध्य नही थे। ब्रिटिश पार्लमेण्ट ने इन उपनिवेशो को विदेशी शत्रुओ से रक्षा करने मे जो कुछ सहायता की थी, उसके कारण वह इनपर अपने राजनीतिक प्रभुत्व का दावा नही कर सकती थी। क्योकि इसकी पूर्ति उन्होने अधिकाश व्यापारिक विशेपाधिकार ग्रहण करके पूरी कर ली। जान एडम्स और जेम्स विल्सन की भाँति जेफर्सन का भी यही विचार था कि अमरीकी उपनिवेशो और ब्रिटेन के बीच वर्तमान सबन्ध अनुबन्धात्मक है न कि राजा-प्रजा का-सा।

"अमरीका के जगलो मे इस प्रकार बस जाने के बाद प्रवासियो ने ऐसी विधि-प्रणाली अपनाना उचित समझा, जिसके अन्तर्गत वे अभी तक अपनी मातृभूमि मे रह रहे थे और उन्होने ब्रिटेन के साथ अपने सम्बन्धो को एक ही सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा कायम रखते हुए, जारी रखना उचित समझा, जो इस प्रकार बहुविस्तृत साम्राज्य के विभिन्न भागो को मिलाने मे केन्द्र-बिन्दु का काम करता था।"

दूसरे शब्दो मे, साम्राज्य के विभिन्न समुदाय राजनीतिक स्तर मे समान थे और एक ही सम्राट के प्रति अपनी निष्ठा द्वारा ही परस्पर सम्बन्धित थे। १५० वर्ष पूर्व लार्ड बेलफोर ने १७२६ के साम्राज्यीय सम्मेलन के लिए ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के स्वशासित उपनिवेशो के पद की प्रख्यात परिभापा तैयार की

थी, जिसे बाद मे वेस्टमिन्स्टर के नियमो मे सम्मिलित कर लिया गया। जेफर्सन ने वस्तुत उसी सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। राजनीति की प्रमुख समस्याओ के उस समय के स्वरूप तथा उनके समाधान के अपेक्षाकृत तग दायरे का यह एक रोचक उदाहरण है।

इस दृष्टिकोण से यह सम्भव था कि ब्रिटिश पार्लमेण्ट के कानूनो को, जिनके बारे मे अमरीकियो को शिकायत थी कि ये अधिकारसम्बन्धी कानून उस मण्डल द्वारा जारी किये गये है, जो उनके सविधानो के अनुसार विदेशी है साथ ही सम्राट से यह आशा और की गयी कि वे ब्रिटिश साम्राज्य के अनेक राज्यो के बीच अभी भी एकमात्र मध्यस्थ-शक्ति के तौर पर उन कानूनो को रद्द करे। जेफर्सन ने स्वीकार किया है कि राजा के हाथ मे प्रत्येक राज्य के कानूनो की कार्यपालक शक्ति होती है, किन्तु ये कानून एक विशेष राज्य के कानून होते है, जिनका पालन उसी राज्य के अन्तर्गत होता है और एक राज्य का कानून दूसरे राज्य की सीमा के अन्तर्गत लागू नही हो सकता।

जिस भाषा का अमरीकी उपयोग कर रहे है, वह स्वतत्र लोगों की वाणी है जो उन्हे प्रकृतिदत्त अधिकारो से प्राप्त हुई है न कि किसी सम्राट या चीफ मैजिस्ट्रेट से उपहाररूप मे मिली है। जेफर्सन ने घोषणा की कि "राजा जनता के सेवक होते है न कि स्वामी। जार्ज तृतीय को स्वय अमरीका के मामले मे सोचना और कार्य करना पडेगा, क्योकि उनके पास अमरीकी सलाहकार नही है, किन्तु इसमे कोई कठिनाई नही होनी चाहिए, क्योकि शासन की पूर्णता उनकी ईमानदारी मे निहित है। यह एक महत्वपूर्ण पद है जो उन्हे सौभाग्य से प्राप्त हुआ है और उन्हे एक महान और सुगठित साम्राज्य को सतुलित रखना है। न्यायपूर्ण व्यवहार से साम्राज्य भर मे एकता और भाई-चारे की स्थापना होगी।"

सम्राट की इस प्रवृत्ति ने स्पष्ट बता दिया कि उन्होने स्थायी अमरीकी हितो की उपेक्षा करके समुद्री दस्युओ को तात्कालिक लाभ पहुँचाने के लिए इस कुख्यात प्रथा को जारी रखकर मानवीय अधिकारो पर गभीर चोट पहुँचायी है। उनके अन्य दावो का आधार भी प्रकृति ही थी। इस प्रकार जेफर्सन के अनुसार, अमरीकी प्रवासियो को विश्व के सभी भागो के साथ प्राकृतिक अधिकार के रूप में स्वतन्त्र व्यापार करने का अधिकार था।

न्यूयार्क प्रतिनिधि-सभा के स्थगन पर प्रकाश डालते हुए उन्होने घोषणा की कि यहा सम्राट की प्रजा के गले के नीचे यह बात उतारने के लिए कि उनका राजनीतिक अस्तित्व ब्रिटिश पार्लियामेट की मर्जी पर निर्भर करता है, सामान्य समझदारी के सिद्धान्तो का ही नही, वरन मानवीय भावनाओका भी गला घोटना होगा।

५ सितम्बर, १७७४ को फिलाडेल्फिया मे महाद्वीप की जो प्रथम कांग्रेस हुई, उसके लिए जेफर्सन को मनोनीत नही किया गया था। काँग्रेस का अधिवेशन २६ अक्तूबर तक चलता रहा। यहाँ अभी भी बहुमत साम्राज्य के अन्तर्गत रहकर अमरीकी अभाव-अभियोगो को दूर कराने के प्रयास के पक्ष मे था और काँग्रेस मे प्रमुख विचारणीय विषय था ब्रिटिश व्यापार के बहिष्कार को सुदृढ करने के लिए क्रियाशील-तन्त्र की स्थापना और यह विश्वास किया गया कि अमरीकी दावो को स्वीकार कराने के उद्देश्य से साम्राज्यीय सरकार को बाध्य करने को यह तरीका ही एकमात्र साधन था। जेफर्सन को कुछ निराशा सी प्रतीत हुई थी कि कांग्रेस इससे आगे नही बढी। उन्हे इस बात से और भी निराशा हुई कि कई उपनिवेश केवल उन्हीं निर्णयो से आबद्ध हुए, जिन्हे उनके प्रतिनिधियो ने स्वीकार किया था।

दूसरी ओर, उनकी अनुपस्थिति मे भी, काँग्रेस ने उस दृष्टिकोण को काफी हद तक स्वीकार कर लिया, जिसका उन्होने प्रतिपादन किया था। उसने एक नये साम्राज्यीय सविधान के लिए जोसेफ गैलोवे की योजना को ठुकरा दिया, जिसके अन्तर्गत अमरीकी उपनिवेश एक अधिनस्थ सघ बनाते और १४ अक्तूबर को स्वीकृत अधिकार-घोषणापत्र ने 'अटल प्राकृतिक विधान' रख दिये थे, जिन स्रोतो से उपनिवेशो को अपने अधिकार प्राप्त होते थे। उन्हे अटल प्राकृतिक विधान के रूप मे स्वीकार कर लिया।

नये प्रस्तावो की विशेषता यह थी कि बहिष्कार को प्रत्येक देहात, नगर या कस्बो मे लागू करने के लिए समितियो की स्थापना की योजना थी।

अल्वेमार्ले काउण्टी की सुरक्षा समिति के लिए स्वय जेफर्सन को सवसे अविक मत मिले और २० मार्च, १७७५ को होने वाले द्वितीय वर्जीनिया-सम्मेलन के लिए वे काउण्टी के प्रतिनिधि चुने गये। इस अवसर पर नरमवादियो और क्रान्तिकारियो के बीच भेद स्पष्ट हो गया। मुख्य समस्या थी देश की प्रतिरक्षा के लिए सशस्त्र सेना की स्थापना का प्रस्ताव, जिसे पेट्रिक हेनरी ने प्रस्तुत किया था। इसका अर्थ था, जिसे हेनरी ने स्वीकार भी किया था, समझौते की आशा का परित्याग और सशस्त्र सेना के लिए अपील करने के अतिरिक्त दूसरा कोई मार्ग नही था। जेफर्सन प्रस्ताव के समर्थको मे से थे, जो अन्त मे ६० के विरुद्ध ६५ मतो से स्वीकृत हुआ और वे योजना क्रियान्वय समिति के सदस्य बनाये गये।

इस बीच उपनिवेश की घटनाए सकट की सीमा तक पहुँच गयी थी। इसके पूर्व पतझड मे गवर्नर लार्ड डनमोर ने वर्जीनिया के विस्तारवादियो के पक्ष मे केण्टकी मे शानी इडियनो के विरुद्ध युद्ध का सचालन तक किया था, किन्तु समुद्रतटवर्ती क्षेत्रमे रचमात्र भी उनकी लोकप्रियता नही वढी। सम्राट द्वारा जारी नये भूमि-नियमो मे उस भूमि के वन्दोवस्त की मनाही कर दी गयी, जिसकी पैमाइश नही हुई थी और जिन क्षेत्रो का वन्दोवस्त करना था, उनके लिए क्रय–मूल्य और 'मुक्ति लगान' वढा दिया गया था। वास्तव मे इस अन्तिम भूमि–नीति का अर्थ था पश्चिमी प्रसार पर वास्तविक प्रतिवन्ध। अधिकाश वर्जीनियावासी इस के प्रति उदासीन थे और जून, १७७४ के क्वेवेक कानून, जिसके अतर्गत कनाडा की दक्षिणी सीमा उस भू प्रदेश तक वढा दी गयी, जिसमें वर्जीनियाके भू-स्वामियो का भी दावा था इसका विरोध इस आधार पर नही किया गया वरन् एक कैथोलिक और अस्वशासित उपनिवेश की वृद्धि के कारण जो धार्मिक और राजनीतिक दुष्परिणाम होते उनके आधार पर किया गया।

मार्च, १७७५ के सम्मेलन ने, जिसमे विस्तारवादी तत्वो का प्रभुत्व था, डनमोर को उनके इडियन युद्ध के लिए धन्यवाद दिया, किन्तु नयी भूमि-नीति की निन्दा की, और 'सक्षिप्त दृष्टिकोण' के शब्दो मे लगान वढाने के सम्राट के अधिकार का खण्डन किया। गवर्नर के साथ सम्बन्ध और भी विगड गया, जब कि डनमोर ने एक घोषणापत्र जारी किया कि वे महाद्वीप की द्वितीय काग्रेस के लिए अपना प्रतिनिधि भेजने से वर्जीनिया को रोकना चाहते है। य काग्रेस मई मे वुलायी गयी थी। अप्रैल मे विलियम्सवर्ग शस्त्रागार से

का ब्रिटिश युद्धपोत 'फोवे' को स्थानान्तरण और मेस्साचुसेट्स के अन्तर्गत लेक्सिगटन मे ब्रिटिश सेनाओ के साथ प्रवासियो के सघर्ष के समाचार ने स्थिति को और भी गम्भीर बना दिया। डनमोर ने समझौते के लिए अन्तिम प्रयास के रूप मे १ जून को प्रतिनिधि-सभा की एक वैठक बुलायी। एक सप्ताह वाद वे ब्रिटिश युद्धपोत 'फोवे' पर चले गये और वर्जीनिया मे ब्रिटिश शासन का व्यावहारिक रूप से अन्त हो गया।

प्रतिनिधि-सभा ने जेफर्सन को उस समिति मे नियुक्त किया, जो ब्रिटिश प्रधानमत्री लार्ड नार्थ के समझौता-प्रस्ताव पर विचार करने के लिए नियुक्त की गयी थी और १२ जून को सदन मे जो रिपोर्ट प्रस्तुत की गयी, उसको तैयार करने वाले भी जेफर्सन ही थे। रिपोर्ट मे लार्ड नार्थ के प्रस्ताव को ठुकरा दिया गया, क्योकि इसका अर्थ था कि ब्रिटिश पार्लमेण्ट को स्थानीय प्रशासन तत्र की सहायता से उपनिवेशो मे हस्तक्षेप का अधिकार है, उसमे मेस्साचुसेट्स के विरुद्ध की गयी कार्रवाइयो को रद्द करने के लिए कुछ भी नही कहा गया था और अमरीकियो को शेष विश्व के साथ व्यापार के लिए मुक्त नही किया गया था। सवसे महत्वपूर्ण बात इस वारे मे यह है कि इस वात पर अधिक जोर दिया गया है कि अव यह मसला अकेले वर्जीनिया का न होकर सभी उपनिवेशो का है और वर्जीनिया के लिए अकेले इस पर कार्यवाही करके अपने सम्मान की रक्षा करना सभव नही है, जब तक वह उस सगठन से नीचता-पूर्ण तरीको से अपने को अलग न कर ले, जिसकी सदस्यता उसने खुद स्वीकार की है। यद्यपि प्रस्ताव के अन्त मे आशा व्यक्त की गयी थी कि अमरीकी अभी भी पुन एक होकर स्वतत्रता और समृद्धि तथा ग्रेट ब्रिटेन के साथ अत्यन्त स्थायी मित्रता प्राप्त कर सकेगे। एक पृथक् अमरीकी राष्ट्र का जन्म सन्निकट था।

२० जून, १७७५ को जेफर्सन द्वितीय महाद्वीपी काग्रेस मे भाग लेने के लिए फिलाडेल्फिया पहुँचे। अधिवेशन पहले ही आरम्भ हो चुका था। न्यू इग्लैण्ड की घटनाओ की प्रतिक्रिया अव समस्त उपनिवेशो मे दिखायी पड रही रही थी, सर्वत्र समितियाँ अतिरिक्त कानूनी अधिकार ग्रहण कर रही थी और सैनिक सगठन के लिए चर्चा चल रही थी। जान एडम्स की शान्तिपूर्ण कूटनीति के द्वारा मेस्साचुसेट्स और वर्जीनिया के क्रान्तिकारियो का सयुक्त राजनीतिक गठबन्धन हो रहा था और काग्रेस के कार्य का यही आधार था। इसका प्रथम परिणाम यह हुआ कि जार्ज वाशिङ्गटन महाद्वीप की सभी सेनाओ

के प्रधान सेनापति नियुक्त किये गये। जेफर्सन को वाशि
घोषणापत्र तैयार करने का कार्य सौंपा गया। वाशिंगटन
करने पर इस घोषणा को जारी करते। अन्त मे
घोषणापत्र मुख्यत अधिक अनुदारवादी जान डिकिन्सन द्व
अन्तिम साढे चार परिच्छेद जेफर्सन ने पूरे किये।

डिकिन्सन ने ही सम्राट के नाम एक आवेदनपत्र तैया
जुलाई को हस्ताक्षर किया गया। इसमे नरमवादियो की व
झलक मिलती थी। किन्तु जेफर्सन को लार्ड नार्थ के प्रस्ताव
उत्तर तैयार करने का कार्य सौपा गया और यह
प्रतिनिधि सभा के लिए तैयार किये गये प्रस्ताव के आधार पर

अगस्त, १७७५ मे जेफर्सन एक वार फिर वर्जीनिया
के अन्त तक पुन फिलाडेल्फिया के लिए रवाना हो गये,
तैयार करने की विशाल योजना मे व्यस्त थी। जान पड
इसी समय अपना यह दृष्टिकोण त्याग दिया कि प्रमुख स
और उपनिवेशो के वीच है और सम्राट के प्रति
आधार पर पुन समझौता सम्भव है, क्योकि २९
अपने सम्वन्धी जान रण्डोल्फ को एक पत्र लिख कर प
की प्रत्यक्ष आलोचना की थी और उन्हे अमरीकियो का
था। उन्होने घोषणा की, "हमे पृथक राष्ट्र की माँग औ
तो किसी लालच की आवश्यकता है और न शक्ति की
सकल्प की आवश्यकता है, जो हमारे सम्राट की छत्र
हो रहा है।" जान रण्डोल्फ उन व्यक्तियो मे थे, जिन्होने
विद्रोह का समर्थन करने के बजाय इगलैड मे शरण लेना

२६ अक्तूबर को पार्लमेण्ट मे वादशाह के दुरा
का समाचार ही सम्भवत जेफर्सन के दृष्टिकोण मे इस प
कारण था। जनवरी, १७७६ मे टाम पेन की पु
स्वतन्त्रता के लिए बढती हुई भावना मे और निवार
एक समतावादी लोकतांत्रिक दृष्टिकोण की अपनी व्याख्
इतना शक्तिशाली अन्य प्रस्तुत किया जैसा कि किसी
अभी तक प्रस्तुत नही किया था।

चार महीनो तक घरेलू कार्यो तथा अस्वस्थता के कारण वे माण्टिसिलो मे ही रहे, जहाँ अपनी कउण्टी की जन सेना के प्रधान सेनापति के रूप मे भी वे काफी व्यस्त रहे । इन महीनो मे स्वतत्रता आन्दोलन ने काफी जोर पकड लिया और इस दिशा मे कारोलिनास मे कार्रवाई की गयी । मई, १७७६ मे एक नया वर्जीनिया सम्मेलन बुलाया गया और १५ मई को कॉग्रेस के लिए चुने गये प्रतिनिधियो को निर्देश दिया गया कि वे प्रस्ताव रखे कि उपनिवेश अपने को स्वतत्र घोषित करे, एक महासघ मे सम्मिलित हो और कोई भी वॉछनीय विदेशी सन्धि करे। पृथक उपनिवेशो के अ न्तरिक मामलोके लिए सरकार बनाने का अधिकार उनकी अपनी प्रतिनिधि सभाओ को दे दिया गया ।

यद्यपि जेफर्सन भी प्रतिनिधि-सभा के सदस्य निर्वाचित हुए थे, तथापि उन्होने फिलाडेल्फिया वापस जाने मे विलम्ब नही किया और वहाँ १४ मई को अपना स्थान पुन ग्रहण कर लिया । १५ मई को कॉग्रेसने एक प्रस्ताव स्वीकृत कर सिफारिश की कि सभी उपनिवेश अपने-अपने लिए स्वेच्छानुसार नये ढग की सरकारे स्थापित करे। ७ जून को रिचार्ड हेनरी ली ने दो प्रस्ताव प्रस्तुत किये और जान एडम्स ने उनका समर्थन किया । प्रथम प्रस्ताव मे घोषणा कि गयी कि अमरीकी उपनिवेश स्वतत्र और स्वाधीन राज्य है और उन्हे स्वतत्र होनेका अधिकार है। दूसरे प्रस्ताव मे सुझाया गया कि सघराज्य बनाने के लिए योजना प्रस्तुत कर कॉग्रेस की स्वीकृत करायी जाय ।

यह एक सकट की घडी थी । इसके पूर्व पतझड मे कनाडा का आक्रमण उस उपनिवेश को अमरीकियो का साथ देने के लिए विवश करने मे असफल रहा । अब यह समाचार मिला कि शान्तिपूर्ण साधनो से इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए भेजे गये एक आयोग की भर्त्सना की गयी । कनाडा और अन्यत्र व्यापक पैमाने पर ब्रिटिश सैनिक कार्रवाई की तैयारी के भी समाचार मिले । अमरीकियो की आशा इग्लैड के शत्रु फ्रास और स्पेन से मिलने वाली सहायता मे निहित प्रतीत होती थी । स्वतत्रता की घोषणा के समर्थको ने अधिकतर इस आधार पर इसका समर्थन किया था कि जब तक अमरीका व्यापारिक लाभो के लिए आश्वासन नही देता तब तक विदेशी राष्ट्रो के साथ सन्तोषजनक वार्ता सम्भव नही और एक स्वतत्र राष्ट्र ही ये आश्वासन दे सकता है । किन्तु मध्य उपनिवेशो के अनुदार सदस्य इससे आश्वस्त नही हुए और मुख्य समस्या को १ जुलाई तक स्थगित कराने में वे सफल हुए । अन्ततोगत्वा स्वतत्रता की

तथा जेफर्सन के विचारो पर आधारित था और वह दो वर्ष पूर्व लिखे गये उनके 'संक्षिप्त दृष्टिकोण' से बहुत कुछ मिलता जुलता था। उसका सरल रूप पुनः इस प्रकार का है—राजनीतिक दर्शनशास्त्र का वक्तव्य, अमरीकी उपनिवेशो पर उनका उपयोग, उन कार्रवाइयो की गणना, जिनके द्वारा उनके अधिकारो पर प्रहार किया गया और अन्तिम परिणाम के रूप मे अमरीकी राज्यो और ग्रेट ब्रिटेन के बीच राजनीतिक सम्बन्ध-विच्छेद।

अमरीकी लोकतन्त्र के छात्र के लिए प्रारभिक परिच्छेद ही पर्याप्त हैं, क्योंकि जार्ज तृतीय की बलात् ग्रहण की कार्रवाइयाँ इतिहास मे बीत चुकी थी। इन परिच्छेदो का अमरीकी राष्ट्र के मन पर प्राकृतिक अधिकार के सिद्धान्त की छाप डालने मे अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रभाव पडा। उनका अन्तिम रूप इस प्रकार है —

"मानवीय घटनाओ के दौरान मे जब यह आवश्यक हो जाता है कि एक राष्ट्र दूसरे से सम्बन्धित राजनीतिक दलो को भग कर दे और विश्व की शक्तियो के बीच एक पृथक और समान स्थान ग्रहण करे, जिसके लिए उसे प्रकृति और विधि के विधान द्वारा अधिकार प्राप्त है, तब मानव समाज के जनमत के प्रति शिष्ट सम्मान का तकाजा होता है कि वे अपनी पृथक्ता के कारणो की घोषणा करे। हम इन तथ्यो को स्वयसिद्ध मानते है कि सभी मानवो की सृष्टि समानरूप से हुई है, उन्हे अपने स्रष्टा से कतिपय अविच्छेद्य अधिकार प्राप्त हैं, जिनमे जीवन, स्वाधीनता और सुख-समृद्धि का उपभोग सम्मिलित है। इन अधिकारो की प्राप्ति के लिए मानव समुदायो मे सरकारो की स्थापना होती है, जिन्हे शासितो की स्वीकृति से उचित अधिकार प्राप्त होते है। जब कभी किसी प्रकार की सरकार इन उद्देश्यो की विनाशक बन जाती है तब जनता को अधिकार है कि उसे बदल दे या समाप्त कर दे और एक नयी सरकार की स्थापना ऐसे सिद्धान्त के आधार पर करे तथा उसकी शक्तियो को इस प्रकार सगठित करे कि उससे उनकी सुरक्षा और सुख-समृद्धि अधिक सम्भव प्रतीत हो। वास्तव मे इस दूरदर्शिता से काम लिया जायेगा कि दीर्घकाल से स्थापित सरकारे छोटे-छोटे अस्थायी कारणो से न बदली जाय। अनुभवो से सिद्ध है कि मानव समाज जिस प्रकार की सरकार का अभ्यस्त बन जाता है, उसको समाप्त कर अपने को सही रास्ते पर लाने के बजाय वह बुराइयो को सहन करने की ओर अधिक प्रवृत्त होता है, जब तक कि वे सह्य होती है। किन्तु जब अनिवार्यत एक ही उद्देश्य के पीछे निरन्तर दुरुपयोगों और

अधिकारापहरणो से यह प्रकट हो जाय कि पूर्ण निरकुशता के अन्तर्गत उसे स्वत्वहीन वना देने का कुचक्र चल रहा है तो उसका यह अधिकार और कर्त्तव्य है कि वह ऐसी सरकार को उलट दे और अपनी भावी सुरक्षा के लिए नये 'सरक्षको' की व्यवस्था करे।"

स्वतन्त्रता-घोषणापत्र के पाठक को अब भी जेफर्सन की साहित्यिक शैली के प्रभावशाली गुणो के प्रति सतर्क रहना चाहिए। जिन तथ्यो को उन्होने स्वयसिद्ध बनाया है, वे न तो उनके समकालीनो के लिए और न उनकी भावी पीढियो के लिए स्वयसिद्ध रहे है। 'सभी मानव समानरूप से उत्पन्न हुए है,' इस भावना को न तो उसी समय और न बाद मे ही, सिद्धान्तत या व्यवहारत स्वीकार किया गया, क्योकि 'सभी मानव' ऐसा वाक्याश है (जैसा कि राजभक्तो ने सकेत किया था) जो जाति और वर्ण का भेद नही जानता। इसी प्रकार जीवन, स्वाधीनता और सम्पत्ति के सिद्धान्त मे 'सम्पत्ति' के स्थान पर 'सुख-समृद्धि के उपभोग' को रखकर उस स्पष्ट और प्रत्यक्ष दर्शन को चुनौती दी गयी जिसके आधार पर आजतक मानवसमाज का निर्माण हुआ था। स्वतन्त्रता-घोषणा-पत्र एक क्रातिकारी अभिलेख था और उसका ऐतिहासिक महत्व वैसा ही है।

जेफर्सन ने अपने जीवन के अन्तिम भाग मे ८ मई, १८२५ को हेनरी ली को एक पत्र लिखा था, जिसमे उन्होने कहा था कि स्वतत्रता-घोपणापत्र लिखने मे मेरा उद्देश्य नये सिद्धात ढूढना नही था और न ऐसे तर्क प्रस्तुत करना था, जिनकी पहले कल्पना भी नही की गयी थी और न ऐसी बाते कहना था, जो पहले कभी कही नही गयी थी, बल्कि मानव-समाज के समक्ष ऐसे सरल और दृढ शब्दो मे विषय के सामान्य अर्थ को रखना था, जिससे उसकी स्वीकृति प्राप्त हो सके—उसका उद्देश्य न तो सिद्धान्त की मौलिकता ऐसी भावना थी और न किसी विशेष या पूर्वरचना का अनुकरण करना था, वल्कि अमरीकी विचार-धारा की अभिव्यक्ति थी।

किसी अर्थ मे यह सत्य ही था, अन्यथा स्वतत्रता-घोपणापत्र का वह प्रभाव न हुआ होता जो हुआ। १८ वी शताब्दि के यूरोपीय दार्शनिकोने सुख की पूर्व धारणा के बावजूद अधिकार के रूप मे कभी सुख की कल्पना नही की थी। यह पुरानी दुनिया से बहुत दूर की चीज थी, किन्तु नयी दुनिया में सुख का उपभोग कोई मौलिक चीज नही थी, यद्यपि इसे एक औपचारिक राजकीय अभिलेख मे इतने विश्वास साथ पहले कभी नही रखा गया था। पेन्सीलवानिया के राजनीतिज्ञ जेम्स

विलसन द्वारा १७७० मे लिखित और १७७४ मे प्रकाशित एक पुस्तिका मे इस विचारधारा को स्थान दिया गया था। जेफर्सन का उनसे परिचय था। वर्जीनिया-अधिकार-विधेयक मे निहित मानव के अधिकारो मे "सुख और सुरक्षा का उपभोग और प्राप्ति भी" सम्मिलित था। यह विधेयक जाज मेसन ने तैयार किया था ओर यह १२ मई, १७७६ को वर्जीनिया प्रतिनिधि-सभा मे स्वीकृत हुआ था। फिर भी गिल्बर्ट चिनार्ड के शब्दो मे जेफर्सन ने वास्तवमे इस ढग से इस सिद्धान्त का प्रचार किया कि उसका न केवल अमरीकी जीवन पर, अपितु उसके निर्माण पर भी गम्भीर प्रभाव पडा। सकट की घडी मे यह जेफर्सन की मौलिक योग्यता थी, जिसके कारण अमरीकी चेतना मे प्रवाहित इन तत्वो को लिखित रूप मे एक स्थायी रूप प्रदान किया गया, जो पीढी दर पीढी कायम रहा।

अन्ततोगत्वा, अमरीका पर ही इस घोषणा-पत्र का प्रभाव नही पडा, यद्यपि एक अमरीकी ने ही उसे लिखा था। अमरीकी स्वतत्रता के तथ्य ने उस सिद्धान्त को वल प्रदान किया जिसके आधार पर इसका समर्थन किया गया था। जैसा कि कार्ल वेकर ने लिखा है, "पूर्ण सफलता ने घोषणा-पत्र को ऐसा सम्मान और ख्याति प्रदान की, जिसकी उपेक्षा नही की जा सकती थी और इसने मानव अधिकार के उसके दर्शन की एक ठोस ऐतिहासिक उदाहरण के तौर पर पुष्टि की।"

अध्याय ४

वर्जीनिया का राजनीतिज्ञ

(१७७६—१७८४)

स्वतत्रता की घोषणा महाद्वीपीय कांग्रेस के कार्य के अन्त की अपेक्षा उसके आरम्भ की सूचक थी। एक स्थायी ढग के सघराज्य की स्थापना करनी थी, राष्ट्रीय प्रतिरक्षा-सगठन को स्थायी और सुदृढ बनाना था और विदेशी राष्ट्रो के साथ सपर्क साधना था। जेफर्सन की ख्याति काफी बढ चुकी थी और वे अधिकाश महत्वपूर्ण समितियो मे निर्वाचित हो चुके थे। अब यह आशा की जाने लगी कि भावी कार्य मे वे महत्वपूर्ण भाग लेंगे। यद्यपि उस वर्ष ग्रीष्म ऋतु में वे कांग्रेस के पुन प्रतिनिधि चुने गये, फिर भी उन्होने सेवा करने मे असमर्थता व्यक्त की और सघराज्य के सविधान के प्रारम्भिक वादविवाद मे

भाग लेने के वाद वे २ सितम्बर को फिलाडेल्फिया से घर के लिए रवाना हो गये । वाद मे उसी महीने मे कॉग्रेस ने फ्रास के साथ सन्धिवार्ता के लिए भेजे जानेवाल कमिश्नरो मे उन्हे भी मनोनीत किया, किन्तु उन्होने वर्जीनिया छोडने से पुन इन्कार कर दिया ।

यह तो स्पष्ट है कि जिन उद्देश्यो से जेफर्सन ने राष्ट्रीय रगमच का परित्याग किया, वे अधिकतर व्यक्तिगत और घरेलू थे । उनकी पत्नी का स्वास्थ्य उत्तरोत्तर बिगडता जा रहा था और वे उसे छोडकर माण्टिसिलो से फिलाडेल्फिया तक लम्बी यात्रा पर जाना पसन्द नही करते थे । किन्तु इससे यह नही समझ लेना चाहिए कि उनकी यह उदासीनता उनके सक्रिय राजनीतिक जीवन के अन्त की द्योतक थी । जीवनपर्यत जेफर्सन ने वर्जीनिया मे अपने कार्य को भी कम से कम उतना ही महत्वपूर्ण समझा, जितना उन्होने एक राष्ट्रीय राजनीतिज्ञ के रूप मे किये गये अपने कार्य को समझा था । वास्तव मे उनका राजनीतिक दर्शन तथा छोटी-छोटी इकाइयो के महत्व पर उसका वल, एक प्रवल शासन की अपेक्षा एक स्वस्थ समाज मे उनका विश्वास, प्रशासन और कूटनीति के दैनिक भार की अपेक्षा विधानसभा कार्यो के सैद्धातिक एव दार्शनिक पक्षो को प्राथमिकता, अपनी सारी विवेकशीलता के बावजूद जेफर्सन मे एक बुद्धिजीवी मे पायी जानेवाली विशिष्टता एव कमजोरियाँ आदि बाते कॉग्रेस के वजाय उनकी राज्य-प्रतिनिधि-सभा मे उनकी स्वाभाविक गतिविधि के रूप मे परिलक्षित होती थी । विलियम्सवर्ग मे वर्जीनिया की प्रतिनिधि, सभा मे उन्होने ११ अक्तूबर, १७७६ को एक वार फिर स्थान ग्रहण किया ।

वर्जीनिया की सस्थाओ का पुनर्गठन कोई सरल कार्य नही था । जेफर्सन के अनुसार लोकतान्त्रिक सरकार की स्थापना एक सही जनतान्त्रिक समाज की स्थापना की दिशा मे एक कदम मात्र था । यदि कानून वही बने रहे, जिनसे मुट्ठीभर लोगो के हाथ मे सम्पत्ति का एकत्रीकरण होता रहे और राजनीतिक सत्ता उन्ही सम्पत्ति-स्वामियो के हाथ मे पडी रहे तो, शाही गवर्नर, उसकी परिपद और साम्राज्यीय निषेधाधिकार के हटा दिये जाने का कोई अर्थ नही था । स्वतत्रता एक शब्द मात्र रह जाती यदि राज्य का बौद्धिक जीवन एक प्रचलित चर्च के प्रभुत्व के अन्तर्गत रहने दिया जाता और राजनीतिक एव धार्मिक स्वतत्रता का उपभोग अन्ततोगत्वा एक ऐसी लोकप्रिय शिक्षा-प्रणाली की स्थापना से ही किया जा सकता है, जिसका उद्देश्य जनता को जनतान्त्रिक सस्थाओ के अनुकूल बनाना हो । दूसरी ओर, उपनिवेश मे ऐसे प्रवल तत्व थे,

जिनके लिए मातृभूमि से सम्बन्ध-विच्छेद क्रान्ति का प्रथम नही, अन्तिम चरण था ।

राज्य के लिए सविधान बनाने के मामले मे दलो का सघर्ष पहले ही से प्रकट हो गया था । १५ मई, १७७६ को कॉग्रेस ने सिफारिश की थी कि राज्य औपनिवेशिक शासन के प्राचीन तत्र के स्थान पर नयी शासन-प्रणाली की स्थापना के लिए कार्रवाई करे । दूसरे ही दिन जेफर्सन ने वर्जीनिया-सम्मेलन के अपने विश्वसनीय मित्र थामस नेल्सन को एक पत्र लिखकर सुझाव दिया कि यदि यह मडल सविधान बनाने का कार्य आगे बढाना चाहता है तो उसे फिलाडेल्फिया के अपने प्रतिनिधियो को वापस बुलाना चाहिए, क्योकि यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य होगा, जिसमे प्रत्येक व्यक्ति अपनी राय देना चाहेगा । उनकी अनुपस्थिति मे पता नही क्या होगा, इसकी उन्हे बडी चिन्ता थी, जिसका आभास उनकी इस आलोचना से मिल जाता है—"सच पूछा जाय तो सारा उद्देश्य मतभेदपूर्ण है, क्योकि यदि भविष्य मे कोई निकृष्ट शासन-तत्र स्थापित हो, इससे तो अच्छा यही था कि सघर्ष का खतरा और खर्च उठाये बिना उस प्रथम निकृष्ट सरकार को ही स्वीकार कर लिया गया होता, जिसके लिए समुद्रपार से समझौते का प्रस्ताव आया था ।"

किन्तु वर्जीनिया-सम्मेलन यह विचार करने को तैयार नही था कि किसी व्यक्ति विशेष की उपस्थिति अनिवार्य है । १५ मार्च को ही, जिस दिन उन्होने स्वतत्रता की माग के लिए अपने प्रतिनिधियो को निर्देश दिये थे—सदस्यो ने शासन की एक योजना तथा अधिकार-विधेयक तैयार करने के लिए एक समिति की भी नियुक्ति की । जेफर्सन अपने विचारो को व्यक्त करने के लिए कृत सकल्प थे और सम्मेलन के निर्णय का सन्देश मिलते ही वे एक विधेयक तैयार करने मे जुट गये, जिसका उपयोग एक सविधान के रूप मे किया जा सकता था । जब उनके मित्र जार्ज वाइथ, जून के मध्य मे, फिलाडेल्फिया से विलियम्सबर्ग के लिए रवाना हुए, उस समय तक विधेयक का प्रारूप उनके लिए तैयार हो गया था ।

जेफर्सन की योजना ने लोकतन्त्र की दिशा मे बहुत दूर तक काम किया । उन सभी लोगो को मताधिकार प्रदान किया गया, जिनके पास नगरो मे एक चौथाई एकड नि शुल्क भूमि थी या देहातो मे २५ एकड भूमि थी और जिन्होने दो वर्ष तक अपने सभी कर चुका दिये हो । देहातो और कस्बो को उनकी आबादी के अनुपात के अनुसार प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया । वैधानिक

प्रणाली से रेडइडियनो से भूमि खरीदी जा सकती थी और इस प्रकार से खरीदी गयी भूमि बिना भुगतान के ५० एकड़ प्रति व्यक्ति के हिसाब से वितरित की जा सकती थी। वर्जीनिया ने पश्चिम मे जिन जमीनो के लिए दावा किया था, उन्हे अन्त मे एक स्वतत्र और पृथक राज्य में परिवर्तित कर दिया गया। अन्य प्रस्तावो मे पैतृक सम्पत्ति के समान विभाजन, धार्मिक सहिष्णुता और उदारता, प्रेस की स्वतन्त्रता और गुलामो के आयात के निषेध के पक्ष मे जेफर्सन के विचारो को ही व्यक्त किया गया था।

जब तक सम्मेलन में यह प्रारूप प्रस्तुत किया गया, तब तक उसकी योजनाए काफी आगे बढ चुकी थी। विगत महीनो की घटनाओ से वर्जीनिया में राजनीतिक दलो के गठबन्धन मे परिवर्तन हो गया। अधिक अनुदारवादी तत्वों की इच्छा थी कि वर्जीनिया अकेले ही अपनी स्वतन्त्रता की स्थापना करे और अपने सस्थानो का निर्माण करे। लीज के नेतृत्व में क्रान्तिकारी तत्वो ने काग्रेस की कार्रवाई द्वारा स्वतत्रता का और काग्रेस द्वारा ही राज्यो की सरकार के लिए एक ही योजना के निर्माण का समर्थन किया। इस प्रकार उन्होंने आशा की थी कि न्यू इगलैण्ड के अधिक उग्रवादी लोग वर्जीनिया के मामलो को प्रभावित करने में समर्थ होंगे, किन्तु जहाँ तक सविधान-निर्माण का प्रश्न था, उन्होंने जार्ज मेसन द्वारा निर्मित अपेक्षाकृत अनुदार प्रारूप को स्वीकार किया और जेफर्सन के मसविदे मे से केवल उसकी भूमिका का उपयोग किया गया जिसे मेसन की कृति के आगे रख दिया गया।

जो भी हो, जेफर्सन की अधिकाश अभिलाषा साधारण विधान के रूप मे पूरी हुई और जब उन्होंने नयी विधानसभा मे स्थान ग्रहण किया तो उनकी इच्छा सुधारो के एक निश्चित कार्यक्रम को तैयार करने की थी। इस मामले मे उन्हे वाइथ मेसन और जेम्स मेडिसन जैसे व्यक्तियो का समर्थन प्राप्त था, जबकि एडमण्ड, पेण्डल्टन और राबर्ट कार्टर निकोलस जैसे पुराने नेताओ ने उनका तीव्र विरोध किया।

वर्जीनिया जैसे कृषिप्रधान समाज मे सबसे महत्त्वपूर्ण कानून भूमि के उत्तराधिकार के सम्बन्ध में था। अभी तक वर्जीनिया मे सामान्य अंग्रेजी परम्परा ही प्रचलित थी। ज्येष्ठ पुत्र ही सम्पत्ति का उत्तराधिकारी होता था और सपत्ति को बेचने का भी किसी को अधिकार नहीं था। इसलिए जमीन्दारियो को बेचना या विभाजित करना असम्भव था। जैसा कि जेफर्सन के जीवनी-लेखक हेनरी रण्डाल ने १९ वी शताब्दि मे, जबकि लोकतान्त्रिक सरगर्मी थी,

लिखा था.—

"राज्य की सभी निम्नतर काउण्टियो मे अधिकाश भूमि बडी-बडी जमीन्दारियो मे विभाजित थी, जिनका उत्तराधिकारी पीढी दर पीढी ज्येष्ठ पुत्र होता था और उसके राजनीतिक एव सामाजिक परिणाम वही होते थे, जो इग्लैण्ड तथा कुछ अन्य यूरोपीय देशो मे आजकल दिखायी पडते हैं। राजनीतिक एव सामाजिक ढाचा वस्तुत अभिजातीय था, जिसके परिणाम स्वरूप विलासिता और वैभव तथा ऐश्वर्य की तडक भडक वाली सस्कृति का विकास हुआ तथा और परिस्थिति के अनुकूल बाह्य आडम्बर तथा कृत्रिम समृद्धि का वातावरण उत्पन्न हो गया था, जो प्राय किसी बाहरी प्रेक्षक के लिए उच्चतम और सर्वोत्तम राष्ट्रीय विकास का आदर्श प्रतीत होता। किन्तु राजनीति मे बहुमत पर इने गिने लोगो का नियत्रण था, समाज मे उन्ही का दबदबा था, प्राकृतिक अधिकार के सिद्धान्त से जो समान रूप से सबका था, उस पर उनका एकाधिकार था और अन्त मे राज्य के इतने साधनस्रोतो पर उनका अधिकार था कि उनका वे पूर्ण उपयोग नही कर सकते थे और इस प्रकार राज्य के कुल साधनस्रोतो की उत्पादन-शक्ति क्षीण करते थे।

एक महीने के तीव्र वादविवाद के बाद, जिसमे प्रबल और कौशलपूर्ण विरोध का सामना करना पडा, जेफर्सन विधानसभा के दोनो सदनो में एक ऐसा विधेयक पारित कराने मे सफल हुए, जिसका उद्देश्य सम्पत्ति को विलग न करने के अधिकार को समाप्त करना था। वास्तव मे यह उस सामाजिक प्रणाली के आधार पर जबर्दस्त प्रहार था, जिसके वे स्वय एक प्रमुख अग थे।

साथ ही साथ जेफर्सन को वर्जीनिया की समूची कानून-सहिता मे सशोधनार्थ एक समिति नियुक्त करने की अनुमति मिल गयी और २४ अक्तूबर, १७७६ को इसी उद्देश्य के लिए एक विधेयक पारित हुआ। इस समिति के पाच नियुक्त सदस्यो मे पेण्डल्टन भी थे, जिन्होने प्रस्ताव रखा कि एक पूर्णतया नवीन सहिता तैयार की जाय, किन्तु जेफर्सन ने उसे इस आधार पर ठुकरा दिया कि नयी सहिता से अनन्त काल तक मुकदमेबाजी का सिलसिला जारी रहेगा, जो तब तक बन्द नही होगा, जब तक न्यायालय उन कानूनो की अन्तिम व्याख्या नही कर देते। वे न्यायाधीशो के अधिकार को बढ़ाना नही चाहते थे। सामान्य कानूनी परम्परा तथा अग्रेजी और औपनिवेशिक कानूनो की वर्तमान व्यवस्था मे ही सशोधन करने के लिए समझौता हो गया। वास्तविक कार्य जेफर्सन, वाइथ और पेण्डल्टन के बीच विभाजित कर दिया गया। जेफर्सन

को उपनिवेश की स्थापना के पूर्व का सामान्य कानून और अग्रेजी कानून सौंपा गया, जो उनके कानूनी एव ऐतिहासिक पाण्डित्य को प्रमाणित करता है।

सशोधन-कार्य १७७९ के आरम्भ मे हाथ मे लिया गया और उसी वर्ष के जून मे१२६ पृथक विधेयको के रूप मे समिति की रिपोर्ट विधानसभा को दी गयी। इनमे अत्यन्त महत्वपूर्ण सशोधन भी सम्मिलित थे। नये उत्तराधिकार-कानून ने अन्त मे ज्येष्ठ पुत्र को ही उत्तराधिकार देने की प्रथा का अन्त कर दिया और वास्तविक जमीन्दारी पर व्यक्तिगत सम्पत्ति का कानून लागू किया गया, जिमके अनुसार सम्पत्ति अन्य भाइयो मे समान रूप से वितरित की जानेवाली थी।

वेकारिया के सिद्धान्तो से अनुप्रेरित हो नयी दण्ड-विधि-सहिता तैयार की गयी, जिस के लिए जेफर्सन ही अधिकतर जिम्मेदार थे। इस मे विशेषकर राजद्रोह और हत्या के मामलो मे मृत्युदण्ड की मर्यादा मे अधिकतर मानवीय दृष्टिकोण से विचार किया गया था, यद्यपि उसमे निहित प्रतिशोध का सिद्धान्त आधुनिक दृष्टि से उसे कुछ विकृत कर देता है। जब पहलेपहल यह प्रस्तुत किया गया तो अत्यन्त प्रगतिशील सिद्ध हुआ और मेडिसन के प्रयासो के बावजूद, १७७६ तक जेफर्सन के प्रस्तावो के आधार पर वर्जीनिया के दण्ड-विधान मे सशोधन नही किया जा सका।

धर्म के प्रश्न पर तीव्रतम सघर्ष हुआ। विरोधियो की बढती हुई सख्या इस पक्ष मे थी कि आग्लिकन चर्च के एकाधिकार को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश सम्बन्ध भग कर दिया जाय। इस माग को जेफर्सन की पूर्ण व्यक्तिगत और राजनीतिक सहानुभूति प्राप्त की। १७७६ के अक्तूबर और दिसम्बर के बीच विधानमण्डल मे जो वादविवाद हुआ, उसमे जेफर्सन को कुछ सफलता मिली, जिसके अनुसार उन सभी कानूनो को रद्द कर दिया गया, जिन के अन्तर्गत किसी धार्मिक सिद्धान्त को मानना या न मानना दण्डनीय अपराध था, गैर-मतालबियो को गिरजाघरो को दिये जाने वाले दशमाश कर से मुक्त कर दिया गया तथा गिरजाघरो के सदस्यो से भी कर-वसूली अस्थायी रूप से स्थगित कर दी गयी। दूसरी ओर यद्यपि उपनिवेश का बहुमत अभी तक विरोधी हो चुका था, जैसा कि सम्भव था, तो विधानमण्डल मे आग्लिकन विचारधारा के लोगो का अभी भी प्रभुत्व था, जो स्थापित चर्च के लिए कोई न कोई प्रावधान चाहते थे।

१३ जून, १७७९ को धार्मिक स्वतन्त्रता की स्थापना सम्बन्धी जेफर्सन का

विधेयक प्रस्तुत किया गया। इस विधेयक मे घोपणा की गयी कि धार्मिक स्वतन्त्रता मानवसमाज का प्राकृतिक अधिकार है और इसमे धार्मिक विश्वासो के कारण नागरिक अधिकारो मे लोगो के बीच भेद-भाव का निपेध किया गया तथा धार्मिक सस्थानो का समर्थन पूर्णतया उनके अनुयायियो के ऐच्छिक कार्य पर छोड दिया। इतनी सुदूरगामी कार्रवाई का प्रचण्ड विरोध किया गया और अधिक से अधिक इतनी ही सफलता मिली कि चर्च की सहायता के लिए लिये जानेवाले करो को समाप्त कर दिया गया। चर्च के समर्थक अभी भी प्रबल थे और १७८४ मे अनेक विरोधियो के समर्थन से उन्होने एक नया अनिवार्य कर-प्रस्ताव प्रस्तुत किया, किन्तु उसमे यह शर्त थी कि कोई भी व्यक्ति यह चुन ले कि उसके नाम कितनी रकम निर्धारित की जाय। जेफर्सन उस समय यूरोप मे थे, किन्तु इस प्रस्ताव पर अत्यन्त तीव्र सघर्प चला और इसमे राज्य के अन्य प्रमुख व्यक्ति भी किसी न किसी पक्ष की ओर से सम्मिलित थे। प्रस्तावित कर के समर्थको मे जार्ज वाशिंगटन, पेट्रिक हेनरी और आर एच. ली थे, उनके विरुद्ध थे जार्ज मेसन, जेम्स मेडिसन और जार्ज निकोलस। अन्त मे मेडिसन ने इतना प्रबल आन्दोलन चलाया कि उस प्रस्ताव को वापस ले लिया गया और १७८६ मे जेफर्सन का विधेयक साधारण सशोधन के साथ कानून बन गया।

धार्मिक स्वतन्त्रता के समान ही साधारण जनता की शिक्षा भी महत्वपूर्ण थी और जेफर्सन के अनुसार तो राजनीतिक स्वतन्त्रता के साथ शिक्षा का अटूट सम्बन्ध है। इसी उद्देश्य से, उन्होने सशोधित सहिता के अगस्वरूप तीन विधेयक तैयार किये, ज्ञान के अधिक और सामान्य प्रसार के लिए विधेयक, अपने ही कालेज विलियम और मेरी के सविधान मे सशोधन के लिए विधेयक, ताकि उसकी धार्मिक पक्षपात की भावना को समाप्त किया जा सके, और पाठ्यक्रम को आधुनिक आधार पर तैयार करने और एक सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना सम्बन्धी विधेयक।

इन तीनो विधेयको मे से पहला सब से अधिक महत्वपूर्ण था, क्योकि इसमे गुलामो को छोडकर सभी बालक-बालिकाओ के लिए पूर्ण नि शुल्क प्राथमिक शिक्षा-प्रणाली का प्रस्ताव था, उसके बाद ग्राम-स्कूलो की व्यवस्था थी, जिनमे प्राथमिक शालाओ के छात्र एक छात्रवृत्ति-प्रणाली के द्वारा भर्ती होने के अधिकारी थे और अन्त मे इनमे से अत्यन्त होनहार छात्रो के लिए छात्रवृत्ति की व्यवस्था थी, ताकि वे कालेज मे भर्ती हो सके।

विधेयक की भाषा और उसके प्रावधानो के अध्ययन से प्रकट होता है कि यह आधुनिक नीति की इस भावना से बहुत दूर था कि शिक्षा एक ऐसा अधिकार है, जिसे प्रत्येक बच्चा अपनी प्राकृतिक बुद्धि के अनुसार प्राप्त करने का अधिकारी है। वास्तव मे जेफर्सन सामूहिक शिक्षा के पक्ष मे नही थे, बल्कि चुने-चुनाये लोगो की शिक्षा के पक्ष मे थे। उनका कहना था कि समाज निर्धन माता-पिता के प्रतिभाशाली बच्चो की शिक्षा की जिम्मेदारी से बच नही सकता। इसमे नागरिक और राजनीतिक भावना अवश्य है, किन्तु समतावादी भावना नही है।

जेफर्सन का सिद्धात था कि अत्याचार से रक्षा का सर्वोत्तम मार्ग यह है कि यथासम्भव साधारण जनता के मन को ज्ञान-ज्योति से प्रकाशित किया जाय और विशेषकर उसे ऐतिहासिक तथ्यो का ज्ञान कराया जाय। यह सिद्धात स्वय विधेयक की एक धारा मे पूर्णरूप से निहित है, जिसमे उन्होने लिखा है—

"सार्वजनिक सुख-वृद्धि के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि जिन्हे प्रकृति ने प्रतिभा और गुण प्रदान किये हैं, उन्हे उदार शिक्षा द्वारा इस योग्य बना दिया जाय कि वे अपने सह-नागरिको के अधिकारो और स्वतत्रताओ की पवित्र थाती की रक्षा कर सके और उन्हे इस कार्य के लिए उनकी सपत्ति, प्रतिष्ठा या अन्य दैवी स्थिति या परिस्थिति का ध्यान दिये बिना बुलाना चाहिए; किन्तु बहुतो की दरिद्रता उन्हे अपने उन बच्चो को अपने खर्च से पढाने मे असमर्थ बना देती है, जिनकी रचना प्रकृति ने सुन्दर ढग से की है और जो जनता के लिए उपयोगी साधन बन सकते है, सबका सुख निर्बल और धूर्त लोगो के हाथ मे हो, इससे तो अच्छा यही होगा कि सबके व्यय पर उन बच्चो को ही शिक्षित करने का प्रयास किया जाय।

जेफर्सन और फ्रासीसी दार्शनिक पियेरसैमुएल डुपोण्टडि नेमूर्स के बीच पत्र-व्यवहार के सम्पादन मे प्रोफेसर चिनार्ड ने बताया है कि इसी प्रकार के विचार फ्रास मे "मेमायर्स सर लेस म्यूनिसिपैलिटीज' नामक पुस्तक मे १७७५ मे व्यक्त किये गये थे, जिस पर, यद्यपि टरगोट के हस्ताक्षर थे, तथापि वह प्राय पूर्णरूप से डुपोण्ट की कृति थी, किन्तु जेफर्सन के ये स्वतत्र विचार थे और जब वे पेरिस मे ठहरे थे, उस समय वहा इनका प्रचार हुआ था और चिनार्ड के सुझावों के अनुसार इन्ही के आधारो पर फ्रासीसी कार्रवाई को प्रोत्साहन मिला। उनके विधेयक का साराश फ्रासीसी शिक्षा-प्रणाली, १७९१ और १७९६ के बीच फ्रासीसी विधानमण्डलो मे प्रस्तुत किये गये प्रस्तावो मे पाया गया। जिसका पूर्ण

विकास तृतीय गणतत्र के अन्तर्गत हुआ, इस प्रकार जेफर्सन-सिद्धान्त के आधार का दावा कर सकती है। इसमे सस्थानो और छात्रवृत्तियो की क्रमबद्धता भी प्राय उसी ढग की है।

किन्तु जेफर्सन के शैक्षणिक विचारो के प्रति फ्रासीसी जितने आकृष्ट थे, उतने स्वय उनके वर्जीनियावासी नही थे। यह योजना इतनी व्ययसाध्य थी, कि जनता उसे स्वीकार नही कर सकती थी, क्योकि उसीको इसका भार वहन करना था। १७९६ मे जब एक प्राथमिक शिक्षा विधेयक स्वीकृत हुआ तो काउण्टियो को इसे कार्यान्वित करने या न करने का अधिकार दिया गया और अन्त मे एक काउण्टी ने भी उसे कार्यान्वित नही किया। दो अन्य विधेयक पारित नही हुए। जेफर्सन की यह आशा कभी नही पूरी हुई कि शैक्षणिक क्षेत्र मे वर्जीनिया सबका नेतृत्व करेगा और इस दिशा मे कदम बढाने का अवसर दूसरो को मिला। जेफर्सन के दूरदर्शी विचारो और कल्पनाशील सामाजिक प्रगतिशील सिद्धान्तो तथा वर्जीनिया के नागरिको की रूढिप्रियता के बीच सामञ्जस्य का इतना भारी अभाव था कि निग्रो-समस्या के मूल प्रश्न सबधी कानून को सशोधित कराने मे भी वे असफल रहे। उनकी अपनी धारणा यह थी कि एक निश्चित तिथि के बाद पैदा होने वाले गुलामो को मुक्त कर देना चाहिए और मुक्त गुलामो को सयुक्तराज्य अमरीकी सीमा के बाहर कही बसा देना चाहिए, किन्तु इसमे उन्हे पर्याप्त समर्थन नही प्राप्त हुआ।

जेफर्सन की वैधानिक गतिविधि के इस विवरण मे ऐसी समस्याओ को छोड दिया गया है, जो युद्ध के सम्बन्ध मे निर्णय के लिए विधानसभा मे प्रस्तुत की गयी, उदाहरणार्थ, ब्रिटिश प्रजा के ऋणो के भुगतान का प्रश्न था, जिस पर जेफर्सन ने एक उदार दृष्टिकोण अपनाया। सच पूछा जाय तो उनका रुख और बाद मे मेडिसन, मेसन और लीज का भी रुख इस सुझाव का खण्डन करने का था कि वर्जीनिया के बडे-बडे किसानो ने ब्रिटिश व्यापारियो के ऋणो से अपने को मुक्त करने के लिए ही क्रान्तिकारी आन्दोलन मे भाग लिया। इस धारणा का अतिम रूप से खडन पेट्रिक हेनरी और उनके क्रान्तिकारी अनुयायियो के कारण हुआ।

जेफर्सन के जीवनचरित्र लेखको की यह सोचने की प्रवृत्ति रही है कि वर्जीनिया मे उनके घरेलू नेतृत्व की अवधि मे उनके उच्च लोकतान्त्रिक उद्देश्य निस्सन्देह प्रशता के पात्र रहे। एस के. पडोवर ने लिखा है कि "वर्जीनिया को एक जनतान्त्रिक राज्य मे बदलने के लिए ९ वर्ष तक सघर्ष करना पडा।........ .. यह

एक रक्तहीन क्रान्ति थी, जिसे एक युवक दार्शनिक जमीदार ने, जिसकी दृष्टि मे एक स्वतत्र भूमि के स्वतत्र निवासियो की कल्पना थी,-सावधानीमे इसे आयोजित किया और शान्तिपूर्वक कार्यान्वित किया ।" किन्तु यह सन्देहपूर्वक कहा जा सकता है कि जेफर्सन के अतिम दिनो का वर्जीनिया तथा उनकी मृत्युके बाद के दशकोका वर्जीनिया उनकी कल्पना के लोकतान्त्रिक कामनवेल्थ से बहुत दूर था और वहाँ जो कुछ भी परिवर्तन हुए उनका अधिकतर कारण यह था कि भूमि की उत्पादन-क्षमता बडी तेजी से घट रही थी और परिणाम स्वरूप जमीन्दार वर्ग दरिद्र होता जा रहा था । वास्तव मे जेफर्सन विना समुचित ज्ञान प्रसार के सत्ता-हस्तान्तरण की कभी सराहना भी नही करते । अमरीका के प्रथम पाँच राष्ट्रा ध्यक्षोमें चार वर्जीनिया के थे, किन्तु मनरो के बाद, जो जेफर्सन वश के उत्तराधिकार मे अन्तिम थे, राष्ट्रीय मामलो मे इस राज्य का प्रभाव बहुत ही घट गया ।

वर्जीनिया सम्बधी जेफर्सन के कार्यो के सक्षिप्त विवरण का उल्लेख उनके अमरीकी प्रेसिडेण्ट-काल के इतिहास मे निहित है जो उनके पूर्वाधिकारी के प्रतिभाशाली प्रपौत्र ने लिखा हैं । हेनरी एडम्स के मतानुसार जेफर्सन और मेडिसन का यह विश्वास कि जिस धार्मिक स्वतत्रता के कारण पेन्सीलवानिया मे इतने सफल कार्य हो सके, वह वर्जीनिया मे भी इतनी ही सफल होगी, गलत था । राज्य के समर्थन से वचित होते ही चर्च का सत्यानाश हो गया और उसके परिणामस्वरूप अधिक लाभ नही हुआ, क्योकि जेफर्सन धर्मनिरपेक्ष शिक्षा पर आधारित एक वैकल्पिक सस्कृति के गुणो को अपने नागरिको को स्वीकार करने और समझने के लिए तैयार नही कर सके । एडम्स ने लिखा, "जेफर्सन के सुधारो ने कुलीन वर्ग को पगु और दरिद्र बना दिया, किन्तु उनसे जनता का शायद ही कुछ लाभ हुआ और गुलामो को तो कुछ भी लाभ नही हुआ ।"

वर्जीनिया के भविष्य का प्रश्न वास्तव मे पश्चिमी भूमि के निबटारे के प्रश्न से अलग नही किया जा सकता था और इस समस्या के प्रति जेफर्सन का रुख बिल्कुल सन्तोषजनक ढग से कभी समझाया नही गया । जेफर्सन का अपने जीवन के प्रारम्भ से ही पश्चिमी विस्तारवाद से सम्बन्ध था, क्योकि १७४९ में स्थापित लायल कम्पनी मे उन्हे अपने पिता के शेयरो का उत्तराधिकार मिला था । सम्भवत उससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि उनके एक अभिभावक डा० थामस वाकर फ्रासीसी और इडियन युद्ध के बीच तथा क्रान्ति के अन्त मे वर्जीनिया मे भूमि-व्यापार-हितो के समस्त इतिहास मे सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे।

यह सोचना निस्सन्देह भूल होगी कि जेफर्सन ने व्यक्तिगत लाभ की आकाक्षा से पश्चिमी भूमि मे अभिरुचि प्रदर्शित की। उनका समूचा सामाजिक दर्शन एक सर्वदा खुली सीमा की कल्पना पर आधारित था। परिणाम स्वरूप इस समस्या के प्रति उनकी नीति, अन्य बडे बडे जमीन्दारो की अपेक्षा जिनका किसी न किसी भूमि-कम्पनी मे व्यक्तिगत स्वार्थ था, अधिक राजनीतिक और अधिक दृढ थी। जैसा कि हमने देखा है, वर्जीनिया के लिए उनके प्रस्तावित विधान मे एक विशेपता यह भी थी कि जिन जमीनो का बन्दोवस्त नही हुआ था, उन्हे छोटी छोटी इकाइयो मे विभाजित करने की व्यवस्था थी। क्रान्तिकारी युद्ध से प्रवासियो को पश्चिम की ओर, विशेषकर केण्टकी की ओर बढने से किसी प्रकार रोका नही जा सका और विभिन्न भूमि कम्पनियो के एजेण्ट इस बात के लिए अत्यन्त प्रयत्नशील थे कि इन शक्तियो के प्रवाह को सघर्प के मुख्य क्षेत्र से विमुख कर भीतर की ओर उन्मुख किया जाय जहाँ इन्डियनो को पीछे हटा कर नये क्षेत्र खोले जा सकते हैं। इन्ही परस्पर विरोधी स्वार्थो के कारण सघराज्य के सविधान की पुष्टि मे काफी विलम्ब हुआ, क्योकि जिन राज्यो का पश्चिमी भूमि पर कोई दावा नही था, वे चाहते थे कि सारी पश्चिमी भूमि को काग्रेस मे निहित कर दिया जाय। १७८१ तक इस सकट का निवारण नही हो सका।

एडम्स-ली गुट के अपने अन्य मित्रो की भाँति जेफर्सन ने १७७८ के पतझड मे पिट्सबर्ग से कॉग्रेस द्वारा भेजे गये साहसिक अभियानो का समर्थन नही किया, किन्तु उन्होने वर्जीनिया से अधिकृत जार्ज राजर्स क्लार्क का अभियान-दल भेजने मे मेसन और वाइथ के साथ पेट्रिक हेनरी का समर्थन किया—यद्यपि स्वय वे विभिन्न प्रकार के भूमि-व्यापार मे अनिश्चित रूप से व्यस्त रहे। इस दल ने ओहिओ और मिस्सूरी के बीच उत्तर-पश्चिम मे प्राचीन कसकास्किआ और विन्सेनीस की ब्रिटिश चौकियो पर कब्जा कर लिया।

वर्जीनिया के क्रान्तिकारी स्वभावत विस्तारवादी थे, यद्यपि सीमावासियो के प्रति उनकी प्रबल सहानुभूति नही थी। जून, १७७९ मे जेफर्सन के गवर्नर चुने जाने पर राज्य के मामलो मे उनकी विजय का डका वज गया। गवर्नर की हैसियत मे जेफर्सन ने पेट्रिक हेनरी की नीति जारी रखी और १७७९ के पतझड मे ओहिओ के मुहाने पर एक चौकी स्थापित की गयी, जिसका नाम फोर्ट जेफर्सन रखा गया। राज्य के पश्चिमी क्षेत्रो मे भूमि-बदोबस्त के लिए पारित अन्तिम कानून अत्यन्त महत्वपूर्ण था। यद्यपि २२ जून, १७७९ का कानून

जिसके अनुसार एक भूमि-कार्यालय स्थापित किया गया, जार्ज मेसन ने प्रस्तुत किया था, तथापि इसमे सन्देह नही कि उसके बनाने मे जेफर्सन का हाथ था। किन्तु, इरादा चाहे जो रहा हो, इसके परिणामस्वरूप छोटे-छोटे भूस्वामियो की सख्या बढाने मे किसी भी प्रकार सुविधा नही हुई, जैसा कि तीन वर्ष पूर्व की उनकी योजना थी। इस प्रश्न पर प्रामाणिक व्यक्ति माने जानेवाले प्रोफेसर टी पी एबर्नेथी के शब्दो मे, "१७७९ का भूमि-कार्यालय कानून एक भयकर भूल थी। यह एक ऐतिहासिक विडम्बना थी कि जनतन्त्र के जनक जेफर्सन ने एक ऐसे कानून के बनाने मे सहायता की, जिसके द्वारा वर्जीनिया मे लोकतन्त्र की उसी क्षण हत्या हो गयी, जबकि उसका जन्म होनेवाला था। परिणामस्वरूप कुछ ही वर्षो मे राबर्ट मारिस ने वर्जीनिया के पश्चिमी भाग मे पन्द्रह लाख एकड भूमि पर और अलेक्जेण्डर वालकाट ने दस लाख एकड भूमि पर कब्जा कर लिया। शेष भूमि मे से अधिकाश अन्य अनुपस्थित व्यापारियो के हाथ मे चली गयी, जिन्होने कुछ मामलो मे प्रति सौ एकड पर लगभग ५० सेट मूल्य चुकता किया और वह भी ऐसी मुद्रा मे चुकता किया जिसका मूल्य घट चुका था। इस प्रकार काउण्टी का विकास अवरुद्ध हो गया, स्थानीय जनता उन लोगो की सम्पत्ति की रक्षा के लिए विवश हुई, जिन्होने इसका समर्थन नही किया और अधिकाश जनता का शोषण मुट्ठीभर लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए करने लगे।"

जेफर्सन के जीवन-काल मे उनकी इतनी भर्त्सना कभी नही हुई, जितनी वर्जीनिया की गवर्नरी के समय की गयी। यह सोचना कठिन है कि राज्य के इतिहास के उस विशिष्ट काल मे कोई भी व्यक्ति जब तक उसमे असाधारण प्रशासनिक एव सैनिक गुण न हो, उस पद पर सफल हो सकता था। जेफर्सन वाशिगटन नही थे।

अमरीका की साधारण स्थिति सकटापन्न थी। युद्धकाल मे अनेक क्षेत्रो मे उसके उद्देश्य के प्रति उदासीनता ही थी। बहुत ही कम राज्य ऐसे थे जो अपनी सीमाओ के बाहर युद्ध के लिए जन-धन देने को तैयार थे, जिसकी युद्ध-सचालन और विजय प्राप्ति के लिए आवश्यकता थी। १७७६ के बसन्त मे यदि बोस्टन मे विजय हुई तो उसी वर्ष के अन्त मे न्यूयार्क मे वाशिगटन की पराजय हुई। १७७७ मे ब्रिटेन ने कनाडा से आगे बढ कर न्यूयार्क स्थित सेनाओ से सम्पर्क स्थापित करने और इस प्रकार उपनिवेशो को दो भागो मे विभाजित करने का प्रयास किया, किन्तु बरगोयन की पराजय और सरटोगा के आत्मसमर्पण ने

उसके प्रयासो को विफल बना दिया, किन्तु जर्मनटाउन मे वाशिंगटन की पराजय के बाद फिलाडेल्फिया का पतन हो गया और वैली फोर्ज मे शस्त्र व साधनहीन महाद्वीपी सेना को जाडे की भीषण कठिनाइयो का सामना करना पडा।

सरटोगा की विजय नये गणतत्र के लिए एक महान राजनीतिक विजय के रूप मे काफी निर्णायक सिद्ध हुई क्योकि ६ फरवरी, १७७८ को फ्रास के साथ सन्धि हो गयी। इसी कारण इस सकटकाल मे लार्ड नार्थ द्वारा प्रस्तुत समझौते का प्रस्ताव ठुकरा दिया गया। यह प्रस्ताव ऐसा था कि पूर्णरूप से कार्यान्वित होने पर साम्राज्य का उसी आधार पर सुधार सभव था, जिसका जेफर्सन ने अपने 'सक्षिप्त दृष्टिकोण' मे जोरदार समर्थन किया था। फिर भी, यद्यपि फ्रास तत्काल युद्ध मे सम्मिलित हो गया और स्पेन जून, १७७९ मे सम्मिलित हुआ, तथापि इसका सैनिक लाभ बहुत धीरे धीरे प्राप्त हुआ। १७७८-७९ के जाडे तक वाशिङ्गटन का उत्साह शिथिल हो चुका था, कांग्रेस को राज्यो से आवश्यक आर्थिक सहायता नही मिल रही थी और न उसे यह सहायता प्राप्त करने का अधिकार ही था। वह अपनी सेनाओ के पालनपोषण के लिए कागजी मुद्रा पर अवलम्बित थी, जिसका तेजी से मूल्य ह्रास हो रहा था। फ्रासीसी सन्धि के कारण अमरीका के अन्तिम युद्धोद्देश्य के सम्बन्ध मे एक नयी जटिलता उत्पन्न हो गयी—यह एक ऐसा प्रश्न था जिस पर स्वय कांग्रेस में गहरा मतभेद था, विशेषकर अमरीका की भावी सीमाओ के सम्बन्ध मे।

कनाडा को युद्ध का प्रमुख अड्डा बनाने की ब्रिटिश योजना विफल हो गयी। इसलिए अग्रेजो ने युद्ध का भार दक्षिण की ओर कर दिया। उन्होने जार्जिया पर कब्जा करने और उत्तर की ओर बढने की योजना बनायी। १७७८ मे उन्होने सवन्नाह पर अधिकार कर लिया और १७७९ मे वे जार्जिया के भीतरी भाग मे और दक्षिणी कारोलिना की ओर बढे। जेफर्सन के गवर्नर चुने जाने के एक महीने पहले अग्रेजो ने समुद्र की ओर से वर्जीनिया पर प्रथम विशाल आक्रमण किया और काफी क्षति पहुँचायी। जेफर्सन को राज्यका खजाना कांग्रेस की तरह ही खाली मिला। वाशिगटन ने आग्रह किया कि उसके साधन-स्रोतो का उपयोग स्थानीय प्रतिरक्षा के बजाय मध्यवर्ती राज्यो और कारोलिना मे सघर्षरत मुख्य सेनाओ की सहायता मे किया जाय।

वाशिगटन के साथ जेफर्सन के पत्रव्यवहार से प्रकट होता है कि वे वर्जीनिया के ही दायित्व को पूरा करने के लिए कठोर प्रयास कर रहे थे, यद्यपि एक ओर अग्रेजो की विनाशकारी कारवाई चल रही थी, समुद्र मे उनके

सशस्त्र निजी जलपोत तैनात थे और सीमा पर इडियनो का खतरा वढ रहा था। नये राज्य की राजधानी रिचमोण्ड और अन्य राज्यो के बीच परिवहन के अभाव के परिणामस्वरूप प्रशासनिक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो गयी थी। पूर्णतया नौकानयन पर अवलम्वित राज्य मे गाडियो के अभाव से भी कठिनाइया उत्पन्न हो गयी थी। वर्जीनिया ने अपने गवर्नर और कांग्रेस की माँग पर न तो जन-धन की सहायता की और न रसद आदि की पूर्ति की।

१७८० मे अमरीकियो पर और भी विपत्ति आयी। मई मे चार्ल्सटन पर ब्रिटेन ने अधिकार कर लिया और समूचे दक्षिणी कारोलिना को रौद डाला। वर्ष के अन्तिम दिनो मे चेसापीक खाडी मे एक ब्रिटिश जहाजी वेडा पहुँच गया। ५ जनवरी, १७८१ को रिचमोण्ड पर कब्जा कर लिया गया। जेफर्सन को जान वचाकर शीघ्र ही भागना पडा। यद्यपि अग्रेजो का अधिकार दो ही दिनो तक कायम रहा, किन्तु यह एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी, जिससे जेफर्सन के राजनीतिक विरोधियो ने काफी लाभ उठाया। वसन्त ऋतु मे, जव वाशिङ्गटन अभी भी न्यूयार्क पर पूरी विजय प्राप्त करने की फिराक मे थे, वर्जीनिया पूर्ण आक्रमण की अग्निपरीक्षा मे झोक दिया गया। लफायट के नेतृत्व मे कुछ सयुक्तराष्ट्र अमरीकी सैनिक टुकडियाँ भेजी गयी। जेफर्सन की पहले पहल लफायट से मुलाकात हुई, किन्तु जेफर्सन को पुन. रिचमोण्ड छोडने के लिए विवश होना पडा और चारलोटेसविले वापस जाना पडा, जो सरकार का प्रधान कार्यालय वन गया था। जून मे एक ब्रिटिश सैनिक दस्ता चारलोट्सविले तक पहुँच गया और मोण्टिसिलो मे जेफर्सन पकडे जाने से बाल-वाल बचे।

७ जून को विधानसभा की बैठक स्टाण्टन मे हुई, यह और पीछे हटने के वाद नयी राजधानी वनी थी। इस बैठक मे जेफर्सन के खर्चे की तीव्र आलोचना हुई। विरोधियो ने पुन एक आयोजना रखी, जो १७७९ के अन्त मे पहली वार सुझायी गयी थी। उसका उद्देश्य था पूर्ण सैनिक एव असैनिक अधिकारो को किसी अधिनायक के सिपुर्द करना। पहले की भाँति इस वार भी स्पष्ट था कि वर्जीनियन जनतत्र के लोकप्रिय नायक पेट्रिक हेनरी को अधिनायक वनाया जाय। जेफर्सन ने तीसरे वर्ष चुनाव न लडने का पहले ही से सकल्प कर लिया था, यद्यपि सविधान द्वारा वे चुनाव लडने के अ कारी थे। विरोधियो को इसका पता नही था और उन्होने जेफर्सन के व्यवहार के विरुद्ध अनेक औपचारिक आरोप लगाये, जिससे यह आशा की गयी थी कि उन्हे पदच्युत कर

दिया जायगा, किन्तु यह प्रमाण मिलने पर कि अधिनायकवाद की योजना का सामान्यत विरोध किया जायगा, उसे त्याग दिया गया। इस पर जेफर्सन ने चुनाव से हट जाने की घोपणा की और उन्ही की स्वीकृति से जनरल नेल्सन उनके स्थान पर चुने गये।

अव सैनिक पासा पलट चुका था, दक्षिण मे अग्रेज चार्ल्सटन और सवन्नाह से भगा दिये गये थे, और उत्तर की ओर वाशिङ्गटन और फ्रासीसी एडमिरल डिग्रास ने मिलकर ब्रिटिश सेनापति कार्नवालिस को अपनी रक्षा के लिए विवश किया और अन्त मे १६ अक्तूबर, १७८१ को यार्कटाउन मे उसे आत्मसमर्पण करना पडा। फ्रासीसी स्थल और जलसेना की सहायता तथा वाशिङ्गटन का कुशल सैन्य-सचालन निर्णायक सिद्ध हुआ। इस बीच, सितम्बर मे जेफर्सन ने वर्जीनिया विधान-सभा के लिए पुन खडा होने का निर्णय किया ताकि वे गवर्नर की हैसियत से अपने आचरण के विरुद्ध लगाये गये आरोपो का उत्तर दे सके, किन्तु विरोधियो ने इन पर जोर नही दिया और १९ दिसम्बर को विधानसभा ने औपचारिक रूप से जेफर्सन को आरोपमुक्त कर दिया और उनकी सार्वजनिक सेवाओ की पूर्ण सराहना की।

जेफर्सन के लिए यह पर्याप्त न था। वे बड़े ही भावुक पुरुष थे और उन मे कोई राजनीतिक महत्वाकाक्षा नही थी। वे उन लोगो का मत प्राप्त करने का कभी प्रयास नही करते थे, जिन्होने उनके विचार से उनकी बिलकुल अनुचित आलोचना की। उन्होने राज्य के प्रतिनिधि के रूप मे फिलाडेल्फिया वापस जाने से इन्कार कर दिया और उस पच सदस्यीय प्रतिनिधि-मण्डल मे रखे जाने का प्रस्ताव ठुकरा दिया, जिसे काग्रेस यूरोप मे महत्वपूर्ण वार्ता का कार्य सौपना चाहती थी, यह कार्य युद्ध का अन्त निकट होने से आवश्यक हो गया था।

एक वार अपनी सफाई दे देने के वाद जेफसन किसी प्राचीन रोमन की भाति सार्वजनिक जीवन से अवकाश गृहण कर एक सामान्य नागरिक की तरह निजी जीवन व्यतीत करना चाहते थे। १६ सितम्बर को एडमण्ड रण्डोल्फ को उन्होने लिखा, "उस प्रकार की हर चीज से मैंने अन्तिम छुटकारा प्राप्त कर लिया है। अब मै अपने फार्म, अपने परिवार और अपनी पुस्तको मे पहुँच गया हूँ। मेरी मान्यता है कि इनसे कोई चीज मुझे कभी अलग नही कर सकती।"

जेफर्सन के राजनीतिक अवकाश गृहण का एक दूसरा कारण उनकी पत्नी की अस्वस्थता थी, जिसके कारण वे पुन चिन्तित रहने लगे थे। ६ सितम्बर १७८२ को उनकी पत्नी का देहान्त भी हो गया। अपने पीछे वे दो लड़किया

छोड गयी, एक दस वर्ष की और दूसरी चार वर्ष की। एक पुत्र भी था, जो केवल दो वर्ष तक जीवित रहा। कभी कभी जेफर्सन का स्वास्थ्य भी काफी बिगड जाता था, किन्तु मेडिसन और जेम्स मेनरो जैसे उनके घनिष्ठ सहयोगियो को उनके अवकाश-ग्रहण का कोई सार्वजनिक अथवा निजी कारण पर्याप्त नही प्रतीत होता था। आधुनिक जीवनी-लेखको ने भी उन्ही के निर्णय को प्रतिध्वनित किया है। तर्क यह दिया जाता है कि एक ३८ वर्षीय पुरुष को, जो राज्य के मामलो मे पहले ही अपना स्थान ग्रहण कर चुका है, और सेवाओ का अवसर होते हुए उसे छोडने का कोई अधिकार नही था।

जेफर्सन ने २० मई, १७८२ को मनरो को एक लम्बा पत्र लिख कर अपनी निर्दोषिता प्रमाणित की थी, जिससे यह अर्थ लगाया गया है कि इन सब के पीछे उनका आहत अहकार था। फिर भी, जेफर्सन का यह तर्क पूर्ण प्रामणिक था कि राज्य अपने सभी सदस्यो से समान सेवा ले सकता है, किन्तु किसी से स्थायी सेवा नही ले सकता। "यदि हम किसी हद तक दूसरो के लिए बनाये गये है, तो हम उस से भी अधिक अपने लिए बनाये गये हैं। यह मान लेना भावना के प्रतिकूल है और सचमुच उपहासास्पद भी है कि मनुष्य का अपने मे उतना अधिकार नही है, जितना अपने किसी पडोसी या सब पडोसियो मे है।" "हम अपने लिए बनाये गये है।"—यह वास्तव मे प्राकृतिक अधिकार की कल्पना का मूल भूत आधार है और इसीलिए जेफर्सन के राजनीतिक सिद्धान्तो का भी यही आधार है। अपने ही कारोबार की व्यवस्था करना, परिवार का पालन-पोषण करना, बौद्धिक रुचियो के अनुकूल कार्य करना, ये सभी अपना समय व्यतीत करने के वैसे ही उत्कृष्ट मार्ग है, जैसा कि कोई सार्वजनिक कार्य। कोई व्यक्ति अनिवार्य नही है और न किसी को यह सोचना ही चाहिये कि वह अनिवार्य है। कम से कम इसमे जेफर्सन जीवन पर्यन्त दृढ रहे। यदि इसी विचार के और भी अधिक लोग हो जाय तो सार्वजनिक जीवन और भी स्वस्थ हो जायेगा। जेफर्सन को इस बात का पूर्ण ज्ञान था कि सत्ता मनुष्य को भ्रष्ट बना देती है और वे कभी भी भ्रष्ट नही हुए।

जेफर्सन की सेवानिवृत्ति के आलोचको को प्राय इस विचार से आत्म-सान्त्वना मिलती है कि इस अवकाश-काल मे ही जेफर्सन को अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'नोट्स आन वर्जीनिया' लिखने का अवसर मिला। अपने राज्य की स्थिति और साधन-स्रोतो के बारे मे एक प्रश्नावली के उत्तर मे यह पुस्तक तैयार की गयी। यह प्रश्नावली फिलाडेल्फिया स्थित फ्रासीसी दूतावास के

सचिव एम बार्बे डिमार्बोइस ने १७८१ की वसन्त ऋतु मे भेजी थी। यह पुस्तक उसी वर्ष तैयार की गयी और १७८२–८३ के जाडे मे उस मे सशोधन किया गया, १७८४ के पतझड मे पेरिस मे जेफर्सन के पहुचने के बाद ही प्रथम बार यह निजी वितरण के लिए मुद्रित की गयी। १७८६ मे उसका फ्रासीसी अनुवाद हुआ, जो बहुत ही खराब था और जेफर्सन को विवश होकर मूल भाषा मे ही उसे प्रकाशित कराना पडा और दूसरे ही वर्ष यह प्रकाशित हुई।

इस प्रकार 'नोट्स' प्रकाशन के लिए नही लिखे गये थे। गुलामी और वर्जीनिया का सविधान जैसे विवादास्पद विषयो का जितनी स्वतत्रता से उन मे उल्लेख किया गया था, उतनी स्वतत्रता सम्भवत एक प्रकाशित कृति में न दिखायी जाती। दूसरी ओर, पुस्तक का रूप फ्रासीसी दूतावास के प्रश्नो के अनुसार है और सम्भवत जेफर्सन ने अपने राज्य और उसकी समस्याओ को जिस ढग से विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया होता, उस ढग से इस मे प्रस्तुत नही किया गया है।

जिन परिस्थितियो मे 'नोट्स आन वर्जीनिया' लिखा गया, उन पर पूर्ण ध्यान देने पर यह पुस्तक जेफर्सन–सिद्धान्त का प्रमुख स्रोत बन जाती है और हेनरी एडम्स के शब्दो मे, यह 'वर्जीनिया के सब से कर्मठ और आशावादी व्यक्ति' की बहुमुखी प्रतिभा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। इसे पूर्ण रूप मे समझने के लिए किसी भी व्यक्ति को पुस्तक के वैज्ञानिक पक्ष पर अधिक ध्यान देना होगा और नयी दुनिया के पाशविक जीवन के पतन सम्बन्धी बफन तथा अन्य यूरोपीय प्रकृतिवादियो के सिद्धान्तो का जेफर्सन ने जिस बुद्धिमानी और व्यग्यात्मक ढग से खण्डन किया था, उस पर भी विचार करना होगा।

अमरीकी जनतत्र का अध्ययन करने वाले के लिए महत्वपूर्ण परिच्छेद वे हैं, जिन मे जेफर्सन ने अपने सामाजिक एव राजनीतिक विचारो को व्यक्त किये है। ये परिच्छेद विशेष रुचिकर हैं, क्योकि उनकी यूरोप-यात्रा के पूर्व उनकी कृति समाप्त हो चुकी थी और उसे क्रान्तिकारी फ्रांस के पहले के बौद्धिक जगत् के साथ उनके प्रत्यक्ष सम्पर्क का परिणाम नही माना जा सकता।

यह तो स्पष्ट है कि जिस समय जेफर्सन ने "नोट्स आन वर्जीनिया" लिखा, उस समय उनका दृढ विश्वास था कि उदार लोकतत्र एक आदर्श है, जो भू-सम्पत्ति के व्यापक विस्तार पर आधारित समाज मे प्राप्त किया जा सकता है और जिस मे व्यापारिक अथवा औद्योगिक हितो की अपेक्षा कृषक हितो का ही

प्रभुत्व रहेगा। उदार लोकतत्र मे व्यक्तिगत अधिकारो को सरकारी दमन से कोई भय नही रहेगा और उस मे निजी तथा सार्वजनिक नैतिकता के बीच समाञ्जस्य स्थापित होगा। उनके द्वारा अनुप्राणित वैधानिक कार्यो का परिणाम चाहे यह न रहा हो, परन्तु उद्देश्य यही था और उसका सैद्धान्तिक औचित्य एक प्रख्यात गद्याश मे इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

"साधारणतया किसी भी राज्य मे उसके कृषको की तुलना मे दूसरे पेशेवर नागरिको का जो अनुपात है, वह राज्य के स्वस्थ अगो तथा हानिकर अगो का अनुपात है और वह एक ऐसा मापक यत्र है, जिससे भ्रष्टाचार की मात्रा का अनुमान लगाया जा सकता है। जबकि हमारे पास परिश्रम करने के लिए भूमि है, तो हमारी इच्छा यह कभी नही होनी चाहिये कि हमारे नागरिक किसी कारखाने की बेच पर बैठकर मशीन के पहिये घुमाते रहे। खेती-बारी मे बढई, राजगीर, लुहार आदि की आवश्यकता होती है, किन्तु उत्पादन के साधारण कारोबार के लिए हमारे कारखाने यूरोप मे ही रहे तो अच्छा है। अच्छा तो यही होगा कि सामान और माल मजदूरो को अपनी जगह पर ही भेजा जाय, न कि उन्हे अपने माल और सामग्री के स्थानो पर बुलाया जाय जहाँ वे अपने साथ अपने रहन-सहन के तौर-तरीके भी लादते फिरे। अटलाटिक के पार यूरोप सामानो को भेजने से जो नुकसान होगा, उसकी पूर्ति सुख और सरकार के स्थायित्व से की जा सकेगी। बडे-बडे नगरो की भीडे पवित्र सरकार के लिए उतनी ही पीडाजनक हैं, जिस प्रकार मानव-शरीर पर फोडो के कारण पीडा होती है। किसी भी राष्ट्र का व्यवहार और आत्मशक्ति ही उसके प्रजातत्र के बल का काम देती है। इनका पतनोन्मुख होना ऐसा रोग है, जो उसके कानून और विधान की मूल आत्मा को शीघ्र ही खा जाता है।"

इस प्रकार के समाज का विस्तारवादी होना अनिवार्य है और कोई कारण नही जान पडता कि विस्तार को क्यो रोका जाय। जेफर्सन ने अनुभव किया कि भूमि की अधिकता से अपव्यय और उत्पादन बढ नही पाता है। इसके लिए कुशल विदेशी मजदूरो को बुलाकर और उनमे यात्रिक कौशल सीख कर इस दोष को दूर किया जा सकता है। किन्तु इसके अतिरिक्त भी जेफर्सन, जो अर्थ-शास्त्र की अपेक्षा राजनीति को अधिक महत्व देते थे, अमरीका मे प्रचलित इस भावना को सदेह की दृष्टि से देखते थे कि यूरोप से लोग बडी ही तेजी के साथ अमरीका मे जाकर बसे।

"नवजात समाज का मूल लक्ष्य नागरिक सरकार है। अतएव उसके प्रशासन

का सचालन सर्वसाधारण की सहमति से होना चाहिए। सभी प्रकार की सरकारो के अपने अपने विशिष्ट सिद्धांत होते हैं। हमारी सरकार कदाचित् विश्व की किसी भी सरकार से बिल्कुल भिन्न है। यह ब्रिटिश सविधान तथा प्राकृतिक अधिकार और प्राकृतिक बुद्धि पर आधारित अन्य सविधानो के मुक्त सिद्धातो का समन्वय है। पूर्ण राजतत्र के सिद्धातो से बढकर इनका कोई विरोधी नही हो सकता। फिर भी, हम इन से अधिक से अधिक प्रवासियो के वहाँ वसने की आशा कर सकते हैं। वे अपने साथ अपनी सरकारो के सिद्धात लायेंगे, जो उनमे उनकी युवावस्था मे ही भर गये होगे, यदि वे इन राजतत्रो के सिद्धान्त उतार फेकने मे समर्थ भी हुए तो उसके वदले सामान्यत अनियत्रित राजनीतिक निरीहता फैल जायगी।"

यह देखने मे आयगा कि जेफर्सन ने उन सिद्धान्तो मे कोई रियायत नही की, जिनके आधार पर उनके देश का शासन-सचालन हुआ। शासको के अत्याचार और लोकतात्रिक शासन के भ्रष्टाचार के विरुद्ध एकमात्र सरक्षण के रूप मे लोकप्रिय शिक्षा के उनके समर्थन मे तथा पूर्ण सहिष्णुता के उनके तर्क मे भी इसी प्रकार की स्पष्टवादिता पायी जाती है। यहाँ उन्होने अत्यत सम्माननीय नागरिको के दृढ विश्वासो को उत्तेजनात्मक ढग से चुनौती दी; "सरकार के उचित अधिकार ऐसे कार्यो तक ही सीमित हैं, जो दूसरो के लिए हानिकारक होते है। किन्तु मेरा पडोसी यदि यह कहे कि २० देवता हैं अथवा ईश्वर है ही नही, तो मुझे कुछ नुकसान नही पहुँचेगा। वह न तो मेरी जेब काटता है और न मेरी टाग तोडता है।" इस आलोचना को इतनी आसानी से भुलाया या क्षमा नही किया जा सकता।

'नोटस आन वर्जीनिया' मे सर्वत्र आशावादिता की झलक दिखाई पडती है। केवल एक विपय पर जेफर्सन ने गम्भीर चिन्ता व्यक्त की है "हम लोगो के बीच दासता का जो अस्तित्व है उसका लोगो के आचरण पर वहुत बुरा प्रभाव पडता है।" सर्वोपरि, उन्होने इस वात का उल्लेख किया कि कैसे मानव श्रम का अध पतन हुआ और श्रम की पूर्ति के लिए गुलामो का एक वर्ग खडा किया गया। ऐसी वुनियाद पर एक जनतात्रिक समाज स्थायी रूप से कैसे टिका रह सकता है? क्या किसी राष्ट्र की स्वाधीनताओ को सुरक्षित समझा जा सकता है जवकि वहाँ के लोगो के मन से यह दृढ धारणा ही मिटा दी जाय कि प्राणिमात्र की स्वाधीनता भगवान की देन है और केवल उसके शाप से ही वह नष्ट हो सकती है, दूसरा कोई इन्हे भग नही कर सकता। "वास्तव मे जव कभी मैं

यह विचार करता हूँ कि भगवान न्यायकर्ता है तो मैं अपने देशवासियो के लिए कॉप उठता हूँ, भगवान का न्याय सदा सोया थोडे ही रहेगा।"

किन्तु जेफर्सन स्वय १५० गुलामो के मालिक थे, जबकि उनका विश्वास था कि मालिको की स्वीकृति से या उनकी इच्छा के विरुद्ध और सम्भवत उनका निष्क्रमण करके उन्हे पूर्णतया मुक्त कर देना चाहिये। वे इस समस्या को सरल कार्य नही समझते थे। इस बात की तो आशा नही थी कि सभी जातियाँ एक हो जायेगी और एकमात्र आशा समुद्र पार उनके उपनिवेश बसाने की योजना से थी, जैसा कि उन्होने वर्जीनिया-सहिता मे सशोधन के समय निरर्थक प्रयास किया था और इस प्रकार का विचार अमरीका मे एक पीढी से अधिक समय तक लोगो के मन मे चलता रहा।

यदि दासता जेफर्सन के लोकतान्त्रिक आदर्श के लिए प्रमुख दीर्घकालिक खतरे के रूप मे थी, तो विदेशी युद्ध की सम्भावना सबसे महत्वपूर्ण खतरे के रूपमे थी। "किसी भी विषय पर इतने झूठे मापदण्ड का उपयोग कभी नही किया गया, जितना राष्ट्रो को यह समझाने मे किया गया कि युद्ध करना उनके हित मे है।" युद्ध के लिए अवसर उत्पन्न हो, इसके पूर्व जेफर्सन इस बात के लिए तैयार थे कि अमरीका समुद्री व्यापार बिल्कुल त्याग दे और कृषि पर ही अपनी पूरी शक्ति केन्द्रित करे, किन्तु उन्होने महसूस किया कि यह किसी प्रकार सम्भव नही है। अमरीकी पहले ही से व्यापार की ओर खिंच चुके थे और उन्हे उससे विमुख नही किया जा सकता था। इसलिए युद्ध होकर रहेगे और एकमात्र मार्ग यही था कि उनके लिए यथासम्भव तैयारी की जाय। यह तैयारी स्थल सेना के रूप मे नही, नौसेना के रूप मे होनी चाहिये। किन्तु उनका तर्क यह भी था कि इतनी विशाल नौ सेना की आवश्यकता नही है कि उसका भार देश पर भारी करो के रूप मे पडे जैसा कि यूरोपीय राष्ट्रो मे हुआ था, क्योकि पुरानी दुनिया की प्रबल नौ सैनिक शक्तियाँ—ग्रेट ब्रिटेन, फ्रास और स्पेन—इस स्थिति मे थी कि उनके औपनिवेशिक व्यापार पर अमरीकी मुख्य भूमि से आक्रमण हो सकते थे, जब कि वे अपने प्रतिद्वन्द्वियो के भय से उसके सरक्षण के लिए अपने जहाजी बेडो के एक भाग को ही खतरे मे डालते थे। जेफर्सन का ख्याल था कि अमरीकी नौ सेना केवल इतनी बडी होनी चाहिए कि वह दूसरो को खटकती रहे और परिणामस्वरूप बडी शक्तियाँ अमरीकियो के लिए युद्ध-काल मे स्वतत्र समुद्री व्यापार का अधिकार स्वीकार करके उनको तटस्थ रखने का प्रयास करेगी।

तब तो जेफर्सन को शान्तिवादी समझना एक भूल होगी, यद्यपि बहुत ही कम महान राजनीतिज्ञ स्वभावत इतने प्रसिद्ध शान्तिवादी हुए होगे। एक सीमित दायित्व के युद्ध के सिद्धान्त मे उनका विश्वास था और इस सिद्धान्त की उपयोगिता सिद्ध करने के लिए परिस्थितियो ने उन्हे पर्याप्त अवसर प्रदान किया।

उनकी पत्नी की मृत्यु ने सार्वजनिक कार्यों से जेफर्सन के अलग रहने के एक प्रमुख कारण को दूर कर दिया और उन्हे माण्टिसिलो छोडने के लिए प्रोत्साहन मिला। नवम्बर, १७८२ मे शान्तिवार्ता मे सम्मिलित होने के लिए उन्हे यूरोप जाने को कहा गया, जाडे के मौसम के कारण उनके प्रस्थान मे विलम्ब हुआ और जहाज द्वारा उनके प्रस्थान के पहले ही एक अस्थायी सन्धि होने का समाचार अमरीका पहुच गया। अत उन्हे पुन॰ अपने राज्य की सेवा करने का अवसर मिला। वर्जीनिया-धारासभा ने एक बार और उन्हे कांग्रेस के लिए अपना प्रतिनिधि चुना।

नवम्बर, १७८३ मे जेफर्सन ने कांग्रेस मे अपना स्थान ग्रहण किया और उन्होने बडी तत्परता से छमाही कार्य आरम्भ कर दिया। उन्हे शान्ति-सन्धि की पुष्टि पर विचार करने वाली समिति का अध्यक्ष चुना गया और मुद्रा सम्बन्धी रिपोर्ट तैयार करने का कार्य सौपा गया, जिसके परिणामस्वरूप डालर को बुनियादी अमरीकी मुद्रा इकाई के रूप मे स्वीकार किया गया। इसी प्रकार उन्हे अन्य कार्य भी सौपे गये। जब कि, अमरीका एक स्वीकृत सार्वभौमिक शक्ति के रूप मे प्रकट हो रहा था, तब जेफर्सन उसकी प्रमुख समस्याओ तथा साधन स्रोतो का स्पष्ट चित्र प्राप्त करने की स्थिति मे थे।

१ मार्च, १७८४ को वर्जीनिया ने ओहियो के उत्तर और पश्चिम भाग मे अपने दावो को अमरीका को अन्तिम रूप से सौप दिया। इस सम्बन्ध मे जेफर्सन ने महत्वपूर्ण सेवा की। अमरीका के पश्चिमी प्रदेशो के भावी शासन के प्रश्न पर विचार करने वाली एक समिति के अध्यक्ष जेफर्सन पहले ही से नियुक्त हो चुके थे और इसकी रिपोर्ट उसी दिन प्रकाशित हुई जिस दिन अधिकार-समपर्ण का कार्य सम्पन्न हुआ। कांग्रेस मे यह बात साधारणतया पहले ही से स्वीकार कर ली गयी थी कि उस क्षेत्र को नये राज्यो मे परिवर्तित कर दिया जाय और जनसख्या अनुकूल हो जाने पर उन्हे संघराज्य मे मिला दिया जाय। जेफर्सन की रिपोर्ट ने इन योजनाओ को ठोस रूप प्रदान किया और वस्तुत. दस नये राज्यो के लिए इसमे व्यवस्था की गयी। इन रिपोर्टों मे जेफर्सन की **विशिष्ट**

इस तरह प्रकट हुई कि उसमे इस वात की व्यवस्था थी कि नये राज्यो की सरकारे प्रजातात्रिक होगी, उनके कोई परम्परागत अधिकार नही होगे और सन् १८०० के वाद वहाँ दास प्रथा का अन्त कर दिया जायगा। किन्तु काग्रेस मे विचारविमर्श के दौरान मे दोनो ही वाते और दस राज्यो के निर्माण की वात उडा दी गयी। १७८४ के अध्यादेश को कभी कार्यान्वित नही किया गया, किन्तु वह १७८७ के अध्यादेश का आधार रहा। इस अध्यादेश ने, जो अपनी अनुप्रेरणा मे पूर्व अध्यादेश से कम लोकतात्रिक था, उस क्षेत्र की भावी सरकार को न केवल नियमित वनाया, जिस पर वह लागू किया गया, वल्कि अमरीका के सभी अतिरिक्त भावी प्रदेशो की राजनीतिक व्यवस्थाओ के लिए एक आदर्श प्रस्तुत किया। १७८७ के अध्यादेश मे दासता-विरोधी प्रावधान पुन प्रकट हुआ।

पश्चिमी समस्या का आर्थिक तथा राजनीतिक स्वरूप भी था। जेफर्सन उस समिति के अध्यक्ष थे, जिसने भूमि के सर्वेक्षण और वटवारे की प्रणाली पर रिपोर्ट दी और महाद्वीपी सेना के सैनिको के लिए अनुदानो की व्यवस्था की। किन्तु अनेक सम्वन्धित जटिल समस्याओ के लिए जो समाधान प्रस्तुत किये गये, उन्हे स्वीकार नही किया गया और एक वर्ष के वाद कॉग्रेस ने प्रथम भूमि अध्यादेश स्वीकार किया।

जवकि जेफर्सन का अधिकाश समय युद्धोत्तर पुनर्निर्माण तथा नयी सस्थाओ की रचना मे व्यतीत हुआ, अमरीका के विदेशी सम्बन्धो से उत्पन्न मामलो मे भी वे काफी व्यस्त रहे। उन्हे तीन सदस्यो की एक समिति का अध्यक्ष वनाया गया, जिसने मार्च, १७८४ मे, रिपोर्ट दी कि उन देशो के साथ, जिनके साथ अमरीका का औपचारिक सवध नही है, मित्रता और व्यापारिक सन्धि की वातचीत के लिए यूरोप एक दल भेजा जाय। पुरानी दुनिया मे अमरीका के पहले ही से दो प्रतिनिधि थे—वेजामिन फ्रैकलिन, जो दिसम्बर, १७७६ से ही पेरिस मे मत्री थे और जान एडम्स, जो दिसम्बर, १७७९ से ही कूटनीतिक कार्यवश यूरोप मे रखे गये थे और अव हेग मे मत्री थे। मध्य राज्यो (Middle States) का एक प्रतिनिधि था और एक दूसरा न्यू इगलैण्ड का था, इसलिए यह सम्भव था, कि ऐसे दल का तीसरा सदस्य दक्षिण से ही लिया जाय और ७ मई, १७८४ को जेफर्सन को इस रिक्त स्थान पर मनोनीत कर दिया गया।

अध्याय–५

राजदूत

(१७८४–१७८९)

जेफर्सन ने अपने जीवन के जो पॉच वर्ष यूरोप मे व्यतीत किये, वे किसी भी ऐतिहासिक प्रवृत्ति के लिए, उनके जीवन के दूसरे महत्वपूर्ण काल की अपेक्षा अध्ययन का अधिक आकर्षक विषय सिद्ध होगे। नयी दुनिया का दार्शनिक अब पुरानी दुनिया के सामने था, जो अपने चरमोत्कर्ष के सँध्याकाल मे पहुँच चुकी थी। वह एक उच्च आर्य जातीय और आडम्बरयुक्त समाज का सदस्य होते हुए भी प्रजातन्त्रीय सरलता का स्पष्ट समर्थक था, वह विभिन्न राष्ट्र-परिवारो के नवीनतम नौसिखिए राष्ट्र का प्रतिनिधि था और जिसे पहले ही से अपने राष्ट्र के भव्य भविष्य का कुछ-कुछ आभास मिल चुका था, वह यूरोप के प्राचीनतम और गर्वोन्नत राजतन्त्रो के मन्त्रियो के समक्ष इस नये राष्ट्र के हितो का समर्थन कर रहा था। औपनिवेशिक विलियम्सबर्ग की राजधानी मे प्रस्फुटित राजनीतिक दर्शनशास्त्र और माण्टिसिलो जैसे कस्बे मे किया गया अध्ययन वोर्बोन्स फ्रास के सुसस्कृत और परम्पराबद्ध समाज के सामने किस तरह ठहर सकता था? जिसने बडे-बडे नगरो की बुराइयो के बारे मे इतने विश्वास के साथ लिखा और जिसने आज के बेडफोर्ड (इगलैण्ड) के आकार के बराबर फिलाडेलफिया से बडा कोई नगर कभी देखा नही था, वह पेरिस को देखकर, जिसकी आबादी पॉच या छ लाख थी, अथवा लन्दन को देखकर, जिसकी आबादी लगभग ७॥ लाख थी, कितना आश्चर्यचकित हुआ होगा?

अपने सुयोग्य और भावी उत्तराधिकारी गौनियर मारिस की भॉति जेफर्सन ने काफी डायरी नही रखी, वे अपनी यात्रा के तथ्यो पर नोट जरूर लिखते थे। उनकी यूरोपीय यात्रा का पूर्ण चित्र अमरीका के साथ उनके अनेक सरकारी और गैर-सरकारी पत्रव्यवहारो से तथा उस समय और बाद मे उनके फ्रासीसी मित्रो को लिखे गये पत्रो से प्राप्त किया जा सकता है, जिनकी खोज और व्याख्या का अधिकतर श्रेय प्रोफेसर चिनार्ड के अनुसधान को है। प्रोफेसर चिनार्ड उन इने गिने इतिहासकारो मे से हैं, जिनकी कृतियो से यह तथ्य प्रकट होता है कि सस्कृतियो के बीच व्यक्तिगत और बौद्धिक सम्पर्क उनकी रचनात्मक गतिविधियो के लिए उतनी ही आवश्यक है जितना वस्तुओ के आदानप्रदान के

लिए यातायात और यह कूटनीतिज्ञो की कूटनीति की अपेक्षा कही अधिक निकटतम होता है। १८ वी शताब्दि में, जिससे जेफर्सन का अनिवार्य सम्बन्ध था, उन बातो की विशेष सराहना की जाती थी, जिनका समाज से अधिक सबध रहता था और बीसवी शताब्दी के राजनीति से उन्मत्त विश्व मे सराहना की इस भावना का बडी तेजी से लोप होता जा रहा है।

सच पूछा जाय तो जेफर्सन ने यूरोप मे जो कार्य किया, वह काग्रेस की कल्पना से भिन्न था, क्योकि त्रिसदस्यीय दल, जिसने अमरीका और पुरानी दुनिया के बीच नये व्यापारिक सम्बन्ध का ढाचा तैयार करने के लिए १७८४ के ग्रीष्मकाल में पेरिस मे अपना कार्य आरम्भ किया, अधिक समय तक कायम न रहा। मई, १७८५ मे एडम्स लन्दन मे राजदूत नियुक्त किये गये और जुलाई मे फ्रेकलिन के सेवानिवृत्त हो जाने पर उनके स्थान पर जेफर्सन फ्रास मे राजदूत नियुक्त किये गये। पेरिस मे अपने प्रथम वर्ष मे जेफर्सन ने अपने साथियो की वरिष्ठता और अधिक अनुभव का सम्मान करते हुए अपने को बिल्कुल पीछे रखा। अब वे अपने पैरो पर खडे हुए और उत्तरदायित्व बढ जाने से उनका विश्वास भी बढता गया। उनकी घर की चिन्ता और उदासीनता की प्रवृत्ति का अन्त हो गया। इस उदासीनता के कारण उनकी इस यात्रा का प्रारम्भिक भाग उत्साहहीन-सा रहा।

जेफर्सन ने ६ वर्ष बाद लिखा, "फ्रास के दरबार मे डा० फ्रैंकलिन से उत्तराधिकार-ग्रहण का दृश्य आत्मा को कचोटने वाला था। अमरीका के राजदूत के रूप मे किसी के सम्मुख प्रस्तुत किये जाने पर ऐसे मामलो मे साधारण प्रश्न यह हुआ करता, श्रीमान् क्या आप डा० फ्रैंकलिन का स्थान ग्रहण करते हैं?" मैंने साधारणतया उत्तर दिया, "श्रीमान्! उनका स्थान कोई नही ग्रहण कर सकता, मैं तो उनका उत्तराधिकारी मात्र हूँ।" रण्डाल ने जेफर्सन के इस सुखद वृत्तान्त को एक सुन्दर रचना का रूप प्रदान किया और उसे विशेष आवरण प्रदान करते हुए जेफर्सन का यह उत्तर वर्जेनोस के प्रति बना दिया। वर्जेनीस फ्रास के विदेश-मत्री थे और उस सन्धि के रचयिता थे, जिसके अतर्गत ब्रिटेन ने विनम्रतापूर्वक अमरीका को मुक्त किया। बाद के जीवनी-लेखको ने वस्तुत रण्डाल का ही अनुसरण किया है, यद्यपि उनकी आसु रचनाएँ, जो फ्रासीसी भाषा मे थी, शायद ही जेफर्सन की परिधि के अन्तर्गत थी। वास्तव मे इस उपाख्यान की मूल बात सही है। फ्रैंकलिन ने पेरिस के रगमच पर जिस पूर्णता के साथ हृदयग्राही, किन्तु निपुण, कूटनीतिज्ञ, सकीर्ण

किन्तु साहसिक, विद्वत्तापूर्ण समाजप्रिय दार्शनिक और मित्र की जो भूमिका अदा की वैसी शायद ही कभी दुहरायी गयी हो। यदि जेफर्सन ने प्रयत्न करने की मूर्खता की होती तो भी उनमे कुछ ऐसे गुणो का अभाव था, जिससे इस प्रकार का कार्य सभव नही हो सकता था।

चिनार्ड ने लिखा है, "वे एक अच्छे श्रोता थे और फ्रेंकलिन की अपेक्षा अधिक गम्भीर थे। वे सम्भलकर फ्रेंच बोलते या लिखते थे। डाक्टर फ्रेंकलिन जितनी ही बुरी फ्रेंच लिखते थे उतनी ही बुरी बोलते भी थे। उनकी बातचीत मे असाधारण अनर्गल बाते होती थी, परन्तु जेफर्सन इतने सवेदनशील और सतर्क थे कि जिन लोगो से घनिष्ठ परिचय नही होता उनसे वे अधिक वार्तालाप या विवाद मे उतरने के पहले अपने को तोलते थे। हम कह सकते है कि विशुद्ध फ्रासीसी क्षेत्र मे जेफर्सन ने वास्तव मे कभी आत्मीयता का अनुभव नही किया। उनकी प्रारम्भिक फ्रासीसी मित्रताएँ अधिकतर फ्रेंकलिन के कारण हुई और उन्ही के द्वारा उन्होने टर्गोट के दार्शनिक अनुयायियो के साथ सम्पर्क स्थापित किया, जिसका परिणाम बाद मे डुपोण्ट डि नेमूर्स और डेस्टट डिट्रेसी के साथ रोचक पत्रव्यवहार मे निकला। लफायट के साथ उनके परिचय से वे राजदरबार के विरोधी अन्य तथा बौद्धिक राजनीतिक तत्वो के सम्पर्क मे आये। लफायट से उनकी बाद मे भेट ऐसी परिस्थिति मे हुई थी, जो रिचमोण्ड की घेराबन्दी से बिल्कुल भिन्न थी।

व्यापार-मडल की सदस्यता के दौरान मे जेफर्सन को फ्रास मे अमरीका और अमरीकियो के प्रति उत्साह की लहर से सहायता मिली और कभी कभी उलझन भी पैदा हुई। यह लहर फ्रास के उदार और बुद्धिजीवी क्षेत्रो मे स्वातत्र्य युद्ध के अन्त और फ्रासीसी क्रान्ति के आरम्भ के बीच के दिनो में व्यापक थी। अमरीकी राज्य-क्रान्ति मे लडने वाले फ्रासीसी अफसरो के लेखो से भी इस लहर को बल मिला। अपने अमरीकी साथियो के प्रति बाद मे भी उनके हृदय में जो सवेदनशील भाव रहे, वैसे ऐतिहासिक गठबधनो मे कदाचित ही मिलते हैं। अमरीका मे रूसो के अनुयायिओ को उस आदर्श समाज का नमूना देखने को मिला, जिसकी उन्होने कल्पना की थी और उसे उन्होने अपने देश मे स्थापित करने का विचार किया। सेन्ट जान क्रेवकूर तथा अन्य लोगो ने, जो कम प्रतिभाशाली और निरभिमान थे, लोकतान्त्रिक नम्रता, शुद्ध नैतिकता और प्राकृतिक पवित्रता के — प्यूरिटन और पायनियर के मिश्रित गुण — सजीव चित्रण मे योग दिया था, जिसका फ्रासीसी विचारधारा पर काफी प्रभाव पडा और

जिसके प्रभाव से पचास वर्ष बाद प्रतिभाशाली तोकविले भी पूर्णरूप से नही बच सके। अमरीका गये हुए सैनिको या अफसरो के लेखो ने मैवली और रायनाल जैसे बुद्धिजीवियो को जो अमरीका नही गये थे, काफी प्रेरणा प्रदान की और जेफर्सन ऐसी रहस्यपूर्ण गाथाओ तथा किम्ब्रदन्तियो को सुधारने मे व्यस्त रहे और कभी कभी वे उन फ्रासीसियो पर झुझला पडते, जो पत्रो मे अमरीकियो को यह सालह देने के लिए उत्सुक थे कि उन्हे अपने कारोबार की व्यवस्था किस प्रकार करनी चाहिए, क्योकि वे यह तर्क देते थे कि अमरीका मानव समाज की आशा है, इसलिए यह हर व्यक्ति का कर्त्तव्य है।

जेफर्सन ने अपनी आत्मकथा मे लिखा है कि इन वर्षो के दौरान में उन्होने अपने कूटनीतिक भार को हल्का कर दिया था। इन वर्षो को हम सक्रिय कार्यशीलता की अपेक्षा उनके द्वितीय प्रशिक्षण–काल–पर्यवेक्षण और अनुकरण का वर्ष मानने का लोभ सवरण नही कर सकते। उनकी यात्राओ के अभिलेखो तथा इन यात्राओ से जो टेक्निकल तथा सामाजिक ज्ञानवर्द्धन हुआ तथा समय समय पर उनके स्थापत्य सौन्दर्य और प्राचीन सग्रहालयो मे लीन हो जाने की ओर हमे ध्यान देना चाहिए। जो कार्य उन्हे सौपा गया था, उस ओर वे ध्यान नही दे पाये। जेफर्सन ने किन चीजो को महत्वपूर्ण माना, इसकी जानकारी १७८८ मे उन्होने अपने दो स्वदेशवासियो के पथप्रदर्शन के लिए जो निर्देश लिखे थे, उन सारगर्भित पत्रो से मिल सकती है। उन्होने सुझाया कि प्रत्येक देश के शिल्प, कृषि तथा सामान्य उत्पादन की मशीनी प्रक्रिया की सफलता सूचीबद्ध करना चाहिये, जिनकी अमरीका को जरूरत है। आज की यान्त्रिक कलाओ और उत्पादन के सम्बन्ध मे उन्होने लिखा —"इनमे से कुछ पर बाह्य दृष्टिक्षेप ही उचित होगा, क्योकि मौजूदा परिस्थितियो मे शायद ही इस पीढी मे अमरीका का मशीनीकरण सभव है। अतएव इन पर गभीरता से ध्यान देना निरर्थक है।

राजनीतिक और सामाजिक सस्थाओ तथा इनसे भी बढकर राजदरबारो को भी उसने इसी रूप मे देखा जैसा कि कोई लदन मे टावर, या वर्सलीज मे चिडियाघर जहाँ कोई शेर, चीते, भेडिये और दूसरे शिकार किये जाने वाले जानवरो को एक साथ रहते देखेगा। राजनीनिक और सामाजिक सस्थाओ पर राजदरबार के सर्वोपरि प्रभाव का उसने उल्लेख किया है, परन्तु केवल एक चेतावनी के रूप मे।

एव व्यापारिक चिन्ताओ से मुक्त नही हो पाया था। यद्यपि कनाडा की सीमाए पुन १७१४ के पूर्व की स्थिति मे पहुच गयी थी और मिस्सिसीपी तथा ओहियो नदियो के बीच के प्रदेश को छोड दिया गया था, तथापि इस पश्चिमी प्रदेश मे जो सैनिक चौकियाँ थी, वे अभी भी इडियन विद्रोह को रोकने के नाम पर अग्रेजो के हाथ मे थी। सन्धि के अन्य प्रावधानो के साथ इसकी उपेक्षा का वास्तविक कारण यह बताया गया कि अमरीका ने ब्रिटिश साहूकारो के ऋणो के भुगतान की व्यवस्था नही की थी। इस दिशा मे वर्जीनिया द्वारा अनुकूल कार्रवाई करने के जेफर्सन और उनके राजनीतिक साथियो के प्रयास पेट्रिक हेनरी के नेतृत्व मे आयोजित विरोध के कारण विफल हो गये। काग्रेस राज्य के मामलो मे कार्रवाई करने मे असमर्थ थी। यह एक ऐसा बहाना था, जिसे अग्रेज स्वीकार नही कर सकते थे; किन्तु इस मतभेद के पीछे अमरीकियो को गम्भीर सन्देह था कि अग्रेज उत्तर-पश्चिम मे अपना प्रभुत्व कायम रखना चाहते है और इसके साथ ही लोमडी की रोयेंदार खाल के व्यापार को भी जारी रखना चाहते थे, जिस पर कनाडा की व्यापारिक समृद्धि अवलम्बित है। नयी राजनीतिक स्थितियो के अतर्गत हडसन और सेण्ट लारेन्स के बीच पुरानी प्रति-द्वन्द्विता पुन उभड गयी। अमरीका के भावी प्रवासियो और उनके राजनीतिक अनुयायियो ने उस नीति को अत्यन्त अनैतिक समझा, जिसके द्वारा अग्रेज अपने और अमरीकी विस्तारवादियो के बीच के क्षेत्र मे इडियनो को कायम रखना चाहते थे। और भी दक्षिण की ओर, जहाँ वर्जीनिया और उत्तरी कारोलिना के पश्चिमी क्षेत्र—केण्टकी और टेनेसी के भावी राज्य—तेजी से भरते जा रहे थे, बिलकुल भिन्न समस्या थी। क्योकि लुइसियाना और न्यू आर्लियन्स पर स्पेन का अधिकार कायम रहने और फ्लोरिडा को भी (पश्चिमी फ्लोरिडा सहित—आधुनिक अल्बामा और मिस्सिसीपी के तटवर्ती क्षेत्र) ले लिये जाने का अर्थ था मिस्सिसीपी के मुहाने पर स्पेन का और भी अधिक दृढ नियत्रण। यहाँ ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका, दोनो का समान हित था, क्योकि उन्होने मिस्सि-सीपी मे सयुक्त नौकानयन के लिए समझौता कर लिया था। लोगो का गलत अनुमान था कि मिस्सिसीपी का उद्गम कनाडा मे था। इस समझौते से ब्रिटेन को दोहरा लाभ था। वह लुइसियाना पर, जहाँ स्पेन का दृढ नियत्रण नही था, कब्जा करके अपने स्वार्थो को बढाने का लोभ सवरण नही कर सकता था। इस पर भी नये पश्चिमी उपनिवेशो की समृद्धि की जीवन-रेखा जो खुली हुई थी, स्पेनिश आदेश से किसी भी समय बन्द की जा सकती थी और उनका भविष्य

स्पेनिश नीति के उतार-चढाव पर अवलम्बित रह सकता था । यद्यपि जेफ़र्सन को, वाशिङ्गटन तथा वर्जीनिया के अन्य नेताओ की भाँति धीरे धीरे ज्ञात हुआ, तथापि उन्होने पोटोमाक को पश्चिम का एक निर्गम स्थान समझा—और उनके वाद की विचारधारा और कूटनीतिक गतिविधियो मे उसका महत्वपूर्ण योग रहा। तात्कालिक प्रसग की वात यह थी कि पश्चिमी फ्लोरिडा की उत्तरी सीमा सम्बन्धी विवाद से स्पेनवासियो को दक्षिण-पश्चिम के इडियनो में वही भूमिका अदा करने का मौका मिला, जो उत्तर-पश्चिम मे अग्रेज अदा कर रहे थे, एण्ड्रयू जेक्सन के प्रेसिडेण्ट-काल मे वह दिन अभी दूर था, जब 'क्रीको' और 'चेराकियो' को पीछा किये जाने पर मजबूर होकर मिस्सिसीपी पार करके ओकलाहोमा मे जाना पडा ।

यदि अमरीकी अभी भी अपने को चारो ओर से प्रादेशिक रूप से घिरा हुआ समझते थे, तो उन्हे इससे भी अधिक डर इस वात का था कि आर्थिक दृष्टि से वे वहुत ही निर्वल थे । उन्होने जो यह आशा की थी कि ब्रिटेन जो पहले तक उन्हे तैयार माल देता रहा और उनके माल का भी प्रमुख खरीददार रहा वह अमरीका के पक्ष मे अपने जहाजी व्यापार की नीति मे जो अकुश लगाये हैं उन्हे शिथिल कर देगा—केवल छलना सिद्ध हुई । २ जुलाई, १७८३ को मत्रिमडल के निर्णय द्वारा ब्रिटिश वेस्ट इडिज से अमरीकी नौकानयन को वचित कर दिया गया और चाहे ब्रिटिश जहाजो मे ही लाद कर क्यो न लाया जाये, अमरीकी खाद्यपदार्थो पर रोक लगा दी गयी । यह सच है कि कनाडा और समुद्रतटीय प्रदेशो में कमी की पूर्ति के लिए ब्रिटिश उपनिवेशो मे तस्कर व्यापार को प्रोत्साहन मिला और अन्य राष्ट्रो के उपनिवेशो के साथ भी व्यापार सम्भव हो गया, जिनसे आर्थिक स्थिति उतनी भयकर नही हो पायी, जैसी कि स्थिति की औपचारिक विवेचना मे व्यक्त की गयी थी । फिर भी, अमरीकी व्यापार के लिए कोई स्थिर आधार प्राप्त करने के लिए अधिक दवाव डाला जा रहा था, उन अमरीकी निर्यात माल के उत्पादको और व्यापारियो की ओर से जिन्होने युद्धकालीन परिस्थितियो से लाभ उठाकर अपने व्यवसाय का क्षेत्र और विस्तृत कर दिया था ।

विदेशी शक्तियो के साथ अपने पूर्व व्यवहारो मे अमरीकियो ने समुद्री व्यापार के अधिकारो के प्रति सर्वदा वहुत ही उदार दृष्टिकोण वनाये रखा और ब्रिटेन ने एक प्रमुख समुद्री शक्ति के रूप मे तटस्थ व्यापारिक निषेध के सम्वन्ध मे जो कठोर नीति अपनायी थी; उसको जारी नहीं रखा । फ्रास के साथ

व्यापारिक सधि जो १७७८ मे उनके गठबधन के साथ साथ समाहित हुई उसमे तथा डचो के साथ १७८२ मे की गयी सधि और स्वीडन के साथ १७८३ मे की गयी सन्धि मे इसी दृष्टिकोण का समावेश है।

१७८४ मे पेरिस मे तीनो अमरीकी कमिश्नरो का मुख्य कार्य अमीरका और अधिकाश यूरोपीय राष्ट्रो के सम्बन्धो को सर्वप्रथम एक स्थायी आधार पर बनाये रखना था। व्यापारिक नियम बनाने के लिए काग्रेस में क्षमता के प्रभाव और 'सबसे प्रिय राष्ट्र' के सिद्धान्त के साथ चिपके रहने की अमरीकी प्रवृत्ति व्यापारिक विशेषाधिकारो की प्राप्ति के लिए अधिक लाभ की सौदेबाजी की अमरीकी योग्यता को निर्बल बना दिया। किन्तु अमरीकी व्यापार को उन्नतिशील बनाने के लिए बहुमुखी व्यापार अत्यत आवश्यक था, क्योकि, उदाहरणार्थ, युद्ध के बाद ग्रेट ब्रिटेन के साथ पुन स्थापित अमरीकी व्यापार का जो बेमेल सन्तुलन था, उसकी पूर्ति किसी हद तक फ्रास के साथ अधिक व्यापार के द्वारा की गयी। अन्त मे अमरीकी राज्यो के भविष्य और उनकी सरकारो के स्वरूप के बारे मे साधारण अनिश्चितता थी। सघराज्य युद्ध के दिनो मे फ्रास और हालैण्ड का बुरी तरह कर्जदार था और यह दायित्व बताता है कि अमरीका मे वित्तीय स्रोतो का व्यापक अभाव था। यद्यपि युद्धोत्तर_आर्थिक मन्दी १७८५ मे निम्नतम स्तर तक पहुँच गयी थी, जबकि यूरोप मे जेफर्सन के कार्य-काल के बाद के वर्ष स्वदेश मे आर्थिक पुनरुद्धार के वर्ष थे, फिर भी सविधानिक सुधार-सम्बन्धी आन्दोलन से उत्पन्न राजनीतिक तनाव के कारण यह बात प्रकाश मे नही आ पायी और यह तनाव १७८७ के फिलाडेलफिया-सम्मेलन मे चरमसीमा तक पहुच गया था।

१७८४ के काँग्रेस-निर्णय के परिणामस्वरूप यूरोपीय राज्यो के साथ जिन सन्धियो की आशा की गयी थी, वे अन्ततोगत्वा १७८५ मे प्रशा के साथ सन्धि और १७८७ मे मोरक्को के साथ सधिके रूप मे क्रियान्वित हुई। प्रशा द्वारा अमरीकी समुद्री व्यापार-सिद्धात स्वीकार किये जाने से नाम मात्र का ही लाभ हुआ, क्योकि प्रशा का समुद्री व्यापार नाममात्र का था।

इस प्रकार एक राजदूत के रूप मे जेफर्सन की कूटनीति अपेक्षाकृत कतिपय सीमित उद्देश्यो से सम्बन्धित थी। वे अल्जेराइन समुद्री डाकुओ की लूटमार और यूरोप की नौ सैनिक शक्तियो द्वारा उन्हे कर दिये जाने की प्रथा का अन्त करने उद्देश्य से एक समझौता कराने के प्रयास मे विफल रहे और न काग्रेस ही यह

स्वीकार करती कि अमरीकी बन्दियो को छुडाने के लिए आवश्यक धन दिया जाय। जेफर्सन के विचार से यह एक ऐसा अवसर था जब युद्ध छेडना काफी उचित होता। उन्होने उन आन्तरिक एकाधिकारो को भग करने का प्रयास किया, जिनके द्वारा फ्रास और पुर्तगाल ने अमरीकी व्यापार के लिए स्वीकृत अधिकारो को सीमित कर दिया था और अन्त मे वे उस एकाधिकार-स्थिति को समाप्त करने मे सफल हुए, जो अमरीका मे राबर्ट मारिस को तम्बाकू-व्यापार मे प्राप्त था। फ्रास के साथ वाणिज्य-दूतावास की स्थापना मे भी वे सफल हुए। किन्तु महाद्वीपी शक्तियो के वेस्ट इडियन उपनिवेशो मे व्यापारिक अधिकार प्राप्त करने की समस्या का, जिसे वे व्यक्तिगतरूप से सब से अधिक महत्व देते थे, समाधान निकालने मे वे सर्वथा असमर्थ रहे। फ्रास, स्पेन, पुर्तगाल और ग्रेट ब्रिटेन की नीतियो पर अभी भी जहाजी व्यापार (देश विशेष के जहाजो मे ही समान का लदान) हावी था।

फ्रासीसी राजदरबार के साथ जेफर्सन की व्यापारिक वार्ता मे लफायट ने एक उपयोगी मध्यस्थ के रूप मे कार्य किया, जेफर्सन, जिन्होने विशिष्ट अमरीकी स्वार्थो की अपेक्षा सर्वदा व्यापक दृष्टिकोण अपनाया, उनके साथ इसी तर्क का उपयोग किया कि अच्छे व्यापारिक सम्बन्धो से दोनो देशो के बीच राजनीतिक सम्बन्ध और दृढ होगे तथा अमरीकियो द्वारा अनुकूल व्यापार-सन्तुलन की स्थापना से ही अमरीकी फ्रास का ऋण चुकता कर सकेंगे, किन्तु लफायट को कतिपय निहित स्वार्थो के तीव्र विरोध का सामना करना पडा। फ्रास मे राजनीतिक सकट ने अत्यन्त उग्ररूप धारण कर लिया था और चूंकि लफायट रिपब्लिकन थे, अतएव उनके समर्थन का महत्व जाता रहा।

लफायट के साथ इसी सम्बन्ध के फलस्वरूप जेफर्सन का उन लोगो से प्रत्यक्ष सम्पर्क हुआ, जो यह समझते थे कि राज्य मे क्रान्तिकारी सुधारो के अलावा फ्रासीसी राजतन्त्र के समक्ष उपस्थित कठिनाइयो से निकालन का दूसरा कोई मार्ग नहीं है। सोलहवे लुई के यहाँ एक राष्ट्र के अधिकृत राजदूत होने के कारण जेफर्सन दुविधा मे पड गये थे, किन्तु वे सलाह देने से अपने को न रोक सके। सबसे उल्लेखनीय बात यह थी कि गणतन्त्रीय एव जनतन्त्रीय सिद्धात की अपनी तार्किक दृढता के बावजूद तथा यूरोप मे जो कुछ देखा उससे लोकतान्त्रिक शासन के लाभो में और भी विश्वास हो जाने के बावजूद भी, जेफर्सन को इस बात पर कभी विश्वास नही हुआ कि फ्रासीसी केवल अमरीकी सन्स्थानो का अनुकरण करके, जिसकी वे हृदय से सराहना करते हैं, लोकतन्त्र की स्थापना मे

सफल होगे। लोकतत्र एक साविधानिक सिद्धान्त मात्र नही हैं। यह तो एक जीवन प्रणाली है और इस ढाँचे मे ढलने मे फ्रासीसियो को अधिक समय लग सकता है। यह उल्लेखनीय है कि असेवली ऑफ नोटेब्रल्स के समय फरवरी सन् १७८७ मे उसने लफायट को एक पत्र मे यह सुसलाह दी कि अच्छा होगा कि इगलैण्ड को आदर्श मानकर वैधानिक शासन की स्थापना के लिए कार्य किया जाय, इस तरह असेब्रली को सम्राट के कर्ज को चुकाने की स्वीकृति देने न देने का जो अधिकार मिल जाता है, उसका दवाव डालकर वह अपनी नीतियो को उससे स्वीकृत करा सकती है। जेफर्सन अपने इस विचार पर सदा दृढ रहे कि इगलैण्ड को आदर्श मानकर फ्रास प्रगति कर सकता है।

फ्रास मे १७८९ ने स्टेट्स-जनरल (कुलीन, पादरी और नगरीय प्रतिनिधियो की सभा) की बैठक आमन्त्रित करने के बाद भी जेफर्सन ने लफायट को पुन एक योजना प्रस्तुत की, जिसके द्वारा फ्रासीसी सम्राट को ब्रिटेन से मिलता-जुलता एक सविधान स्वीकार करना चाहिए, किन्तु साथ ही साथ व्यक्तिगत अधिकारो का औपचारिक आश्वासन मिलना चाहिये और सम्राट मे निहित इन अधिकारो के त्याग की पूर्ति उसे आर्थिक मुआवजे के रूप मे मिलनी चाहिये। इस बात का प्रमाण है कि इससे पहले जेफर्सन फ्रासीसी अधिकार-विधेयक के रूप पर विचार कर रहे थे और लफायट के प्रारूप मे उन्होने सशोधन करने का प्रयास किया था। इस प्रारूप की टिप्पणियो मे जेफर्सन की राजनीतिक विचारधारा से सम्बद्ध तीन बाते हैं। प्रथम, उन्होने अधिकारो के पृथक्करण के सिद्धान्त के उचित पालन के महत्व पर विशेष जोर दिया। वर्जीनिया-सविधान के विरुद्ध उनकी एक प्रमुख शिकायत यह थी कि उसमे ऐसा नही किया गया। दूसरा उन्होने मानव के प्राकृतिक अधिकारो मे सम्पत्ति को भी रखे जाने पर सन्देह व्यक्त किया। जेफर्सन के लिए सम्पत्ति प्राकृतिक अधिकार के बजाय सामाजिक अधिकार था। तीसरा उन्होने सुझाव दिया कि सविधान मे समय-समय पर सशोधन होना चाहिये। उन्होने पहले-पहल इस सिद्धान्त को प्रकट किया कि एक पीढी को अपने भावी उत्तराधिकारियो को बाधने का कोई अधिकार नही है और बाद मे इस सिद्धान्त को उन्होने विशेष महत्व दिया।

फ्रासीसी पार्लमेण्ट ने फ्रास का सविधान तैयार करने के लिए एक समिति नियुक्त की थी, जिसकी बैठको मे सम्मिलित होने के लिए जेफर्सन को भी आमत्रित किया गया था, किन्तु उन्होने उसमे सम्मिलन होने से इनकार कर दिया। उन्होने अपने मकान मे एक बैठक के लिए अनुमति दी, जिसमे विशेषाधिकार

की विकट समस्या को हल किया गया—यह शिष्टाचार का उल्लघन था, जिस पर स्पष्टीकरण करने के लिए उन्हे फ्रासीसी विदेश-मत्री माण्टमोरिन के समक्ष पहुचना पडा। इस घटना के वाद ही अक्तूवर, १७८९ के आरम्भ मे जेफर्सन ने कुछ महीनो की छुट्टी पर फ्रास से प्रस्थान किया। उन्हे अपनी पुत्री को घर लाना था और अपनी दस हजार एकड भूमि तथा दो सौ गुलामो की देखरेख करनी थी।

वास्तव मे जेफर्सन फिर कभी यूरोप नही आये, किन्तु यहाँ उनकी जो धारणाएँ वनी, वे स्थायी रूप से उनके साथ रही। फ्रास के प्रति उनका स्नेह वना रहा और १७८६ की वसन्त ऋतु मे उन्होने इगलैण्ड की जो सात सप्ताह की यात्रा की थी, उसमे भी उनके उपरोक्त दृष्टिकोण मे कोई अन्तर नही पडा। फ्रासीसी क्रान्ति ने, जैसा कि उन्हे भय था, उग्रवादियो को सत्ताधारी वना दिया और उन्होने पूर्ण लोकतत्र के द्वारा आतक और अत्याचार का मार्ग अपनाया। किन्तु इस राजनीतिक निराशा के वावजूद भी उनकी फ्रासीसी मित्रता पर कोई प्रभाव नही पडा। जेफर्सन जीवन पर्यन्त १८ वी शताब्दि की दो महान क्रान्तियो की वौद्धिक व्याख्या के साकार रूप वने रहे।

अध्याय-६

विदेश-मत्री

(१७९०-१७९३)

जेफर्सन की चैन और शाति प्राप्त करने की आशाए पूरी न हुई। अमरीका के नये सविधान की १७८८ मे पुष्टि हुई और ३० अप्रैल, १७८९ को वाशिगटन ने अमरीकन प्रेसिडेन्ट का पद ग्रहण किया। कांग्रेस ने तीन शासन-विभागो का गठन किया। विदेश-विभाग (स्वदेशी और विदेशी मामलो सहित) युद्ध-विभाग और कोष-विभाग। राष्ट्र पति ने वित्त-मत्री के लिए अलेक्जेण्डर

का अनुभव हो। वयोवृद्ध फ्रैंकलिन के अतिम दिन निकट आगये थे और एडम्स वाइस-प्रेसिडेण्ट के महत्वहीन पद पर आसीन थे। १७८४ से विदेश-विभाग सभालने वाले जान जे मुख्य न्यायाधीश के पद को अधिक पसन्द करते थे। इसलिए जेफर्सन का मनोनयन निश्चित था। वे काफी हिचकिचा रहे थे और उसके लिए कारण भी था—उनकी व्यक्तिगत आर्थिक स्थिति बडी जटिल हो गयी थी, किन्तु फरवरी, १७९० के मध्य तक उन्होने आखिर वह पद स्वीकार कर लिया और नयी अस्थायी राजधानी न्यूयार्क मे अपने साथियो से मिलने के लिए वे रवाना हो गये।

५८ वर्षीय वाशिङ्गटन ने जिस मन्त्रिमण्डल का गठन किया, उस मे जेफर्सन वरिष्ठ सदस्य थे, अब वे ४७ वर्ष के हो चुके थे, एटार्नी जनरल एडमण्ड रण्डोलफ ४३ वर्ष, बाक्स ४० वर्ष और प्रतिभाशाली हेमिल्टन, जिनके पीछे सार्वजनिक सेवा का एक लम्बा इतिहास था, ३३ वर्ष (या सम्भवत ३५ वर्ष) के थे। समकालीनो के चित्रो और वर्णनो से उसके शारीरिक स्वरूप का चित्रण करने मे सहायता मिलती है। ६ फुट ढाई इच ऊचाई, एकहरा बदन, सुर्ख चेहरा और लाल बाल, जो कुछ-कुछ भूरे हो गये थे, देखने मे वे उतने ही देहाती प्रतीत होते थे, जितने रुचियो मे। अपने लजीले स्वभाव के कारण वे शान्त प्रतीत होते थे और उनका व्यक्तिव उतना भव्य और आकर्षक नही था, जितना किसी सहज नेता का होता है, जैसाकि उनके प्रतिद्वन्द्वी हेमल्टन का था।

पेन्सील्वानिया के सिनेटर विलियम मैक्ले ने अपनी पैनी लेखनी से जेफर्सन का वर्णन किया है। सिनेट कमेटी के सामने, जिसके जेफर्सन अध्यक्ष थे, उनके उपस्थित होने पर विलियम मैक्ले ने लिखा —

"जेफर्सन एक क्षीणकाय पुरुष है, उनके व्यवहार मे कठोरता दिखाई पडती है, उनके कपडे उन्हे छोटे प्रतीत होते हैं, वे प्राय एक ओर झुक कर बैठते है और उनका एक कन्धा प्राय दूसरे से काफी ऊँचा उठा रहता है, उनका चेहरा ताम्रवर्णी है और उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व शिथिल सा प्रतीत होता है। उनके चेहरे से अस्थिरता और रिक्तता टपकती है। उनमे ऐसा दृढ और शान्त आचार-विचार नही था, जो एक मत्री की उपस्थिति के लिए शोभनीय समझा जाता है। मैंने उनमे गम्भीरता देखने का प्रयास किया, किन्तु उनके व्यवहार मे चपलता का ही बोलबाला दिखाई पडा। वे प्राय धाराप्रवाह बोलते थे और उनका सम्भाषण भी उनके व्यक्तिगत चरित्र का ही अग बन गया था। उनकी

वाते असम्बद्ध और अव्यवस्थित होती थी। फिर भी, वे जहाँ-कही भी जाते, अपनी बाते सुनाते-जाते और कभी-कभी तो उनमे शानदार भावनाओ के दर्शन होते।

इस प्रकार के व्यक्ति को अब अमरीका का विदेश-विभाग सौपा गया। उन्होने मन्त्रिमण्डल के अतर्गत ही अमरीका के एक नये माने हुए नेता के रूप मे अपने लिए एक अद्वितीय स्थान बना लिया। उस लोकतन्त्र और स्वयं जेफर्सन के बीच विभाजन-रेखा खीचना वडा कठिन है।

गत १५ वर्ष की घटनाओ ने अमरीकी पार्टियो के निर्माण और गठन को तथा स्वय अमरीका के बाह्य रूप को भी वदल दिया। बस्तियो का क्षेत्र विस्तृत हो गया था और उत्तर तथा पश्चिम की ओर वह बढता ही जा रहा था। जनसख्या भी अब लगभग ४० लाख तक पहुँच चुकी थी, जिनमे लगभग ७ लाख गुलाम थे। यह आवादी फ्रास के क्षेत्रफल से भी कुछ बडे क्षेत्र मे फैली हुई थी, जवकि आवादी फ्रास की उस समय २ करोड ६० लाख से ऊपर थी। क्राति के पहले अमरीका की आवादी मे देहाती तत्वो का ही प्रभुत्व था, उस समय उनका प्रभाव ऐसा ही था, किन्तु नगरो की स्थिति ऐसी नही थी, न्यूयार्क जिसकी आवादी १७९० के वाद के दस वर्षो मे प्राय दूनी हो गयी, व्यापारिक प्रभुत्व मे अद्भुत प्रगति कर रहा था।

सम्पत्ति के वितरण मे कुछ परिवर्तन हुआ था। अशतः इसके कतिपय कारण ऐसे थे जिन पर राजनीतिज्ञो का असर नही था। दक्षिण के वड़े-वडे वगान-मालिक, जिनमे स्वय जेफर्सन भी थे, अपनी भूमि पर तम्वाकू के वजाय खाद्यान्न उत्पन्न करने को विवश हो रहे थे और इस प्रक्रिया से उन्हे अनेक मामलो मे हानि उठानी पड रही थी। किन्तु दक्षिण की इस हानि से सारे राष्ट्र की जो क्षति हो रही थी, उसकी पूर्ति १७९० के वाद लम्वे रेशे के रूई के विशाल उत्पादन से की गयी। १७९० मे अमरीका ने जवकि कुल १ लाख ३८ हजार पौंड रूई का निर्यात किया और १८०० मे ३ करोड़ ५० लाख पौंड रूई का निर्यात किया, रुई की खेती के लिए नयी भूमि की खरीद और अधिक गुलामो की खरीद वडी तेजी से वढ रही थी। व्रिटिश वस्त्रोद्योग मे भाप के उपयोग और काटन-जिन के आविष्कार ने वर्जीनिया के वजाय दक्षिणी कारोलिना को दक्षिण का प्रमुख राज्य वना दिया और यह परिवर्तन जेफर्सनवादी लोकतन्त्र के लिए वडा ही दुर्भाग्यपूर्ण रहा। किन्तु यह वात भविष्य मे होने वाली थी। सम्प्रति, दक्षिण के हित उतने स्पष्ट नही थे और

हाल ही मे हुए सघीय सम्मेलन ने दक्षिण मे एक वर्ग के रूप मे साधारण-सी भूमिका ही अदा की, उसने केवल सघीय सरकार मे अपने प्रतिनिधित्व के लिए आवश्यक जनसख्या मे अपने गुलामो को सम्मिलित कराने मे सफलता प्राप्त की। केवल दक्षिणी कारोलिना और जार्जिया ने अफ्रीकी गुलाम व्यापार की, जिससे जेफर्सन को घृणा थी, समाप्ति को स्थगित करने की इच्छा व्यक्त की थी—राष्ट्रीय भावना मे कोई विशेष परिवर्तन न होने के कारण इसे १८०८ मे समाप्त हो जाना वदा था।

सामाजिक श्रेणियो और वर्गो मे जो परिवर्तन हुए, उन पर युद्ध और युद्ध-जनित मुद्रा-प्रसार का विशेप प्रभाव पडा। प्राय सभी उपनिवेशो मे पहले जो धनाढ्य वर्ग था, उसका बोलवाला अस्त हो चुका था। ऊपरी कनाडा (ओण्टेरिओ) की ओर अधिक विस्तार के कारण अमरीका और कनाडा की पुरानी प्रतिद्वद्विताओ को नया वल मिला। किन्तु ब्रिटिश सम्राट की राजभक्त जन-सख्या ने अपने अधीन सेट लारेस क्षेत्र मे फर-व्यापार के स्थान पर कृपि-तत्र स्थापित करके इस विवाद के शातिपूर्ण समाधान का रास्ता खोल दिया था। तथापि क्राति के कारण उपनिवेशो के धनीवर्ग का सर्वनाश नही हुआ। इसमे वे नये लोग भी शामिल हो गये, जिन्होने युद्ध की सरगर्मी मे अच्छी पूँजी जमा कर ली थी। कुछ अर्थो मे मुद्रा-प्रसार ने भी आर्थिक प्रगति को प्रोत्साहन दिया था। अमरीकी आर्थिक शृखला मे सबमे कमजोर कडी उद्योग-धधे मे भी विकास के लक्षण दिखायी पडने लगे। १७८६ मे मन्दी का अन्त हो गया। इसके फल-स्वरूप वहुतसे लोग मिलकर पूँजी का उपयोग करने लगे और वाल्टिक प्रदेशो तथा सुदूरपूर्व एशिया-जैसे दूरवर्ती क्षेत्रो तक अमरीकी व्यापार के पहुच जाने से इस प्रवृत्ति को और भी प्रोत्साहन मिला। इसका परिणाम यह हुआ कि पूंजी-वादी व्यवसाय की बढती हुई वित्तीय मागो की पूर्ति के लिए व्यक्तिगत साहू-कारी एव उधार की प्रक्रिया अपर्याप्त सिद्ध हुई और सयुक्त विनियोग की प्रणाली का विकास हुआ। प्रथम अमरीकी बैंक इसी अवधि मे स्थापित किये गये।

भूमि-विक्री-सम्बन्धी नियमो के मामले मे केवल वर्जीनिया ने ही नही, अन्य राज्यो ने भी कानून वनाये, जिनसे सट्टेवाजी के व्यवसाय का मार्ग खुल गया। यद्यपि इससे सदा सट्टेवाजो की जेवे गर्म नही हुईं (रावर्ट मारिस ने इस तरह का मत प्रकट किया) और न इससे नयी वस्तियो के वसने के कार्य में गम्भीर वाधा ही उपस्थित हुई।

सविधान-निर्माण के प्रश्न पर वर्जीनिया मे जिस प्रकार अनुदारवादियो

और उग्रवादियो के बीच सघर्ष हुआ, वैसा अन्य राज्यो मे भी हुआ और सर्वोपरि अनुदारवादी शक्तियो की विजय हुई। इससे इन गुटो को व्यापार के अनुकूल व्यापारिक और वित्तीय नियम बनाने मे सहायता मिली। मुख्य सघर्ष राज्यीय एव राष्ट्रीय ऋणो के प्रश्न पर हुआ। ये अधिकतर धनियो के हाथ मे गये थे, जो इस तथ्य के बावजूद भी अपना पूरा-पूरा कर्ज चुकाने को तैयार थे, जबकि उनके ऋणपत्रो मे दर्ज रकम की कीमत काफी नीचे गिर चुकी थी अर्थात् कागजी मूल रकम से भी बहुत थोडी चुका करके सर्टिफिकेट पा चुके थे। इसके अतिरिक्त कर्जदारो और महाजनो के बीच पुराने औपनिवेशिक विवाद ने नया और उग्ररूप धारण कर लिया, क्योकि शान्ति के बाद मुद्राह्रास की अवधि मे कृषि-पदार्थों के भाव गिर गये, जिससे कृषिबन्धक-ऋणो का वास्तविक भार और भी बढ गया। १७८६ मे मेसाचुसेट्स के कृषक-कर्जदारो का असफल विद्रोह, जो 'शेज-विद्रोह' (Shays' rebellion) के नाम से प्रसिद्ध है, प्रत्यक्षत इसी का परिणाम था और दो राज्यो—रोड आइलैण्ड और न्यू जर्सी—मे क्रातिकारियो ने सरकार को इतना नियत्रण मे कर लिया कि उन्होने कर्जदारो की सहायता हो, ऐसी आर्थिक नीति अपनाने के लिए उसे विवश कर दिया।

सघीय सविधान समस्या की यही पृष्ठभूमि थी। इतिहासकारो ने सम्बन्धित समस्याओ को अत्यन्त ही सरल रूप मे रखने का प्रयास किया है। दीर्घकाल तक उस युग के इतिहास-लेखन पर फेडरेलिस्ट या हैमिल्टन-परम्परावादियो का ही प्रभुत्व रहा और सघराज्य की इस अवधि को अराजकता, निर्बलता तथा आर्थिक पतन के युग के रूप मे चित्रित किया गया है और बताया गया कि नये सविधान को स्वीकार करके ही अमरीका ने अपने को इस स्थिति से बचाया। यह सविधान १७८७ मे फिलाडेल्फिया-अधिवेशन द्वारा तैयार किया गया था। बाद में इस दृष्टिकोण के विरुद्ध प्रतिक्रिया हुई है। सघराज्य के इस सविधान को समष्टि के रूप मे सफल माना गया। विशेषरूप से उन उग्रवादियो के दृष्टिकोण की यह विजय थी, जो राज्यो के स्वायत्त शासन के कट्टर पक्ष मे थे। सविधान की स्वीकृति के लिए चलाया गया आन्दोलन एक प्रकार से एक सफल प्रति-क्राति का रूप समझा गया, जिसे पैसेवालो ने और विशेषकर उन लोगो ने, जिन्होने सार्वजनिक ऋण लिये थे, उभाडा था। कहा जाता है कि इन लोगो ने आशा की थी कि एक प्रबल सघ-सरकार राज्यो मे क्रातिकारी और मुद्रास्फीतिजनक प्रवृत्तियो को दबा देगी और एक समान व्यापारिक सहिता को अपना कर व्यापारिक व्यवसाय के लिए नया मार्ग प्रशस्त करेगी। आन्दोलन मे प्रबल

सैनिक तत्व भी थे, जो सिनसिन्नाटी के समाज में मिल गये थे तथा क्रांतिकारी सेना के वे अफसर भी थे, जिन्होने एक दृढ सरकार के सेवक के रूप मे नये अवसरो की आशा की थी। आन्दोलन के प्रचार मे देश की आर्थिक कठिनाइयो पर जोर दिया गया था। साथ ही साथ विदेशी आक्रमण के खतरो पर और फूट मे सघराज्य के विघटित हो जाने के खतरो पर भी वल दिया गया था। उग्रवादी लोकतान्त्रिक तत्वो की सम्भाव्य विजय और उसके सम्भावित परिणामो का भयानक चित्र प्रस्तुत करते हुए इन गुटो ने अपने मार्ग पर चलने और एक ऐसी नयी शासन-प्रणाली अपनाने के लिए देश को समझाने मे सफलता प्राप्त की, जिसके अधीन देश और भी उन्नति कर सकता था। कहा जाता है कि हेमिल्टन, मेडिसन और जे द्वारा प्रस्तुत 'फेडरलिस्ट' का यह प्रचार मुक्तरूप से स्वीकार किया गया और उसे समय के अनुकूल समझा गया।

यह निश्चित रूप से सत्य है कि सघराज्य के सविधान मे सशोधन के पक्ष मे मतैक्य की भावना नही थी। किन्तु न तो सशोधन के समर्थको ने और न विरोधियो ने ही एक ठोस गुट वनाया। समर्थको मे कुछ ऐसे लोग थे, जो लोकतन्त्र से निराश थे, इनमे मुख्यत अधिकतर सैनिक तत्व थे, जो युद्धकाल मे तथा उसके वाद काग्रेस के व्यवहार से असन्तुष्ट थे, किन्तु राजतन्त्रवादी आन्दोलन की शक्ति १७८९ तक समाप्त हो चुकी थी और जेफर्सन के इस चिर-विश्वास का कोई उचित कारण नही था कि उनके राजनीतिक विरोधी एक अमरीकी सम्राट की स्थापना की वात सोच रहे है। दूसरी ओर, निस्सन्देह एक दूमरी स्थिति थी। हेमिल्टन ने अधिवेशन मे सविधान के प्रारूप के रूप मे जो झलक प्रस्तुत की, उसके अनुसार यदि सविधान मे कुछ मनोनीत या प्रतिष्ठित वर्गो को स्थान दिया जाता तो सविधान का निश्चय ही स्वागत होता। जवकि जेफर्मन ने फ्रास के लिए आदर्श के रूप मे इगलैण्ड की तात्कालिक प्रणाली प्रस्तुत की, हेमिल्टन भी अमरीका के लिए ऐसी प्रणाली का समर्थन करने के लिए तैयार था।

फिलाडेल्फिया के अधिवेशन के विचार-विमर्शो का परिणाम उतना दूरगामी नही हुआ, वहाँ मेडिसन ही सवसे प्रभावशाली व्यक्ति थे। जो परिवर्तन किये गये उनकी महत्ता पर अत्यधिक वल देना स्वाभाविक ही है। वाशिङ्गटन जैमे व्यक्तियो का इन पर विशेष प्रभाव पडा, जो अमरीकी स्थिति की अन्तर-राष्ट्रीय निर्वलता से प्रभावित थे। मुख्य परिवर्तनो में एक स्वतत्र कार्यपालिका — निर्माण तथा काग्रेस के एक ही सदन मे जनसख्या के अनुसार प्रतिनिधित्व

के सिद्धान्त की स्वीकृति थी, जिसके परिणामस्वरूप प्राचीन पद्धति के अन्तर्गत असन्तुष्ट लोगो के एक छोटे से गुट को प्राप्त निषेधाधिकार की शक्ति निर्बल हो गयी। व्यापार-नियमन का एक मात्र अधिकार केन्द्रीय सरकार को दिया गया, जो उस प्राप्त प्रत्यक्ष कराधान और विधान के सीमित अधिकारो से अधिक महत्वपूर्ण था। इसका अर्थ है कि उसे अन्त मे स्वतत्र राजस्व का अधिकार प्राप्त हो गया।

नये सविधान की पुष्टि का विभिन्न प्रकार से विरोध किया गया। पुरानी राजनीतिक दलवदी के आधार पर किसी हद तक यह सघर्ष चल रहा था, तटवर्ती क्षेत्रो ने सविधान का समर्थन किया और नये प्रदेशो ने इसका विरोध किया। वहुत से ऐसे लोग भी थे, जो अपने आर्थिक सम्वन्धो अथवा सामाजिक स्वार्थो की परवाह न करके, अनमने इस वात से प्रभावित थे कि सघीय सरकार का राज्यो के सम्बन्ध मे अधिकतर वही स्थान होगा, जो शाही सरकार का उपनिवेशो के सम्वन्ध मे था। ये लोग नये सविधान के विरोध मे प्राय. उन्ही कारणो से थे, जिन कारणो से प्राचीन प्रणाली भग हुई थी। सविधान पर सवमे लम्बा वादविवाद वर्जीनिया मे हुआ और यही पर अभिजात और लोकतत्र-वादी वर्ग के वीच तथा पूँजीवादी और भूस्वामी वर्ग के वीच द्वन्द्व आरम्भ हो जाता है। एक ओर थे मेडिसन, भावी विदेशमत्री जान मार्शल, एडमण्ड पेण्डल्टन और जार्ज वाइथ, दूसरी ओर थे पेट्रिक हेनरी, जार्ज मेसन, जेफर्सन के घनिष्ठ मित्र और प्रशसक जेम्स मनरो और रिचर्ड हेनरी ली। सविधान के समर्थको को मुख्यत तटवर्ती क्षेत्रो से समर्थन मिला, जवकि पीडमोण्ट मे हेनरी का प्रभाव कायम रहा। इन समर्थको ने किसी प्रकार एडमण्ड रण्डोल्फ को भी अपने पक्ष मे कर लिया, एडमण्ड रण्डोल्फ फिलाडेल्फिया के उन प्रतिनिधियो मे थे, जिन्होने सविधान पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया था। दूसरी ओर, शेनानडोह घाटी के सीमावर्ती लोगो ने तटवर्ती वडे-वडे भूस्वामियो का साथ दिया और सविधान की पुष्टि का समर्थन किया, जिससे अन्तरराज्यीय व्यापार उन्मुक्त हो जाय और शान्ति-सन्धि के कार्यान्वय मे सहायता मिले।

यह तो स्पष्ट है कि जेफर्सन की सहानुभूति किस ओर है, इसका पहले सफलतापूर्वक अनुमान नही लगाया जा सका। यद्यपि उन्होने प्राकृतिक अधि-कार-दर्शन के लोकतान्त्रिक स्वरुप का प्रतिपादन किया और कभी कभी स्पष्ट शब्दो मे कहा भी कि सच्चे प्रजातत्र का आधार वहुमत का शासन है, जिसे उनके लेखो से उद्धृत किया जा सकता है, तथापि उन्होने कभी भी यह विश्वास

नही किया कि बहुमत के क्षणिक मानसिक आवेग सर्वदा ईश्वर द्वारा अनुप्राणित होते है। उन्होने वर्जीनिया-सविधान की आलोचना अधिकतर इसीलिए की कि उसमे अधिकारो के पृथक्करण का सम्मान करने के लिए उचित व्यवस्था नही की गयी। उन्होने इस बात की भी प्रतिकूल आलोचना की कि उसकी विधानसभा के दोनो सदनो का निर्माण प्राय एक ही ढग से हुआ है।

"कुछ अमरीकी राज्यो मे प्रतिनिधियो और सिनेटरो का चुनाव इस प्रकार होता है, मानो पहला सदन जनसख्या का प्रतिनिधित्व करता है तो दूसरा सदन राज्य की सम्पत्ति का, किन्तु हमारी स्थिति भिन्न है, दोनों सदनो मे प्रवेश के लिए सम्पत्ति और बुद्धि को समान अवसर है। इसलिए, हमे विधानसभा के दो सदनो के विभाजन से वे लाभ नही मिलते, जो सिद्धान्तो के समुचित समन्वय से उत्पन्न हो सकते है और वे लाभ भी नही मिलते, जो उनके पृथक्करण से उत्पन्न दोषो के लिए क्षतिपूर्ति कर सकते हैं।

'नोट्स आन वर्जीनिया' मे अभिव्यक्त इस प्रकार की भावनाओ से आभास मिल सकता है कि नयी सघीय प्रणाली के प्रमुख सिद्धान्तो का तत्काल स्वागत किया जायगा और विशेपकर इमलिए भी कि जेफर्सन को सघराज्य के सविधान की कमजोरियो का विदेशी शक्तियो से बातचीत करते समय काफी आभास मिल चुका था। दूसरी ओर, उन्होने इस कथन को ब्रिटिश प्रचारमात्र बताया कि देश मे आराजकता फैलती जा रही है। शेज का विद्रोह, जिसका सम्मेलन पर प्रभाव पडा, सघ प्रणाली के विरोध का प्रमाण नही था। उसके पीछे प्रपच नही, अज्ञान था, इस विश्वास के साथ कि शासको ने जो किया उसके कारण जनता का विद्रोह करना उचित था। अन्यथा यदि वे सोये रहते तो स्वाधीनता की ही हत्या हो जाती . क्या कोई देश अपनी स्वाधीनता की रक्षा कर सकता है, यदि उसके शासको को समय पर यह चेतावनी न दीजाय कि उनकी जनता मे प्रतिरोध की भावना सुरक्षित है? .. यदि एक दो शताब्दि मे कुछ बलिदान हो भी जाय तो उसका क्या? स्वतत्रता के पौधे को समय-समय पर देशभक्तो और अत्याचारियो के खून से सीचते रहना चाहिए? यही उसकी स्वाभाविक खाद है"।

एक निजी पत्र मे लिखी गयी यह बात बहुत ही कटु है और यदि जेफर्सन की बातचीत मे प्राय ऐसी तीखी चीजे मिलती है तो उमसे उनकी क्रान्तिकारी ख्याति को और भी आसानी से समझा जा सकता है। जब उन्हे फ्रास "विधान की मूल प्रति उपलब्ध हुई तो उन्होने स्वीकार किया कि उसके

विरुद्ध कुछ तर्क निराधार नही है। उन्होने आशा व्यक्त की कि वर्जीनिया इसे ठुकरा देगा और पुन उसका सशोधित रूप प्रस्तुत करेगा ।

मेडिसन और दूसरे लोगो को लिखे गये पत्रो मे उन्होने इस बारे मे अपनी आलोचनाए प्रकट की हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात, जिसकी अन्त मे पूर्ति भी की गयी, एक औपचारिक मानवीय अधिकार की धारा को छोड देना था, जिसमे स्पष्ट रूप से और बिना किसी छलकपट के धर्म की स्वतन्त्रता, प्रेस की स्वतत्रता स्थायी सेनाओ के विरुद्ध सरक्षण, एकाधिकारो के विरुद्ध प्रतिबन्ध, बन्दी-उपस्थापन कानूनो की स्थायी और निर्बाध शक्ति तथा जूरी द्वारा मुकदमो के फैसले की व्यवस्था थी . । जेम्स विल्सन ने जो तर्क प्रस्तुत किया और जिसको 'फेडरलिस्ट' ने प्रतिध्वनित किया, वह यह था कि प्रतिनिधिमूलक सरकार को उसके अधिकारो को सीमित करने के लिए 'अधिकार-विधेयक' की आवश्यकता नही है। इसका जेफर्सन पर कोई प्रभाव नही पडा। "अधिकार-विधेयक एक ऐसी चीज है, जिसे विश्व की किसी भी सामान्य या विशिष्ट सरकार के विरुद्ध जनता को पाने का अधिकार है और जिसे कोई भी न्यायप्रिय सरकार इनकार नही कर सकती और न निष्कर्षो के भरोसे रह सकती है।" दूसरे एक ही व्यक्ति के दुबारा प्रेसिडेण्ट चुने जाने के अधिकार पर आपत्ति की, उन्होने यह महसूस किया कि इससे कभी इनकार नही किया जा सकता, यह पद जीवन भर के लिए बन जायेगा जिसके फलस्वरूप विदेशी शक्तियाँ देश के निर्णय को प्रभावित करने का प्रयास करेगी। एक मामूली आपत्ति यह थी कि प्रेसिडेण्ट के निषेधाधिकार के उपयोग मे न्यायाधिकारी-वर्ग उसके साथ सम्बद्ध नही है और न उस क्षेत्र को ऐसा ही और पृथक अधिकार दिया गया है। शायद यह उनके इस विश्वास के कारण था, जिसका उनके बाद के लेखो से पता चलता है, कि अमरीकी अपने कानूनो की अस्थिरता के कारण परेशान हैं और एक विधेयक के प्रस्तुत किये जाने और उसे कानून के रूप मे पारित होने के बीच कम से कम बारह महीने का समय होना ही चाहिए ।

यह देखते हुए कि जेफर्सन के बाद के राजनीतिक जीवन का अधिकाश भाग सर्वोच्च न्यायालय से सघर्ष मे बीता, यह आश्चर्य की बात है कि इस स्थिति मे भी न्यायाधिकारी वर्ग मे उनका विश्वास बना हुआ था। उन्होने मेडिसन को लिखा—"अधिकार-पत्र के पक्ष मे तर्क प्रस्तुत करते हुए आप एक बात छोड़ देते है, जिसका मेरे लिए बहुत बडा महत्व है और वह है कानूनी अवरोध, जो न्यायाधिकारियो को ऐसी शक्ति प्रदान करता है। यह ऐसा विभाग है कि उसे

यदि पूर्ण स्वतत्र कर दिया जाय और उसे अपने ही तक सीमित कर दिया जाय तो वह अपनी विद्वत्ता और ईमानदारी के कारण जनता का विश्वासभाजन बन सकता है। एक वर्ष पूर्व उन्होने राज्य-न्यायालयो से सघीय न्यायालय को पुनरावेदन की प्रणाली का समर्थन किया था। न्यायिक पुर्नविचार की कल्पना से जेफर्सन उतने ही परिचित थे, जितने इस प्रणाली के सस्थापक पितृगण, यद्यपि आम तौर पर यह विचित्र विश्वास व्याप्त था कि जान मार्शल के अप्रत्यक्ष प्रयास से ही इसे अमरीकी सावैधानिक प्रणाली मे स्थान दिया गया। हो सकता है कि जेफर्सन ने लिखित सविधान के अन्तर्गत न्यायिक सत्ता के सम्भाव्य विस्तारो को पूर्णरूप से न समझा हो।

वास्तव मे यदि अरस्तू की भावना के अनुसार बहुमत अथवा गरीबो के शासन के रूप मे लोकतत्र का अर्थ लगाया जाये तो जेफर्सन ने सविधान की जिस तरह आलोचना की है, उसमे ऐसी कोई चीज नही है, जो यह सिद्ध करे कि उस समय वे प्रजातत्रवादी थे। उन्होने अपनी पार्टी का नाम जो 'रिपब्लिकन' रखा था, वह 'डेमोक्रेट' की अपेक्षा अधिक उपयुक्त था। रिपब्लिकन दल ने ही अपने विरोधियो को डेमोक्रेट का नाम दिया। अन्त मे ह्विग और टोरी की भाँति उन्होने ही इसे सम्मान के प्रतीक के रूप मे अपना लिया, भले ही वे इसे पहले निन्दात्मक समझते थे।

मेडिसन की भाँति जेफर्सन को भी अनियत्रित बहुमत शासन का सबसे अधिक भय था। उन्होने घोषणा की, "हमारे शासन मे कार्य पालिका की निरकुशता ही मेरी ईर्ष्या का एकमात्र विषय नही है और न मुख्य विषय है। विधानमण्डलो की निरकुशता सम्प्रति सबसे भयानक खतरा है, जो वर्षो तक रहेगा। कार्यपालिका की निरकुशता का खतरा तो एक लम्बी अवधि के बाद आयेगा।" एक सच्चे जेफर्सनवादी के लिए सारी सरकारे सन्देहास्पद होगी—"मैं दावा करता हूँ कि मै किसी प्रबल सरकार का मित्र नही हूँ। वह सर्वदा दमनात्मक होती है।"

अन्त मे अधिकार-विधेयक को स्वीकार करके सविधान के बारे मे जेफर्सन के जो मुख्य सन्देह थे, उनको दूर कर दिया गया। जब वे अमरीका वापस आये, तो वे अपने देश के राजनीतिक भविष्य के बारे मे विश्वस्त थे। यह सोचना भूल होगी कि वाशिंगटन ने अपने मत्रिमण्डल मे एक निश्चित पार्टी-सन्तुलन तैयार करने के लिए जेफर्सन को उसमे सम्मिलित किया। १७६० मे नये सविधान के समर्थको और विरोधियो के बीच, सघवादियो और सघ-

विरोधियो के बीच मतभेद था। इसमे जेफर्सन की स्थिति बिल्कुल स्पष्ट थी। १३ मार्च, १७८९ को पेरिस से उन्होने लिखा

"मैं सघवादी नही हूँ, क्योकि जहाँ कही मैं स्वय विचार करने की क्षमता रखता हूँ, वहाँ मैं अपनी समस्त विचार-पद्धति को किसी भी पार्टी के सिद्धान्त के सामने, चाहे वह पार्टी धार्मिक हो, दार्शनिक हो, राजनीतिक हो अथवा अन्य कुछ हो, कभी समर्पित नही करता। इस प्रकार की आदत किसी स्वतत्र और नैतिक अभिकर्ता का अन्तिम अपमान है। यदि मैं बिना अपनी पार्टी के स्वर्ग मे नही जा सकता, तो मैं वहा कदापि ही नही जाऊँगा। इसलिए मैं आपकी इस बात का विरोध करता हूँ कि मैं सघवादी दल का हूँ, बल्कि मैं सघ-विरोधियो के दल से भी बहुत आगे हूँ। ...मैं किसी पार्टी का नही हूँ और न मैं पार्टियो के बीच काट-छाट करनेवाला हूँ"। इसलिए हाल की घटनाओ मे ऐसी कोई चीज नही थी, जो जेफर्सन के लिए नये प्रशासनके पथप्रदर्शक के रूप मे हेमिल्टन के साथ मिलकर काम करना असम्भव बना देती। जेफर्सन के पदग्रहण के बाद जो घटनाए घटी, उनके परिणामस्वरूप उनमे मनमुटाव और सघर्ष उत्पन्न हुआ और १७९०-९३ के वर्षो के राजनीतिक इतिहास के ये ही मूल तत्व थे। अपनी आत्मकथा के कुछ अशो मे, जो 'अनास' (Anas) के नाम से प्रसिद्ध है, जेफर्सन ने बताया हेमिल्टन का विरोध उस समय से आरम्भ हुआ, जब "न्यूयार्क पहुँचने के बाद प्रशासनिक क्षेत्रो में व्याप्त प्रबल रिपब्लिकन-विरोधी प्रवृत्ति का मुझे पता चला,' किन्तु सम्भव यही प्रतीत होता है, जैसा कि इस विवरण से प्रकट होता है, कि मतभेद धीरे-धीरे उत्पन्न हुए होगे।

जेफर्सन और हेमिल्टन के बीच राजनीतिक मतभेद उन व्यावहारिक समस्याओ के सम्बन्ध मे उत्पन्न हुए, जो वाशिंगटन मन्त्रिमण्डल के सामने उनके प्रथम प्रशासन-काल मे उपस्थित हुई थी। आन्तरिक एव वैदेशिक, दोनो तरह की समस्याएँ थी किन्तु दोनो का एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बन्ध था। हेमिल्टन का उद्देश्य नवनिर्मित सरकार को सुदृढ बनाना और उसके भाग्यसूत्र को व्यापारिक वर्गो के साथ सम्बद्ध करना था। पर्याप्त राजस्व की उपलब्धि इसका आधार था। सीमा-शुल्क से काफी धन प्राप्त कर इसकी पूर्ति की जा सकती थी और इसके लिए पहले ही से अधिक मात्रा मे विदेशी व्यापार की कल्पना की गयी थी। वर्तमान परिस्थितियो मे, इस दिशा मे एकमात्र द्रुतगामी मार्ग यथासम्भव शीघ्र ब्रिटेन के साथ अमरीका का पुन व्यापारिक

सम्बन्ध स्थापित करना था। इसका अर्थ था उचित अमरीकी-हितो को भी दाव पर लगाकर ग्रेट ब्रिटेन के साथ अच्छा राजनीतिक सम्बन्ध कायम करना। इस प्रकार हेमिल्टन ने वित्त-मन्त्री के रूप मे जो नीति अपनायी, उसमे उन्होंने अपने सहयोगी के विभाग के कार्य को प्रभावित करने का प्रयास किया। इतना ही नही, उन्होने ब्रिटिश प्रतिनिधियो से गुप्त सम्बन्ध स्थापित कर उसमे सक्रिय हस्तक्षेप करने का भी प्रयत्न किया। फ्रासीसी क्राति ने एक नयी सैद्धातिक गुत्थी उत्पन्न कर दी, क्योकि जेफर्सन के अनुसार हेमिल्टन की ब्रिटिश-समर्थक नीति का कारण उनका ब्रिटिश शासन-प्रणाली से प्रेम था और फ्रासीसी सन्धि को कायम रखने की जेफर्सन की इच्छा का कारण क्रातिकारी सिद्धातो के प्रति उनकी आन्तरिक सहानुभूति वतायी जाती है।

सैद्धान्तिक समस्या ने ही जेफर्सन को पहलेपहल अपने पुराने सहयोगी जान एडम्स से पृथक कर दिया। जान एडम्स ने नये सविवान की इस दृष्टि से आलोचना की कि उसके अन्तर्गत कार्यपालिका की शक्ति निर्वल हो जाती है। एक उच्च शास्त्रीय राजनीतिक निबन्ध सस्था के उपाध्यक्ष के रूप मे 'डिस्कोर्सेज आन डेविला' का प्रकाशन कर उन्होने अपने को छद्म राजतत्र के समर्थक के रूप मे आलोचना का पात्र वना दिया। १७९१ मे पेन के 'राइट्स आफ मैन' के प्रकाशन तथा अन्य सैद्धान्तिक वादविवादो ने फ्रास की घटनाओ के समर्थको और विरोधियो के बीच की खाई और चौडी कर दी। इस समय तक जेफर्सन पर, जो हेमिल्टन की भाँति, पत्रो को प्रभावित करने का खतरनाक खेल खेल रहे थे, एडम्स का प्रमुख निन्दक होने का खुला आरोप लगाया जा रहा था। दूसरी ओर, हेमिल्टन भी, चाहे उनके निजी विचार कुछ भी रहे हो, एडम्स से सन्तुष्ट नही थे, क्योकि वे विरोधियो को उनके प्रशासन की प्रवृत्तियो पर प्रहार करने का आधार प्रदान कर रहे थे। इस प्रकार फेडरलिस्ट पार्टी अपनी व्यक्तिगत प्रतिद्वन्द्विता के कारण शीघ्र ही छिन्नभिन्न हो गयी। दूसरी ओर, जेफर्सन ने शीघ्र ही जेम्स मेडिसन का समर्थन प्राप्त कर लिया, जो सविधान के वास्तविक जनक थे और फेडरलिस्ट पार्टी मे हेमिल्टन के सहयोगी थे। वे प्रतिनिधि-सभा के एक प्रमुख सदस्य थे। प्रतिनिधि-सभा पर अभी सिनेट की छाया नही थी, जैसी कि वाद मे हुई। इस प्रकार, कुछ ही वर्षो मे, फेडरलिस्ट पार्टी का एक अग वर्जीनिया पृथक हो गया और अमरीकी क्रान्ति के राष्ट्रीय गठवन्धन का अन्त हो गया। दूसरी ओर, जेफर्सन और मेडिसन को अब सघवादियो के पुराने विरोधियो का समर्थन प्राप्त हुआ, जिन्होने नये सविधान का विरोध किया

था, किन्तु जो अब उसके नाम पर हेमिल्टन द्वारा किये गये परिवर्तनो के विरोधी थे। कुछ तो दक्षिण के किसान राज्यो के अधिकार के नाम पर हेमिल्टन द्वारा धनिको के पक्षपात का विरोध कर रहे थे, कुछ सीमावर्ती लोग पश्चिम की ओर व्यापारिक अधिकार सम्बन्धी उसकी समस्याओ की उपेक्षा पर आपत्ति कर रहे थे और कुछ मध्य-राज्यो मे हेमिल्टन के प्रतिद्वन्द्वी न्यूयार्क के जार्ज क्लिण्टन के अनुयायी विरोध कर रहे थे।

इस दृष्टिकोण से अमरीका मे १८ वी शताब्दि के अन्तिम दस वर्ष द्विदलीय पद्धति के निर्माण के वर्ष थे। अभी तक सांविधानिक प्रणाली मे पार्टियो का नाम नही था और उसका उद्देश्य किसी हद तक उन्हे निरुत्साहित करना ही था। किन्तु सघराज्य-काल के खतरो के बाद यह राष्ट्रीय मुक्ति का भी युग था। आन्तरिक और बाह्य, दोनो ही दृष्टियो से सरकार का कार्य ध्यान देने योग्य है।

वाशिंगटन-प्रशासन की गृह-नीतियाँ हेमिल्टन की नीतियाँ थी। जेफर्सन का कार्य मुख्यत एक आलोचक और आक्षेपकर्त्ता का कार्य था। जब तक जेफर्सन ने पदग्रहण किया, तब तक हेमिल्टन ने राष्ट्रीय अर्थतत्र को पुन: स्थापित करने तथा अपने आन्तरिक एव विदेशी ऋण को चुकता करने के कार्य मे पहले ही से काफी प्रगति कर ली थी। अभी भी मुख्य विवादास्पद समस्या राज्य के ऋणो की थी। हेमिल्टन चाहते थे कि इन ऋणो को सघीय सरकार अपने हाथ मे ले ले, जिसका राजनीतिक कारण अधिकाशत यह था कि धन-विनियोग की समृद्धि का शासन की स्थिरता के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हो जाता। इस प्रस्ताव का उन लोगो ने तीव्र विरोध किया, जिनका यह कहना था कि समानता के आधार पर इन ऋणो के भुगतान का अर्थ होगा उन लोगो के हाथ मे अधिक लाभ सौपना, जिन्होने मूल महाजनो ने कम सूद पर लिया था। यह भी एक तथ्य था कि कुछ राज्यो पर और विशेषकर वर्जीनिया पर, जिसने अपना अधिकाश ऋण चुकता कर दिया था, इस कार्रवाई से कर का अधिक भार पड जाता और उसका लाभ सविधान की कम परवाह करने वाले राज्य उठाते।

दोनो मन्त्रियो के बीच राजनीतिक सौदेबाजी ने अन्त मे इस मामले का समाधान हो गया। जेफर्सन और कांग्रेस मे उनके समर्थको ने 'अधिकार-विधेयक' को स्वीकार कर लिया, बशर्ते सघ की राजधानी पोटोमक के तट पर दक्षिणी प्रदेश मे स्थापित की जाय। बाद मे जेफर्सन ने इस रियायत पर खेद

प्रकट किया, जिसने दो करोड लोगो को महाजनो के शिकजे मे डाल दिया और वित्तमत्री के भक्तो की सख्या मे वृद्धि कर दी। 'अनास' मे उन्होंने इस कारोबार मे अपनी भूमिका को कम महत्त्व देने का प्रयास किया।

जेफर्सन की मूल स्थिति के और भी प्रतिकूल हेमिल्टन का यह प्रस्ताव था कि काग्रेस को एक नेशनल बैंक के नोट जारी करने तथा सघीय सरकार को ऋण देने का अधिकार देना चाहिए। जेफर्सन ने वित्तीय योजनाओ, प्राक्कलनो तथा बजटो मे अपने को नौसिखिया बताया, किन्तु विशुद्ध आर्थिक मामलो मे यदि उनका कोई मत था तो अपनी ही परिस्थिति के अन्य लोगो की भाँति उन्होने पहले से कुछ उग्र धारणाए बना रखी थी और इनमे से एक धारणा किसी भी प्रकार के कागजी मुद्रा के प्रचलन के विरोध मे थी। ब्रिटिश आर्थिक प्रणाली की उन्होने आलोचना की थी "कागजी मुद्रा गरीबी है वह स्वय मुद्रा नही, मुद्रा की छाया है।" जेफर्सन ने 'कठोर मुद्रा' के अपने इस रुख को सर्वथा कायम रखा और अमरीका के प्रस्तावित द्वितीय बैंक के प्रस्ताव पर १८१६ मे उन्होने पुन अपनी इसी आलोचना को दुहराया। एण्ड्रू जैक्सन की भाँति जेफर्सन को अपने ही दल के एक गुट का सामना करना पडा, जो अपनी अत्यत ऋणग्रस्तता की स्थिति के कारण कागजी मुद्रा और क्रमिक मुद्रा-स्फिति के पक्ष मे हो गया था, किन्तु जैक्सन की भाँति उनकी प्रवृत्ति सर्वदा विपक्ष मे ही रही।

इसके अतिरिक्त, यह भय था कि प्रस्ताविक बैंक से हेमिल्टन पार्टी की शक्ति और बढेगी और काग्रेस मे उनके ऐसे स्वार्थी अनुयायियो की सख्या बढेगी, जो कोष और उसकी प्रणाली के साथ अपने स्वार्थो से आवद्ध होगे। हेमिल्टन की एक दूसरी प्रस्तावित कार्रवाई—अन्त शुल्क विधेयक की भाँति, जो १७९१ मे कानून के रूप मे पारित हुआ—बैंक की स्थापना से भी यह भय था कि इससे उसके व्यावसायिक समर्थको को नये अवसर प्राप्त होगे। अधिकाश लोगो का अपनी जीविका के लिए पूर्णत या आशिक रूप से सघीय सरकार अथवा नेशनल बैंक से जुडी हुई किसी सस्था पर आश्रित होना, जेफर्सन के विचार से जनतात्रिक-शासन का विरोधाभास था।

हेमिल्टन के कार्यक्रमो का जेफर्सन द्वारा विरोध का मूल कारण आर्थिक के बजाय राजनीतिक था। सितम्बर १७९२ मे जेफर्सन ने वाशिगटन के नाम एक पत्र मे अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए लिखा, "हेमिल्टन की पद्धति स्वतत्रता ... सिद्धान्तो से नि सृत है और उसका उद्देश्य विधानमण्डल के सदस्यो

पर अपने विभाग का प्रभाव जमा कर जनतत्र को नष्ट-भ्रष्ट कर देना है।" इसके अतिरिक्त हेमिल्टन की कम से कम दो कार्रवाइयाँ, वैक-विधेयक और सरक्षात्मक आयात निर्यात-कर के लिए असफल प्रस्ताव, जेफर्सन को नये सविधान के सिद्धान्तो के प्रतिकूल जान पडती थी।

स्वय वाशिंगटन को वैक-विधेयक पर हस्ताक्षर करने के बारे मे सावैधानिक अडचने प्रतीत हुईं और अन्तिम निर्णय के पूर्व उन्होने विधेयक की अवैधानिकता के प्रश्न पर हेमिल्टन और जेफर्सन से लिखित मत माँगे थे। हेमिल्टन के विचार से, यह स्पष्ट है कि उन्होने सघीय सरकार को केवल कतिपय अधिकारो से ही सम्पन्न माना था, किन्तु ये अधिकार भी सर्वोच्च थे, क्योकि उन्होने कहा, "यह सामान्य सिद्धान्त सरकार की व्याख्या मे ही सन्निहित है और अमरीका की प्रगति के प्रत्येक चरण के लिए आवश्यक है अर्थात् शासन मे निहित प्रत्येक अधिकार सार्वभौमिक है, जिसके अन्तर्गत इस तरह के अधिकारो के उद्देश्यो की पूर्ति के लिए आवश्यक और अत्यन्त उपयोगी सभी साधनो के प्रयोग का अधिकार भी आ जाता है, जो सविधान मे निहित प्रतिबन्धो और अपवादो से सीमित नही है, न यह अनैतिक ही है और न राजनीतिक समाज के महत्वपूर्ण उद्देश्यो के प्रतिकूल है।"

इस प्रकार के तर्क और सविधान की 'सामान्य कल्याण' धारा की सहायता से एक वैक को अधिकारसम्पन्न बनाने का अर्थ सामान्य कर लगाने के सावैधानिक अधिकार से प्राप्त किया गया।

जो भी हो, जेफर्सन के लिए 'सामान्य कल्याण' धारा का अर्थ इतना विस्तृत अधिकार नही था। काग्रेस 'सामान्य कल्याण' के नाम पर मनमानी कुछ भी नही कर सकती थी, वह इस उद्देश्य के लिए केवल कर लगा सकती थी। वैक को अधिकारसम्पन्न बनाने का अर्थ कर लगाने के अधिकार देना नही था। अन्यथा, उन्होने कहा कि सघीय सरकार के अधिकारो की व्याख्या का सारा उद्देश्य ही नष्ट हो जायगा। सविधान का साराश केवल यही रह जायगा, "जो कुछ भी अमरीका के हित मे होगा, उसे करने के अधिकार के साथ कांग्रेस की स्थापना और चूँकि वही भलाई या बुराई की एक मात्र निर्णायक होगी, इसलिए इच्छानुसार कैसी भी बुरी बात करने का भी अधिकार होगा।"

कार्यान्वय के लिए सभी आवश्यक और उचित कानूनो के बनाने के उसके अधिकार की व्यापक व्याख्या की जाय। जेफर्सन का तर्क यह था कि इस प्रसग मे 'आवश्यक' का अर्थ केवल सुविधाजनक नही था, वल्कि 'अनिवार्य' था। जव तक अतिरिक्त अधिकार की मॉग के बिना एक विशिष्ट अधिकार कार्यान्वित नही किया जाता तब तक उसके लिए कोई सावैधानिक सत्ता नही है और स्पष्ट है कि कर लगाने के अधिकार के सचालनार्थ नेशनल वैक 'अनिवार्य आवश्यकता' नही है। जेफर्सन की दृष्टि से वैक विधेयक और भी निन्दनीय था, क्योकि उसके अधिकार अनेक राज्यो के कतिपय अत्यन्त प्राचीन एव मूलभूत अधिकारो को भी दवा देते थे।

इस मतभेद से जो समस्याएँ उत्पन्न हुईं, वे वैक की तात्कालिक समस्या से भी आगे वढ गयी और विधेयक पर वाशिंगटन के हस्ताक्षर के वाद भी आन्दोलन का कारण वनी रही, क्योकि इनसे प्रगट हुआ कि नये सविधान की जिस प्रकार व्याख्या की जाती है, उसमे विल्कुल भिन्न रूप प्रस्तुत करने की उसमे क्षमता है। इस पर स्वय 'फेडरलिस्ट' के समर्थको मे मतभेद था। हेमिल्टन और जे उन व्यक्तियो मे थे, जिनकी धारणा यह थी कि फिलाडेल्फिया मे जो कुछ स्वरूप गढा गया वही वस्तुत एक राष्ट्रीय सरकार थी, जिसे सार्वभौमिक सत्ता के अन्तर्निहित अधिकार प्राप्त हैं, और जो सार्वजनिक हित के लिए उनका पूर्ण उपयोग करने के लिए उत्तरदायी है। वे केवल अपने सघीय स्वरूप की विशिष्ट मर्यादाओ से ही परिसीमित हैं। मेडिसन ने नये सविधान की व्याख्या सघराज्य के परम्परागत विधान के रूप मे की और कहा कि नया सविधान उन सार्वभौमिक राज्यो के बीच सौदेवाजी का साधनमात्र है, जिन्होने अपने ऐसे अधिकारो को एक केन्द्रीय सत्ता को सौंप दिया है, जिनका सचालन सामूहिक रूप से हो सकता है, किन्तु जो अपने व्यक्तित्व को अथवा अपने नागरिको के प्रति अपने प्राथमिक उत्तरदायित्व को समर्पित करने का इरादा नही रखते। जेफर्सन का भी ऐसा ही मत था। अधिकार और अनुवन्ध की भावनाएँ, जो राजनीतिक दायित्व के उनके सिद्धात की आधार थी, अव व्यष्टि से समष्टि मे प्रवेश कर चुकी थी। व्यक्तियो के बीच सामाजिक अनुवन्ध के वजाय अव समुदायो के बीच अनुवन्ध स्थापित हो चुका था और सम्वन्धित समुदायो—राज्यो ने उसी प्रकार अपने अधिकारो को सघ को समर्पित कर दिया था, जिस प्रकार मनुष्यो ने समाज में प्रवेश के वाद अपने प्राकृतिक अधिकारो को समाज को समर्पित कर दिया था। विभाजित सार्वभौमिकता के इस रूप से अधिवेशन के

समय इस मूलभूत मतभेद को दूर करने मे सहायता मिली, किन्तु ज्यो-ज्यो विभिन्न स्वार्थो ने दलो का रूप धारण करना आरम्भ किया, पुन धर्म-सकट उत्पन्न हो गया जो जेफर्सन के जीवन-काल मे तथा बाद मे वर्षो तक कायम रहा।

मन्त्रिमण्डल के अन्तर्गत बढते हुए सघर्ष की इस पृष्ठ भूमि मे ही हमे विदेश-विभाग मे जेफर्सन के कार्य पर विचार करना है। जैसा कि देखा गया है, नयी सरकार को पुरानी काग्रेस से उत्तराधिकार के रूप मे अनेक ऐसी उलझनपूर्ण समस्याए मिली, जिनका मुख्यत. ग्रेट ब्रिटेन और स्पेन के साथ सम्बन्धो पर प्रभाव पडता था। पदग्रहण के पूर्व स्वय जेफर्सन इस विचार के थे कि ऐसा कोई कार्य न किया जाय, जिससे सकट उत्पन्न हो। यूरोप उनके लिए एक विशाल बारूद-खाना-सा प्रतीत होता था, जहा किसी भी कारण से विस्फोट हो सकता था और बड़ी शक्तियाँ एक बार फिर आपस मे भिड सकती थी। ऐसी परिस्थितियो मे अमरीका, ग्रेट-ब्रिटेन और स्पेन के बीच सौदेबाजी कर सकता था और अपनी अनुकूल तटस्थता का उपयोग अपने हितो की स्वीकृति के बदले शक्ति-सन्तुलन मे कर सकता था (युद्ध की बात केवल धमकाने के लिए थी)।

१७९० मे ब्रिटिश और स्पेनिश विस्तार की सीमा-रेखाएँ उत्तरी अमरीका के प्रशान्त तट पर नूटका साउण्ड के पास टकरा गयी। एक बार तो युद्ध प्रायः निश्चित-सा प्रतीत होने लगा। जेफर्सन का मत था कि इस अवसर से लाभ उठाकर अमरीका को स्पेन से मिस्सिसिपी मे नौकानयन की स्वतन्त्रता और इसके साथ ही साथ वस्तुओ के यातायात के लिए एक बन्दरगाह भी प्राप्त करना चाहिए, जिसके बिना नौकानयन का अधिकार निरर्थक होगा। स्पेन ने इसको स्वीकार कर लिया था। किन्तु जेफर्सन इस समय अमरीका मे स्पेन के नाम-मात्र के प्रदेशो पर उसके अधिकार को खतरे मे डालना नही चाहते थे। १७८६ मे ही उन्होने गृह-विभाग को लिखा था, "हमे इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कही हम उस महाद्वीप के स्वार्थ का ख्याल कर स्पेनवासियो पर बहुत जल्द दबाव न डाल बैठे। वे प्रदेश अच्छे हाथो मे नही रह सकते। मुझे भय है कि वे उन पर अधिकार कायम रखने के लिए बहुत ही कमजोर है और जब हमारी जनसख्या बढेगी, हम धीरे-धीरे एक-एक करके उन पर कब्जा कर सकते हैं। मिस्सिसिपी मे नौकानयन का अधिकार हमे प्राप्त करना चाहिए। अभी हमे इतना ही प्राप्त करने के लिए तैयार रहना है।"

यह आशका वास्तव मे उस समय सही सिद्ध हुई, जब यह सभावना पैदा

हुई कि युद्ध की स्थिति मे ब्रिटेन लुइसियाना और फ्लोरिडा पर अधिकार जमाने का प्रयास कर सकता है और अमरीकी प्रदेश से होकर ब्रिटिश सेनाओ को गुजरने देने की प्रार्थना कर सकना है। वाशिंगटन ने अपने मन्त्रिमण्डल के समक्ष यह सम्भावित प्रश्न रखा, किन्तु इस पर कोई निश्चित सलाह नही मिली, यद्यपि हेमिल्टन ने न्यू आर्लियन्स के विरुद्ध अमरीकी अभियान का तथा उत्तरी किलो के मामले मे ब्रिटेन के विरुद्ध अमरीकी दावो का परित्याग कर ब्रिटेन के साथ मित्रता का समर्थन किया। जेफर्सन ने यह सुझाव दिया कि यथाशक्ति भरसक इसे आगे के लिए टाला जाय और आवश्यक हो तो जो कुछ हो चुका है, उसे स्वीकार कर लिया जाय। उन्होने परामर्श दिया कि अमरीका को स्पष्टरूप से घोषणा कर देनी चाहिए कि सघराज्य अमरीकी सीमाओ पर एक शक्ति द्वारा दूसरी शक्ति के अधिकार-अपहरण के प्रयास को गम्भीरतापूर्वक देखेगा, क्योकि हमारे पडोसियो के बीच उचित सतुलन मे ही स्वय अमरीका की सुरक्षा निहित है। जेफर्सन ने कदाचित् पहलेपहल यह विचार व्यक्त किया कि अमरीकी महाद्वीप मे शक्ति-स्थापन मे सभी प्रकार के परिवर्तनो का अमरीका से सम्बन्ध है—यह एक ऐसा दृष्टिकोण है, जिसे मनरो-सिद्धान्त का मूल समझा जा सकता है।

आग्ल-स्पेनिश सकट बिना युद्ध के टल गया और अमरीकी पुन अपना साधारण कूटनीतिक मार्ग अपनाने को विवश हुए। जेफर्सन अब मिस्सीसिपी-नौकानयन के प्रश्न के समाधान के जबर्दस्त समर्थक बन गये थे। राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अब यह अधिकाधिक स्पष्ट था कि इस प्रकार का कोई समाधान ही अलगेनीज के नवराज्य केण्टकी (१७९२) और टेनेसी (१७९६) को सघ के अतर्गत स्थायी रूप मे रख सकता था। इसके अतिरिक्त, यदि यह मत मान लिया जाय कि जेफर्सन ने अब तक प्रभावशाली हेमिल्टनवादी फेडरलिस्टो के विरुद्ध एक प्रतिद्वद्वी दल का निश्चित रूप से निर्माण कर लिया था, तो इस समस्या की उपेक्षा नही की जा सकती। उत्तरी राज्यो को हेमिल्टन की आर्थिक और व्यापारिक नीति के पक्ष मे कर लिया गया था। दक्षिण और पश्चिम को सघराज्य के प्रति निष्ठावान बनाने के लिए पेट्रिक हेनरी को मात करना आवश्यक था। जेफर्सन ने अमरीकी मामले मे जो तर्क प्रस्तुत किये वे जो अनसुने ही रहे—अतरराष्ट्रीय समस्याओ पर उनकी विचारधारा अद्भुत ढग से परपरागत, ऐतिहासिक एव धर्माधर्म के सिद्धान्त के साथ वैधानिक तर्कों तथा प्राकृतिक अधिकारो के सिद्धान्तो से मिलीजुली थी और यह स्वय उन्ही को ठी-सी प्रतीत होती थी।

स्पेन स्थित अपने एक राजदूत विलियम शार्ट को उन्होने जो निर्देश दिये और जो १८ मार्च, १७९२ को तैयार किये गये थे, उनमे इस विचारधारा का स्पष्ट रूप देखने को मिलता है। इनमे उन्होने पूर्ण विश्वास के साथ यह दलील दी थी कि नदी तटवर्ती राज्यो को अपनी सीमाओ से परे भी नदियो मे नौकानयन का सार्वभौमिक अधिकार है। प्रकृतिदत्त अधिकारो और राष्ट्रो के विलम्ब सबधी जेफर्सन की विचारधारा मे इन दोनो की स्पष्ट व पृथक व्याख्या नही मिलती जो मनुष्य के हृदय में अकित है। इन भावनाओ से गहरी और क्या भावनाएँ होगी कि समुद्र सभी प्राणियो के लिए और नदियाँ सभी निवासियो के उपभोग के लिए हैं। सौभाग्य से इस अलकारिक प्रश्न ने विद्यमान प्रथा की उपेक्षा की। इस तर्क मे भी कोई अधिक बल नही था कि नौकानयन का अधिकार इस सिद्धान्त के आधार पर तट पर सुविधाओ का अधिकार प्रदान करता है कि 'साधन साध्य का अनुसरण करता है'।

प्राकृतिक अधिकारो के आधार भी विदेश-व्यापार-सहिता मे सशोधन कराने के जेफर्सन के उद्देश्य मे उतने ही असफल सिद्ध हुए। १७८८ मे सम्भाव्य भावी युद्ध का कारण देखते हुए उन्होने वाशिगटन से पूछा था, "उन राष्ट्रो के अत्याचार से कौन बचा सकता है, जो हमें अपने पडोसियो के साथ व्यापार के प्राकृतिक अधिकारो से वचित करते हैं?" अमरीकी तम्बाकू के आयात पर फ्रासीसी प्रतिबन्धो के सम्बन्ध मे उन्होंने १७९१ मे एक पत्र में घोषणा की, "पडोसी राष्ट्रो के बीच बचत और घाटे का आदान-प्रदान नैतिक विधान के अनुसार अधिकार और कर्त्तव्य दोनो है और इनके पालन मे अधिकार के विरुद्ध कार्यवाइयो का शमन करना चाहिए।" ग्रेट ब्रिटेन और फ्रास मे से कोई भी जेफर्सन द्वारा की गयी नैतिक विधान की यह व्याख्या स्वीकार करने को तैयार न था, किन्तु जेफर्सन ने इस दृढ विश्वास के साथ पद ग्रहण किया था कि फ्रास

ग्रेट ब्रिटेन के साथ अच्छे सम्बन्धो के पक्ष मे इतने सबल तर्क थे कि उनकी उपेक्षा नही की जा सकती थी किन्तु अमरीकी शर्तो पर ब्रिटिश मित्रता प्राप्त करने की अधिक सम्भावना नही थी। नूटका साउड-सकट के समय अग्रेज अमरीकी प्रभाव के प्रति अधिक सतर्क रहे, किन्तु इससे वे वरमोण्ट की स्वतन्त्रता की मान्यता के लिए लेवी एलन के प्रस्ताव पर विचार करने से नही रुके। काग्रेस ने आयात-निर्यात-कर और नौकानयन कानूनो को पारित करने के लिए नये सविधान के अन्तर्गत अपने अधिकारो का शीघ्र ही उपयोग किया, किन्तु ब्रिटिश आयातित वस्तुओ के विरुद्ध भेद-भाव करने के अवसर का उपयोग करने का मेडिसन का प्रयास काग्रेस मे हेमिल्टन के प्रभाव से विफल कर दिया गया। दूसरी ओर, १७८९ और १७९० के कानूनो मे निहित विनम्र प्राथमिकताओ ने अमरीकी जहाजरानी मे कुछ सहायता की और इस बात मे सुधार किया कि अमरीका मे बने जहाज, ब्रिटिश स्वामित्व मे रहते हुए भी विदेशी समझे जाने लगे। पहले अधिकाश ब्रिटिश व्यापारिक जलपोत अमरीका के ही बने होते थे। इन कानूनो के अस्तित्व ने ग्रेट ब्रिटेन के लिए यह आवश्यक भी बना दिया कि वह फिलाडेल्फिया मे अपना प्रतिनिधि न रखने की अपनी पूर्व नीति मे परिवर्तन करे। उसके प्रथम (अनधिकृत) दूत बेकविथ और उसके उत्तराधिकारी जार्ज हेमण्ड ने, जो नवम्बर, १७९१ मे, प्रथम ब्रिटिश राजदूत के रूप मे अमरीका पहुंचे, हेमिल्टन के साथ घनिष्ठ सम्पर्क स्थापित किया और आग्ल-अमरीकी व्यापार की बाधाओ को दूर करने मे उनके साथ सहयोग किया।

जेफर्सन के साथ अपने पत्रव्यवहार मे हेमण्ड ने यह प्रमाणित ब्रिटिश दृष्टिकोण रखा कि उत्तरी किलो पर अभी भी ब्रिटिश अधिकार है तथा अन्य विवादग्रस्त मामलो का कारण अमरीका द्वारा शान्ति-सधि का उल्लघन है। २९ मई, १७९२ को जेफर्सन ने लगभग १७ हजार शब्दो मे जो उत्तर भेजा उसे एक अमरीकी विद्वान प्रोफेसर एस एफ बेमिस ने "उनका महानतम कूटनीतिक पत्र" बताया है और वास्तव मे वह अमरीकी कूटनीति के इतिहास का अत्यन्त निपुण तर्क है मानव की कार्यक्षनता, असीम वेदना और उसकी कानूनी प्रतिभा का चिरस्मारक है।" बेमिस ने उसकी व्यावहारिक प्रभावहीनता तथा जेफर्सन के विदेश-मन्त्रित्व-काल मे ब्रिटिश वार्ता मे कुछ भी प्रगति न होने के लिए हेमिल्टन के हस्तक्षेप को दोषी ठहराया है। उत्तर-पश्चिम मे अग्रेजो ने अपनी स्थिति सुदृढ बना रखी थी और कनाडा के समर्थन से रेड इडियन र्ती राज्य का खतरा अमरीकियो को अभी भी सता रहा था, यद्यपि

स्थापित हो गया। दूसरे, एक यह भी प्रश्न था कि कहा तक अमरीका स्वय फ्रास के साथ मित्रता की अपनी पुरानी सन्धि से बँधा हुआ है।

वाशिंगटन पूर्ण तटस्थता के प्रबल समर्थक थे, किन्तु उन्होने पुन अपनी भावी नीति के सम्बन्ध मे अपने मत्रिमण्डल से परामर्श किया और विशेपकर इस बात पर मत्रणा की कि तटस्थता की घोपणा जारी की जाय या नही, और फ्रासीसी प्रजातन्त्र के मत्री का स्वागत किया जाय या नही और इस प्रकार नये शासन को पूर्ण मान्यता प्रदान की जाय या नही। हेमिल्टन ने यह दलील पेश की कि शासन-परिवर्तन के साथ सन्धि का अर्थ भी बदल गया, क्योकि यह सन्धि फ्रासीसी राजतत्र से हुई थी, अन्यथा अमरीका को पुनस्सस्थापन रोकने मे सहायता करने के लिए विवश किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, प्रतिरक्षात्मक मित्रता के रूप मे यह सन्धि की गयी थी और चूँकि फ्रास ने ही ग्रेट ब्रिटेन और स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की है, इसलिए वह उसके लाभ के लिए दावा करने का अधिकारी नही रह गया है। दूसरी ओर, उन्होने अमरीका ने फ्रास से जो ऋण लिया था, उसे स्वीकार किया। उन्होने यह तर्क प्रस्तुत किया कि नये फ्रासीसी मत्री की नियुक्ति का स्वागत तो किया जाय, किन्तु साथ ही साथ इस सम्बन्ध मे एक घोषणा जारी करके १७७८ की सन्धि के क्रियान्वय को स्थगित कर दिया जाय। ऐसा न होने पर यदि ब्रिटेन अमरीका को अपना शत्रु समझे तो अनुचित न होगा।

जेफर्सन के विचार वस्तुत बिलकुल भिन्न थे, यद्यपि उन्होने फ्रास के प्रति अनुकूल तटस्थता से अधिक की सिफारिश नही की। उन्होने पहले ही से स्पष्ट कर दिया था कि मान्यता के लिए फ्रासीसी प्रजातन्त्र के अधिकार पर सन्देह नही किया जा सकता। इच्छानुसार शासन-प्रणाली को बदलना प्रत्येक राष्ट्र का मौलिक अधिकार है। वास्तव मे उन्होने कम से कम एक अवसर पर किसी भी पीढी के अपने उत्तराधिकारियो को आबद्ध करने के अधिकार पर सन्देह व्यक्त किया था—ऐसा सन्देह जो लिखित सविधानो और अधिकार-विधेयको के पक्ष मे उनके समर्थन से मेल नही खाता।

दिसम्बर, १७९२ मे उन्होने फ्रासस्थित अमरीकी राजदूत गवर्नियर मारिस को लिखा—

'हम निश्चय ही किसी भी राष्ट्र का वह अधिकार अस्वीकार नही कर ने, जिस पर स्वय हमारी सरकार आधारित है, कोई भी राष्ट्र इच्छानुसार -प्रणाली अपना सकता है और इच्छानुसार उसे बदल भी सकता है और

वह विदेशी सम्राट, परम्परा, विधानसभा, समिति, राष्ट्रपति अथवा किसी भी अन्य माध्यम से, जिसे वह उचित समझता है, व्यवहार कर सकता है। राष्ट्र की इच्छा ही एकमात्र ध्यान देने योग्य आवश्यक वस्तु है।"

जेफर्सन के विचार से सम्प्रति सन्धियों को भंग करने की आवश्यकता नहीं थी। जिस धारा के अनुसार फ्रांसीसी जहाजों और निजी सशस्त्र जलपोतों को अमरीकी बन्दरगाहों का उपयोग करने की अनुमति दी गयी थी, उसमें कोई संकट उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं थी। अमरीका फ्रांस को अमरीकी बन्दरगाहों में निजी सशस्त्र जलपोतों को ठहराने का अधिकार देने के लिए बाध्य नहीं था, यद्यपि उसने स्पष्ट रूप से फ्रांस के शत्रुओं से ऐसी अनुमति वापस लेने का वचन दिया था। यह निश्चित नहीं था कि फ्रांस वेस्ट इंडीज में उसके हस्तक्षेप के लिए आग्रह करेगा। अमरीका ने भी उत्तर-पश्चिम में स्थापित ब्रिटिश चौकियों के प्रश्न पर फ्रांस से हस्तक्षेप करने के लिए नहीं कहा। उसकी अंतिम सम्भावना ही नहीं थी। फ्रांस केवल उदार तटस्थता चाहता था। वेस्ट इंडीज और स्वदेश में अमरीकी पूर्ति उस सहायता से अधिक उपयोगी हो सकती थी, जो अमरीका के सीमित स्रोतों से मिल सकती थी। जेफर्सन का यह तर्क काफी सबल था कि अमरीका को तत्काल सन्धि भंग करने की आवश्यकता नहीं है, दूसरी ओर, यदि शक्ति-परीक्षा की नौबत आयी तो हैमिल्टन की भाँति जेफर्सन भी ग्रेट ब्रिटेन के बजाय फ्रांस के साथ युद्ध का खतरा मोल लेने को तत्पर थे।

तटस्थ व्यापार के विरुद्ध फ्रासीसी कार्रवाइयो से अमरीका को मुक्त कर दिया। इससे उसकी स्थिति का महत्व और भी वढ गया। जून, १७९३ मे ब्रिटिश प्रिवी कौसिल की सलाह से जारी एक राजकीय आदेश द्वारा खाद्यपदार्थो से लदे सभी तटस्थ जहाजो को रोक लेने और ब्रिटिश बन्दरगाहो मे उन्हे वेच देने का अधिकार दिया गया और आगामी नवम्बर मे और भी कठोर कार्रवाइया की गयी। जनवरी, १७९४ मे इनमे सशोधन किया गया, ताकि अमरीका अपने उन व्यापारो को जारी रख सके, जो वह शान्ति-काल मे करता रहा अर्थात् १७५६ का कथित नियम लागू किया गया।

१७९३ के ब्रिटिश आदेश के साथ अमरीका के उस दीर्घकालिक सघर्ष का युग आरम्भ हुआ, जिसमे उसने तटस्थ जहाजरानी के अधिकार सम्बन्धी अपने व्यापक विचारो को युद्धरत विदेशी राष्ट्रो द्वारा युद्ध-काल में स्वीकार कराने का प्रयास किया। १८१५ में आग्ल-फ्रासीसी युद्ध-चक्र की समाप्ति के वाद भी इस समस्या का समाधान नही हो सका और १९१४ मे आग्ल-जर्मन युद्ध आरम्भ होने पर यह समस्या आश्चर्यजनक ढग से पुन उठ खडी हुई। १७८९ के वाद ही अमरीकी जहाजरानी की अपार वृद्धि हुई, उसका प्रभाव भी इस समस्या पर पडा। इस वृद्धि ने न्यू इगलैण्ड के आर्थिक एव राजनीतिक दृष्टिकोण को विशेष रूप से प्रभावित किया। १७९० मे अमरीका और ब्रिटेन के बीच लगभग आधा व्यापार अमरीकी जहाजो द्वारा होता था और १८९० मे लगभग ९५ प्रतिशत। अमरीकी व्यापारिक जहाजो का पजीकृत वजन १७८९ मे १२४००० टन, १७९३ में ३६५००० टन, और १८०० मे पॉच लाख टन से अधिक हो गया और यदि वढती हुई तटवर्ती जहाजरानी तथा मछली मारनेवाले जहाजो को भी ले लिया जाय तो साढे सात लाख टन से भी अधिक था।

राष्ट्रपति की घोषणा की एक दूसरी महत्वपूर्ण वात जेफर्सन की स्थिति के दृष्टिकोण से मनोरजक है। यह थी युद्धरत राष्ट्रो की सूची मे स्पेन को स्थान न देना। जान पडता है कि स्पेन के साम्राज्य के विघटन के सम्भाव्य परिणामो के वारे मे जेफर्सन का सकोच मिट चुका था और वे अमरीका के लिए फ्लोरिडा के मिल जाने पर एक फ्रास-समर्थित विद्रोह का समर्थन करने के लिए तैयार थे। वाशिंगटन को यह आशका थी कि ग्रेट ब्रिटेन स्पेन की सहायता के लिए आयेगा और फ्रासिसी कुचक्र से अमरीका ग्रेट ब्रिटेन के साथ युद्ध मे फँस जायेगा, से वचना ही उनकी नीति का मुख्य उद्देश्य था। इसीलिए अमरीका इन ।ओ मे और अधिक नही उलझ सका।

घोषणा की हिचकिचाहट के बारे मे जेफर्सन ने स्वय लिखा, किन्तु नीति के कार्यान्वय मे उनकी कठिनाइयाँ तथा नये फ्रासीसी मत्री सिटिजेन एडमण्ड जेनेट के आचरण ने सावधानी के लिए प्रेरित किया। जबकि फ्रासीसी और अमरीकी प्रजातत्रो के बीच अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध के लिए नयी सधि-वार्ता की अन्तत अपेक्षा की जाती थी, जेनेट के प्राप्त निर्देशो मे भी यह स्पष्ट था कि उन्हे इस दिशा मे कार्रवाई करने के लिए अधिकार प्रदान किया गया था। उन्होंने स्पेनिश लुइसियाना मे विद्रोह करने के लिए केण्टकी के असन्तुष्ट तत्वो के साथ

१७६३ मे जेफर्सन का ध्यान दो ओर बँटा हुआ था। एक ओर जेनेट का इस बात के लिए रोकना था कि ग्रेट ब्रिटेन को अमरीकी आचरण के विरुद्ध शिकायत करने का कोई सवल कारण न मिल सके और दूसरी ओर ब्रिटेन की समुद्री नीति मे अमरीकी हितो और दृष्टिकोणो की उपेक्षा के लिए उससे विरोध करना था। जेफर्सन के दूसरे कार्य मे बाधा पडी, जिसका एक कारण हेमण्ड के साथ हेमिल्टन का सम्पर्क था जिससे ब्रिटेन को यह विश्वास हो गया था कि जेफर्सन की औपचारिक आपत्तियो पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता नही है। उससे भी बडा कारण यह धारणा थी कि नौसैनिक दृष्टि से अमरीका जैसा निर्बल राष्ट्र इस स्थिति मे नही है कि वह ब्रिटेन को उसके प्रमुख कडी नीति मे कुछ उदार बना सके। लगभग पच्चीस वर्ष तक ब्रिटेन की नौसैनिक शक्ति पहले क्रान्तिकारी फ्रास और फिर नेपोलियन के समय के फ्रास की महत्वाकाक्षाओ के लिए विशेषरूप से बाधक सिद्ध हुई। यह एक ऐसी बाधा थी जिस पर राष्ट्र और प्राकृतिक अधिकारो सम्बन्धी तृतीय पक्ष की अपील का प्रभाव पडने की आशा नही की जा सकती थी।

यद्यपि जेफर्सन ने १७६२ मे वाशिगटन से पुन राष्ट्रपति-पद के लिए खडा होने के लिए अनुरोध करने मे विशेष रूप से भाग लिया था, तथापि मत्रिमण्डल मे अपनी अल्पसख्यक स्थिति के प्रति उनकी घृणा और अपने विभाग के अधिकार क्षेत्र के बाहर के मामलो मे भी हेमिल्टन के हस्तक्षेप पर उनका क्षोभ उत्तरोत्तर बढता ही गया। हेमिल्टन और जेफर्सन की ओर से दो समाचारपत्र-सम्पादको ने एक-दूसरे के विरुद्ध खुली तू-तू मै-मै चलायी। वे थे क्रमश. 'गजट आफ दी यूनाइटेड स्टेटस' के फेन्नो और 'नेशनल गजट' के फ्रेनोय, जो उनसे आर्थिक सहायता पाते थे। इस विवाद के लिए दोनो मे से एक की भी सराहना नही हुई। जेफर्सन इतने भावुक थे कि वे आलोचना की प्रतिद्वन्द्विता मे नही आना चाहते थे। जब वे पेरिस मे ही थे तभी उन्होने एक पत्र मे अपने पद के प्रति किन बातो से लाभ है, उसकी गणना की थी और उसमे यह भी बताया था कि इसके साथ प्रचार का कम सम्बन्ध है। उन्होने लिखा, "मेरी उत्कट अभिलाषा यही है कि मैं अपने कर्त्तव्य का पालन कठोरता, किन्तु मौनपूर्वक करू, ध्यान आकृष्ट करने से बचू और समाचार-पत्रो मे अपना नाम न आने दूं, क्योकि मुझे निराधार होने पर भी थोडी सी निन्दा की पीडा अधिक प्रशसा के आनन्द की अपेक्षा ... प्रतीत होती है जबकि इस तरह की निन्दा का कोई आधार ही न हो।

...शिगटन ने उनके दो सचिवो के वाद-विवाद को कुछ शान्त करने का

प्रयास किया, तब जेफर्सन ने एक लम्बे और कडे पत्र मे (सितम्बर, १७९२ मे) उत्तर दिया, जिसके अन्त मे उन्होने आगामी मार्च मे वाशिंगटन की प्रथम पदावधि समाप्ति होने पर सेवा-निवृत्ति होने का इरादा प्रकट किया था। वाशिंगटन और मेडिसन ने उन्हे विचार-परिवर्त्तन के लिए समझाया। १७९३ मे राष्ट्रपति ने उनके पदत्याग की प्रार्थनाओ को अस्वीकार कर दिया, किन्तु वर्ष के अन्तिम दिन उन्होने अपने इच्छा पूरी की और पदत्याग कर दिया। उनके साथी एटर्नी-जनरल एडमण्ड रण्डोल्फ ने उनका स्थान ग्रहण किया। १६ जनवरी, १७९४ को जेफर्सन पुन एक निजी नागरिक के रूप मे मण्टिसिलो वापस गये। यद्यपि उनकी अवस्था अभी ५० वर्ष की ही थी, तथापि वे दीर्घकालिक सार्वजनिक सेवा से क्लान्त हो गये थे और अपने जीवन के शेष वर्ष सेवानिवृत्त होकर अपनी जमीन्दारी, पुस्तकालय और परिवार मे ही बिताना चाहते थे। उनकी दो पुत्रियो, जिन्हे वे पेरिस से लौटने के बाद बहुत कम देख पाये, मे से ज्येष्ठ पुत्री मेरथा का विवाह थामस मान रण्डोल्फ से हो गया, जो उनकी जमीन्दारी की देखभाल करता था। मेरथा ने एक पुत्र थामस जेफर्सन रण्डोल्फ को जन्म दिया, जो जेफर्सन की वृद्धावस्था का प्रिय पौत्र था। उनकी छोटी लडकी मेरिया की उम्र अभी १६ वर्ष की थी और १७९७ तक, जब तक कि उसका विवाह जान वैलेस एप्स से नही हो गया, वह घर पर ही रही। १७९४ और १७९५ मे जेफर्सन ने बहुत ही कम पत्रव्यवहार किये, जिससे सिद्ध होता है कि उन्होने अपने परिवार और वर्जीनिया के अपने मित्रो तक ही अपने को सीमित रखा। यहाँ तक कि उन्होने फिलाडेल्फिया के के समाचार पत्रो को भी लिखना बन्द कर दिया। फिर भी कांग्रेस मे हेमिल्टन-विरोधी पार्टी के नेता जेम्स मेडिसन और डब्लू बी. गाइल्स के पत्रो से सर्वथा सामयिक ज्ञान रहता था।

विरोधी पक्ष में

(१७९४–१८००)

१७९४–९६ के वर्ष जेफर्सन के देश तथा पश्चिमी जगत के इतिहास में अत्यन्त महत्व के वर्ष थे। इस अवधि मे वे माण्टिसिलो से सात मील अधिक दूरी पर कभी नही गये। वे अपने वाल-बच्चो मे ही पुराने ढग के कुलपति की भाँति रहते और खेतीबारी के कारोबार मे लीन रहते। उन्होंने एक कील का कारखाना खोलकर पुन समृद्धशाली बनने का प्रयास किया। इस कारखाने मे दस वर्ष से लेकर सोलह वर्ष तक के लगभग एक दर्जन बालक काम कर रहे थे। साथ ही साथ उन्होने एक नये ढग के हल का प्रयोग किया। इस बीच फ्रासीसी क्राति अपनी चरमसीमा तक पहुच गयी। १७९३ मे ही राब्सपियेर सत्तारूढ हुए। उन्होने ही उस वर्ष के नवम्बर मे क्रानिकारी फ्रास को इगलैण्ड के साथ पूर्ण युद्ध मे झोक दिया और इस आशा से ऐसा किया कि उस देश मे भी वैसी ही क्राति फैल जायगी, किन्तु साथ ही साथ उन्होने इस नीति का सहारा लिया कि 'महाद्वीप मे पूर्ण युद्ध और एक प्रवल सरक्षणात्मक आर्थिक नीति', जो नेपोलियनवादी 'महाद्वीपीय प्रणाली' की पूर्वसूचक थी। जुलाई, १७९४ मे राब्सपियेर का पतन हो गया। प्रतिक्राति का सूत्रपात हुआ और उसकी शक्ति बढने लगी। १७९५ की वसन्त और ग्रीष्म ऋतु मे प्रशा, स्पेन और कुछ और छोटे-मोटे राष्ट्र मित्रता की सधि से अलग हो गये। अव उसमे मुख्यत केवल इगलैण्ड और आस्ट्रिया रह गये। परम्परा के आधार पर एक सविधान बनाया गया, जिसके अन्तर्गत फ्रान्स चार वर्ष तक १९वी शताब्दि के मध्यमवर्गीय सविधानवाद का उपभोग करता रहा। किन्तु फ्रासीसी प्रजातत्र सरकार अनेक फ्रासीसियो के लिए जो 'सामान्य स्थिति' लाना चाहती थी, वह यूरोप मे नही आयी। प्रजात त्र सरकार द्वारा सामान्य सन्तोपजनक स्थिति पैदा करने का प्रयास निष्फल सिद्ध हुआ। १७९६–९७ मे नेपोलियन वोनापार्ट के इटली-अभियान ने आस्ट्रिया को अपनी पराजय स्वीकार करने के लिए विवश किया। जब अप्रैल, १७९७ मे वोनापार्ट ने लोयवेन की प्रारम्भिक सन्धि की, जिसके ८ केवल इगलैण्ड (और पुर्तगाल) युद्ध मे रह गया, उस समय तक जेफर्सन । के उप-राष्ट्रपति की हैसियत से फिलाडेल्फिया वापस आ गये थे।

फ्रासीसी क्राति अभी तक 'मुक्तिदायक' शक्ति के रूप में थी, किन्तु अब वह स्वयं राष्ट्रो की स्वतन्त्रता के लिए खतरनाक बन गयी। इमकी जेफर्सन पर जो प्रतिक्रिया हुई, वह अध्ययन करने योग्य है। अपने पत्रो मे उन्होने यूरोपीय घटनाओ की जो आलोचनाएँ की है, उनमे प्रकट होता है कि अन्तत उन्हे अपने देश मे होनेवाली प्रतिक्रियाओ की ही चिन्ता रहती थी। जिस चीज को वे नापसन्द करते थे, उसकी सम्भवतः खुली निन्दा नही कर सकते थे, क्योकि फ्रासीसी लोकप्रियता मे किसी प्रकार के ह्रास से हेमिल्टन तथा अन्य 'अग्रेज-भक्तो' की ही ख्याति बढती।

फ्रास मे रहते समय उन्होंने बडी सावधानी बरती थी और इस तात्कालिक मान्यता के विरुद्ध चेतावनी दी थी कि फ्रास लोकतन्त्र के लिए सन्नद्ध है। फिर भी, यह तो स्वीकार ही करना पडेगा कि अटलाटिक के दूसरे छोर पर उनके वापस आ जाने पर क्राति मे कुछ और चमत्कार आ गया था। बर्क की पुस्तक 'फ्रासीसी क्राति पर आक्षेप' से उत्तेजित होकर उन्होने जोर देकर कहा, "यह हार्दिक ग्लानि की बात है कि 'उनके दिमाग की इस सडान्ध' को देखकर यह कहने को बाध्य होना पडता है कि इसके पीछे कुत्सित उद्देश्य हैं जिन पर सेवा, सद्उद्देश्यो एव देशभक्ति की छाप थी।"

जनवरी, १७९३ मे विलियम शार्ट ने हालैण्ड से भेजे गये अपने खरीतों मे जेकोबिनो की शिकायत की थी। जेफर्सन ने एक पत्र लिखकर इस कार्य का प्रतिवाद किया। उनकी विजय के लिए सघर्ष मे क्या बाते जरूरी है इसकी चर्चा करते हुए उन्होने लिखा, "अनेक अपराधी व्यक्ति बिना मुकदमा चलाये ही मौत के घाट उतार दिये गये और उनके साथ कुछ निरपराध व्यक्ति भी पिस गये। इस पर मुझे उतना ही खेद है जितना किसी भी व्यक्ति को हो सकता है और उनमे से कुछ के लिए तो मुझे जीवन-पर्यन्त दुख रहेगा। किन्तु उन पर मुझे तब भी दुख होता जबकि उनकी मृत्यु किसी रण-क्षेत्र मे हुई होती। जन-शक्ति का उपयोग आवश्यक था—यह एक ऐसी शक्ति थी, जो गोलो और बमो की भाँति अन्धी तो नही थी, किन्तु किसी हद तक अन्धी अवश्य थी। .... इस उद्देश्य के लिए शहीद कुछ व्यक्तियो के कारण मेरी भावनाओ पर गम्भीर आघात पहुँचा है, किन्तु उसके विफल हो जाने की अपेक्षा मैं आधे विश्व को वीरान देखना अधिक पसन्द करूगा। यदि प्रत्येक देश मे आदम और हौवा ही रह जाये 'और वे भी स्वतन्त्र रहे' तो आज जो स्थिति है, उससे तो कम-से-कम वह स्थिति अच्छी ही रहती।"

रक्तपिपासा की ऐसी असाधारण भावना का कारण स्पष्टत दलगत भावना में पाया जा सकता है। जेफर्सन का सम्बन्ध उस अमरीकी पार्टी की पराजय से था, जिसे उन्होने 'राजतत्रवादी' समझ रखा था। "फ्रास मे प्रजातत्र की सफलताओ ने उनकी सम्भावनाओ और सम्भवत उनकी योजनाओ पर अन्तिम और निर्णायिक प्रहार कर दिया।"

कुछ ही दिनो बाद अपने दामाद के नाम एक पत्र मे उन्होने इसी विषय को इस प्रकार रखा —

"फ्रास से हमे अनेक शुभ समाचार मिल रहे हैं और उनके मिलते ही रहने की आशा है। वहाँ क्रान्ति की घटना पर सन्देह नही किया जा सकता और यहाँ तक कि उसके दुश्मन भी सन्देह नही कर सकते (अर्थात् सितम्बर, १७९५ मे राजतत्र का अन्त)। इससे यहाँ जो सनसनी पैदा हुई है और सार्वजनिक समाचारपत्रो मे उनके जो सकेत मिले है, उससे सिद्ध हो गया है कि स्वय हमारी शासन-प्रणाली का रूप फ्रास की घटनाओ पर इतना अधिक अवलम्बित है, जितनी पहले किसी ने कल्पना भी नही की थी। हमारी भूतपूर्व शिथिल सरकार के बाद राजतत्र की जो लहर प्रचण्ड रूप धारण कर विपरीत दिशा मे जा रही थी और जो राजतत्र की सजधज के साथ चारो ओर प्रत्येक चीज पर हावी हो जाना चाहती थी, वह हमारी आशा के अनुकूल अब पीछे हटकर एक मध्यम वैधानिक सरकार का रूप धारण कर रही है, जो जनता की निर्बलता की नही, उसकी वृद्धि के अनुकूल होगी।

मई, १७९३ मे जेफर्सन ने इस बात पर जोर दिया कि विशेषकर उत्तर-पश्चिम और दक्षिण मे इडियनो के सम्बन्ध मे सकटापन्न स्थिति को देखते हुए अमरीका का 'यूरोपीय युद्धाग्नि' से बिल्कुल अलग रहना ही उचित है। प्रश्न था—क्या युद्धरत शक्तियाँ अमरीका को अलग रहने देगी?

"फ्रास के सफल होने पर सम्भवत वे ऐसा करेंगे, किन्तु यदि विजयश्री राजाओ के हाथ लगी, तो सम्भव है कि वे कम से कम हमारी शासन-प्रणाली मे परिवर्तन के लिए हमे विवश करके अपना कार्य पूर्णतया समाप्त करने का निर्णय करे—यह एक ऐसा परिवर्तन होगा, जो एक दल विशेष के प्रति, जो बहुसख्यक नही, किन्तु प्रभावशाली है, कृतज्ञ होगा।...यह ग्रीष्म ऋतु समस्त विश्व के मानव-समाज की भावी स्थिति के लिए अत्यन्त महत्व की है और ...रे लिए तो है ही। क्योकि हमारे सविधान मे प्रत्यक्ष परिवर्तन की समस्या ... फिर भी वह उसके प्रशासन की प्रवृत्ति और सिद्धान्तो को प्रभावित

करेगा, जिसके परिणामस्वरूप एक घटना मे उसका रूप दूसरी घटना से भिन्न होगा।"

जून तक फ्रासीसियो का व्यवहार जेफर्सन को भयभीत करने लगा। उन्होने रण्डोल्फ को फिर लिखा—

"फ्रासीसियो ने अन्य राष्ट्रो के प्रति अपने व्यवहार मे भयकर भूले की है। उन्होंने न केवल व्यर्थ ही मे सभी बादशाहो का अपमान किया है, बल्कि वे अपने पडोसियो पर भी अपने ढग की स्वतत्रता लादने का प्रयास कर रहे हैं।" किन्तु जेफर्सन को इस बात से सान्त्वना मिली कि वे पडोसियो के सबधो के मामले मे अपना सुधार कर रहे है और जेनेट के विनाशकारी मार्ग ने भी उनके फ्रास-समर्थको के रुख मे कोई मौलिक परिवर्तन नही किया।"

अपने सेवा-निवृत्ति-काल मे भी जेफर्सन के हृदय पर फ्रासीसियो की समृद्धि की बात अकित रही और अपनी इस उमग मे वे सावधानी बरतना भूल गये। उन्होने लिखा, "मेरा विश्वास है कि विदेशी शक्तियो पर उतनी पूर्ण विजय होगी और मैं यह आशा किये बिना नही रह सकता कि यह विजय तथा इसके परिणामस्वरूप आक्रमणकारी अत्याचारियो का अपमान, अन्तोगत्वा उन लोगो के विरुद्ध यूरोपीय जनता के क्रोध और रोष को प्रज्ज्वलित करेगा, जिन्होने उन्हे इस दुष्टता के जाल मे फँसाने का साहस किया और अन्त मे राजा, सामन्त और पुरोहित फासी के उन्ही तख्तो पर चढाये जायगे, जिन्हे इतने दिनो तक वे मानव-रक्त से रजित करते रहे हैं।"

अप्रैल, १७६५ मे जब फ्रास और महाद्वीप के उसके शत्रुओ के बीच सन्धि की सम्भावना प्रकट हुई, तब जेफर्सन ने लिखा कि यदि ऐसा हुआ तो मुझे सन्देह नही कि आगामी पतझड तक लन्दन मे पिचेग्रू के साथ दावत खाने का मौका मिलेगा, क्योकि मेरा विश्वास है कि उस स्थिति मे थोडे समय के लिए अपने सुख-वैभव का परित्याग कर वहाँ जाने और उस द्वीप मे स्वतत्रता और प्रजातन्त्र के प्रभात का स्वागत करने का लोभ मैं सवरण नही कर सकता। हालैण्ड की क्रान्ति तथा हालैण्ड और फ्रास के घनिष्ट सम्बन्ध से जेफर्सन के मन मे नवीन उत्साह हुआ। १ जून, १७६५ को उन्होने एक पत्र मे लिखा, "मेरा हार्दिक विश्वास है कि स्वतत्रता का पवित्र चक्र इतना गतिशील है कि वह समस्त विश्व की परिक्रमा करेगा। यह बात तो है ही कि उसके अग, स्वाधीनता और ज्ञान की ज्योति, एक साथ गतिशील हैं। यह हमारे लिए गौरव की बात है कि इस चक्र को सर्वप्रथम हमने गतिशील बनाया और हमे प्रसन्नता है कि सबसे

आगे होने के कारण हमे किसी निकृष्ट दृष्टान्त का अनुसरण नही करना पडा। रोब्सपियरे के अत्याचार स्वाधीनता के भारी प्रयासो मे विकटरूप से बाधक सिद्ध होगे।" जेफर्सन को इस बात मे कही सन्देह करने का कारण न मिला कि फ्रास का उद्देश्य अभी भी स्वाधीनता का उद्देश्य नही है। फ्रास सम्बन्धी अपने विचारो मे जेफर्सन निस्सन्देह उस रिपब्लिकन पार्टी के बहुमत का प्रतिनिधित्व करते थे, जिसने १७९२ और १७९४ के चुनावो मे काग्रेस मे काफी प्रगति की थी। वास्तव मे, जेफर्सन प्रतिनिधि सदन मे रिपब्लिकन-विरोधियो को केवल निर्बल अल्पसख्यक के रूप मे मानते थे, यद्यपि वे यह स्वीकार करते थे कि सिनेट के निर्माण में परिवर्तन की धीमी गति ने जनमत के अनुकूल कार्य करन से उसे रोका है। अब तक राजनीतिक दलो के प्रति जेफर्सन की उस घृणा का लोप हो चुका था, जो उन्होने प्रारम्भ मे व्यक्त किया था।

"जहा पार्टिया केवल पदलोलुपता के कारण विभाजित होती हैं, जैसा कि इगलैण्ड मे होता है, वहाँ उनमे से किसी में भाग लेना किसी भी बुद्धिमान या नैतिक व्यक्ति के लिए अशोभनीय होगा, किन्तु जहाँ सैद्धान्तिक मतभेद अत्यन्त आवश्यक और प्रबल हो, जितना हमारे देश के प्रजातन्त्रवादियो और एकतन्त्रवादियो के बीच है, वहा मैं दृढ और निश्चित भाग लेना सम्माननीय समझता हूँ और बीच का मार्ग अपनाना उतना ही अनैतिक समझता हू, जितना 'ईमानदार आदमियो' और 'दुष्टो' की पार्टियो के बीच, जिनमे प्रत्येक देश विभाजित है, किसी का भी साथ देना अनैतिक समझता हूँ।"

आबकारी के खिलाफ पेन्सीलवानिया के दगो के विरुद्ध, जो 'ह्विस्की विद्रोह' के नाम से प्रसिद्ध है, सैनिक शक्ति का उपयोग जेफर्सन को अपनी सरकार को सुदृढ बनाने तथा सार्वजनिक ऋण को बढाने के हेमिल्टन के कुचक्र का एक और प्रमाण प्रतीत हुआ। फासीसी क्राति समर्थक 'लोकतान्त्रिक सस्थानो' के विरुद्ध वैधानिक कार्रवाई के सुझाव से पिट के भोडे बहुरूपिये (हेमिल्टन) की और भी निन्दा हुई और उसने ३१ जनवरी, १७९५ को इस्तीफा दे दिया, किन्तु प्रेसिडेण्ट और उसकी पार्टी पर उसका प्रभाव कम नही हुआ।

किन्तु आन्तरिक राजनीति में मतभेद के लिए कम गुजाइश होने के कारण विदेशी मामलो पर ही वादविवाद के लिए मुख्य सामग्री मिल जाती थी और यह तो रिपब्लिकनो का दुर्भाग्य था कि फ्रासीसी रिपब्लिकन सरकार, जिसे रोब्सपियरे के व्यापारिक युद्ध का उत्तराधिकार प्राप्त था, ेक्षित सीमा तक अपना भाग पूरा करने के लिए तैयार नही थी।

वास्तविकता यह थी कि समुद्री युद्ध के दोनो ही पक्ष अपने लाभ के अतिरिक्त अन्य किसी चीज के प्रति समानरूप से उदासीन थे। प्रोफेसर वेमिस ने लिखा है, "वास्तव मे अमरीकी सरकार ने फ्रासीसी लूट के प्रति (जो सन्धि के प्रतिकूल थी) ब्रिटिश लूट की अपेक्षा (जो सन्धि के अनुकूल थी) अधिक उदारता की नीति अपनायी।"

अमरीकी जनमत के दृष्टिकोण से फ्रासीसियो को इस बात से लाभ था कि वे स्पष्ट कारणो से ब्रिटिश नौसेना के वास्तविक या कथित भगोडो की खोज के लिए अमरीकी जहाजो की तलाशी लेने की ब्रिटिश प्रथा का अनुसरण नही कर सकते थे। १७९७ के ब्रिटिश नौसैनिक विद्रोह ने सकटग्रस्त लोगो की स्थिति की ओर ध्यान आकृष्ट किया। जेफर्सन से लेकर बाद के सभी विदेश-मत्रियो ने समस्या के समाधान का असफल प्रयास किया और नागरिकता के सम्बन्ध मे विरोधी धारणाओ तथा स्वदेश निस्सारण के अधिकार सम्बंधी विरोधी विचारो ने इसे और भी कठिन बना दिया।

दिसम्बर, १७९३ मे मेडिसन ने ब्रिटिश व्यापार के विरुद्ध भेदभाव करते हुए १७९१ के प्रस्तावित नियमो को काग्रेस मे पुन प्रस्तुत किया और बताया कि ग्रेट ब्रिटेन के साथ अमरीका का व्यापार कुल व्यापार का अस्सी प्रतिशत है, जबकि ग्रेट ब्रिटेन के लिए यह उसके कुल व्यापार का चौदह प्रतिशत ही है। फरवरी मे गर्वनियर मारिस ने एक जहाजी बेडे को सुसज्जित करने के उद्देश्य से ऋण के लिए फ्रास से प्रार्थना की, किन्तु उसका नकारात्मक उत्तर मिला। कैरीबियन सागर मे व्यापक पैमाने पर अग्रेजो द्वारा अमरीकी जहाजो के पकड़े जाने के समाचार ने जनमत को इतना विक्षुब्ध कर दिया कि हेमिल्टन भी उसी लहर मे बह गये और सैनिक तैयारियो के लिए जोर दिया, किन्तु सघ-वादियो का उद्देश्य अमरीकी सौदेबाजी की स्थिति मे सुधारमात्र करना था, ताकि एक साधारण समाधान के लिए दूसरे प्रयास का मार्ग प्रशस्त हो जाय। अमरीकी बन्दरगाहो से सभी जहाजो के प्रस्थान पर अस्थायी प्रतिबन्ध लगा दिया गया, किन्तु इसके साथ-साथ मुख्य न्यायाधीश जे को लन्दन के लिए एक विशेष दूत मनोनीत किया गया। सिनेट मे समझौता-वार्ता न करने सम्बन्धी एक विधेयक प्रस्तुत किया गया, जो एडम्स के निर्णायक मत से गिर गया और जे को वर्तमान स्थिति को सुधारने के उद्देश्य से यथाशक्ति प्रयास करने के लिए स्वतन्त्र कर दिया गया।

फिर, अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन के बीच सम्बन्धो को सुधारने के प्रयास मे

नौसैनिक मामलो पर ही विचार करना था। जेफर्सन की सेवानिवृत्ति के वर्ष यूरोप मे घटनापूर्ण तो थे ही लेकिन सुदूर अमरीकी पश्चिम में वे इतने महत्वपूर्ण नही थे, फिर भी उनके परिणामो का मानव-समाज के भविष्य पर कम महत्व-पूर्ण प्रभाव नही पडने वाला था। १७९० के दशक मे केवल फ्रासीसी क्राति ही नही हुई, बल्कि इसी अवधि मे अमरीकी मिडिलवेस्ट का भी जन्म हुआ। फ्रासीसी क्राति से राजनीतिक और सामाजिक विचार नि सृत हुए और मिडिलवेस्ट के रूप मे आधुनिक-जगत के एकमात्र विशालतम आर्थिक शक्ति-केद्र का आदर्श प्रकट हुआ और उनकी अन्तर-प्रतिक्रिया निश्चय ही समकालीन इतिहास का मुख्य विषय बन गयी है।

प्रोफेसर जे बी ब्रेबनर ने अपनी पुस्तक 'उत्तरी अटलाटिक त्रिकोण' मे लिखा है, "जबकि ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका समुद्री व्यापारिक प्रतिस्पर्धा मे किसी समझौते के लिए प्रयत्नशील थे, जार्जिया से कनाडा तक, उत्तरी अमरीका के काफी लोग इसकी उपेक्षा कर रहे थे।" जन्मजात उद्विग्नता, कठिनाइयो के प्रति अधीरता, यूरोपीय देशान्तरवास के दबाव और स्वय अपनी जनसख्या की वृद्धि के कारण उनका पश्चिम की ओर बढना रुक नही सका। नये प्रवासी राजनीति के प्रति उदासीन थे और वे दक्षिण मे स्पेनिश झडे के नीचे या उत्तर मे ब्रिटिश झडे के नीचे अपना भाग्य आजमाना चाहते थे। ओण्टेरेरियो के मूल 'राजभक्तो' के साथ बहुत से नये अमरीकी निष्क्रमणार्थी आकर मिल गये थे और वे भी अपने को 'राजभक्त' बताते थे। उसका कारण यही था कि वे ऐसा कह कर विशेष भूमि-अनुदान के अधिकारी बनना चाहने थे। १८१२ तक उत्तरी कनाडा (ओण्टेटेरियो) के ८० प्रतिशत निवासी अमरीकी या उनके वशज थे और उनमें से केवल एक-चौथाई सच्चे 'राजभक्त' (अमरीकी युद्ध मे बिटिश सेना का साथ देनेवाले) थे। न्यू इगलैड और न्यूयार्क से झुण्ड के झुण्ड अमरीकी निष्क्रम-णार्थियो ने माण्ट्रियल के दक्षिण और पूर्व की जमीनो मे प्रवेश किया।

किन्तु उससे भी महत्वपूर्ण घटना ओहियो घाटी मे अमरीकी प्रवासियो की बाढ थी। अग्रेजो ने इस प्रदेश मे अपनी चौकियाँ स्थापित कर अपना प्रभुत्व जमा लिया था और उचित या अनुचित, वे रेड इडियनो के साथ शान्तिपूर्वक रहना चाहते थे। अब यदि ये इडियनो को रखना चाहते और प्रवासियो को निरन्तर भीषण सीमा-सघर्ष के खतरे मे रखने का प्रयास करते तो उनका शासन असह्य हो जाता था। स्वय इडियन आंग्ल अमरीकी कूटनीति के परिणाम के लिए धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने को तैयार नही प्रतीत होते थे। इस कूटनीति मे उनके

स्वार्थों को सौदेवाजी का आधार बनाया जा सकता था। १७९१ मे सिनसिनाटी नगर से दूर एक स्थान पर जनरल सेंट क्लेयर की सेनाओ पर उनकी विजय ने अपनी सैनिक शक्ति के प्रति उनमे आत्मविश्वास उत्पन्न कर दिया। १७९३ मे शान्तिपूर्ण समाधान के लिए वार्ता का प्रयास विफल हो गया, जिसका कारण ब्रिटिश कुचक्र नही था, जैसा कि व्यापक रूप मे समझा जाता था, वल्कि उपनिवेश के सीमा-निर्धारण के प्रश्न पर उभय पक्ष का कठोर रुख था। इस विफलता ने पश्चिमी इडियन-कबीलो को इरोकाइस से पृथक कर दिया, क्योकि इरोकोइस अमरीकियो से समझौता करना चाहते थे। अव इडियन युद्ध करने के लिए अकेले पड गये। एक बार ऐसा हो जाने पर उन्हे किलो मे पडी बची खुची ब्रिटिश सेनाओ पर भरोसा करने के लिए विवश होना पडा तथा अत मे अग्रेजो को भी यह निर्णय करना पडा कि वे लडे या पीछे हटे।

सकट वडी तेजी से आया। १७९३ के पतझड मे स्वातन्त्र्य-युद्ध के नायक एन्थोनी वेने ने एक छोटी सैनिक टुकडी के साथ इडियन प्रदेश में प्रवेश किया और एक किलेवन्द चौकी मे अपने को स्थापित कर दिया। फरवरी, १७९५ मे निम्नवर्ती कनाडा के गवर्नर लार्ड डोर्चेस्टर ने फ्रासीसी कनाडियनो मे विद्रोह फैलाने के जेनेट के प्रयासो से क्षुब्ध होकर अत्यन्त उत्तेजनात्मक भाषण किया,

नये कानून द्वारा भूमि-सम्बन्धी नीति और सुदृढ बना दी गयी। इसके प्रारम्भिक निर्माण मे जेफर्सन का विशेप हाथ था और महाद्वीपी काग्रेस मे सेवा करते समय उन्होने इसमे योग दिया था। पिट्सबर्ग और सिनसिनाटी मे भूमि-कार्यालय खोले गये। सन् १८०० तक ओहियो प्रदेश की जन-सख्या ४५ हजार थी; १८०३ मे इसे राज्य के रूप मे सघ मे मान्यता दी गयी, १८१० मे इसकी आबादी २ लाख ३० हजार थी। रोग, मद्यसार और बन्दूको ने कबीलो का सफाया कर दिया। विस्तारशील साम्राज्य के स्वप्न अब साकार हो रहे थे।

इस प्रकार, जे की लन्दन-यात्रा ने अपने देश की बाह्य और आन्तरिक राजनीति के अनेक सूत्रो को परस्पर सम्बद्ध करने का कार्य किया। कतिपय अमरीकी इतिहासकारो ने उस सन्धि द्वारा किये गये अमरीकी बलिदानो पर विशेष बल दिया है, जिस पर उसके राजदूत ने अन्तत १४ नवम्बर, १७९४ को हस्ताक्षर किये। कहा जाता है कि जे इमसे अच्छी शर्तों पर सन्धि करने में इसलिए असफल हुए कि हेमिल्टन ने अग्रेजो को आश्वासन दिया था कि १७८० की 'सशस्त्र तटस्थता' के नमूने के आधार पर अमरीका और अन्य तटस्थ राज्यो के बीच कोई सन्धि नही होगी, दूसरे वेस्ट इडीज के व्यापार मे हिस्सा प्राप्त करने के उद्देश्य से जे को सभी मामलो मे रियायत करने का अधिकार दिया गया था। अन्य लोगो का कहना है कि तटस्थ अधिकार और अनिवार्य सेवा के सम्बन्ध मे अमरीका की स्थिति कायम नही रही, यद्यपि ब्रिटेन ने युद्ध समाप्त होने के बाद निषिद्ध सामग्री और "स्वतत्र जहाज, स्वतत्र सामग्री" के सिद्धान्तो के प्रश्न पर विचारविमर्श करना स्वीकार कर लिया। साथ ही साथ उसने खाद्य-पदार्थों तथा अन्य सामग्रियो को, जो अमरीका के लिए निषिद्ध कर दिये गये थे, जब्त करने के बजाय खरीदने का अधिकार देना स्वीकार किया। किन्तु अन्त मे दोनो देशो के बीच समानता के आधार पर व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हुआ। अमरीकी जहाजो को ब्रिटिश ईस्ट इडीज जाने की और कतिपय प्रतिबन्धो के अन्तर्गत ब्रिटिश वेस्ट इडीज जाने की अनुमति दी गयी। स्वातत्र्य-युद्ध और नौसैनिक लूट से उत्पन्न प्रमुख आर्थिक दावो की समस्या का समाधान सयुक्त आयोगो के द्वारा करने का निर्णय किया गया।

सन्धि का अधिक महत्वपूर्ण और अधिक स्थायी प्रभाव पश्चिमी अमरीका पर पडा। अमरीका के पश्चिमोत्तर सीमा-निर्धारण सम्बन्धी दीर्घकालिक और जटिल विवाद का अन्तिम समाधान प्राय. उक्त क्षेत्र के सर्वेक्षण के लिए एक 'ग आयोग की नियुक्ति द्वारा किया गया। मतभेद का कारण यह था कि

१७८३ की शान्ति-सन्धि के रचयिताओ को पर्याप्त भौगोलिक ज्ञान नही था और उन्होने अन्य भूलो के साथ एक भूल यह भी की कि मिस्सीसिपी के उद्गम को उत्तर मे वहुत दूर कनाडियन प्रदेश मे वताया। सन्धि मे मिस्सीसिपी के संयुक्त नौकानयन की व्यवस्था की गयी थी और जव भूल का पता चल गया तो अंग्रेजो ने सीमा को और दक्षिण की ओर वढाने का समर्थन किया ताकि नदी की धारा का कम से कम एक भाग उसके अन्तर्गत आ जाय। यद्यपि जे की सन्धि मे मिस्सीसिपी के सयुक्त नौकानयन की पूर्ति की पुनरावृत्ति की गयी थी, तथापि उन्होने यह मानने से इन्कार कर दिया कि इसका प्रादेशिक समस्या पर प्रभाव पडता है। मामले का अन्तिम समाधान वहुत वाद मे हुआ, किन्तु अन्त मे, मिडिलवेस्ट का एक महत्वपूर्ण भाग, जिसके अन्तर्गत मिन्नेसाटा का वह लौह भडार भी आ जाता है, जिसने द्वितीय विश्व युद्ध मे अत्यन्त महत्वपूर्ण योग दिया, कनाडा के वजाय अमरीकी प्रभुत्व मे आ गया। प्रशान्त सागर के साथ अन्तिम सीमा उस स्थान के उत्तर मे निर्धारित की गयी, जहाँ ब्रिटिश प्रस्तावो के स्वीकार किये जाने पर निर्धारित की जाती। अन्त मे, अन्य समस्याओ के समाधान के फलस्वरूप ब्रिटेन ने १७९६ तक उत्तरी चौकियो को खाली करना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार, वेने की विजय के फलस्वरूप अमरीकियो को प्राप्त भाग अत्यन्त सुदृढ हो गया।

इन घटनाओ पर हाल के इतिहासकार प्रोफेसर ए एल. वर्ट ने युद्ध-निवारण के प्राथमिक उद्देश्य मे सफलता का तया व्यावहारिक लाभो का पूर्ण श्रेय जे को प्रदान किया है और अन्त मे यह निष्कर्ष निकाला—"पके हुए अन्तरराष्ट्रीय फोडो के उपचारार्थ सयुक्त अयोग-प्रणाली को स्वीकार करने के लिए ग्रेनाविले को समझा करके जे ने तत्कालीन विकट समस्या के समाधान से वढकर कार्य किया। उन्होने कूटनीति के इतिहास मे एक नये युग का सूत्रपात किया। उनकी सन्धि ने अन्तरराष्ट्रीय मामलो मे न्यायिक पद्धति के आधुनिक उपयोग का उद्घाटन किया।"

जे की सन्धि और स्पेन के साथ पिक्ने की सन्धि के वीच वास्तविक सम्वन्ध स्पष्ट नही है। पिक्ने की सन्धि २७ अक्तूवर, १७९५ को हुई और यह सघवादी कूटनीति की दूसरी प्रमुख सफलता थी, किन्तु यह तो स्पष्ट है कि यूरोप में स्पेन की समस्याओ के साथ-साथ इन आंग्ल-अमरीकी समझौते की सम्भावना थी, जिसके कारण स्पेनवासियो ने एक समझौता स्वीकार किया, जिसमे अनेक अर्थों मे अमरीकी इच्छाओ के पूर्ति हुई। जे की सन्धि की मिस्सीसिपी सम्वन्धी धारा

मे आग्ल-अमरीकी समझौते पर विशेष बल दिया गया था। सीमा वही तक निश्चित की गयी, जिसके लिए उनका दावा था। प्रत्येक पक्ष ने इसके विरुद्ध इडियनो के साथ साजिश न करने का वादा किया और अन्त मे स्पेनवासियो और अमरीकियो ने मिस्सीसिपी के पूर्ण नौकानयन मे सयुक्तरूप से भाग लेने का निर्णय किया, जबकि अमरीकियो को अपने सामानो के यातायात के लिए उसके निचले भाग मे एक स्वतत्र बन्दरगाह दिया गया और वह प्रथम तीन वर्षो के लिए न्यू आर्लियन्स मे निश्चित किया गया।

पिंकने की सन्धि ने केण्टकी के सघराज्य से पृथकता की सम्पूर्ण कल्पना की ही हत्या कर दी और समूचे पश्चिमी अमरीका को उसके साधारण यातायात मे सयुक्त हितो के महत्व से परिचित करा दिया। सिनेट ने सर्वसम्मति से इस सन्धि की पुष्टि की, यद्यपि जेफर्सन ने दलगत भावना से मेडिसन से शिकायत की कि इसमे शान्ति और मित्रता की अपेक्षा कुछ अवाछनीय तत्व तथा धोखाधडी और निरन्तर सघर्ष के बीज निहित है।

किंतु रिपब्लिकन शत्रुता का सारा विष जे की सन्धि के लिए सुरक्षित था। उसकी शर्तो के प्रकाशित होने पर जेफर्सन ने लिखा, "किसी भी सन्धि के विरुद्ध इतना व्यापक असतोष पहले कभी भी नही प्रकट हुआ। जो लोग इसकी विशिष्ट धाराओ को समझते हैं, इनकी निन्दा ही करते हैं। जो लोग इन्हे नही समझते, वे इसके फ्रास-विरोधी होने के कारण ही सामान्यत निन्दा करते है।" उन्होने जोर देकर कहा, "यह एक कुख्यात कानून है, जिसका वास्तव मे अमरीका की जनता और विधानसभा के विरुद्ध इग्लैड और इस देश के अग्रेजभक्तो के बीच मित्रता की सन्धि से अधिक महत्व नही है।"

सन्धिओ की पुष्टि के लिए अमरीकी सविधान द्वारा निर्धारित जटिल पद्धति की इस वार पूर्ण परीक्षा हुई। सीनेट मे इस सन्धि की पुष्टि अधिकतर इस कारण हुई कि सघवादियो ने उसके मूल रूप को किसी प्रकार गुप्त रखा और वादविवाद को भी गुप्त रखा गया। अल्पमत के एक सदस्य द्वारा उसके प्रकाशित कर दिये जाने से एक तूफान खडा हो गया। वाशिगटन ने अन्त मे उस पर हस्ताक्षर किये और सन्धि की पुष्टि का आदान-प्रदान हुआ, यद्यपि वेस्ट-इडीज सम्बन्धी धाराओ को छोड दिया गया, क्योकि सीनेट ने सुविधा पर प्रतिबन्धो को स्वीकार करने के बजाय उसे ठुकरा दिया (वास्तव मे अग्रेजो ने अपने ही उपनिवेशो के लिए एकागी कार्रवाई द्वारा अमरीकियो को वही अधिकार ...ान किये)। सीनेट की आपत्ति का एक कारण तो यह था कि एक शर्त

द्वारा अमरीका को वेस्ट इडीज की रूई सहित कतिपय सामग्रियो के निर्यात के लिए मनाही कर दी गयी, किंतु रूई के महत्व की वास्तव मे पहले से कल्पना नही की गयी थी। दो वर्ष पूर्व तत्कालीन विदेश-मत्री जेफर्सन ने एली ह्विटने से रुई से बिनौला निकालने के यत्र के बारे में विस्तृत विवरण मागा था, क्योकि उसे वे प्रोत्साहन देना चाहते थे।

पुष्टि से सन्धि-विषयक विवाद का अन्त नही हुआ, क्योकि रिपब्लिकन जेफर्सन के इस विचार के समर्थक थे कि सिनेट की कार्रवाई से प्रतिनिधि-सभा आबद्ध नही है। प्रतिनिधि-सभा मे सयुक्त आयोगो के लिए आवश्यक धन-विनियोग को ठुकराने के प्रश्न पर रिपब्लिकन केवल तीन मत से पराजित हुए।

जे की सन्धि के प्रति जेफर्सन के रुख मे दलगत भावना के अतिरिक्त और कुछ भी नही परिलक्षित होता, अग्रेज भक्तो के दल के प्रति उनका सन्देह पूर्ववत् कायम रहा। मई, १७९७ मे, जबकि वे उप-राष्ट्रपति थे, उन्होने लिखा, "अग्रेज समानता से सन्तुष्ट नही होगे, वे व्यापार पर एकाधिकार चाहते हैं और अमरीकियो पर प्रभाव जमाना चाहते हैं और इसमे वे वास्तव मे सफल भी हुए हैं।

"उनका एक ऐसा कारखाना है, जहा हम अपनी सारी आवश्यकताओ के लिए जाते है, उन्ही के साथ हमारे सभी मजदूर किसी न किसी प्रकार आबद्ध हैं, हमारे अधिकाश नौकानयन का उनसे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध है, उनके कारबारो का शुल्क भी कृत्रिम नागरिकता द्वारा उन्हो के पास रह जाता है; हमारे कथित व्यापारियो मे अधिकतर ये ही विदेशी और कल्पित नागरिक है, जो हमारे बन्दरगाहो मे भरे पडे है और देश के प्रत्येक छोटे-छोटे कस्बे और जिले मे बसे हुए हैं तथा अपने और अपने आश्रितो के मतो द्वारा उन स्थानो की सभी चीजो पर और छलकपट एव अपने राजदूतो के प्रभाव से देश पर अपना प्रभुत्व जमाए हुए हैं, वे बडी तेजी से हमारे बैंको और सार्वजनिक निधियो के एकाधिकार की ओर बढते जा रहे है और इस प्रकार हमारे सार्वजनिक अर्थतत्र पर अपना अधिकार स्थापित कर रहे हैं, उन्होने सरकारी दफ्तरो के भीतर और बाहर अधिकाश प्रभावशाली व्यक्तियो को मिला रखा है, उन्होने दिखा दिया है कि सरकार के विभिन्न विभागो पर अपने इन प्रभावो से वे उसे एक निर्दिष्ट दिशा मे जाने के लिए विवश कर रहे हैं और इस देश के हितो को पूर्णत. किसी दूसरे की इच्छा के अनुकूल मोड रहे है, जब हम इन तमाम बातों की ओर ध्यान देते हैं तब हमारे लिए यह कहना असम्भव हो जाता है कि हम

किसी स्वतंत्र आधार पर खडे है और कोई भी स्वतंत्र विचार का व्यक्ति पराधीनता के इस बन्धन को देख सकता है तथा उसके अन्तर्गत असह्य पीडा का अनुभव कर सकता है।"

सम्भव है कि ब्रिटिश प्रभाव और उसके समर्थको के प्रति इस दृढ और दीर्घकालिक आशका के कारण ही जेफर्सन ने अमरीका के लिए एक विशुद्ध कृषक अर्थतन्त्र की प्रारम्भिक नीति का परित्याग कर दिया और धीरे-धीरे सभी आवश्यक वस्तुओ मे आत्मनिर्भरता की नीति अपनाने का निर्णय किया।

१७९६ मे जेफर्सन की बढती हुई राजनीतिक चिन्ता के बावजूद, इस बात का कोई प्रमाण नही है कि उन्होने राष्ट्रीय रगमच पर पुन लौटने के लिए कोई सक्रिय प्रयास किया और न उनके इस कथन पर ही सन्देह करने का कोई कारण है कि वे कोई पद नही चाहते, अथवा एक बार वाशिंगटन का हटना निश्चित हो जाने पर वे अपनी अपेक्षा जान एडम्स के चुनाव का स्वागत करते। हेमिल्टन के प्रति दोनो के विरोध के कारण उनका पारस्परिक सम्बन्ध घनिष्ठ हो गया था, वास्तव मे जेफर्सन ने एडम्स को ही हेमिल्टन का एकमात्र विकल्प मान लिया था। हेमिल्टन के सहयोगियो ने दक्षिणी कारोलिना के थामस पिकने को दूसरे सघवादी उम्मीदवार के रूप मे खडा किया। (तत्कालीन सविधान के अनुसार राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति, दोनो ही के लिए एक ही मतपत्र था।) रिपब्लिकन पार्टी मे अभी भी विभिन्न भौगोलिक और सामाजिक तत्व सम्मिलित थे और वह वर्जीनिया-न्यूयार्क-गठबन्धन पर आधारित थे। इसका उदाहरण १७४३ मे मिला, जब वर्जीनिया और उत्तरी कारोलिना ने अपने मत एडम्स के बजाय क्लिण्टन को दिये थे। जेफर्सन के साथ न्यूयार्क के आरोन बर के मनोनयन द्वारा इसे अब और भी सुदृढ बना दिया था।

वाशिंगटन ने १७ सितम्बर, १७९६ के अपने विदाई भाषण मे दलगत सघर्ष को कम करने की अपील की और यह निश्चित था कि किसी कम सम्माननीय और कम प्रभावशाली व्यक्ति के प्रेसिडेण्ट-पद पर आने पर यह सघर्ष कई गुना जोश से उमड जाता। वर्गीय गठबन्धनो के आधार पर दलगत विभाजन की बढती हुई प्रवृत्ति वास्तव मे एक सघराज्य के लिए खतरनाक चीज थी और वाशिंगटन ने सघराज्य का एक ऐसा रूप चित्रित करने का प्रयास किया, जिसके विभिन्न क्षेत्र प्राकृतिक रूप से अन्योन्याश्रित हो। यह एक ऐसी कल्पना थी, जो जेफर्सन की विचारधारा के अधिक प्रतिकूल नही थी और जिसे अन्ततोगत्वा हेनरी क्ले की 'अमरीकी प्रणाली' मे स्थान प्राप्त हुआ।

वाशिंगटन ने इस बात पर जोर दिया कि विशिष्ट राष्ट्रो के विरुद्ध स्थायी और दुराग्रहपूर्ण शत्रुता तथा अन्य राष्ट्रो के प्रति विशेष अनुरक्ति पर आधारित विदेश-नीति सम्बन्धी विवादो का कितना हानिकारक आन्तरिक प्रभाव पडेगा। उन्होने शान्ति के सर्वोत्तम आश्वासन के रूप मे तथा अमरीकी मामलो मे विदेशी हस्तक्षेप के विरुद्ध सर्वोत्कृष्ट सरक्षण के रूप मे "सभी राष्ट्रो के प्रति निष्ठा और न्याय" की नीति की सिफारिश की।

वाशिंगटन ने जिन शब्दो मे अमरीकी तटस्थवाद के आवश्यक तत्वो की व्याख्या की, वे ही आगे चलकर उनके देशवासियो के विदेशी मामलो के सचालन मे स्थायी मार्गदर्शक सिद्ध हुए।

"विदेशी राष्ट्रो के बारे मे हमारे लिए आचरण का महान नियम यह है कि हम उनके साथ अपना व्यापारिक सम्बन्ध वढाये और उनके साथ यथासम्भव कम राजनीतिक सम्बन्ध रखे ...

"यूरोप के कुछ निश्चित प्राथमिक स्वार्थ हैं, जिनने हमारा कोई सम्बन्ध नही है और है भी तो बहुत ही कम। इसलिए वह प्राय ऐसे मतभेदो मे उलझता रहेगा, जिनके कारणो से वस्तुत हमारा कोई सम्बन्ध नही होगा। इसलिए उसकी राजनीति के साधारण उतार-चढाव में अथवा उसकी मित्रता या शत्रुता के साधारण सयोग-वियोग मे कृत्रिम बन्धनो द्वारा अपने को उलझाना हमारे लिए बुद्धिमानी की बात नही होगी।"

जबकि मौजूदा सन्धियो का बडी सावधानी से सम्मान करना चाहिए था "अमरीका की सच्ची नीति विदेशी जगत के किसी भी भाग के साथ स्थायी गठबन्धन से स्पष्टत निकल जाने की है और अपनी तटस्थता से लाभ प्राप्त करने के लिए अपनी बढती हुई शक्ति और एकता पर अवलम्बित रहने की है।"

किन्तु विदाई के प्राथमिक सन्देश के प्रति समकालीनो ने जो उदासीनता प्रदर्शित की, उससे यह अनुमान नही लगाया जा सकता था कि भविष्य मे उसका समर्थन होगा। १७९६ के चुनावो मे दलगत भावना का जैसा विषाक्त प्रभाव देखने को मिला, वैसा कभी नही देखा गया था। यद्यपि एडम्स और जेफर्सन मे से किसी ने भी इस सघर्ष मे भाग नही लिया, फिर भी दोनो पक्षो ने एक दूसरे की कुत्सित निन्दाओ से समाचारपत्रो को रग दिया। क्रान्ति के वयोवृद्ध राजनीतिज्ञ एव नि स्वार्थ जनसेवा के सर्वोत्तम प्रतिनिधि की निन्दा उसे राजतन्त्र और कुलीनतन्त्र का पोषक बताकर की गयी। वर्जीनिया के सम्भ्रान्त और सर्वोपरि मानव-दशा के यथार्थ सुधार मे रुचि रखनेवाले जेफर्सन को ढोंगी,

कोरा सिद्धान्तवादी, नास्तिक और कायर बताया गया। राजनीति मे क्रान्तिवाद, धर्म मे नास्तिकता और व्यक्तिगत आचरण मे अनैतिकता को एक साथ लिया गया। दोनो ही पक्षो ने विदेशी मामलो मे एक दूसरे के दृष्टिकोण का दुरुपयोग किया, यद्यपि जे की सन्धि विषयक जेफर्सन के विचारो से इस आरोप का खण्डन करना कठिन हो जाता है।

अब सघराज्य के सस्थापको की यह मूल कल्पना नष्ट हो रही थी कि प्रेसिडेण्ट के निर्वाचको को विवेक से काम लेना चाहिए और अब पार्टी के आधार पर और वस्तुत विभागीय आधार पर मतदान आरम्भ हो गया। दक्षिण और पेन्सीलवानिया ने जेफर्सन का साथ दिया और उत्तर तथा मेरीलैण्ड ने एडम्स का। किन्तु दोनो ही पार्टियो मे इतनी गुटबन्दी थी कि केवल ३८ मत अन्य चार उम्मीदवारो मे विभाजित हो गये थे। अन्त मे तीन रिपब्लिकन राज्यो का एक-एक मत एडम्स के पक्ष मे चला गया और इतने ही मतो से वे जेफर्सन से आगे उठे। हेमिल्टन पक्ष के उम्मीदवार पिकने ९ मतो से पीछे रहे।

इस प्रकार जब एडम्स ने पदग्रहण किया तो उन्हे इस बात का ज्ञान था कि देश मे उनका बहुत ही कम मतो से बहुमत है और उनका प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी फिर प्रेसिडेण्ट है। सर्वप्रथम ऐसा प्रतीत हुआ कि एडम्स और जेफर्सन मिलकर काम करेगे और कोई मध्यम मार्ग निकालने का प्रयास करेगे, यद्यपि जेफर्सन का कहना था कि उनका सरकारी कार्य सावैधानिक रूप से सिनेट की अध्यक्षता तक ही सीमित है। वास्तव मे मत्रिमडल इस प्रकार के सहयोग मे बाधक सिद्ध हुआ, क्योकि उसमे वही लोग थे जो वाशिगटन के मन्त्रिमडल मे थे और उनका नेतृत्व हेमिल्टन कर रहे थे। प्रशासन सघवादी नीति के परम्परागत आधार पर कार्य करता रहा।

फ्रासीसी प्रजातत्री सरकार के व्यवहार ने और कुछ भी करना कठिन बना दिया। मनरो ने, जिन्हे उसी समय पेरिस भेजा गया, जिस समय जे को लन्दन भेजा गया था, इन निजी आश्वासनो द्वारा फ्रासीसी क्षोभ को शान्त करने का प्रयास किया कि वाशिगटन के अवकाश-ग्रहण के पश्चात् सब कुछ बदल दिया जायेगा और क्रुद्ध राष्ट्रपति ने उन्हे वापस बुला लिया। चूकि मनरो ने जे की सन्धि के प्रावधानो के प्रकाशित होने के पूर्व फ्रासीसी नौकानयन-विभाग से कतिपय सुविधाए प्राप्त कर ली थी, इसलिए फ्रासीसियो ने महसूस किया कि अमरीकी दूत ने, जिसने उनके हितो के प्रति बडा उत्साह प्रदर्शित किया था, उनके साथ विश्वासघात किया। अब फ्रासीसी सरकार ने अपनी नीति को पूरी

शक्ति से कार्यान्वित करने का निश्चय किया और घोषणा की कि जे की सन्धि का वदला अमरीकी जहाजरानी के साथ उसी प्रकार का व्यवहार करके लिया जायगा, जिस प्रकार इगलैण्ड ने किया था। वाशिगटन के द्वारा भेजे गये नये दूत से मुलाकात भी नही की गयी और अमरीका तथा फ्रास के बीच सारे कूटनीतिक सम्वन्ध स्थगित कर दिये गये।

एडम्स ने एक विशेप मिशन भेजने का निर्णय किया—ऐसा मिशन, जिसने ग्रेट ब्रिटेन और स्पेन के साथ सन्धि करायी थी। किन्तु नये फ्रासीसी विदेश-मत्री टैलीरेण्ड ने उसके तीन सदस्यो के साथ अपमानजनक व्यवहार किया और अपने दलालो द्वारा उन्हे सूचित किया कि किसी भी वातचीत के पूर्व टैलीरेण्ड और उनके घूसखोर साथियो को घूस देना पडेगा और फ्रास को ऐसी शर्त पर ऋण देना होगा, जिसका वास्तविक अर्थ होगा उपहार। टैलीरैण्ड एक वार फिर यह अनुमान लगा रहे थे कि अमरीका युद्ध करना नही चाहता और उनका विश्वास था कि यदि एडम्स कोई कार्यवाई करना भी चाहेगे तो सघवादियो के विरुद्ध आन्तरिक विरोध से वह विफल हो जायेगी। इस कार्य मे उन्हे मिशन के रिपब्लिकन सदस्य और न्यू इंग्लैण्ड मे जेफर्सन के प्रमुख विश्वासपात्र एलब्रिज गेरी के व्यवहार से प्रोत्साहन मिला।

फ्रासीसियो का अनुमान गलत सिद्ध हुआ। एडम्स ने घोषणा कर दी कि वे फ्रास को तव तक कोई दूसरा राजदूत नही भेजेंगे जव तक यह आश्वासन न मिल जाय कि एक महान, स्वतत्र, शक्तिशाली और स्वाधीन राष्ट्र के प्रतिनिधि के रूप मे उनका स्वागत किया जायेगा। युद्ध के आधार पर देश को तैयार करने के प्रस्ताव का रिपब्लिकनो ने तीव्र विरोध किया, किन्तु फ्रास से प्राप्त खरीतों से एडम्स का मामला ठोस सिद्ध हो जाने पर सारा विरोध हवा हो गया और कांग्रेस ने शीघ्र ही आवश्यक विधेयक पारित किये। फ्रास और उसके साम्राज्य के साथ व्यापार स्थगित कर दिया गया और समुद्र मे एक सीमित किन्तु अघो-

थी और हेलिफाक्स भेज दी गयी थी, उन्हे अंग्रेजो ने ऋण के रूप मे वापस किया और यह ऋण अन्त मे उपहार के रूप मे परिणत हो गया।

यह विश्वास करने का कारण था कि हेमिल्टन नयी दुनिया मे फ्रासीसी और स्पेनिश उपनिवेशो के विरुद्ध व्यापक आग्ल-अमरीकी आक्रमण की योजना बना रहे थे और मिरण्डा के द्वारा स्पेनिश उपनिवेशो से विद्रोह का आवाहन कर रहे थे, क्योकि स्पेन फिर फ्रास का मित्र बन गया था, दूसरी ओर, वरमोण्ट के पृथकतावादियो से मिल कर फ्रासीसी कनाडा पर आक्रमण करने की योजना बना रहे थे और अमरीका मे नये उत्तरी और पश्चिमी उपनिवेश के लिए कुचक्र रच रहे थे।

स्वय जेफर्सन पर इस अभियान का कोई प्रभाव नही पडा, यद्यपि सामान्य देशवासी इस तनाव से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। १७९७ की ग्रीष्म ऋतु मे उन्होंने सभी प्रकार की तैयारियो का विरोध किया और विचार व्यक्त किया कि केवल फ्रासीसी सफलताओ ओर ब्रिटिश आपदाओ के समाचारो ने देश को युद्ध मे झोकने से प्रशासन को रोका। उन्होने सोचा कि अमरीकी महाद्वीप मे युद्ध के प्रसार के परिणामस्वरूप लुइसियाना मे फ्रासीसियो का पुन. प्रभुत्व स्थापित हो जायगा। तदनन्तर, यूरोपीय युद्धो के पश्चात् लुइसियाना भूमि-अनुदानो का उपयोग प्रजातत्र की सेनाओ का खर्च चुकता करने मे किया जायेगा और पश्चिम अमरीका का एक नया बलशाली और विशाल जनसख्या वाला पड़ोसी राष्ट्र बन जायेगा।

यद्यपि जेफर्सन ने खुले आम दलगत भावना की उग्रता पर तथा इस बात पर खेद प्रकट किया कि उनके अनुमत मे पहले पहल यह उग्रता उनके व्यक्तिगत सम्बन्धो को प्रभावित कर रही है, तथापि उनके पत्रो से प्रकट होता है कि वे पार्टियो की शक्ति के बारे मे बराबर चिन्तित रहते थे। उनकी सारी आशाए पार्टी द्वारा समस्त शासन-तत्र पर अधिकार करने के लिए पूर्णतया केन्द्रित थी और विशेष-कर दक्षिण के बाहर उसकी प्रगति के प्रत्येक लक्षण की ओर वे उत्सुकतापूर्वक देख रहे थे। जबकि उत्तेजना चरमसीमा पर पहुँच चुकी थी, एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण की उपेक्षा नही की जा सकती थी। समय रहते जेफर्सन ने सान डोमिनगो मे निग्रो-विद्रोह के महत्व की ओर बार-बार ध्यान आकृष्ट किया और यह विचार व्यक्त किया कि अमरीका मे गुलामो की मुक्ति के लिए एक ऐसा तर्क है, जिसका कोई उत्तर नही है। यदि निग्रो अन्य वेस्ट इडियन द्वीपो मे विजयी हुए तो इनका उपयोग मुख्य भूमि के मुक्त दासो के बसाने के लिए

किया जा सकता है। इस बीच एडम्स द्वारा निग्रो विद्रोहियो का समर्थन और फ्रासीसी उपनिवेशो के व्यापारिक निषेध से सान डोमिनगो को मुक्त रखना दक्षिणी राज्यो के लिए खतरनाक था।

राजनीतिक समस्याओ मे युद्ध और शान्ति के प्रश्न का सबसे अधिक महत्व था। १७९८ की वसन्त ऋतु मे, जब तक कि इगलैण्ड को आयोजित आक्रमण का परिणाम प्रकट नही हो गया, जेफर्सन ने फ्रास के साथ घातक सधि-भग मे विलम्ब करने का प्रयास किया। उनका यह मत था कि इस प्रयास की सफलता के परिणामस्वरूप अन्त मे युद्ध का खतरा समाप्त हो सकेगा।

उन्होने लिखा, "इगलैण्ड की पराधीनता वास्तव मे एक साधारण विपत्ति होगी, किन्तु सौभाग्य से यह असम्भव है। यदि इसका अन्त केवल उसके प्रजातत्रीकरण मे हो तो मैं नही समझता कि हमारे देश का कोई सच्चा प्रजातत्रवादी किस सिद्धान्त के आधार पर उस पर खेद प्रकट करेगा, चाहे वह यह समझे कि यह मानव-समाज के अन्य भागो के लिए एक विशुद्धतर शासन का वरदान है अथवा यह समझे कि उस आदर्श के प्रभाव से स्वय हमारे देश की स्वतत्रता को बल मिलेगा। सचमुच, मैं यह नही चाहता कि किसी राष्ट्र पर कोई शासन-प्रणाली लादी जाय, किन्तु यदि ऐसा होता ही है तो एक अधिक स्वतत्र प्रणाली पर मुझे प्रसन्नता होगी।"

अप्रैल, १७९८ के अन्त मे उन्होने लिखा कि युद्ध की कार्रवाइयो मे विलम्ब महत्वपूर्ण है ताकि गर्मी का मौसम आ जाये।

"जनता स्वय अनुभव करे और यह देखे कि फ्रास की कार्रवाइयो का इगलैण्ड मे तथा यहाँ भी क्या प्रभाव पडता है, इसके लिए समय दिया जाना चाहिए। इसके विपरीत, यदि युद्ध को जबर्दस्ती लादा ही जाता है और अनुदारवादियो के स्वार्थों का प्रभुत्व कायम रहता है तो यह उन्ही पर छोड देना चाहिए, क्योकि वे ही युद्ध मे कूदकर उसका सचालन करने के लिए उत्सुक हैं। इसलिए, दो या तीन सप्ताहो की वर्तमान अवधि १७७५ के बाद सबसे महत्वपूर्ण अवधि है, और इसीमे यह निर्णय होगा कि उस सघर्ष से स्थापित सिद्धात कायम रहेगे अथवा उन्ही सिद्धातो को पुन स्थान दिया जायेगा, जिन्हे वे नष्ट कर चुके हैं।"

जब प्रशासन ने फ्रास के साथ अपने दूतो के पत्र-व्यवहार को प्रकाशित किया तो जेफर्सन ने महसूस किया कि जनता पर और विशेषकर काग्रेस पर इसका प्रबल प्रभाव पडेगा। टैलीरेण्ड के दूतो के नामो के बजाय यह पत्रव्यवहार 'एक्स वाइ जेड-पत्रव्यवहार' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जैसा कि उन्होने अर्थ

लगाया, पत्रव्यवहार से युद्ध के लिए कोई नया उद्देश्य नही मिल सका। यह सारा मामला उनमे से एक दूत मार्शल का गढा हुआ था। जेफर्सन ने इस बात पर जोर दिया कि वास्तव मे फ्रासीसी इतना ही चाहते थे कि गत अप्रैल मे काग्रेस के नाम कड शब्दो मे दिये गये एडम्स के सन्देश मे उनके विरुद्ध जो शत्रुतापूर्ण बाते कही गयी थी, उन्हे सार्वजनिक रूप से वापस लिया जाय। अन्य मॉगे आपत्तिजनक बातो को वापस न लिये जाने पर की गयी थी। घूसखोरी की मॉगो मे टैलीरेण्ड का भी हाथ था, इसका कोई प्रमाण नही था। जेफर्सन ने स्वीकार किया कि उस समय सर्वत्र रोप उबल रहा था और जिसने अपने को इस 'सक्रामक रोग' से दूर रखने का प्रयास किया, वह हर समाज मे घृणा की दृष्टि से देखा गया। इसीलिए शान्ति-दल ने आन्तरिक तैयारी की कूटनीति अपनायी और बाहरी कार्रवाई की ऐसी कोई नीति नही अपनायी, जिससे खुले युद्ध को प्रोत्साहन मिलता। इस बीच सैनिक प्रस्तावो मे भारी कर की जो व्यवस्था की गयी थी, उससे युद्ध की सरगरमी कुछ शान्त होने की अपेक्षा की गयी।

जेफर्सन ने अमरीकियो के प्रति नरम नीति अपनाने के उद्देश्य से फ्रासीसियो को प्रभावित करने का निष्फल प्रयास किया और 'क्वेकर' समुदाय के शान्ति-वादी तथा दूसरो के मामलो मे मध्यस्थता करनेवाले जार्ज लोगान को परिचय-पत्र के साथ पेरिस भेजने की भूल की। जार्ज लोगान फ्रास की प्रजातन्त्रवादी सरकार के शान्तिपूर्ण इरादो के अश्वासनो के साथ वापस आये। इस व्यवहार के कारण काग्रेस ने एक विशेष कानून बनाकर इस प्रकार के अनाधिकृत मिशनो पर प्रतिबन्ध लगा दिया। जेफर्सन ने विक्टर डू पोण्ट के साथ भी बातचीत की, जिससे एक राजदूत के रूप मे मिलने से एडम्स ने इन्कार कर दिया।

किन्तु ऐसे समय मे, जबकि घटनाचक्र जेफर्सन जौर उनकी पार्टी के विरुद्ध प्रतीत हो रहा था, एडम्स ने राजनीतिक धारा को पलटने के लिए उन्हे अप्रत्याशित अवसर प्रदान किया। प्रशासन ने युद्ध और ऐसी स्थिति मे फ्रास-समर्थक प्रचार के आन्तरिक प्रभावो से भयभीत होकर काग्रेस से कुछ ऐसे कानून पास कराये, जिनसे लोकतान्त्रिक स्वाधीनताओ मे काफी हस्तक्षेप होने लगा। जेफर्सन के विचार से ये कानून उन कानूनो से भी कठोर थे, जिन्हे ग्रेट ब्रिटेन मे पिट ने बनाना आवश्यक समझा था।

१७९८ के जून और जुलाई मे इस प्रकार के चार कानून पारित हुए। प्रथम कानून द्वारा नागरिकता के लिए आवश्यक निवास की अवधि बढाकर

पाँच वर्ष से १४ वर्ष कर दी गयी। द्वितीय कानून ने राष्ट्रपति को किसी भी विदेशी को, जिसे वे खतरनाक समझे, निष्कासित करने का अधिकार दिया। तृतीय कानून द्वारा किसी भी ऐसे राज्य के निवासियो को निष्कासित करने अथवा उन पर आवश्यक प्रतिबन्ध लगाने का उन्हे अधिकार दिया गया, जिसके साथ अमरीका युद्धरत होगा। चौथे कानून के अन्तर्गत अमरीकी नागरिको पर कुछ निश्चित अभिव्यक्तियो के लिए राजद्रोह का मुकदमा चलाया जा सकता था।

सघीय सरकार ने सघीय न्यायालय से राजद्रोह कानून के अन्तर्गत बहुतो को सजाएँ दिलायी और मुख्य न्यायाधीश ओलिवर एल्सवर्थ ने फ्रासीसी प्रणाली के समर्थको की, जिनमे उप-राष्ट्रपति और काग्रेस के अल्पसख्यक भी थे, तीव्र भर्त्सना की और उन्हे नास्तिकता तथा अराजकता, रक्तपात और लूट का उपदेशक घोषित किया।

विदेशियो के निष्कासन और राजद्रोह कानूनो की देश मे और विशेषकर रिपब्लिकन दक्षिण मे तत्काल प्रतिक्रिया हुई। उसका कारण इतना ही नही था कि उनमे अनेक आन्तरिक दोष थे, बल्कि इनके द्वारा सघीय सरकार को ऐसे अधिकार प्रदान किये गये, जिन्हे स्वय राज्य ने अपने लिए हानिकारक समझा, क्योकि सघीय सविधान की पुष्टि के बाद प्राय पहले-पहल सघ के सम्बन्ध मे राज्यो के अधिकार और सत्ता का प्रश्न उठ खडा हुआ। जेफर्सन के फ्रास-समर्थक होने की बात काफी फैल चुकी थी और उनके लिए बाधक सिद्ध हो रही थी। उन्होंने घरेलू राजनीति की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट करने का यह मौका हाथ से नही जाने दिया।

उन्होने बैक-विधेयक के समय ही यह आशका व्यक्त की थी कि सघीय सरकार को नये अधिकार प्रदान करने के उद्देश्य से ही सविधान को और व्यापक बनाया जा रहा है और १७९६ मे, जब मेडिसन ने सुझाव दिया कि काग्रेस को डाक-विभाग की बचत को डाक-सडको के निर्माण मे लगाने की अनुमति देनी चाहिए, तो जेफर्सन ने पुन वही आशका व्यक्त की। १७९३ से ही सघीय न्यायाधीश इस सिद्धान्त के आधार पर राजद्रोह के लिए दण्ड दे रहे थे कि उन्हे अमरीका के सामान्य कानून से अधिकार प्राप्त हुए है, किन्तु सघवादी दल के बाहर के लोग इसे मानने को बिल्कुल तैयार नही थे। अब न्यायाधीशो को वैधानिक अधिकार प्राप्त था, किन्तु इतना होने पर भी उन्होने राजद्रोह के मामलो मे काग्रेस के विचारो से भी आगे जाने के अपने अधिकार पर बल दिया और सविधान तथा कानूनो के निर्माण मे अपने को अन्तिम अधिकारी माना।

यह बताना कठिन है कि जेफर्सन के सन्देह कितने गम्भीर थे, जब उन्होने कहा कि विदेशी निष्कासन और राजद्रोह कानून यह परीक्षा करने की कसौटी मात्र है कि अमरीकी विचारधारा इस दृढ उल्लघन को कहाँ तक सहन कर सकती है और यदि उन्हे सफलतापूर्वक लागू कर दिया गया तो राष्ट्रपति-पद का अधिकारी जीवनपर्यंत के लिए हो जायेगा और अन्त मे यह पद वश-परम्परागत बन जायेगा। उन्होने कहा, "कम से कम 'ओलिवरवादियो' का यह उद्देश्य हो सकता है, जब कि धर्मवादी ओर राजतत्रवादी (जो सम्भवत सर्वाधिक प्रबल हैं) अपने बादशाह जार्ज तृतीय को पुन सिहासनारूढ कराने का राजनीतिक खेल खेल सकते है।" गम्भीर हो या नही, इस प्रकार के विचार के प्रचारात्मक मूल्य से कभी इन्कार नही किया जा सकता था।

जन-भावना को उभाडने मे जेफर्सन को उतनी कठिनाई नही हुई जितनी उसे नियन्त्रित करने मे। दक्षिण मे जान टेलर जैसे उग्रवादी भी थे, जिन्होने समझ रखा था कि प्रभुताशाली सघवादी पूर्व से उद्धार होना असम्भव है और उसका एकमात्र उपचार दक्षिणी राज्यो का अलग हो जाना ही है, जिसका आरम्भ वर्जीनिया और उत्तरी कारोलिना से होना चाहिए। जेफर्सन ने सकेत किया कि यदि प्रत्येक अल्पसख्यक वर्ग उपचार के रूप मे पृथकता के नियम को ही अपनाये तो कोई सघ कायम नही रह सकता। अल्पसख्यको का प्रयास बहु-सख्यक बन जाने का होना चाहिए और उप-राष्ट्रपति ने यही प्रयास आरम्भ कर दिया।

राज्यो के अधिकार सम्बन्धी मच पर रिपब्लिकन पार्टी को भी लाने के लिए एक सिद्धान्त-वक्तव्य की आवश्यकता थी और जेफर्सन ने केण्टकी-विधान-सभा के लिए तथा मेडिसन ने वर्जीनिया-विधानसभा के लिए प्रस्ताव तैयार किये, जिनमे उक्त वक्तव्य को स्थान दिया गया। १७९८ के नवम्बर और दिसम्बर मे ये प्रस्ताव पारित हुए।

केण्टकी के प्रस्ताव मे इस बात का खण्डन किया गया था कि जिन कानूनो पर आपत्ति की गयी है, वे सावधानिक है और घोषणा की गयी कि 'बहुमत तथा काग्रेस की आकाक्षाओ एव अधिकारो के विरुद्ध वे सविधान की मर्यादा को भग करते हैं, किन्तु उनका सबसे महत्वपूर्ण अश था सविधान का सिद्धान्त-सम्बन्धी वक्तव्य, जो बिल्कुल नयी चीज थी। प्रस्तावो मे, अपेक्षाकृत सरल शब्दो मे, इस भावना को व्यक्त किया गया कि सघीय सरकार, एक ही सत्ता को अपने कुछ अधिकारो को सौंप देने के उद्देश्य से कतिपय राज्यो के बीच हुए

समझौते का प्रतिफल हैं। इस बात पर बल दिया गया कि इन अधिकारो की मर्यादा के बारे मे सघीय सरकार को कोई अधिकार नही है, यही एक नयी बात थी, किन्तु जैसे पार्टियो के बीच समझौते के सभी मामलो मे कोई एक निर्णायक नही होता, उसी प्रकार, "प्रत्येक पार्टी को अपने लिए निर्णय करने और सुधार के साधन एव कार्रवाई के रूप मे कानून का उल्लघन करने का भी समान अधिकार है।" सम्प्रति एकमात्र निश्चित सुझाव यही था कि कानून को रद्द करने के लिए काग्रेस से आवेदन करने मे अन्य राज्यो को भी केण्टकी का साथ देना चाहिए।

अन्य राज्यो से जो उत्तर प्राप्त हुए, उनसे यह झलक मिलती है कि भौगोलिक सीमाए भी पार्टियो के प्रभाव से सकुचित रही। पोटामाक के उत्तर मे स्थित सभी राज्यो की विधानसभाओ ने प्रस्तावो को अस्वीकार कर दिया और अधिकाश राज्यों ने इस मत की पुष्टि की कि कानून की वैधानिकता के बारे मे निर्णय करने का अधिकार सघीय न्यायालय को सौंप दिया गया है। रिपब्लिकन राज्यो ने विरोधो का समर्थन किया और न्यायालयो के इस विशेष दावे का खण्डन किया कि काग्रेस के कानूनो की वैधता पर निर्णय करने का उन्हीको अधिकार है और वे इस विचार को सर्वथा स्वीकार नही कर सकते कि उन्हे अवैध घोषित करने का राज्य-विधानसभाओ को अधिकार नही है।

सैद्धान्तिक प्रचार का यह मच इतना अच्छा था कि इसका आसानी से परित्याग नही किया जा सकता था। मेडिसन और जेफर्सन ने अपनी पार्टी के सावैधानिक सिद्धान्तो को मूर्त रूप देने का प्रयास जारी रखा। अन्य राज्यो से जो उत्तर प्राप्त हुए थे, उन पर रिपोर्ट के रूप मे इसे मेडिसन ने वर्जीनिया विधानसभा मे प्रस्तुत किया और स्वय जेफर्सन ने फिलाडेलफिया मे इसके व्यापक प्रचार का प्रयास किया। केण्टकी विधानसभा ने नवम्बर, १७९९ मे एक दूसरा प्रस्ताव पारित किया। इसमे सघ से अलग होने के केण्टकी के इरादे का खडन किया गया, किन्तु घोषणा की गयी कि काग्रेस को अपने अधिकारो की व्याख्या का अधिकार देना किसी तरह की निरकुशता से कम नही है। साहसपूर्ण भाषा मे इस प्रस्ताव में, जो स्वय रचयिताओ के इरादे से भी सम्भवत. आगे बढ गया था, घोषणा की गयी—

"जिन राज्यो ने मिलकर इस सविधान को बनाया, उन्हें सार्वभौमिक और स्वतन्त्र राज्य होने के नाते, कानून-उल्लघन के निर्णय का असदिग्ध अधिकार है, और उस सविधान के नाम पर किये गये सभी अनाधिकृत कार्यों को

उन सार्वभौमिक राज्यो द्वारा रद्द कर देना उचित ही है।" फिर भी राज्यो की घोषणाओ अथवा कार्यो से इस वात का आभास नही मिला कि प्रतिवाद से अधिक और कुछ करने का इरादा था। वाद की घटनाओ ने, जिनसे अवैधता के सिद्धान्तो को प्रमुखता प्राप्त हुई, केण्टकी-प्रस्ताव को ऐसा कल्याणकारी रूप प्रदान किया, जिसे समकालीन लोग समझ नही सके। उनके सिद्धान्तो की नवीनता यह थी कि सघवादियो के सिद्धान्तो को स्थान ग्रहण करने मे काफी समय लग गया। जेफर्सन के जीवन मे अनेक अवसर आये जबकि उन्होंने अवसर से भी अधिक महत्वपूर्ण सामग्री प्रदान की और पार्टी के इस घोषणा-पत्र को अमरीकी सावैधानिक इतिहास के अद्भुत प्रमाणपत्र मे स्थान दिया गया।

विदेशी और राजद्रोह कानूनो की अपेक्षा घरेलू समस्या का अधिक स्वागत किया गया। एडम्स ने युद्ध के तट पर पहुँचने के वाद अपने सहयोगियो के विना कार्य करने का अचानक निर्णय किया और शान्ति प्राप्त करने के लिए एक दूसरा प्रयास करने का निश्चय किया। उन्हे भय था कि युद्ध के फलस्वरूप अमरीका ग्रेट ब्रिटेन के अत्यधिक निकट आ जायेगा। साथ ही साथ वे इस खतरे से भी सजग थे कि फ्रास कही किसी प्रकार फ्लोरिडा और लुइसियाना को अपनी ओर न मिला ले और इसका पश्चिमी प्रवासियो की राजभक्ति पर कही बुरा प्रभाव न पडे। दूसरी ओर, फ्रासीसियो को भी डर था कि युद्ध होने पर कही अमरीकी लुइसियाना पर अधिकार करके नये विश्व-साम्राज्य के उनके स्वप्न का सर्वदा के लिए अन्त न कर दे।

फरवरी, १७९९ मे, एडम्स ने विलियम वान्स मुरे को फ्रास मे राजदूत मनोनीत किया। उनकी इस कार्रवाई का उनके मन्त्रिमडल के सदस्यो ने तीव्र विरोध किया, जिसके फलस्वरूप दूसरे वर्ष के आरम्भ मे उन्हे अपने विदेश-मत्री और युद्ध-मत्री को खो देना पडा और काग्रेस मे सघवादियो के सहयोग से हाथ धोना पडा। विरोधी अधिक से अधिक इतना कर सके कि कमीशन पर मुरे के साथ दो अन्य व्यक्तियो को नियुक्त करवा पाये। मार्च, १८०० मे जब कमीशन पहुँचा तव तक "अठारहवाँ ब्रुमेयर" आकर चला गया था (फ्रासीसी क्रान्तिकारी कलेण्डर का दूसरा महीना, जो २० अक्तूबर से २० नवम्बर तक चलता है, ब्रुमेयर कहलाता है।) और फ्रास की राजसत्ता नेपोलियन बोनापार्ट के हाथ मे आ चुकी थी। ३० सितम्बर, १८०० को फ्रास के साथ एक सन्धि पर हस्ताक्षर हुए। 'अत्यत प्रिय राष्ट्र' के आधार पर व्यापारिक सम्वन्ध पुन स्थापित किये गये और प्रतिषिद्ध वस्तुओ तथा प्रतिवन्ध सम्वन्धी अपने पुराने

सिद्धान्त की दोनो देशो पुन पुष्टि की, यद्यपि अमरीका पर ग्रेट ब्रिटेन के विरुद्ध उसके सशस्त्र सरक्षण का दायित्व नही डाला गया। अब अमरीका के लिए युद्ध का कोई खतरा नही रह गया और बोनापार्ट ने देखने मे अपने पूर्वाधिकारियो की नीतियो को बिलकुल उलट दिया, किन्तु फ्रासीसी नीति मे इस नये परिवर्तन का भी कारण था। सन्धि पर हस्ताक्षर के बाद १ अक्तूबर, १८०० को फ्रास और स्पेन ने सान आइडेल फोन्सो की गुप्त सन्धि की, जिसके परिणामस्वरूप स्पेन ने लुइसियाना को फ्रास के लिए छोड दिया। इस प्रकार १७९३ मे अमरीका मे जेनेट मिशन के समय से चिरवाछित फ्रासीसी कूटनीति का उद्देश्य पूरा हुआ।

वास्तव मे, अमरीका मे यह भेद खुला नही था, किन्तु सघवादियो को इस सन्धि की आलोचना के लिए आधार पाने मे कठिनाई नही हुई, क्योकि इस सन्धि से न तो प्राचीन सन्धियो की वैधता के प्रश्न का समाधान हुआ और न अपने समुद्री व्यापार की हानि के लिए क्षतिपूर्ति के अमरीकी दावो को ही पूरा किया गया। दिसम्बर, १८०० मे सन्धि के प्रथम समाचार की जेफर्सन पर भी अनुकूल प्रतिक्रिया नही हुई, क्योकि इससे अमरीका ब्रिटेन के साथ उलझ सकता था। काफी विचार-विमर्श और जानकारी के बाद सिनेट ने दिसम्बर, १८०१ मे सन्धि की अन्तिम रूप से पुष्टि कर दी। इससे, सचमुच समुद्र मे ब्रिटेन के साथ विवाद खडा हो सकता था, किन्तु सम्प्रति इसकी कोई आशा नही थी, क्योकि दीर्घकालीन आग्ल-फ्रान्सीसी सघर्ष का अन्त निकट प्रतीत हो रहा था। मार्च १८०१ मे शान्ति के लिए वार्ता आरम्भ हो गयी थी और अक्तूबर मे उसकी प्रारम्भिक शर्तो पर हस्ताक्षर हो गये। २७ मार्च, १८०२ को एमीन्स मे एक निश्चित सन्धि पर हस्ताक्षर हो गये, जिसमे स्पेन और हालैण्ड भी सम्मिलित थे।

उप-राष्ट्रपति-पद की अपनी अन्तिम अवधि मे जेफर्सन ने सघवादियो की फूट से लाभ उठाने का प्रयास किया और एडम्स के शान्ति-प्रस्ताव से अन्त मे यह फूट खुले आम सामने आ गयी थी। पार्टी मे उनके विरोधियो ने उनको हटा देने का जो मनसूबा कर रखा था, उस पर १४ दिसम्बर, १७९९ को वाशिगटन की मृत्यु से तुषार हो गया। फूट कायम रही और १७९८ के चुनावो मे जबकि युद्ध-सकट चरमसीमा पर पहुँच चुका था, फेडरलिस्टो की सफलताओ के बावजूद, एडम्स का दुबारा चुना जाना सन्दिग्ध ही था। फिर भी, जेफर्सन ने अवसर पर कुछ भी न छोडने का निर्णय किया। इसका अर्थ था सभी राज्यो द्वारा रिपब्लिकनो के भाग्य की ओर अधिक ध्यान देना, क्योकि राज्यो के विधान-

मण्डल ही राष्ट्रपति के निर्वाचको का चुनाव करते थे। एक वार फिर, दलीय शक्तियो को सगठित करने का कार्य जोरो से शुरू हो गया और जेफर्सन ने अपने को सदा पृष्ठभूमि मे रखने का प्रयास किया। अब चूँकि फ्रान्स मे पासा पलट चुका था, इसलिए जेफर्सन को भय था कि फ्रास की ओर सदा आशाभरी निगाहो से देखते रहने की आदत कही स्वदेश मे प्रजातत्रवाद के लिए हितकर होने के बजाय अहितकर न हो जाय। बोनापार्ट के आकस्मिक विद्रोह और उनकी आजीवन सत्ता की सम्भावना पर आलोचना करते हुए जेफर्सन ने इस बात पर बल दिया कि फ्रसीसियो मे बहुमत-शासन के अनुभव और क्षमता का अभाव है, जबकि अमरीकियो मे ऐसा नही है।

सन् १८०० का चुनाव अनेक अर्थो मे १७९६ के चुनाव से मिलता-जुलता था। जेफर्सन की तीव्र भर्त्सना की गयी और पूर्वी राज्यो मे पादरियो ने जेफर्सन के विरुद्ध विशेष रूप से प्रचार आरम्भ किया और उन्हे नास्तिक घोषित कर दिया। स्वय जेफर्सन को अन्य कुचक्रो का सन्देह था। उनके विचार से, राजद्रोह-कानून ने अधिकार-विधेयक की प्रथम धारा की शक्ति को ही नष्ट कर दिया, जिसमे भाषण और प्रेस की स्वतत्रता का आश्वासन दिया गया था। उन्होने लिखा कि अब पादरी को भी आशा हो गयी कि धार्मिक स्वतत्रता के आश्वासन के मामले मे धोखा दिया जा सकता है। पादरियो ने, विशेषकर 'एपिस्कोपलियन' और 'काग्रीगेशनल' पादरियो ने आशा की कि अमरीका मे चर्च की स्थापना की जायगी। "उनका विश्वास है कि मुझे जो कुछ भी अधिकार दिया जायेगा, उसका उपयोग उनकी योजनाओ के विरोध मे किया जायेगा और उनका विश्वास ठीक ही है, क्योकि मैंने मानव समाज मे किसी भी प्रकार के अत्याचार का सर्वदा विरोध करने की ईश्वर की शपथ ली है।"

एडम्स की उम्मीदवारी का हेमिल्टन ने खुलकर विरोध किया। इससे रिपब्लिकन-विजय की आशा बलवती हो गयी। उस समय तक पार्टियो का विभाजन काफी स्पष्ट हो चुका था। जेफर्सन और बर मे से प्रत्येक को ७३ मत और एडम्स को ६५ तथा सी सी पिंकने को ६४ मत मिले। परिणाम से यह सिद्ध हो गया कि 'फेडरलिस्ट' अब एक राष्ट्रीय पार्टी के रूप मे नही रह गये है, बल्कि वे उत्तर-पूर्व के राज्यो की पार्टी रह गये हैं और बाद के चुनावो ने भी इसी बात की पुष्टि की। अब यह देश बहुमत की भावना की दृष्टि से स्पष्टत रिपब्लिकन बन गया था, किन्तु उसने राष्ट्रपति का चुनाव नही किया। जेफर्सन और बर के बीच चुनाव प्रतिनिधि-सभा पर निर्भर था, जहाँ प्रत्येक

नेताओ ने उनके विरुद्ध कुचक्र रचकर के अपने अनुयायियो को स्थायी रूप से अपने से अलग कर दिया है। प्रजातन्त्रवाद एक राष्ट्रीय सिद्धात बन गया था। जेफर्सन के विचार से चुनाव नये प्रजातन्त्र के इतिहास मे एक नये मोड का द्योतक था। उसके सविधान को एक अभिजातीय अथवा राजतन्त्री ढाँचे मे मोडने का प्रयास सर्वदा के लिए विफल हो गया था। जिन नेताओ ने "वैज्ञानिक प्रगतियो को खतरनाक परिवर्तन बताया था, दर्शन और प्रजातन्त्र की निन्दा करने का प्रयास किया और हमे यह समझाने का प्रयत्न किया कि दण्ड के बल पर ही मानव पर शासन किया जा सकता है आदि," उनके लिए अब स्थान नही रह गया था। प्रगति और उन्नति का युग आरम्भ हो गया था। अब अमरीका फिर शेप विश्व को क्राति का सन्देश पहुँचाने की स्थिति मे पहुँच गया। अपने उद्घाटन के दो दिनो के बाद जेफर्सन ने वयोवृद्ध क्रातिकारी राजनीतिज्ञ जान डिकिन्सन को लिखा—

"यहाँ स्थापित एक न्यायोचित और सुदृढ प्रजातान्त्रिक सरकार एक स्थायी स्मारक होगी और अन्य देशो की जनता के लिए अनुकरणीय आदर्श होगी और आप ही की तरह मुझे भी आशा और विश्वास है कि हमारे आदर्श को देखकर वे समझेगे कि एक स्वतन्त्र सरकार अन्य सभी सरकारो से शक्तिशाली होती है और हमारी क्रान्ति और उसके परिणामो से मानव-समाज मे जो जिज्ञासा उत्पन्न हुई है, उससे विश्व के अधिकाश भागो मे मानव की स्थिति मे सुधार के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।"

एक आधुनिक इतिहासकार स इ मोरिसन ने उक्त अभिव्यक्तियो की इस प्रकार आलोचना की, "थोडी सी सरलता को न्यूनाधिक क्राति नही समझा जा सकता।" इस आलोचना की विजित अथवा विजेता, किसी ने भी सराहना नही की। विजेताओ को तो वैसा ही अनुभव हुआ, जैसा कि मेस्साचुसेट्स के एक डाक्टर ने १ जनवरी, १८०१ को अपनी डायरी मे लिखा था—

"१९वी शताब्दि का आरम्भ दक्षिण पश्चिम मे सुप्रभात के समीर के साथ हुआ। जेफर्सन के प्रशासन के अन्तर्गत राजनीतिक भविष्य उज्ज्वल है और फ्रास के साथ पुन सुसम्बन्ध स्थापित होने की सम्भावना है। मानव के अधिकारो के प्रबल प्रचार के साथ, मुद्रणालय के द्वारा, जो आत्म-सुधार और हमारे सभी प्रकार के बौद्धिक आनन्दो का साधन है, विश्व में पुरोहिती सत्ता, निरकुशता, अन्धविश्वास और अत्याचार का अन्त होगा। मुद्रणालय की महत्ता से मूर्ख दास तो अपरिचित हैं ही, वे लोग भा उसे समझने मे असमर्थ हैं, जो ईश्वरीय प्रतिमा को अर्थात् धर्मवादिता को परिसीमित करने से घृणा करते है।"

अध्याय–८

राष्ट्रपति : लुइसियाना का खरीद

(१८०१—१८०५)

उत्कर्षशील अमरीकी लोकतत्र के प्रतिनिधि के रूप मे जेफर्सन के किसी अध्ययन मे उनके राष्ट्रपति काल का इतिहास विशेष महत्व रखता है। चुनाव-अभियान के समय उभय पक्ष ने जो राजनीतिक सरगर्मी दिखायी उसको व्यावहारिक रूप देने मे कितनी सफलता मिल पायी ? यह तो स्वीकार ही करना पडेगा कि इस दिशा मे बहुत कम सफलता मिली। यद्यपि एक महान रचनात्मक कार्य पडा रह गया था और वह था लुइसियाना को हस्तगत कर अमरीका मे मिलाने का। जेफर्सन का यह वास्तविक कार्य उनके राष्ट्रपति होने पर पूरा हुआ। उनके राष्ट्रपति-काल का इतिहास कूटनीतिज्ञता का इतिहास रहा है और इसी अवधि मे अमरीकी लोकतत्र तथा सर्वोच्च न्यायालय के बीच दीर्घकालिक सघर्ष का सूत्रपात हुआ।

यह समझना कठिन नही है कि ऐसा क्यो हुआ। जेफर्सन के सावैधानिक सिद्धान्तो का मूल तत्व यह था कि सघीय सरकार का राज्यो के अन्तरिक मामलो से यथासम्भव कम सम्बन्ध होना चाहिए। अगस्त, १८०० मे उन्होने लिखा, "हमारे सविधान का यह सच्चा सिद्धान्त निश्चय ही अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्ण और सर्वोत्तम है कि राज्य अपने हर आन्तरिक मामले मे स्वतत्र है और विदेशी राष्ट्रो से सम्बन्धित प्रत्येक मामले मे सयुक्त है। सामान्य शासन विदेशी मामलो तक सीमित हो और व्यापार के अतिरिक्त हमे अन्य राष्ट्रो के सभी मामलो से अपने को अलग कर लेना चाहिए। व्यापार को व्यापारियो पर ही छोड देना चाहिए, क्योकि स्वतत्र रह कर ये अपेक्षाकृत अच्छी व्यवस्था कर सकते है। हमारा सामान्य शासन एक बहुत ही सरल और कम खर्चीली सस्था का रूप धारण कर सकता है, जहाँ थोडे से छोटे-मोटे कार्य होगे, जिन्हे इने-गिने कर्मचारी पूरा कर दिया करेगे। इस दृष्टिकोण को रखने वाले राजनीतिज्ञ के मतानुसार अमरीकी राष्ट्रपति की स्थिति इतनी सकुचित हो जायेगी कि वह अपने देश के नागरिको को बहुत कम प्रभावित कर सकेगा—केवल कुछ नकारात्मक कार्यवाहियो का अधिकार इस दिशा मे उसे प्राप्त होगा।"

४ मार्च, १८०१ को उद्घाटन-समारोह मे नये प्रजातान्त्रिक शासन की

सरलता पर विशेष बल दिया गया। अमरीका की नयी राजधानी वाशिंगटन मे, जहाँ अभी गत ग्रीष्मकाल मे सरकारी कार्यालय स्थानान्तरित हुए थे, ठाट-बाट और तडक-भडक के लिए कौन कहे सार्वजनिक जीवन की साधारण सुविधाओ के लिए भी व्यवस्था नही की जा सकी। राजधानी और सरकारी भवनो का जो नक्शा तैयार किया गया था, उसका कार्य भी मुश्किल से आरभ हुआ और साठ वर्ष बाद लिकन के उद्घाटन-भाषण के समय भी वह अधूरा ही पडा रहा।

जेफर्सन-काल के अमरीका के भव्य पुनर्निर्माण के सम्बन्ध मे हेनरी एडम्स ने जो कुछ लिखा है, उसमे १८०० मे सघीय राजधानी सम्बन्धी वर्णन अधिक उल्लेखनीय है। उन्होने लिखा है—"अर्ध-निर्मित ह्वाइट हाउस एक खुले मैदान मे खडा था और पोटोमाक से दिखाई पड रहा था, उसके पास ही बेढगे-से बने दो विभागीय भवन थे, एक ही पक्ति मे ईंटो के कुछ मकान थे और यत्रतत्र कुछ खाली निवासस्थान दिखायी पडते थे, इससे अधिक और कुछ नही था। दलदल के पार लगभग डेढ मील पर आकारहीन अधूरा 'कैपिटल' (काग्रेस का अधिवेशन-स्थल) दिखाई पड रहा था, जो मानवकङ्काल की दो भुजाओ के जैसा था और उसके इस बाह्यरूप से ऐसा लगता था कि उसको भव्य और शानदार बनाने की विशाल योजना कार्यान्वित की जायेगी। इस निर्माणकारी स्वरूप से यह सिद्ध होता था कि अमरीका अपने कार्य की व्यापकता को समझता था और उसमे अपने विश्वास के आधार पर कुछ बाजी लगाने को उत्सुक था। काग्रेस और शासन-परिषद ने जानबूझ कर सरकार को फिलाडेल्फिया से वाशिंगटन को स्थानान्तरित करने का निर्णय किया, शायद साधु और सन्त भी इतनी दृढता के साथ एकान्तवास का निर्णय नही करते। असन्तुष्ट-से लोग कैपिटल के पास ही आठ-दस बोर्डिङ्ग-हाउसो मे आश्रम के वैरागियो की भाँति रहते और वहाँ से कैपिटल तक आने-जाने के अलावा उनका कोई दूसरा काम नही था और न वहाँ मनोरजन के ही साधन थे। निजी सम्पत्ति से भी स्थिति को सुधारने के लिए कुछ भी नही किया जा सकता था, क्योकि वहाँ धन से खरीदी जाने वाली कोई चीज नही थी, वाशिंगटन मे न दूकाने थी और न बाजार, न कुशल श्रमिक थे और न व्यापार। आबादी भी नही थी। सार्वजनिक प्रयासो और सार्वजनिक धन के अत्यधिक उपयोग से ही वह स्थान सन्तोषजनक बन सकता था, किन्तु काँग्रेस ने इस राष्ट्रीय और उसके अपने निजी कार्य के लिए धन खर्च करने मे इतनी कजूसी दिखायी कि भवन-निर्माण के बहुत पहले ही

कैपिटल के गिर जाने तथा सिनेट और प्रतिनिधिसभा-भवन के खडहर हो जाने का खतरा पैदा हो गया।"

उच्च आशाओ के प्रतीक स्वरूप सीमित साधन-स्रोतो से निर्मित नये सिनेट-भवन मे थामस जेफर्सन ने अपने चचेरे भाई और विरोधी जान मार्शल के समक्ष, जिन्हे अभी ६ सप्ताह पूर्व एडम्स ने मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया था, शपथ ग्रहण की। उसके बाद उन्होने मुट्ठी भर लोगो के समक्ष बहुत धीमी आवाज मे उदघाटन-भाषण किया। समय बीत जाने पर भी जेफर्सन मे वक्तृत्व की क्षमता नही आयी। उन्होने काग्रेस को लिखित सन्देश भेजे, जिसका एक कारण तो वक्तृत्व की अक्षमता थी और दूसरा कारण था प्रजातत्री और राजतत्री प्रथा के बीच भेद प्रदर्शित करना। काग्रेस मे स्वय उपस्थित होकर भाषण करने की वाशिगटन-एडम्स की प्रथा वुडरो विल्सन के समय के पहले पुन जारी नही हो सकी।

इस प्रकार प्रथम उद्घाटन-भाषण को भाषण की अपेक्षा साहित्यिक रचना समझना अधिक उचित होगा। 'नोट्स आन वर्जीनिया' के साथ स्वतत्रता के घोषणा-पत्र और केण्टकी-प्रस्तावो मे ही जेफर्सन-सिद्धान्त की अधिकतर अभिव्यक्ति हो जाती है और जेफर्सन की सभी राजनीतिक रचनाओ की भाति उसमे कुछ तो दैनिक घटनाओ का और कुछ शासन की सामान्य समस्याओ का विवरण है। घोषणा-पत्र और केण्टकी-प्रस्तावो से यह इस बात मे भिन्न है कि उनमे सत्ताधारियो की कार्रवाइयो का विरोध किया गया था और उन कार्रवाइयो के विरोध का कारण भी बताया गया था। प्रथम उद्घाटन-भाषण एक ऐसे पुरुष का कार्य था, जिसको एक प्रबल जन-भावना ने पदासीन कर दिया था और जिसे अपने सरकारी कार्य मे अपने राजनीतिक शिष्यो का सहयोग प्राप्त था, नये विदेश-मत्री जेम्स मेडिसन थे और भावी वित्त-मत्री अल्बर्ट गलाटिन थे, जिनका जन्म जनेवा मे हुआ था और जिन पर जेफर्सन का भरोसा था कि वे हेमिल्टन की उन वित्तीय गुत्थियो को सुलझायेगे, जिन्हे वे स्वय सुलझाने मे अब तक असमर्थ रहे।

जेफर्सन का उद्देश्य प्रजातत्रवादी नेताओ के पीछे देश को सगठित करने के लिए इस अवसर से लाभ उठाना था और उन्होने अपने राजनीतिक मित्रो को भी अपने इस उद्देश्य से परिचित करा दिया था। उनके विचार से साधारण जनता ने सदा उन दृष्टिकोणो से सहानुभूति व्यक्त की, जिन्हे उन्होने विशेष रूप से प्रतिपादित किया था। "सघवादियो ने फ्रास के विरुद्ध क्षणिक क्षोभ का उप-

योग अनेक प्रजातन्त्रवादियो को अपनी ओर फोडने के लिए किया था, अब वे पुन रिपब्लिकन दल मे आ गये है और उन्हे दल मे ही बनाये रखना चाहिए।" अब सघवादी शूरमागण बिना सेना के अकेले रह गये थे।

अपने उद्घाटन-भाषण मे उन्होने यह दृढ विश्वास व्यक्त किया कि अब समस्या हल हो चुकी है, इसलिए अल्पमत गौरव और इस विश्वास के साथ इसे स्वीकार करेंगे कि बहुमत देश मे दमन के लिए अधिकारो का प्रयोग नही करेगा।

"प्रत्येक मतभेद सैद्धान्तिक मतभेद नही होता। एक ही सिद्धात को हमने विभिन्न सज्ञाए दी है। हम सभी रिपब्लिकन हैं और हम सभी फेडरलिस्ट हैं। यह सोचना गलत होगा कि प्रजातन्त्रवादी सरकार अपने को बनाये रखने मे पर्याप्त प्रबल नही होगी। कभी कभी यह कहा जाता है कि मनुष्य को स्वय उसका शासन सौपा नही जा सकता।" जेफर्सन ने शायद उप-राष्ट्रपति जान एडम्स को ध्यान मे रखते हुए यह घोषणा की, क्योकि कडे विरोधी उम्मीदवार के रूप मे पराजित हो जाने पर उनके पूर्वाधिकारी अपने उत्तराधिकारी के उद्घाटन के अवसर पर स्वय उपस्थित रहने के बजाय वाशिंगटन छोडकर चले गये थे और उनके पुत्र जान क्विन्सी एडम्स ने भी १८२८ में एण्ड्रू जैक्सन द्वारा राष्ट्रपति के चुनाव मे पराजित कर देने पर इसी प्रथा की पुनरावृत्ति की थी। "तो फिर क्या उसे दूसरो के लिए सरकार सौपी जा सकती है? अथवा मनुष्य पर शासन करने के लिए राजाओ के रूप मे हमे देवदूत मिल गये हैं? इतिहास ही इसका उत्तर देगा।"

और उसके बाद एक दूसरा अनुच्छेद आरम्भ होता है, जिसे जेफर्सनवादी सिद्धान्त का सार कहा जा सकता है।

"हम साहस और विश्वास के साथ अपने संघीय एव प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तो का अनुसरण करे और सघ तथा प्रतिनिधिमूलक सरकार के प्रति अपनी अनुरक्ति कायम रखे। प्रकृति और विशाल महासागर की कृपा से हम विश्व के चतुर्थ भाग की विनाशकारी उथलपुथल से पृथक और दूर है, हमारे विचार इतने उच्च हैं कि दूसरो का भी अपमान हम सहन नही कर सकते, हमने अपने लिए एक देश चुना है, जहाँ हजारो पीढियो के लिए पर्याप्त स्थान है, स्वय अपनी शक्तियो के उपयोग तथा अपने ही उद्योग की प्राप्ति के लिए हमारे सामने समान अधिकार की उचित भावना है और साथ ही अपने सह-नागरिको से सम्मान और विश्वास प्राप्त करने की भी भावना है और यह भावना जन्मजात नही, कर्मजात हैं, यह एक उदार धर्म की ज्योति के रूप मे उपलब्ध है, जो विभिन्न

रूपो मे व्यवहृत होता तथा अपने सभी रूपो मे ईमानदारी, सच्चाई, सयम, कृतज्ञता और मानवप्रेम का उपदेश देता है और जो एक ऐसी सर्वोच्च ईश्वरीय शक्ति मे विश्वास करता और उसकी आराधना करता है, जो अपनी सारी वृत्तियो से यह सिद्ध करती है कि उसे इहलोक मे मानव सुख मे आनन्द तथा परलोक मे और भी अधिक आनन्द प्राप्त होता है। इन वरदानो के होते हुए हमे सुखी और समृद्ध बनाने के लिए और क्या चाहिए ? फिर भी सह-नागरिको के लिए एक चीज और आवश्यक है और वह है एक कुशल और मितव्ययी सरकार, जो मनुष्यो को आपस मे एक-दूसरे को हानि पहुचाने से रोकेगी, उन्हे अपने औद्योगिक प्रयासो को नियमित करने और सुधार करने के लिए स्वतन्त्र रखेगी, और मजदूरो के मुंह मे उनकी कमाई की रोटी नही छीनेगी। सुराज का यही सार है।"

जेफर्सन के विरुद्ध उनके कतिपय समकालीनो ने उन पर ढोग का जो आरोप लगाया है, वह ईश्वर और परलोक सम्बन्धी उनकी धारणाओ के कारण ही है। जैसा कि डा० कोन ने उनकी रचनाओ के एक दूसरे अनुच्छेद का उल्लेख करते हुए कहा है, "यह निर्णय करना कठिन है कि जेफर्सन ने अमरत्व के तर्क को नैतिक व्यवहार के लिए असाधारण प्रोत्साहन के रूप मे ही स्वीकार किया है, यह एक प्रकार की बेनथामवादी 'धार्मिक स्वीकृति' है, जिसमे वास्तविक

"सभी लोगो के प्रति समान और उचित न्याय, चाहे वे किसी भी धार्मिक अथवा राजनीतिक विचारो के हो, सभी राष्ट्रो के साथ शान्ति-व्यापार और सच्ची मित्रता और किसी के साथ भी उलझनपूर्ण गठबन्धन नही (यह प्राय वाशिंगटन की शब्दावली बतायी जाती है), अपने घरेलू मामलो के लिए और प्रजातन्त्र-विरोधी प्रवृत्तियो के विरुद्ध निश्चित सरक्षण के लिए अत्यन्त सुयोग्य प्रशासन के रूप मे राज्य-सरकारो के सभी अधिकारो का समर्थन, स्वदेश मे शान्ति की रक्षा और विदेश मे सुरक्षा के साधन के रूप मे सामान्य शासन का उसकी सारी सावैधानिक शक्ति के साथ समर्थन (सघवादियो को एक पुनराश्वासन), जनता द्वारा चुनाव के अधिकार की सतर्कतापूर्वक रक्षा, यह अधिकार ही उन दुरुपयोगो के सुधार का एक उदार और सुरक्षित साधन है, जिन्हे शान्तिपूर्ण उपचार की व्यवस्था न होने की स्थिति मे, क्रान्ति की तलवार से खड-खड उडा दिया जाता है, बहुमत के निर्णयो की पूर्ण मान्यता, जो जनतन्त्र का मूल सिद्धात है, जहा से फिर अपील नही होती, बल्कि मूल सिद्धान्तो को और निरकुशता की तात्कालिक स्रोत-शक्ति को लागू कर दिया जाता है, एक अनुशासित अनियमित सेना, जिस पर शान्ति-काल मे और युद्ध के प्रारम्भ मे, जब तक कि नियमित सेनाए न आ जाय, सबसे अधिक भरोसा किया जाय, सैनिक सत्ता पर नागरिक प्रभुत्व, सार्वजनिक व्यय मे मितव्ययिता, जिससे श्रमिको पर कर का भार कम पडे, ऋणो का ईमानदारी से भुगतान और पवित्र सार्वजनिक विश्वास की रक्षा, कृषि और व्यापार को प्रोत्साहन, सूचना का प्रसार और सभी प्रकार के दुरुपयोगो को जनमत के समक्ष प्रस्तुत करना, धर्म की स्वतन्त्रता, वन्दी उपस्थापन के सरक्षण मे व्यक्ति की स्वतन्त्रता तथा प्रेस की स्वतन्त्रता और निष्पक्ष रूप से निर्वाचित जूरियो द्वारा मुकदमो की सुनवाई।"

जब जेफर्सन ने इन सामान्य विचारो पर विस्तृत रूप से प्रकाश डालने और उनके कार्यान्वय के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत करने का प्रयास किया तो यह स्पष्ट था कि जहाँ तक सघीय सरकार का सम्बन्ध था, उस समय एक मात्र आवश्यकता व्यय कम करने और कर का भार हल्का करने की थी। नौसेना मे कमी करके तथा महासागर मे चलनेवाले युद्धपोतो के स्थान पर तटवर्ती तोप-सज्जित नौकाओ को रखकर उसे अधिकतर पूरा करने का प्रयास किया गया। यद्यपि उन दिनो महाशक्तियो मे मेल था और अमरीकी व्यापार के सरक्षण का प्रश्न उतना आवश्यक नही था, फिर भी, इस समय तक अमरीकी एक युद्ध में गये थे और ट्रिपोली के शासक ने उनके विरुद्ध युद्ध की घोषणा भी कर दी

थी। यह युद्ध अनियमित ढग से १८०५ तक चलता रहा और अन्त मे जेफर्सन ने, जो पहले वारबरी समुद्री डाकुओ के विरुद्ध वलप्रयोग के प्रवल समर्थक थे, कुछ शर्तो के साथ, जिन्हे वहुत सम्मानजनक नही कहा जा सकता, सन्धि कर ली और भूमध्यसागर से अमरीकी जहाजो को वापस बुला लिया।

जेफर्सन के राष्ट्रपति-काल के प्रथम दो वर्ष वैधानिक गतिविधि की दृष्टि से विशेष महत्वपूर्ण नही रहे, केवल दो ऐसे कानून वनाये गये, जिनसे सरकार और पार्टी दोनो को वल मिला, ओहियो को एक राज्य के रूप मे स्वीकार किया गया और सघ-सरकार ने जार्जिया से वह भूखण्ड प्राप्त किया, जो वाद में १८१७ मे मिस्सीसिपी और १८१९ मे अलवामा मे विभक्त हो गया। उत्तर पश्चिम मे देशान्तरवास की लहर ओहियो से इडियाना की ओर जा रही थी। दक्षिण-पश्चिम मे रुई की माग शीघ्र ही प्राचीन दक्षिण के तटवर्ती राज्यो की सीमाओ के पार सुदूर वगान-प्रणाली वाले क्षेत्रो मे फैलने वाली थी। वर्ग सघर्ष का—जिसने 'गृह-युद्ध' का रूप धारण कर लिया—धुंधला सा रूप पहले ही से प्रकट हो रहा था, किन्तु सम्प्रति पश्चिम एक ही शक्ति के रूप मे था और अमरीकी लोकतन्त्र का भाग्यसूत्र अधिकाधिक उसी के हाथ मे था।

सक्रिय राजनीति की दृष्टि से निर्णायक समस्या सर्वदा पदाधिकार की थी—जेफर्सन किसे पदाधिकारी नियुक्त करेगे? शीघ्र ही स्पष्ट हो गया "हम सब रिपब्लिकन है, हम सभी फेडरलिस्ट हैं।" शब्दावली के अर्थ का उपयोग यहा नही होने वाला है। एडम्स ने अपनी पराजय और जेफर्सन के पद-ग्रहण के बीच की अवधि मे अपने समर्थको के साथ यथासम्भव अनेक पदो पर कार्य किया। जेफर्सन के लिए इस स्थिति को स्वीकार करना मानवीय दृष्टिकोण से कठिन था और उनके अनुयायियो ने भी इनकी अनुमति न दी होती। हेनरी एडम्स ने लिखा—"जेफर्सन एक विशिष्ट दृष्टिकोण से सभी शासको के समान थे। बोनापार्ट ने भी सोचा था कि एक सम्माननीय अल्पमत 'आलोचक' के रूप मे उपयोगी हो सकता है, किन्तु न तो बोनापार्ट और न जेफर्सन यह स्वीकार करने को तैयार थे कि कोई विशिष्ट अल्पमत सम्माननीय है।" जहाँ से कानूनी तौर पर हटाया जा सकता है, सघवादियो को अपने पदो से हट जाना पडेगा और उनके पदो को सुयोग्य रिपब्लिकनो को दिया जायगा अथवा उनका उपयोग उन क्षेत्रो मे पार्टी के निर्माण के लिए किया जायेगा, जहाँ पार्टी सबसे कमजोर थी। जेफर्सन नही चाहते थे कि सघवादी चुपचाप न्यू इग्लैण्ड के किसी स्थान में बिना

कष्ट के ही चले जाय। "लूट का माल विजेता का होता है"—जसा कि प्राय राजनीति मे होता रहा है, इस सिद्धान्त का अमरीकी राजनीति मे पहले ही व्यवहार आरम्भ हो गया।

राष्ट्रीय जीवन का एक विभाग ऐसा था, जहाँ शासनाधिकारी अभी भी अपने विवेक से काम कर सकते थे। सघीय न्यायाधिकारी-वर्ग का सगठन कानून के अन्तर्गत किया गया था, और उसकी नियुक्तियाँ आजीवन होती थी। १८०१ के न्यायाधिकारी कानून ने, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशो के अतिरिक्त, गश्ती न्यायाधीशो के एक नये वर्ग का निर्माण करके १७८९ के मूल कानून के अन्तर्गत स्थापित ढाँचे को और व्यापक बना दिया और जेफर्सन के विचार से, यथासम्भव अधिक से अधिक पदो पर सघवादियो को नियुक्त करने के उद्देश्य से ही ऐसा किया गया था। उनका विश्वास था कि जब तक सघवादियो से समर्थित न्यायाधिकारी वर्ग सुदृढ रहेगा और साविधानिक मामलो मे उनका अन्तिम निर्णय मान्य रहेगा, तब तक केन्द्रीकरण का और राज्यीय न्यायालयो तथा सरकारो को उनकी समुचित सत्ता से वञ्चित हो जाने का खतरा सर्वदा बना रहेगा। यह बडी ही खतरनाक समस्या थी, क्योकि वर्जीनियावासी यद्यपि राज्यो के अधिकारो के प्रश्न पर सगठित हो जाने के लिए तैयार थे, तथापि उत्तर के रिपब्लिकन न्यायाधिकारियो पर प्रत्यक्ष प्रहार के लिए उतने तैयार न थे। उप-राष्ट्रपति आरोन बर शीघ्र ही पार्टी के नेतृत्व से असन्तुष्ट हो गये, जिसका कारण, इसके अतिरिक्त, कुछ और भी था। तब जेफर्सन न्यूयार्क की अन्धकारपूर्ण आन्तरिक राजनीति मे हस्तक्षेप करने के लिए विवश हुए। एक राजनीतिक दार्शनिक के लिए सर्वदा विरोध मे रहना ही उचित होता है और जेफर्सन सर्वोच्च न्यायालय और जान मार्शल के साथ इस सघर्ष मे अपने को ठीक ढग से सभाल नही सके।

राजनीतिक, व्यक्तिगत और दलगत गुप्त प्रभावो के अतिरिक्त, न्यायाधिकारी-वर्ग के प्रश्न का अमरीकी लोकतन्त्र के भविष्य पर गम्भीर प्रभाव पडनेवाला था। जेफर्सन और उनके सहयोगियो की विचारधारा की एक प्रबल प्रवृत्ति वैधानिक अथवा प्रशासनिक दमन से व्यक्तियो और अल्पमतो की रक्षा करने की थी। इस उद्देश्य के लिए, एक स्वतन्त्र न्यायपालिका से बढकर कोई दूसरा सरक्षण नही हो सकता। दूसरी ओर, सर्वोच्च न्यायालय ने एडम्स के हानिकारक राजद्रोह-कानून के पक्ष मे निर्णय दिया और सघीय सामान्य कानून ो मान्यता देने की। अपनी प्रवृत्ति से वह स्वय एकीकरण का साधन बन गया

था। जेफर्सन के राजनीतिक सिद्धान्त की एक दूसरी प्रबल प्रवृत्ति बहुमत के शासन के प्रति सम्मान की थी, यहाँ सर्वोच्च न्यायालय राज्यीय न्यायालयो से पुनरावेदन की अनुमति दे कर तथा राज्य-कानूनो की वैधानिकता पर सन्देह व्यक्त करके लोकप्रिय बहुमत को चुनौती दे रहा था। विचित्र धर्मसकट था, राज्यीय न्यायालयो के व्याख्यात्मक कार्य को स्वीकार करना और सघीय न्यायालयो को उससे वचित करने का समाधान न तो तर्कसगत था और न विश्वासोत्पादक।

१८०२ मे तात्कालिक समस्या यह निर्णय करने की थी कि एडम्स के न्यायाधिकारी-कानून के वारे मे क्या किया जाय और यह तर्क माना जाय या नही, कि न्यायाधिकारी-वर्ग के नये पदो को समाप्त नही किया जा सकता, क्योकि यदि ऐसा किया जाता है तो न्यायाधीशो का आजीवन-पद अवैधानिक रूप से समाप्त हो जायगा।

नये पदो की समाप्ति पर जो वादविवाद आरम्भ हुआ, उसके अन्तर्गत न्यायाधिकारी-वर्ग की पूरी समस्या आ गयी और सघवादियो ने राज्य और काग्रेस, दोनो के कानूनो पर पुनर्विचार करने के उसके अधिकारो का समर्थन किया। रिपब्लिकनो ने यह विचार व्यक्त किया कि जन-प्रतिनिधियो द्वारा व्यक्त जनमत को ही सर्वोपरि माना जाय। वास्तव मे दोनो ही दलो के वीच मतभेद इतना तीव्र हो गया था कि सघवादी, जो एक क्षेत्रीय अल्पमत गुट के रूप मे थे, अब वर्जीनिया के पृथक्तावादियो की धमकियो तथा केण्टकी-प्रस्तावो के सिद्धातो का उपयोग कर रहे थे।

यद्यपि विजयी रिपब्लिकनो ने १८०१ के कानून को रद्द कर दिया, फिर भी उन्होने इतना ही किया कि न्यायालय के सगठन को उसी रूप मे पुन स्थापित किया, जिस रूप मे वह १७८९ मे था, उसका अधिकार-क्षेत्र अप्रभावित रहा और उसके अधिकारो की सीमा के बारे मे कोई निर्णय नही किया गया।

वास्तविक सकट १८०३ मे उत्पन्न हुआ। किसी हद तक न्यायालय, अर्थात् रिपब्लिकन पार्टी की अपेक्षा जान मार्शल इसके लिए अधिक जिम्मेदार थे। मार्शल के कतिपय सहयोगी वृद्ध और निर्वल हो चुके थे और उन्हे भय था कि उनका देहान्त हो जाने पर अथवा उनके इस्तीफा दे देने पर जफर्सन रिक्त स्थानो की पूर्ति उन रिपब्लिकनो से करेंगे, जो न्यायालय के अधिकारो का वलिदान कर देंगे। यह स्थिति उत्पन्न होने के पहले ही मारवरी बनाम मेडिसन के मुकदमे मे न्यायालय के अधिकारो पर वल देने का एक अवसर

आया। मेडिसन ने कुछ ऐसे पदो के लिए आदेश-पत्र जारी करने से इन्कार कर दिया, जिन पर एडम्स ने अपने राष्ट्रपति-काल के अन्तिम दिनो मे हस्ताक्षर किये थे। मारबरी ने, जो कोलबिया के जिला-न्यायाधीश होने वाले थे, न्यायालय से विदेश-मत्री के नाम समादेश पत्र जारी करने की माग की, ताकि उन्हे आदेश पत्र जारी करने के लिए विवश किया जा सके। यह तो निश्चित था कि यदि मारबरी के पक्ष मे निर्णय किया गया तो रिपब्लिकन कॉग्रेस मे मार्शल पर अभियोग लगायेगे और मार्शल के हटाये जाने से जेफर्सन को वर्जीनिया के मुख्य न्यायाधीश स्पेन्सर रोन को मुख्य न्यायाधीश नियुक्त करने का अवसर मिल जायेगा। स्पेन्सर रोन राज्यो के अधिकार के सिद्धान्त के कट्टर समर्थक थे। दूसरी ओर, यदि मार्शल ने आत्मसमर्पण कर दिया तो इसका अर्थ होगा कार्यपालिका पर सभी कानूनी अवरोधो का परित्याग।

मार्शल ने इस धर्मसकट का जो समाधान निकाला, उसे उनके प्रशसक जीवनी-लेखक सिनेटर ए जे बिवरिज ने प्रशासनिक दृष्टि से साहस और वीरता का कार्य बताया है और कहा है कि यह वैसा ही साहस था, जैसा कि सविधान बनाने मे दिखाया गया था। सक्षेप मे, मार्शल ने मारबरी के इस दावे को स्वीकार किया कि मेडिसन ने आदेश-पत्र को रोक कर गलती की है, किन्तु सर्वोच्च न्यायालय ने कार्रवाई करने के अधिकार को इस आधार पर अस्वीकार किया कि १७८९ के न्यायाधिकारी-कानून की जिस धारा ने उसे समादेश-पत्र जारी करने का अधिकार दिया है, वह सर्वोच्च न्यायालय के मूल अधिकार-क्षेत्र से सम्बन्धित सविधान के प्रावधानो द्वारा अवैध बन जाती है। इस प्रकार पहले पहल काग्रेस के कानून को अवैध बनाकर मार्शल ने प्राय उसी तर्क का परिचय दिया, जिसका उपयोग हेमिल्टन ने 'फेडरलिस्ट' मे किया था।

उनके विचार से, वैधानिक कानूनो को अवैध बनाने का अधिकार लिखित सविधान के अस्तित्व से ही उत्पन्न हुआ, जिसमे शासन के विभिन्न अगो के लिए निश्चित अधिकार और कर्त्तव्य निर्धारित किये गये है। यदि न्यायालयो को सविधान का सम्मान करना है, और सविधान विधानमण्डल के किसी भी साधारण कानून से ऊँचा है तो किसी भी मामले मे, जहाँ दोनो का प्रश्न खडा होगा, सविधान को ही प्रमुखता दी जायेगी। काग्रेस के कानून का अवैध किया जाना वास्तव मे राजनीतिक दृष्टि से उतना महत्वपूर्ण नही था, क्योकि फिर ५४ वर्ष बीत जाने पर सर्वोच्च न्यायालय ने एक दूसरे कानून को अवैध घोषित किया। किंतु, जैसा कि रिपब्लिकनो ने देखा, यह तर्क उन राज्य-कानूनो पर

समान रूप से लागू होता, जो अपील करने पर सर्वोच्च न्यायालय के सामने आ सकते है। किसी चीज की वैधानिकता अथवा अवैधानिकता पर एक मनोनीत संस्था को न केवल सहयुक्त, अपितु अन्तिम निर्णय करने का अधिकार होना चाहिए, यह एक ऐसा दावा था, जिसे जेफर्सन के अनुयायी पसन्द नही कर सकते थे—कम से कम उस समय तक जब तक कि शासन की वैधानिक तथा कार्यपालिका-शाखाए उनके हाथ मे थी।

यदि मार्शल ने 'मारबरी बनाम मेडिसन' के मुकदमे मे १८०२ के मन्सूखी कानून की परवाह न करके अपना निर्णय किया होता, तो चुनौती स्वीकार कर ली गयी होती। रिपब्लिकनो को सघीय न्यायालय मे अपेक्षाकृत कम महत्त्व के दो अभियोगो मे उलझा दिया गया और १८०५ के आरम्भ मे इनमे से दूसरे अभियोग के विफल हो जाने से न्यायाधिकारी-वर्ग पर प्रहार का अन्त हो गया।

कुछ भाग स्पेन ने उसे दे दिया था और यह भी निश्चित नही था कि अमरीका इस घटना को रोक सकता था। दो शक्तिशाली प्रतिद्वन्द्वियो के युद्ध मे, चाहे यह युद्ध जल पर हो या स्थल पर, एक निर्बल तटस्थ राष्ट्र का कार्य सराहनीय नही होता। जब वे युद्धरत होते हैं तो भावी तटस्थ राष्ट्र के हितो की निश्चय ही उपेक्षा की जाती है और जब वे सन्धि करते है, तब वह तटस्थ राष्ट्र के खर्च पर हो सकती है। फ्रास के विरुद्ध समुद्री अधिकारो के लिए दीर्घकालिक युद्ध के बाद पहले तो ऐसा मालूम हुआ कि अमरीका एमीन्स-सन्धि के लिए मूल्य चुकता करेगा, क्योकि अग्रेज बोनापार्ट को यह मौका देने के लिए तैयार ज्ञात पडते थे कि वह स्वदेश के निकटवर्ती मामलो की अपेक्षा अटलाटिक पार के मामलो मे ही उलझा रहे और यदि वह सान डोमनिगो अपने अधीन कर सका तो उसे पश्चिम मे एक नये सन्तुलित व्यापारिक साम्राज्य के निर्माण के लिए मुख्यभूमि के सम्भरण-स्रोत की आवश्यकता होगी। यदि ऐसा हुआ तो अमरीकी उस दीर्घकालिक लाभ से वचित हो जाते—जो उन्हे उनके पश्चिमी उपनिवेशो के द्रुत विकास से प्राप्त हो रहा था। यह सही था कि फ्रासीसियो के बहुत आगे बढने पर स्वय अंग्रेज हस्तक्षेप कर सकते थे, किन्तु अग्रेज फ्रासीसियो की अपेक्षा कही कम अनुकूल पडौसी सिद्ध होते। अन्त मे, महान शक्तियो के अतिरिक्त, स्वदेश मे ही विरोध खडा हो गया, क्योकि सघवादी यद्यपि सघराज्य की पश्चिमी दिशा मे विस्तार को सर्वदा नापसद करते थे और उससे भयभीत भी थे,, फिर भी वे इस ताक मे थे कि यदि जेफर्सन पश्चिमी उपनिवेशो के हितो की उपेक्षा करे और मिस्सीसिपी की नौकानयन-प्रणाली को सुरक्षित रखने मे असमर्थ हो, तो रिपब्लिकन अनुयायियो को अपनी ओर फोडने का मौका न चूका जाय। जेफर्सन जानते थे कि यूरोप मे अमरीका के इस दृष्टिकोण को तत्काल स्वीकार नही किया गया था कि लुइसियाना पूर्णतया मिस्सीसिपी के पश्चिम था, १७८२–८३ मे सभी महान शक्तियो के व्यवहार से यह सिद्ध हो गया था कि वे यही चाहते थे कि अमरीकियो को अप्पालाशियन्स मे रुक जाना चाहिए। यह कल्पना अभी भी सजीव बनी हुई थी।

जिस देश की कोई सैनिक या नौसैनिक शक्ति न हो और जिसके पास जो कुछ शक्ति हो, उसे भी कम करने मे जो लगा हुआ हो, उसके लिए स्थिति सुदृढ नही थी, यद्यपि जेफर्सन को कुछ आशा थी कि अमरीकी मित्रता के व्यापारिक मूल्य का कुछ प्रभाव पडेगा। इसका एकमात्र समाधान समयानुकूल कार्य करना था और यह भी डर था इसका अन्त भी बुरा हो सकता था। कोई

की सख्या बढा रहे थे ।

एक ओर फ्रास मे लिविंग्स्टन यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहे थे कि अमरीका को ब्रिटिश गुट मे जाने के लिए विवश करने से फ्रास को लाभ नही होगा और उसके उद्देश्यो की पूर्ति के लिए पूरे लुइसियाना और फ्लोरिडा पर अधिकार करना आवश्यक नही है, दूसरी ओर जेफर्सन को कार्रवाई करनी पडी। इसी अवसर पर डु पोण्ट का एक दूसरा पत्र आ गया, जिसमे न्यू आर्लियन्स और फ्लोरिडा, दोनो प्रदेशो का खरीद के लिए सुझाव दिया गया था। काग्रेस ने फ्रास को एक विशेष प्रतिनिधिमण्डल भेजने के लिए बीस लाख डालर की रकम निश्चित की और इस उद्देश्य के लिए लिविंग्स्टन का साथ देने के लिए जेम्स मनरो को भेजा। प्रतिनिधिमण्डल को यह निर्देश दिया गया कि यदि वह खाडी पर उचित निकासी के लिए आवश्यक न्यूनतम व्यवस्था करने मे असमर्थ हो तो वह वहाँ से लन्दन जाकर ब्रिटेन से सन्धि करने का प्रयास करे।

८ मार्च, १८०३ को जब मनरो ने अमरीका से फ्रास के लिए प्रस्थान किया, तब यह विश्वास करने का कोई कारण नही था कि सफलता सरल

उत्पादन बाजारो मे जाता है और जिसकी उर्वरता से शीघ्र ही हमारे कुल उत्पादन का आधे से अधिक पैदा होने लगेगा। फास उस द्वार पर खडा होकर हमे एक प्रकार से चुनौती दे रहा है। स्पेन ने उसे वर्षों तक अपने अधिकार मे रखा होता जिस दिन फास न्यू आर्लियन्स पर कब्जा करेगा, उसी दिन उसे एक सीमा के अतर्गत रखने का मत निश्चित हो जायगा। इस तरह उन दो प्रदेशो के लिए सघ का मार्ग बन्द हो जायगा, जो आपस मे मिलकर महासागर पर एकाधिकार स्थापित कर सकते हैं। उसी क्षण से हमे ब्रिटिश बेडे और इन राष्ट्रो मे सम्बन्ध स्थापित करना पडेगा।"

डु पोण्ट ने, जो एक फासीसी थे और अमरीका के मित्र भी थे, अमरीकी समाधान के खतरो को समझा और उन्होने ब्रिटिश सन्धि मे निहित और भी बडे खतरो को फास के समक्ष रखने का प्रयास किया। यदि अमरीकी मिस्सिसिपी मे नौकानयन की स्वतन्त्रता के आश्वासनो से सन्तुष्ट नही हो सकते तो अमरीका के लिए सर्वोत्तम मार्ग यही होगा कि वह उसके लिए फास के दावो को खरीदने का प्रस्ताव रखे। वास्तव मे मेडिसन ने भी इस समाधान का खडन नही किया, किन्तु जेफर्सन ने और भी साहसिक प्रवृत्ति का परिचय दिया और वे उस चीज के लिए मूल्य देना नही चाहते थे, जिसे वे पहले ही से अपना प्राकृतिक अधिकार मानते थे।

१८०२ के प्रारम्भिक महीनो मे फास के साथ अत्यन्त सतर्कनापूर्ण प्रयासो ने एक नया रूप धारण कर लिया, जबकि लुइसियाना को फास को हस्तान्तरित करने सम्बन्धी स्पेन के सम्राट का अन्तिम आदेश जारी होने के पाच दिनो बाद, २० अक्तूबर को यह प्रकट हो गया कि न्यू आर्लियन्स स्थित स्पेनिश अधिकारी ने १७९५ की सन्धि के अनुसार बन्दरगाह मे मिले अमरीकी अधिकार का अन्त कर दिया। क्या फास पुन उस अधिकार को वापस करेग, जिसे स्पेन ने समाप्त कर दिया था और सम्भवत उसकी सहमति से समाप्त किया था, साथ ही साथ यह भी काफी स्पष्ट हो चुका था कि फास अमरीकी प्रदेश के विरुद्ध यूरोपियनो के आदान-प्रदान के लिए कुछ ऐसी योजनाओ पर बल दे रहा था, जिनके परिणामस्वरूप अन्त में फ्लोरिडा अथवा कम से कम उसका वह भाग भी उसके हाथ में आ जायेगा, जो लुइसियाना के हस्तान्तरण मे सम्मिलित नही था। इसका अर्थ होगा खाडी-तट से अमरीका का पूर्ण निष्कासन। काग्रेस मे क्षोभ बढने लगा और ऐसा प्रतीत होने लगा कि पश्चिम की युद्ध-नीति को स्वीकार कर सघवादी अपने अनुयायियों

ा किया गया और जिसमे एक ऐसी सीमा-रेखा निर्धारित कर दी गयी ग्रेट ब्रिटेन को मिस्सिसीपी तक पहुचने की सुविधा मिल गयी। अब ाचले तटो पर अमरीका का कोई प्रतिद्वन्द्वी नही रह गया था, इसलिए ौकानयन मे भागीदारी का ब्रिटिश दावा अब उपयोगी नही समझा गया ब सीनेट मे यह मामला पेश हुआ तो रिपब्लिकनो ने यह कोशिश की धारा ही समाप्त कर दी जाय। १८१८ की सन्धि मे जब अमरीकी-कना-सीमा निश्चित की गयी तो वह मिस्सिसीपी के उद्गम के उत्तर की ओर ्त की गयी।

ाफर्सन की विस्तारवादी योजना के विकास के साथ साथ नयी भूमियो पर ीरे लोगो को बसाने की कल्पना का परित्याग कर दिया गया। यूरोपीय न्द्रियो के सामने इडियनो के हितो की उपेक्षा की गयी। पश्चिम मे लोगो साने और जेफर्सनवादी लोकतत्र को अपनाने की जोरदार कोशिश की । इन घटनाओ के इतिहासकार आर्थर बर डार्लिग ने लिखा है—"यह बडा ; और नृशसतापूर्ण कार्य था, किन्तु यह इस प्रकार के लोगो के चरित्र के ल ही था।"

महाद्वीप के सम्पूर्ण भीतरी भाग मे अमरीकी पहुँच के लिए सुविधा प्राप्त ; का प्रयास करके जेफर्सन अमरीका की प्रबल आकाक्षा का ही प्रतिनिधित्व रहे थे, किन्तु इसकी पूर्ति मे कुछ बाधाए थी जिन पर विचार करना स्वय जेफर्सन अपनी इस कार्रवाई के वैधानिक औचित्य के बारे मे ग्र से थे। सघीय सरकार द्वारा प्राप्त भूमि पर अधिकार किया जा सकता किन्तु सन्धि मे विशेष रूप से वादा किया गया था कि अमरीकी सघ मे मलित हो जाने पर नयी भूमियो और उनके निवासियो को सघ के पूर्ण ाकार मिलेगे। क्या सघीय सरकार को ऐसा करने का अधिकार था ? क्या ने एक उदारवादी सविधान-निर्माण के लिए एक नया दृष्टात प्रस्तुत नही ा, जिसका परिणाम उससे भी अधिक दूरगामी होता, जिसके लिए वर्जी-या-वासियो ने हेमिल्टन की तीव्र आलोचना की ? यदि १८०३ की ग्रीष्म तु मे अंतरराष्ट्रीय स्थिति कुछ कम अनिश्चित रही होती तो जेफर्सन ने इन देहो की ओर ध्यान दिया होता, किन्तु समय महत्वपूर्ण था, बोनापार्ट ाने निर्णय पर खेद प्रकट कर सकता था, इसलिए साधारण तौर पर जल्द-ाजी मे उसकी पुष्टि ही की गयी।

पूर्वी राज्यो के सघवादियो के लिए वस्तुत. यह एक प्रहार ही था। भने

वस्था कर सके। ग्रेट ब्रिटेन नही चाहता था कि कोई गलत कदम उठाया जाय।

यद्यपि जेफर्सन के राजदूतो ने इतनी अधिक सफलता प्राप्त कर ली थी, जितनी सम्भावना नही थी, फिर भी इसका अर्थ यह नही था कि न्यू आर्लियन्स पर अधिकार और मिस्सिसीपी मे नौकानयन के आश्वासन से समस्या का अन्तिम समाधान हो जाता। अमरीकी अपना विस्तार करने वाले थे और अपनी जन-शक्ति बढाने वाले थे। अब केवल समय का प्रश्न था।

नवम्बर, १८६१ मे जेफर्सन ने मनरो को लिखा—"हमारे वर्तमान हित हमे अपनी ही सीमाओ के अन्तर्गत रहने के लिए कितना ही बाध्य क्यो न करे, सुदूर भविष्य की ओर न देखना असम्भव है, क्योकि तेजी से बढती हुई हमारी जनसख्या उन सीमाओ को पार करती जायेगी और दक्षिण नहीं तो कम से कम समस्त उत्तरी महाद्वीप मे फैल जायगी, इस जन-सख्या की एक ही भाषा, एक ही शासन-प्रणाली और एक ही प्रकार के कानून होगे।"

सम्प्रति उन्होने राजदूतो से जो कुछ प्राप्त किया, उसी पर सन्तोष किया। नवम्बर, १८०३ मे उन्होने डु पोण्ट को लिखा—

"हमारी नीति न्यू आर्लियन्स और मेक्सिको खाडी स्थित उसके दोनो ओर के क्षेत्र को मिलाकर एक राज्य बनाने की होगी, इन सबके अतिरिक्त, इसमे अपने इडियनो को बुलाकर बसाना होगा, जो नदी पार करके आनेवाले देशान्तरवासियो को रोकने का कार्य करेंगे और तब तक इस ओर का यह सारा खाली क्षेत्र बस जायगा। इससे मेक्सिको की खाने आधी शताब्दि के लिए स्पेन और हमारे, दोनो के हाथ मे आ जायेगी और उस समय तक के लिए उसके आवास-सम्बन्धी प्रावधानो पर हम निस्सन्देह भरोसा रख सकते है।"

चूँकि फ्रास और ब्रिटेन यूरोप मे ही आपसी युद्ध मे फँसे हुए थे, इसलिए जेफर्सन की महत्वाकाक्षाओ को प्रोत्साहन मिला। जेफर्सन ने अब मन ही मन सोचा कि लुइसियाना के साथ-साथ टेक्सास, पश्चिमी फ्लोरिडा तथा उत्तर-पश्चिम के एक विशाल अनधिकृत क्षेत्र को भी मिला लिया जाय। दोनो फ्लोरिडा से स्पेनिश अधिकार-क्षेत्र और ब्रिटिश प्रभाव को हटाने की प्रक्रिया आरम्भ हो गयी और १८१९ की एडम्स-ओनिस-सन्धि द्वारा इस प्रक्रिया की पुष्टि हुई। लुई और क्लार्क ने अपना अभियान आरम्भ कर दिया और १८०५ मे वे कोलम्बिया नदी के मुहाने पर पहुच गये। ब्रिटेन अमरीकी दावो का प्रतिरोध करने की स्थिति मे नही था। मई, १८०३ में रुफुस किंग ने लन्दन मे एक सन्धि की, जिसमे जे की सन्धि के समय से पडी हुई प्रमुख समस्याओ का

समाधान किया गया और जिसमे एक ऐसी सीमा-रेखा निर्धारित कर दी गयी जिसमे ग्रेट ब्रिटेन को मिस्सिसीपी तक पहुचने की सुविधा मिल गयी। अब चूकि निचले तटो पर अमरीका का कोई प्रतिद्वन्द्वी नही रह गया था, इसलिए उसके नौकानयन मे भागीदारी का ब्रिटिश दावा अब उपयोगी नही समझा गया और जब सीनेट मे यह मामला पेश हुआ तो रिपब्लिकनो ने यह कोशिश की कि यह धारा ही समाप्त कर दी जाय। १८१८ की सन्धि मे जब अमरीकी-कनाडियन सीमा निश्चित की गयी तो वह मिस्सिसीपी के उद्गम के उत्तर की ओर निर्धारित की गयी।

जेफर्सन की विस्तारवादी योजना के विकास के साथ साथ नयी भूमियो पर धीरे-धीरे लोगो को बसाने की कल्पना का परित्याग कर दिया गया। यूरोपीय प्रतिद्वन्द्वियो के सामने इडियनो के हितो की उपेक्षा की गयी। पश्चिम मे लोगो को बसाने और जेफर्सनवादी लोकतन्त्र को अपनाने की जोरदार कोशिश की गयी। इन घटनाओ के इतिहासकार आर्थर बर डार्लिंग ने लिखा है—"यह बडा कठिन और नृशसतापूर्ण कार्य था, किन्तु यह इस प्रकार के लोगो के चरित्र के अनुकूल ही था।"

महाद्वीप के सम्पूर्ण भीतरी भाग मे अमरीकी पहुँच के लिए सुविधा प्राप्त करने का प्रयास करके जेफर्सन अमरीका की प्रबल आकाक्षा का ही प्रतिनिधित्व कर रहे थे, किन्तु इसकी पूर्ति मे कुछ बाधाए थी जिन पर विचार करना था। स्वय जेफर्सन अपनी इस कार्रवाई के वैधानिक औचित्य के बारे मे उद्विग्न मे थे। सघीय सरकार द्वारा प्राप्त भूमि पर अधिकार किया जा सकता था, किन्तु सन्धि मे विशेष रूप से वादा किया गया था कि अमरीकी सघ मे सम्मिलित हो जाने पर नयी भूमियो और उनके निवासियो को सघ के पूर्ण अधिकार मिलेंगे। क्या सघीय सरकार को ऐसा करने का अधिकार था? क्या इससे एक उदारवादी सविधान-निर्माण के लिए एक नया दृष्टात प्रस्तुत नही होगा, जिसका परिणाम उससे भी अधिक दूरगामी होता, जिसके लिए वर्जीनिया-वासियो ने हैमिल्टन की तीव्र आलोचना की? यदि १८०३ की ग्रीष्म

हों वे चाहते रहे हो कि पश्चिम के असन्तोष का उपयोग फ्रास के विरुद्ध अमरीका और ब्रिटेन के बीच गठबन्धन को सुदृढ बनाने मे किया जाय, किन्तु पश्चिम की ओर और अधिक विस्तार उन्हे कदापि पसन्द नही था। १७८३ की सन्धि के लिए जब से बातचीत आरम्भ हुई थी, तभी से वे इस बात के लिए प्रयत्नशील थे कि पूर्वी तट पश्चिम के अनियन्त्रित लोकतन्त्र के अधीन न आने पाये। सघवादियो की सख्या इतनी कम थी कि वे मतदान द्वारा योजना को ठुकरा नही सकते थे, इसलिए वे अलग हो जाने की और पहाडो के किनारे किनारे के साथ सघ से अनिवार्य रूप से अलग हो जाने की बात करते थे। जेफर्सन ने उनके इस रोष की उपेक्षा की। जनवरी, १८०४ मे उन्होने जोसेफ प्रीस्टली को एक पत्र लिखा। "मैं स्वीकार करता हूँ कि इस क्षेत्र के दूसरे भाग मे हमारी तरह स्वतत्र प्रशासनिक एव आर्थिक प्रणाली हो, जिसमे साधारण जनता को सुख-समृद्धि प्राप्त हो। चाहे हम एक सघ के अतर्गत रहे, अथवा अटलाटिक और मिस्सिसीपी, दो सघो के अन्तर्गत, मैं किसी भी भाग की सुख समृद्धि के लिए इसे बहुत महत्वपूर्ण नही समझता। पश्चिमी सघ के लोग वैसे ही हमारी सन्ताने हैं जिस प्रकार पूर्वी सघ के लोग, और मैं भविष्य मे अपने को दोनो ही क्षेत्रो के साथ समानरूप से सम्बद्ध मानूगा। मैं देखता हूँ कि भविष्य मे कभी न कभी अलगाव होकर रहेगा, फिर भी मैं अपना यह कर्तव्य समझता हूँ और मेरी शुभकामना भी यही है कि पूर्व और पश्चिम के हितो की समानरूप से रक्षा और अभिवृद्धि हो और अपने अधिकारो के रहते मैं अपने भावी परिवार के दोनो भागो का समानरूप से हित करने का यथाशक्ति प्रयास करूँगा।"

वास्तव मे तात्कालिक राजनीतिक भविष्य को देखते हुए आत्मतुष्ट रहना अकारण नही था। लुइसियाना सन्धि की पुष्टि के बाद उग्रवादी-सघवादियो ने न्यूयार्क के गवर्नर-पद के लिए बर को चुनने की योजना बनायी। बर और जेफर्सन मे बिल्कुल पटती नही थी। तदनन्तर उनकी सहायता से एक स्वतत्र सघ की स्थापना मे न्यूयार्क और न्यू इगलैण्ड के साथ हो सकते थे। किन्तु सघवादियो और असन्तुष्ट रिपब्लिकनो के गठबन्धन की योजना का रुफुस किग और अलेक्जेण्डर हेमिल्टन जैसे जिम्मेदार सघवादी नेताओ ने समर्थन नही किया और सम्प्रति उसका कोई परिणाम भी नही दिखायी पडता था।

२५ फरवरी, १८०४ को काग्रेस के प्रमुख नेताओ की एक गुप्त बैठक में जेफर्सन को प्रेसिडेण्ट पद के लिए दूसरी बार मनोनीत किया गया। इस समय

तक १२ वा सशोधन कानून बन चुका था और वापस प्रेसीडेण्ट-पद एक पृथक विपय रह गया था। बर के लिए कोई सम्भावना नही रह गयी और उनके स्थान पर उनके प्रतिद्वन्द्वी जार्ज क्लिण्टन को मनोनीत किया गया। अप्रैल में जेफर्सन की छोटी लडकी का देहान्त हो गया और इस घटना से उनकी सफलता पर शोक का वातावरण छा गया। जुलाई मे एक और भी सार्वजनिक दुर्घटना घटी, जबकि एक घातक द्वन्द्व युद्ध मे बर ने हेमिल्टन से बदला लिया, जो उसकी महत्वाकाक्षा के मार्ग मे दीर्घकाल से काटा बना हुआ था। इस मृत्यु से अतीत के सम्बन्ध की कडी टूट रही थी और जेफर्सन पुन ऐसी बात करने लगे जिससे मालूम होता था कि वे सार्वजनिक जीवन से अलग हो जायेंगे। किन्तु उनका पुनर्निर्वाचन अनिवार्य था। १७९६ और १८०० के कटु सघर्षो की तुलना मे यह अभियान शान्तिपूर्ण रहा। १७ राज्यो मे से केवल दो राज्यो—कनेक्टिकट और डेलावरे—ने सघवादियो के पक्ष में मत दिये—वे थे सी. सी. पिकने और रुफुस किंग। अब पूर्णतया सिद्ध हो गया कि जेफर्सन सही मार्ग पर थे।

अध्याय ९

प्रेसिडेण्ट : प्रतिबन्ध

(१८०५–१८०९)

"प्रचड समुद्री युद्ध मे हमारे उलझ जाने के साथ ही नयी शताब्दी का श्री गणेश हुआ , किन्तु अब सब कुछ धीरे धीरे शात हो रहा है, देश और विदेश मे शाति हमारा मार्ग प्रशस्त कर रही है और यदि हमने न्याय और नम्रता के मार्ग का अवलबन किया तो हमारी शाति और समृद्धि कायम रहेगी और अत मे हमारी सख्या इतनी बढ जायेगी कि हमे विदेशो से भयभीत होने का कारण नही रह जायेगा । इगलैड के साथ हमारी हार्दिक मित्रता है, फ्रास के साथ पूर्ण समझौता है, स्पेन के साथ हमारा सदा विवाद होता रहेगा, किंतु कभी युद्ध नही होगा, जब तक कि हम स्वय नही चाहेगे । अन्य राष्ट्र हमारी नीति को सम्मान और आदर की दृष्टि से देखते है ।"

अपनी द्वितीय पदावधि मे जेफर्सन का रेकार्ड देश और विदेश दोनो मे, प्राय विफल और निराशाजनक रहा । स्वदेश मे नयी साम्प्रदायिक और दलगत प्रतिद्वन्द्विओ के कारण एकता भग हो गयी । जेफर्सन ने प्रारम्भ मे ही प्रकट कर दिया कि वे तृतीय अवधि मे प्रैसीडेण्ट-पद के लिए खडे न होकर वाशिगटन का आदर्श प्रस्तुत करेगे । इससे कटुता और भी बढ गयी, क्योकि उत्तराधिकार के लिए मेडिसन और मनरो के बीच सघर्ष को उत्तेजना मिली ।

किन्तु इस सघर्ष को केवल व्यक्तित्व के सघर्प के रूप मे देखना भी गलती होगी । जेफर्सन ने अपनी ही पार्टी के अन्तर्गत एकता के प्रतीक और अनुशासन को कायम रखने के उद्देश्य से इस सघर्ष का मार्ग अपनाया था । राष्ट्रीय नेतृत्व का दावा करनेवाली प्रत्येक उत्तराधिकारिणी अमरीकी पार्टी की तरह जेफर्सन-वादी रिपब्लिकनो का भी वस्तुत एक सयुक्त गठबन्धन था । वे जितना ही पूर्ण विजय के निकट होते—और सघदियो का पूर्ण उन्मूलन ही जेफर्सन का उद्देश्य था—उतना ही सयुक्त गठबन्धन को सगठित रूप से कायम रखना कठिन होता।

सघीय सरकार के प्रति बिल्कुल निषेधात्मक रुख एक ऐसे देश के लिए अनुपयुक्त ही था, जिसके पास एक विशाल प्रादेशिक साम्राज्य था और जो सुरक्षा की दृष्टि से किसी भी समस्या के तत्काल समाधान के लिए अत्यन्त आवश्यक था । सघीय सरकार एक राजनीतिक सिद्धान्त के लिए दक्षिण मे काफी सबल थी और काँग्रेस मे उसका प्रतिनिधित्व जान रण्डोल्फ करते थे, जो जेफर्सन और मेडिसन के प्रमुख आलोचक थे । अमरीकी 'सीमा' के प्रमुख इतिहासकार एफ जे टर्नर ने सकेत किया है कि लुइसियाना का क्रय प्रजातन्त्र के इतिहास मे 'कदाचित् एक सवैधानिक मोड था ।' उसने राष्ट्रीय विधान के लिए एक नया क्षेत्र प्रदान किया और सघीय सरकार को व्यापक उत्तरदायित्व ग्रहण

करने के लिए विवश किया ।

अमरीका के बढते हुए व्यापार ने भी नयी समस्याओ को जन्म दिया । एक प्रबल समुद्री शक्ति की अधीनता स्वीकार न करने पर नौसैनिक सरक्षरा की आवश्यकता होती और नौसेना पर व्यय सघवादी राजनीति का द्योतक था । ट्राफलगार के बाद ग्रेट ब्रिटेन ही वह प्रवल समुद्री शक्ति हो सकता था । रिपब्लिकन पार्टी का नारा था 'मितव्ययिता ।' एक दूसरा तथ्य और भी था । व्यापारिक समृद्धि का अर्थ था राजस्व मे वृद्धि । जब कि अभी भी ऋरा का भुगतान करना बाकी था, इस राजस्व का उपयोग ऋरा मुक्ति के लिए हो सकता था । किन्तु गलाटिन की सतर्कतापूर्ण देखरेख मे ऋरा बडी तेजी से घटता जा रहा था और बचत की सम्भावना बढती जा रही थी । जेफर्सन के लिए तथा मध्य राज्यो और पश्चिम मे उनके अनेक समर्थको के लिए राजस्व की बचत भय का अपेक्षा प्रसन्नता का कारण थी और जेफर्सन के द्वितीय उद्घाटन-भाषरा (४ मार्च, १८०५) से उनकी रचनात्मक आशावादिता की प्रवृत्ति की ही झलक मिलती है ।

जेफर्सन ने घोषणा की कि एक बार ऋरा मुक्त हो जाने पर इस प्रकार राजस्व की जो बचत होगी, उसे विभिन्न राज्यो मे समुचित ढग से वितरित करके तथा सविधान मे अनुकूल सशोधन करके, उसका उपयोग शान्तिकाल मे प्रत्येक राज्य के अन्तर्गत नदियो को बॉधने, नहरो, सडको, कला, उद्योगो, शिक्षा तथा अन्य महान कार्यो मे किया जा सकता है । स्वय हमारे और दूसरो के अन्याय से कभी-कभी युद्ध हो जाता है और युद्ध-काल मे वही राजस्व आबादी और खपत की वृद्धि से और बढ जायगा तथा उस सकट के लिए सुरक्षित अन्य स्रोतो की सहायता से वह भावी सन्तानो पर अतीत के ऋरा का भारी बोझ लाद कर उनके अधिकारो का अपहररा न करके वर्ष के अन्दर ही वर्ष के सभी खर्चो को पूरा कर सकता है । उस स्थिति मे युद्ध उपयोगी कार्यो का स्थगन मात्र होगा और पुन शान्ति की ओर लौटने का अर्थ होगा सुधार की प्रगति की दिशा मे लौटना ।

आन्तरिक सुधार और युद्ध की स्थिति । यह मान लेने पर भी कि आन्तरिक सुधारो को वैध बनाने के लिए सावधानिक सशोधन की आवश्यकता होगी, उग्र रिपब्लिकनो को इससे सतोष नही हो सकता था । किन्तु एकान्तप्रिय और गम्भीर जेफर्सन, जो अपने घनिष्ठ साथियो के क्षेत्र के बाहर कभी खुलकर बात नही करते थे, सम्भाव्य विरोध से विचलित नही होने वाले थे । वास्तव मे देश

की मन स्थिति की परीक्षा के लिए कोई अवसर नही था, क्योकि घरेलू सुधार की सभी सम्भावनाओ पर शीघ्र ही विदेशी मामलो का प्रभुत्व छा गया, किंतु बाद में इसी प्रकार के प्रस्तावो के आने पर यह स्पष्ट हो गया कि विचारधारा की अभिव्यक्तिकरण मे जेफर्सन अल्प मत का ही प्रतिनिधित्व करते थे।

यदि राष्ट्रीय सरकार के अधिकार का प्रश्न तथा सम्वद्ध विषय पूर्व और और पश्चिम के बीच मतभेद के कारण बन सकते थे तो यह भी स्पष्ट था कि गुलामी की प्रथा, दास-प्रथा वाले राज्यो के रिपब्लिकनो तथा अन्य भागो के लोगो के बीच मतभेद का कारण थी। दास-प्रथा को दक्षिणी अर्थ तन्त्र मे, जहाँ रुई की खेती का महत्व बढता जा रहा था, इतने धूर्ततापूर्ण ढग से सुदृढ बनाने का प्रयास किया जा रहा था कि समकालीन इतिहासकार उसकी गहराई का इतनी सरलता से पता नही लगा सकते थे, जितना बाद के इतिहासकार। किन्तु यह छिपा हुआ नही था कि दासता का प्रश्न दक्षिण के लोगो के मन और मस्तिष्क मे घर कर चुका था। १८०८ मे दास व्यापार के अन्त के लिए प्रस्तुत विधेयक यद्यपि सिद्धान्त सबको स्वीकार्य था, फिर भी उसके विवरणात्मक रूपो पर लोगो मे तीव्र मतभेद था। १८०८ के पूर्व गुलामी प्रथा के अन्त के लिए प्रयास करना सावैधानिक रूप से व्यवहारिक नही था। १८०६ मे जब नेपोलियन के साथ एक समझौते द्वारा सान डोमिनगो के विद्रोहियो के साथ व्यापार निषिद्ध करार दे दिया गया तो दक्षिणी रिपब्लिकनो ने इस कारवाई का समर्थन किया, अन्यथा वे फ्रास के प्रति मेडिसन के कथित अधीनतापूर्ण रुख के विरोधी थे। उनको भय था कि यदि कैरिबियन मे एक स्वतत्र निग्रो प्रजातत्र कायम रहा तो दक्षिण की स्थिरता सर्वदा खतरे मे रहेगी।

पार्टी के अन्तर्गत भद्दे सघर्ष और १८०० में न्यू इगलैंड मे सघवाद की स्पष्ट समाप्ति के बाद उसके पुनरुज्जीवन के अतिरिक्त, अभी जान मार्शल और सर्वोच्च न्यायालय के साथ सघर्ष कायम रहा। बर-षडयत्र और मुकदमेबाजी, जिससे मार्शल को प्रेसिडेण्ट को चुनौती देने का दूसरा अवसर मिला, अधिक कटु सिद्ध हुए, और स्वय जेफर्सन किसी न किसी रूप मे इसके लिए कुछ जिम्मेदार थे।

कतिपय इतिहासकारो ने कहा है कि जेफर्सन ने उन आकस्मिक अनुकूल परिस्थितियो को नही समझा, जिनके कारण लुइसियाना की खरीद सम्भव हुई। वास्तव में अपने द्वितीय प्रशासन के प्रारम्भिक महीनो मे फ्लोरिडा सम्बन्ध में उन्होंने जो व्यवहार किया, उससे वे विदेशी शक्तियो की दृष्टि में ऊचे नही

उठ सकते थे। एक लाभप्रद प्रान्त के परित्याग के लिए स्पेन को घूस देने अथवा घुडकी-धमकी देने के प्रयास और पारस्परिक सहायता की कल्पना के बिना ब्रिटिश सन्धि के अनिश्चित प्रस्तावो पर युद्धरत विश्व गम्भीरतापूर्वक विचार नही कर सकता था। इस प्रकार की नीति का एकमात्र औचित्य उनकी मागे स्वीकृत न होने पर युद्ध के लिए सकल्प करना था, किन्तु काग्रेस की छटनी-नीति को देखते हुए, जेफर्सन न तो युद्ध करना चाहते थे और न युद्ध के लिए उनके पास कोई साधन-स्रोत ही थे। इसलिए दिसम्बर, १८०५ मे उन्होने अचानक अपनी नीति बदल दी और टैलीरैण्ड को मध्यस्थ बना कर फ्लोरिडा को स्पेन से खरीदने का प्रयास किया, यद्यपि उन्होने इसके पूर्व ऐसी बात की थी, मानो युद्ध होना ही चाहता है। इसके पीछे नेपोलियन का क्या उद्देश्य था यह स्पष्ट नही है, किन्तु इसमे फ्रासीसियो का हाथ था इसमे सन्देह नही और चूंकि अन्य घटनाओ से ब्रिटेन के साथ सहयोग का प्रश्न उठता ही नही था, इसलिए जेफर्सन को मिलाने मे नेपोलियन का कोई विशेष उद्देश्य न रहा होगा। वेनेजुला के उग्रवादी विद्रोही मिरण्डा को स्पेनिश उपनिवेशो के विरुद्ध अवैध युद्ध-अभियान की अनुमति दे दी गयी थी, इसलिए स्पेन के साथ अमरीकी बातचीत का कोई प्रश्न ही नही उठता था। १८०६ के मध्य तक नेपोलियन ने स्पेन और उसके उपनिवेशो के लिए अन्य योजनाए तैयार कर ली थी और अमरीका के लिए फ्लोरिडा और टेक्सास को निकट भविष्य मे प्राप्त करना सम्भव नही रहा।

अमरीकी-स्पेनिश सम्बन्धो की इस असमजसपूर्ण अवधि मे, जबकि युद्ध की स्थिति मे न्यू आर्लियन्स पर अधिकार मानो मूल से भी व्याज भारी हो सकता था, यह कोई आश्चर्य की बात नही है कि पश्चिम का भविष्य ऐसा प्रतीत होता था, जो किसी भी क्षण दृढप्रतिज्ञ अथवा नि सकोची और सिद्धान्तहीन व्यक्तियो द्वारा बदला जा सकता था। बर ने अपने को दृढप्रतिज्ञ की अपेक्षा नि सकोची और सिद्धान्तहीन सिद्ध कर दिया। अपने उद्देश्यो की व्याख्या करने के अतिरिक्त इसके लिए और कोई सतोषजनक कारण नही बताया जा सकता। सच पूछा जाय तो बर को जेफर्सन के बारे मे कोई शिकायत नही थी। हेमिल्टन के मारे जाने के बाद जेफर्सन की उसके प्रति कोई शत्रुता नही रह गयी थी और उन्होने उसके कुछ मित्रो को प्रशासन के महत्वपूर्ण पदो पर भी नियुक्त किया था। यदि न्यायाधीश चेस के विरुद्ध अभियोग की सुनवाई मे अध्यक्ष-पद के लिए जेफर्सन को बर की आवश्यकता थी तो इससे उसकी मित्रता असदिग्ध रूप से

सिद्ध हो जाती है। फिर भी, यह पर्याप्त नहीं था। १८०५ म वर ने षडयत्र का जाल इतनी जटिलता से बुनना शुरू कर दिया कि आज तक उसकी गुत्थियो को सुलझाया नही जा सका।

जैसा कि राजभक्त अमरीकियो को प्रकट हुआ, वर का उद्देश्य टेक्सास और मेक्सिको पर विजय प्राप्त करना था। यदि एक ओर यह उसकी निजी योजना थी ऐसा सोचना विचित्र-सा प्रतीत होता था तो दूसरी ओर वस्तुस्थिति को देखते हुए स्पेन के साथ युद्ध ने इसे एक राष्ट्रीय नीति का रूप प्रदान करने मे सहायता की और इस तरह की घटना पहले भी पश्चिम मे घट चुकी थी। ब्रिटेन के सम्पर्क मे वर के षडयत्र ने प्रतिकूल रूप धारण किया, क्योकि उसने सुझाव दिया कि पश्चिमी राज्यो को सघ से अलग कर दिया जाय और इनको तथा स्पेन से जो कुछ मिल जाय उनको मिला कर, ब्रिटेन के घनिष्ठ सहयोग से एक नया सघ या साम्राज्य स्थापित किया जाय। जब ब्रिटेन के समर्थन की आशा क्षीण हो गयी तब वर ने कुछ उपयुक्त सशोधनो के साथ इसी प्रकार की एक योजना स्पेन के सम्मुख रखी। इन्ही निराधार काल्पनिक उडानो को देखते हुए यह कदाचित् आश्चर्य की बात नही है कि जेफर्सन ने वर के कुचक्रो के बारे मे दी गयी चेतावनियो की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया। इस सारी कहानी का एक अश यह भी है कि जिस व्यक्ति ने प्रान्त मे वर को अपमानित किया और गिरफ्तार कराया, वही उसका सहषड्यत्रकारी था और वह था वरिष्ठ अमरीकी जनरल जेम्स विल्किन्सन, जो बीस वर्ष से स्पेन के सम्राट के गुप्तचर के रूप मे वेतन-भोगी था।

एक बार षड्यत्र का भडाफोड हो जाने पर यह स्पष्ट हो गया कि वास्तविक खतरा नही था। इसके अतिरिक्त, न्यूआर्लियन्स के यूरोपियनो में अमरीकी शासन के प्रति घोर असन्तोष था। वर के साथ क्या किया जाय, यह एक विकट समस्या थी। इस समय तक जेफर्सन की यह धारणा दृढ हो गयी थी कि मामला वस्तुत बडा ही गम्भीर है। वर के पलायन के पूर्व दिसम्बर, १८०६ मे ही जेफर्सन ने लिखा—"हमारा दुस्साहसी षड्यत्रकारी एक सशस्त्र गिरोह का सरदार है। उसका उद्देश्य है न्यूआर्लियन्स पर कब्जा करना, उसके बाद मेक्सिको पर आक्रमण करना, मोण्टिज़ुमा के राजसिहासन पर आसीन होना तथा हो सके तो लुइसियाना को अपने साम्राज्य और पश्चिमी राज्यो मे मिलाना।" वर के गिरफ्तार कर लिये जाने के बाद प्रशासन की सारी शक्ति उसे दण्ड दिलाने के प्रयास मे जुट गयी;

मुकदमे की सुनवाई दौरा जज के रूप मे मार्शल ने की और जान रण्डोल्फ उसमे प्रमुख जूरी थे। इस मुकदमे का उपयोग मुख्य गवाह् विल्किन्सन के द्वारा राष्ट्रपति की निन्दा करने मे किया गया, यहाँ तक कि मार्शल ने स्वय जेफर्सन को गवाही देने के लिए अदालत मे हाजिर होने का आदेश जारी किया। जेफर्सन ने इस आदेश का पालन नही किया, किन्तु इसमे प्रशासन का मामला मजबूत नही हुआ। अन्त मे मार्शल ने सबूत पक्ष को यह कह कर मामला समाप्त करने के लिए विवश किया कि राजद्रोह के मामलो मे सविधान द्वारा स्वीकृत आवश्यक प्रमाण नही प्रस्तुत किया गया। मार्शल की यह एक दूसरी विजय थी।

मामला समाप्त होने के पूर्व सघवादियो ने बर के मामले को अपना मामला बनाने का जिस प्रकार प्रयास किया, उससे जेफर्सन क्षुब्ध हो उठे थे।

२० अप्रैल, १८०७ को उन्होने लिखा—"इस प्रशासन मे अथवा इसके पूर्व प्रशासन मे एक भी ऐसा दृष्टान्त होता, जिसमे सघीय न्यायाधीशो ने कानून के सिद्धान्तो का प्रयोग करते समय किसी सघवादी अपराधी को दण्ड दिया हो और किसी रिपब्लिकन अपराधी को मुक्त कर दिया हो तो इस मामले मे और उदारता से निर्णय करने की बात सोचता। फिर भी इन सबका परिणाम अच्छा ही होगा। स्वय राष्ट्र अपराधी और न्यायाधीशो के बारे मे निर्णय करेगा। यदि कार्यपालिका अथवा विधानमण्डल का कोई सदस्य गलती करता है तो वह दिन दूर नही जब जनता उसे अपदस्थ कर देगी। तभी वह हमारे सविधान की उस गलती मे सुधार करेगी, जो किसी प्रशासनिक शाखा को शेष जनता से अलग करती है।"

करेंगे। कांग्रेस के नाम अपने वार्षिक सन्देश मे उन्होने पुन -बजट मे बचत की सम्भावनाओ का उल्लेख किया और उन्होने आयात-शुल्क की समाप्ति द्वारा उसमे कटौती करने से इन्कार कर दिया। "आयात-शुल्क की समाप्ति से घरेलू उद्योगपतियो के विरुद्ध विदेशी उद्योगपतियो को ही लाभ होता। आयात-शुल्क का अधिकाश भार धनियो पर ही पडता और उसकी आय का उपयोग सार्वजनिक शिक्षा, सडके, नदी-नहरे और ऐसे सार्वजनिक सुधार के कार्यो मे किया जायेगा, जिनसे सघ की सावैधानिक शक्ति को बल मिलेगा। इन कार्यवाइयो से राज्यो के बीच सचार के नये मार्ग खुलेंगे, पृथकता की रेखाएँ विलीन हो जायेंगी, उनके हितो मे एकात्मता आयेगी और उनकी एकता नये तथा अविच्छेद्य बन्धनो द्वारा सुदृढ बनेगी।" किन्तु अभी तक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की योजना को प्रोत्साहन देने के लिए उपयुक्त समय नही आया था। जेफर्सन के अभिभाषण के अन्तिम भाग मे इस ओर अधिक रुचि प्रदर्शित की गयी। उसमे उन्होने युद्ध के खतरो की चेतावनी दी थी और कहा हमारे बन्दरगाहो और नौकानयन-साधनो की सुरक्षा के लिए सगठित रूप से शीघ्र तैयारी करने, हमारे देश के उन भागो को जो आक्रमण के लिए खुले और भेद्य हैं, शीघ्र बसाने और एक ऐसी सेना सगठित करने की आवश्यकता है, जिसके प्रभावशाली और प्रबल दस्तो को सघ के किसी भी स्थान मे भेजा जा सके अथवा उनके बजाय ऐसे स्वयसेवको की आवश्यकता है जो पर्याप्त समय तक सेवा कर सके।"

वास्तव मे स्थिति काफी खतरनाक थी। मई, १८०३ मे, ग्रेट ब्रिटेन और नैपोलियन के साम्राज्य के बीच युद्ध छिड जाने पर अनिवार्य भर्ती और तटस्थ व्यापार मे हस्तक्षेप सम्बन्धी अनेक समस्याए पुन खडी हो गयी। जब युद्ध ने गम्भीर रूप धारण कर लिया और ब्रिटेन के लिए जीवन-मरण का प्रश्न उपस्थित हो गया तब तटस्थता के प्रश्न पर अधिक विचार करने का अवसर क्षीण हो गया। युद्ध के प्रथम दो वर्षो मे, जबकि दोनो युद्धरत राष्ट्रो के पास अभी भी जहाजी बेडे रह गये थे, अमरीकियो के लिए कोई शिकायत की बात नही रही और जे-सन्धि की शर्तो के अनुसार उनका व्यापार और विशेषकर निर्यात-व्यापार बडी तेजी से बढा।

किन्तु १८०५ तक, ब्रिटेन के सामरिक हितो तथा ब्रिटिश समुद्री व्यापार के स्थायी हितो, दोनो ही को इस नरमी से हानि होती प्रतीत हुई। जुलाई, १८०५ में इसेक्स-मामले के निर्णय से अमरीकी व्यापार पर १७५६ का नियम पुन बडी कठोरता से लागू कर दिया गया और 'छद्म-युद्ध' या अक्तूबर मे जेम्स

स्टीफेन द्वारा प्रकाशित 'दी फ्राड्स आफ दी न्यूट्रल फ्लैग्स' (तटस्थ राष्ट्रो की धोखाधडी) नामक पत्रो ने ऐसी योजना का समर्थन किया, जिसके द्वारा सभी तटस्थ जहाजरानी को ब्रिटिश नौकानयन और ब्रिटिश युद्ध-प्रयास के लाभार्थ नियमित करने तथा उस पर कर लगाने की व्यवस्था की गयी थी, उसी महीने मे ट्राफलगार के युद्ध ने इस प्रकार की अत्यन्त महत्वपूर्ण योजना का कार्यान्वय सम्भव बना दिया। एक ही नौसैनिक शक्ति के रह-जाने पर अमरीका के लिए दोनो सैनिक शक्तियो के बीच सन्तुलन स्थापित करने की सम्भावना जाती रही। दूसरी ओर, इगलैण्ड के साथ प्रत्यक्ष सघर्ष का विचार करना भी सम्भव नही था, वह भी ऐसी हालत मे, जब कि कुछ लोग इस बात के लिए तैयार बठे थे कि समुद्रतट और उसके बन्दरगाहो पर आक्रमण हो। दक्षिणी रिपब्लिकनो ने इस सुझाव का मजाक उडाया कि ब्रिटिश माल के बहिष्कार तथा अन्य व्यापारिक दमन की कार्रवाइयो से बिटेन अनिवार्य नौसैनिक भर्ती तथा अमरीकी जहाजो पर अधिकार की नीति का परित्याग कर देगा। मूल सकट अमरीकी समुद्री व्यापार के अस्तित्व तथा व्यापारिक तत्वो के इस सकल्प मे निहित था कि युद्ध के अवसर का उपयोग व्यापार के अस्वाभाविक विस्तार मे किया जाय।

जान रण्डाल्फ ने जोर देकर कहा, "क्या अमरीकी जगल का यह विशाल हाथी अपने मूल लक्ष्य को छोडकर शार्क (एक प्रकार की समुद्री मछली) के साथ विकट सघर्ष के लिए समुद्र मे कूद पडेगा ? अच्छा हो कि वह तट पर ही खडा रहे और तटवर्ती घुघची जलकुम्भी से उत्तेजित न हो।"

काग्रेस के आगामी अधिवेशन मे न्यूयार्क की किलेबन्दी के प्रस्ताव का वर्जीनिया के पुराने रिपब्लिकन नेताओ ने जोरदार विरोध किया। न्यूयार्क का अरक्षित रहना ही इस बात का सर्वोत्तम आश्वासन था कि युद्ध नही होगा। जेफर्सन के दामाद जान एप्स ने घोषणा की, "यदि रिपब्लिकन शासन मे ऐसा कोई सिद्धान्त है, जिसका खुला विरोध होना चाहिए, तो वह यह है कि शान्ति के रक्षार्थ हमे युद्ध के लिए तैयार होना चाहिए।"

यद्यपि काग्रेस मे जेफर्सन को बहुमत प्राप्त हो सकता था, फिर भी उनकी पार्टी के प्रमुख नेताओ के रुख का उन पर प्रभाव पडना अनिवार्य था।

व्यापारिक दबाव के लिए जेफर्सन का प्रयास अन्त मे सफल नही हुआ। अप्रैल, १८०६ मे कतिपय ब्रिटिश वस्तुओ के आयात पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए एक अधिनियम पारित हुआ, किन्तु उसका क्रियान्वय स्थगित कर दिया गया और मनरो तथा विलियम पिकने के एक विशेष शिष्टमण्डल ने लन्दन मे

समझौता करने का प्रयास किया। दिसम्बर, १८०६ मे राजदूतो ने एक सन्धि पर हस्ताक्षर किये, जो बिल्कुल जे-सन्धि के आधार पर तैयार की गयी थी। उसकी शर्तें अमरीकी दावो के इतनी प्रतिकूल थी कि जेफर्सन ने उसे सीनेट मे रखने से ही इन्कार कर दिया। १६ मई, १८०६ को एक- आदेश द्वारा, जो फाक्स-बनाकेड के नाम से प्रसिद्ध हुआ, ब्रिटेन की नीति मे संशोधन किया गया, किन्तु उसका अमरीकियो पर इतना पर्याप्त प्रभाव नही पडा कि वे आयात-निरोधक कानून को रद्द कर दे।'

यूरोप मे युद्ध की प्रगति के साथ दोनो युद्धरत राष्ट्रो ने अपने आर्थिक युद्ध को उग्रतर बनाने के लिए और कार्रवाइयाँ की। नैपोलियन ने नवम्बर, १८०६ मे बर्लिन से एक आदेश जारी किया, जो उसकी 'महाद्वीपीय प्रणाली' के आरम्भ का सूचक था और जिसका उद्देश्य समस्त यूरोप से ब्रिटिश माल का बहिष्कार करना था। जनवरी और नवम्बर, १८०७ के ब्रिटिश शाही हुक्मनामो ने नेपोलियन के साम्राज्य के देशो के साथ व्यापार का निषेध करके उसका बदला लिया, केवल उन्ही देशो के साथ व्यापार कायम रखा गया, जिन्होने लाइसेन्स, नियन्त्रण और चुंगी की ब्रिटिश प्रणाली अपनायी थी। दिसम्बर, १८०७ मे नेपोलियन ने मिलान से आदेश जारी किया कि ब्रिटिश प्रणाली अपनाने वाले तटस्थ देशो के जहाज जब्त कर लिये जायेंगे।

अब अमरीकी धर्म संकट मे पड गये, किन्तु यह संकट इतना विकट नही था, जितना कि सोचा गया था। क्योकि ब्रिटिश प्रणाली से तटस्थ व्यापार को काफी प्रोत्साहन मिलता था और अमरीकी व्यापारियो ने सहर्ष उससे लाभ उठाया होता और उसके नियन्त्रणो को स्वीकार किया होता। किन्तु अनिवार्य नौसैनिक भर्ती की समस्या ने इस बात से और भी उग्र रूप धारण कर लिया कि जे-सन्धि के अनुसार ब्रिटिश जहाज अमरीकी बन्दरगाहो मे रसद-सामग्री लाद सकते थे। जून, १८०७ मे यह मामला और भी आगे बढ गया, जबकि ब्रिटिश युद्धपोत 'लियोपार्ड' ने अमरीकी युद्धपोत 'चेसापीक' पर आक्रमण कर दिया। यदि जेफर्सन ने युद्ध चाहा होता तो इस जन-क्षोभ का उपयोग किया जा सकता था, किन्तु उनका विश्वास था कि आर्थिक दबाव ही पर्याप्त होगा और दिसम्बर, १८०७ मे व्यापारिक प्रतिबन्ध अधिनियम पारित हुआ।

इस अभूतपूर्व कार्रवाई से अमरीकी बन्दरगाहो से किसी भी जलपोत का विदेशो के लिए प्रस्थान निषिद्ध हो गया। सच पूछा जाय तो यह अत्यन्त कठोर ढंग की अपनी ही घेरेबन्दी थी, केवल इतना ही था कि कनाडा और नोवास्का-

शिया से तस्कर व्यापार चालू था और तटवर्ती जहाजरानी से इसमे सहायता मिलती थी। ऐसी परिस्थिति मे ब्रिटेन को इससे हानि हुई और उससे भी अधिक वेस्ट इडियन उपनिवेशो की हानि हुई, किन्तु इसकी प्रभावशीलता के बारे मे यद्यपि मतभेद हो सकते है, तथापि यह ऐसा अस्त्र नही था, जिसके सामने ब्रिटेन घुटने टेक देता और अगस्त, १८०८ मे प्रायद्वीप मे ही युद्ध छिड जाने के वाद स्पेनिश अमरीका का मार्ग, जो उसके व्यापार के लिए खुल गया, इससे उसकी कुछ क्षतिपूर्ति हुई।

जेफर्सन ने अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धो मे शक्ति-प्रयोग के अन्तिम योग को स्वीकार करने से सर्वथा इन्कार कर दिया और न उन्होने यही स्वीकार किया कि इस प्रकार की नीतियो से अमरीका अभी भी एक महत्वहीन राष्ट्र बना हुआ था। उनकी इस विचारधारा से और भी बहुत से लोग सहमत थे। मई १८०६ मे इगलैड मे अपनायी जाने वाली नीति के सम्बन्ध मे मनरो को निर्देश देते समय उन्होने अमरीका की प्रबल नौसैनिक शक्ति के बारे मे (यदि फ्रास उसे सहायता देना चाहे तो) लिखा था और जोरदार शब्दो मे घोषणा की थी—

"हमारी यह धारणा बनने लगी है कि समस्त गल्फ स्ट्रीम हमारे अधिकार क्षेत्र के अन्तर्गत है और सम्प्रति उसमे युद्ध और युद्धपोतो के आवागमन का विरोध होना चाहिए तथा जनमत अथवा जनबल के अनुकूल होते ही हम उनका निषेध करेगे। हम कभी भी उसमे निजी सशस्त्र जलपोतो के यातायात के लिए अनुमति नही देगे और अपने बन्दरगाहो को राष्ट्रीय युद्धपोतो के लिए निषिद्ध बना देगे। हमारी शान्ति और व्यापार के लिए यह अत्यत आवश्यक है।"

अटलाटिक महासागर मे एक प्रभावशाली सुरक्षा-क्षेत्र के निर्माण में १३५ वर्ष लग गये।

निर्भीक जेफर्सन ने एक नवीन नौसैनिक महासघ की योजना बनानी आरम्भ कर दी थी, जिसका उद्देश्य था ब्रिटेन द्वारा १८०० की सशस्त्र तटस्थता-सन्धि के शीघ्र अन्त की परवाह न करके नेपोलियन पर समुद्री स्वतत्रता के बारे मे अमरीकी विचारो को लादना। उनकी महान आशा सम्राट अलेक्जेण्डर थे, जिनके प्रति, वाशिगटनस्थित फ्रासीसी मत्री के अनुसार, अमरीकी सरकार की और विशेषकर जेफर्सन की अगाध श्रद्धा थी। निस्सन्देह जेफर्सन प्राय आत्म-प्रवचना के भा शिकार हो जाया करते थे और इसका एक ज्वलन्त दृष्टान्त यह है कि उनकी ज़ार के प्रति भी श्रद्धा थी, यद्यपि इस मामले मे वे अकेले ही आत्मप्रवचना के शिकार न थे। १९ अप्रैल,, १८०६ को उन्होने अलेक्जेण्डर को

जिस भाव मे पत्र लिखा था, वह निश्चय ही एक अमरीकी देशभक्त और प्रजातन्त्रवादी के लिए विचित्र था। उसमे उन्होने ज़ार से कहा था कि यूरोप की आगामी शान्ति-सन्धि मे समुद्र मे तटस्थ राष्ट्रो के अधिकारो को पूर्ण मान्यता प्रदान की जाय।

जेफर्सन ने लिखा, "मेरे जीवन की यह एक नवीन और अत्यन्त आनन्ददायक घटना है कि मैं एक सम्राट को इतनी कम अवस्था मे इतने विशाल साम्राज्य पर शासन करते देखता हूँ, जिसकी शासकीय महत्वाकाक्षा यही है कि उसकी जनता सुखी और सम्पन्न हो, इतना ही नही, जो विना किसी दुष्प्रवृत्ति और महत्वाकाक्षा के, एक दूरवर्ती और नये राष्ट्र की ओर सद्भावना की दृष्टि से देखता है।"

अब जेफर्सन का व्यापारिक प्रतिवन्ध की उपयोगिता मे विश्वास पैदा हो गया। विदेश-नीति की आवश्यकताओ के कारण ही यह कार्रवाई नही की गयी, वल्कि व्यापार के नवीन प्रयासो का भी यही आधार होने वाली थी। फरवरी, १८०८ मे, जेफर्सन ने न्यूयार्क की टाम्मनी सोसायटी को लिखा,

"हवा की तरह महासागर पर भी मानव-जाति का जन्मसिद्ध अधिकार है। उसे आज जवर्दस्ती हमसे छीना जा रहा है और सर्वोच्च शक्ति द्वारा युगो के परम्परागत सिद्धान्तो का हनन किया जा रहा है। आज अनैतिकता की एक दूषित और प्रचण्ड लहर चल रही है, जिसके कुत्सित प्रभाव से अपने प्रिय देश को वचाने का एक ही मार्ग है और वह यह है कि अपने सहनागरिको की सुवुद्धि को इस वात के लिए अनुप्रेरित किया जाय कि युद्धरत राष्ट्रो के साथ तव तक के लिए सभी प्रकार का सम्वन्ध-विच्छेद कर दिया जाय जव तक राष्ट्रो और व्यक्तियो के लिए ऐक कानून द्वारा नैतिक उत्तरदायित्व की भावना के पुनर्निर्माण के अन्तर्गत उनके वीच पुन सम्वन्ध स्थापित न हो जाय। किसी सच्चे अमरीकी के मन मे यह प्रश्न नही उठ सकता कि यह वात अच्छी होगी या नही, कि अपने नागरिको और सम्पत्ति को एक प्रकार की शृङ्खला मे आवद्ध किया जाय, फिर उनके उद्धार के लिए अथवा उन्हे स्वदेश मे ही रखने के लिए युद्ध किया जाय और तव एक ऐसी नीति पर गम्भीरतापूर्वक विचार किया जाय, जो उद्योगपति और कृषक को समान स्तर पर स्थापित करे और प्रत्येक व्यक्ति द्वारा पारस्परिक श्रम और आनन्द के आदान-प्रदान की उस प्रणाली की स्थापना की जाय, जिसके लिए हमने अभी तक दूरवर्ती क्षेत्रो मे और वहाँ के लोगो के साथ झगडो का निरन्तर खतरा उठा कर प्रयास किया है।"

किन्तु विदेशी व्यापार पर आधारित अर्थतन्त्र को निजी एव वर्गीय हितो को अत्यन्त प्रभावित किये बिना एक आत्मनिर्भर तन्त्र के रूप मे कभी बदला नही जा सकता । इसमे सन्देह नही कि व्यापारिक प्रतिबध के सरक्षण मे उद्योग को खूब फलने-फूलने का मौका मिला, किन्तु इससे व्यापारिक वर्ग को हुई हानि की क्षतिपूर्ति नही की जा सकती थी । अपने उत्पादन के लिए बाजारो को खोलने पर भी दक्षिण राजभक्त बना रहा, इस हानि से वर्जीनिया का और भी पतन हुआ—और मध्य राज्यो मे हानि और लाभ का सन्तुलन कायम रहा । किन्तु न्यू इगलैण्ड ने विद्रोह कर दिया, सघवादी पृथक्तावाद ने पुन सिर उठाया और जेफर्सन ने अपनी पार्टी के राजनीतिक सिद्धान्त 'राज्यो के अधिकार' के समूचे आधार को चुनौती देते हुए सघीय कार्रवाई द्वारा पृथकता को साकार रूप प्रदान किया ।

जेफर्सन कुछ समय तक इस भ्रम मे रहे कि सब कुछ ठीक ही होगा । अगस्त, १८०८ तक वे प्रकट करते रहे कि ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका के बीच समझौता सम्भव है और तब यदि नेपोलियन और स्पेन के बीच युद्ध जारी रहा तो अमरीका टेक्सास और फ्लोरिडा पर अधिकार कर लेगा । किन्तु पुन. यह आवाज बुलन्द हुई कि वे अमरीकी हितो को फ्रास के प्रति अपने पूर्वस्नेह की वेदी पर बलिदान कर रहे हैं । पार्टी के अन्दर रण्डाल्फ के नेतृत्व मे असन्तुष्ट तत्वो ने मेडिसन के विरुद्ध अभियान आरम्भ कर दिया था, जिसे जेफर्सन अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे । वे मनरो के समर्थक थे । न्यूयार्क मे एक दूसरे गुट ने उप-राष्ट्रपति क्लिण्टन का समर्थन किया । राज्यीय चुनावो मे सघवादियो की विजय से मालूम होता था कि हवा का रुख रिपब्लिकनो के विरुद्ध है, किन्तु असन्तुष्ट रिपब्लिकनो का सघवादियो से समझौता न होने के कारण मेडिसन की इज्जत रह गयी । वह भी, यदि वरमोण्ट और न्यूयार्क ने जनमत द्वारा राष्ट्रपति के निर्वाचको को चुना होता तो मेडिसन इन राज्यो मे तो हार ही जाते, पेनसील्वानिया मे भी हार जाते और अन्त मे चुनाव मे भी हार जाते । निर्वाचनमण्डल मे फेडरलिस्टो की सख्या १८०४ मे १४ थी और १८०८ मे वह ४७ तक पहुच गयी, किन्तु इससे भी उनकी पूरी शक्ति का पता नही लग सकता था । न्यू इगलैण्ड मे प्रजातन्त्रवाद के निर्माण के लिए जेफर्सन का प्रयास विफल हो चुका था और यह स्पष्ट हो गया था कि व्यापारिक प्रतिबन्ध को जारी रखने से सघ सर्वनाश के निकट पहुच जायेगा ।

जेफर्सन ने अन्तिम क्षरण तक व्यापारिक प्रतिबन्ध को जारी रखने का

प्रयास किया और उसके सरक्षणात्मक प्रभावो के प्रत्येक लक्षण की ओर काफी ध्यान देते हुए उसकी कूटनीतिक प्रभावहीनता की उपेक्षा की। उन्होने लफायत को लिखा, "इसका एक अत्यन्त सुखद और स्थायी परिणाम निकला है। इसने हम सब को घरेलू उद्योग-धधो मे लगा दिया है और मेरा निश्चित विश्वास है कि इससे भविष्य मे इगलैण्ड से पूरी होने वाली हमारी मागे आधी ही रह जायेगी।' किन्तु यह स्पष्ट था कि कोई कारवाई करने के पूर्व काग्रेस जेफर्सन की अवधि के अन्त के लिए प्रतीक्षा नही करेगी। १ मार्च को व्यापारिक प्रतिबन्ध रद्द कर दिया गया किन्तु आर्थिक दबाव के सिद्धान्त का परित्याग नही किया गया, क्योकि उसके स्थान पर काग्रेस ने साथ ही साथ इगलैण्ड और फ्रास के साथ व्यावहारिक लेनदेन विषयक सम्बन्ध-विच्छेद के लिए एक कानून बना दिया और यह निर्णय किया कि तटस्थ व्यापार के विरुद्ध जो भी पहले अपनी कारवाई वापस ले लेगा, उसके विरुद्ध यह कानून लागू नही होगा। तीन दिन बाद जेफर्सन मेडिसन की बगल मे खडे हुए, जबकि कठोर जान मार्शल ने उन्हे पदग्रहण की शपथ दिलायी। जेफर्सन की यह अन्तिम सार्वजनिक उपस्थिति थी। लगभग ६६ वर्ष की अवस्था मे वे पुन सर्वदा के लिए नागरिक बन गये।

राष्ट्रपति-पद की अपनी द्वितीय अवधि मे जेफर्सन ने बहुत से ऐसे कार्य किये, जिनमे उनकी लोकप्रियता और प्रभाव नष्ट हो गया और उनकी आकाक्षाओ के प्रति काग्रेस की उदासीनता उनके अपने राज्य के अलावा देश के अधिकाश लोगो की भावना की द्योतक थी। वास्तव मे वे एक चिन्ताजनक उलझन मे फँस गये थे। हेनरी एडम्स ने उनकी इस स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है—

"उन्होने एक ऐसी सरकार के निर्माण का उत्तरदायित्व ग्रहण किया था, जो किसी भी प्रकार निजी कार्यो में हस्तक्षेप नही करे, किन्तु उन्होने एक ऐसी सरकार बनायी, जिसने देश के प्रत्येक नागरिक के निजी कार्यो मे प्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप किया। राज्यो के अधिकारो का प्रबल समर्थन करके उन्होने सत्ता ग्रहण की थी और उन्होने राज्यो को सशस्त्र प्रतिरोध की सीमा तक पहुचा दिया। उन्होंने कठोर मितव्ययिता का दावा करते हुए कार्य आरम्भ किया और अन्त मे खर्च मे अपने पूर्वाधिकारियो को भी मात कर दिया। उन्होने शान्ति की नीति को जन्म दिया था और उनकी इस नीति के अन्तिम

परिणामस्वरूप विश्व के दो महानतम राष्ट्रों के साथ युद्ध की नौबत आ गयी।"

जेफर्सन के देशवासी दीर्घकाल के बाद उनकी सफलताओं को समझे और वास्तविक अर्थ में उस महापुरुष की महत्ता की सराहना की।

अध्याय–१०

वयोवृद्ध राजनीतिज्ञ

(१८०६–१८२६)

मेडिसन के नेतृत्व मे युद्धरत यूरोपीय राष्ट्रो के विरुद्ध आर्थिक दबाव की विभिन्न कार्रवाइयाँ निष्फल सिद्ध हुईं और अनिवार्य नौसैनिक भर्ती तथा तटस्थ व्यापार की समस्याए पूर्ववत कायम रही। बढते हुए पश्चिमी राज्य और प्रदेश ऊपरी कनाडा की उर्वर भूमि की ओर लालच भरी दृष्टि से देख रहे थे और उसके निवासियो के प्रति उनकी शत्रुता की भावना बढती जा रही थी। उनका आरोप था कि कनाडियन अमरीकी प्रवास की प्रगति का प्रतिरोध करने के लिए इडियनो को उभाड रहे है। १८१२ मे, पश्चिमी विस्तारवादियो ने ब्रिटेन की नौकानयन-नीति से उत्पन्न क्षोभ से लाभ उठाकर अनिच्छुक मेडिसन को ब्रिटेन के साथ युद्ध के लिए विवश कर दिया। युद्ध तथा उसके परिणामस्वरूप आर्थिक तथा सैनिक कार्रवाइयो से न्यू इगलैण्ड का सघवाद पुन उत्तेजित हो उठा। पश्चिम के प्रति पूर्वी राज्यो के वैमनस्य का रूप उन वादविवादो मे परिलक्षित हुआ, जो लुइसियाना राज्य की मान्यता के पूर्व हुए थे। जेफर्सन ने अपने राष्ट्र के लिए जो प्रदेश प्राप्त किये थे, उन्ही मे से पहले पहल लुइसियाना का निर्माण हुआ। अब सघ को पश्चिम के 'युद्धप्रिय लोगो' और उनके दक्षिणी सहयोगियो ने, जिन्हे कनाडा के सतुलन मे फ्लोरिडा को देने का वादा किया था, एक अनावश्यक युद्ध मे झोक दिया था। सघवादी गवर्नरो ने यथासम्भव बाधा डालने का प्रयास किया। समुद्र मे कुछ व्यक्तिगत सफलताओ और न्यूआर्लियन्स मे एण्ड्र जैक्सन की विजय के बावजूद युद्ध से कोई गौरव प्राप्त नही हुआ। एण्ड्र जैक्सन एक ऐसे व्यक्ति थे, जिन पर जेफर्सन ने कभी विश्वास नही किया और बर-काण्ड मे जिनका आचरण बडा ही सन्देहपूर्ण रहा। विजय भी दूरवर्ती घेण्ट मे सन्धि पर हस्ताक्षर के बाद प्राप्त हुई थी। राष्ट्रपति की हैसियत से मेडिसन को उसी तरह के अपमान का सामना करना पडा, जिस तरह का जेफर्सन को वर्जीनिया के गवर्नर की हैसियत से राजधानी से पलायन करते समय सहन करना पडा था। वाशिगटन यार्क (आधुनिक टोरण्टो) के अमरीकी व्यवहार का बदला लेने के लिए क्षुब्ध हो उठा था। घेण्ट की सन्धि से किसी भी समस्या का हल नही हुआ, जिसके लिए नाम मात्र का युद्ध हुआ था, किन्तु बाद की सन्धियो से जटिल कनाडियन सीमा का प्रश्न अधिकतर हल हो गया और दो महान उत्तरी अमरीकी राष्ट्रो के भावी शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का मार्ग प्रशस्त हो गया। शीघ्र ही एण्ड्र जैक्सन की उद्दण्डतापूर्ण कार्रवाइयो ने फ्लोरिडा के पृथक हो जाने मे सहायता की और इडियनो तथा यूरोपीय शक्तियो के साथ सघर्ष के अन्य प्रमुख स्रोत का अन्त कर दिया।

१८१६ मे निर्वाचित राष्ट्रपति जेम्स मनरो 'वर्जीनिया वश' के अन्तिम राष्ट्राध्यक्ष थे और अपने पूर्वाधिकारियो की अपेक्षा कम प्रख्यात थे। सौभाग्य से अध्यक्ष-पद ग्रहण करते समय परिस्थिति उनके अनुकूल थी। सन्धि से रिपब्लिकन पार्टी के अन्तर्गत एक नयी राष्ट्रीय एकता का जन्म हुआ। सघवाद समाप्तप्राय था और मनरो-काल 'सद्भावना के युग' के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

यह सत्य है कि १८२० के प्रारम्भ का अमरीका अनेक अर्थो मे वाशिगटन-काल के अमरीका से भिन्न था। आकर्षण का केन्द्र पश्चिम बनता जा रहा था, जिसे रोका नही जा सकता था। नये राज्यो को मिलाया गया, १८१२ मे लुइसियाना, १८१६ मे इडियाना, १८१७ मे मिस्सिसिपी, १८१८ मे इल्लिनोस, १८१९ मे अल्बामा और १८२१ मे मिसूरी। प्रत्येक का अर्थ था काग्रेस मे और निर्वाचन-मण्डल मे शक्ति-परिवर्तन—मेन को पूर्वी राज्यो की सूची मे रखने से शक्ति-सन्तुलन मे कोई विशेष अन्तर नही पडा, किन्तु राष्ट्रीय परिषदो मे न्यू इगलैण्ड के सघवादियो का ही महत्व कम नही हुआ, बल्कि 'राज्यो के अधिकारो' के पुराने रक्षक वर्जीनिया के रिपब्लिकनो को भी मात खानी पडी।

१८११ मे अमरीका का पहला बैंक अपने चार्टर के साथ समाप्त हो गया, किन्तु युद्धोत्तर आर्थिक व्यवस्था की गडबडी से एक नये सेण्ट्रल बैंक के समर्थको को अपना मार्ग प्रशस्त करने मे सहायता मिली और अमरीका के दूसरे बैंक की स्थापना की गयी। युद्ध और व्यापारिक प्रतिबन्ध की छाया मे स्थापित नये उद्योगो को सरक्षण की आवश्यकता थी और हेमिल्टन की राष्ट्रीय तटकर-योजना का औचित्य उसके मरने के बाद समझा गया। मनरो ने जब पदग्रहण किया तो वे एक साविधानिक स्वीकृति के बिना, जैसा कि जेफर्सन अथवा मेडिसन ने कहा था, आन्तरिक सुधारो के लिए सघीय समर्थन के कट्टर विरोधी थे, किन्तु पश्चिमी हितो के दबाव मे पडकर वे कमजोर पड गये, किन्तु अपनी अवधि के अन्तिम वर्षो मे और उससे भी अधिक उनके उत्तराधिकारी जान क्विन्सी एडम्स के समय सघीय निधि का द्वार खुल गया। जेफर्सन के जीवन के अन्तिम वर्षो का अमरीकी लोकतन्त्र विभिन्न समुदायो के साथ बडी तेजी से प्रगति कर रहा था और अपनी साविधानिक कट्टरताओ की अपेक्षा अपनी परम्परा के विकास मे अधिक रुचि ले रहा था। सस्थापको का युग समाप्त हो रहा था।

यदि जेफर्सन ने अपने ग्रामीण एकान्त जीवन मे इन विकासो की ओर उतना ही ध्यान दिया होता तो यह एक आश्चर्यजनक बात होती, यद्यपि उनमे

से अधिकाश के मूल कारण पश्चिम की ओर विस्तार के भी थे। कुछ मामलो मे जेफर्सन के विचार पूर्ववत् कायम रहे। वे अभी भी कागजी मुद्रा को घृणा की दृष्टि से देखते थे और यह घोषित करने को तैयार थे कि इसी के आधार पर ब्रिटेन का पतन होगा। राजनीतिक तौर पर अमरीका के दूसरे बैंक की स्थापना ने एक बार फिर उसकी वैधानिक नीति सम्बन्धी प्रश्न खडा कर दिया और पश्चिमी तथा दक्षिणी राज्यो और सर्वोच्च न्यायालय के बीच सघर्ष का महत्वपूर्ण कारण बन गया।

मेडिसन के राष्ट्रपति काल मे अनेक ऐसे निर्णय किये गये, जिनमे सर्वोच्च न्यायालय ने राज्यीय कानून को सविधान के विपरीत घोषित करने के अपने अधिकार का उपयोग किया और सिद्ध कर दिया कि वह इकरारनामो के सावि-धानिक सरक्षण के अन्तर्गत निजी और सयुक्त सम्पत्ति-अधिकारो की रक्षा मे इस अधिकार का उपयोग कर सकता है।

युद्धोत्तर मन्दी-काल मे अनेक राज्यो ने कर्जदारो की रक्षा करने तथा अम-रीकी बैंक के कार्य-सचालन को दबाने के लिए कानून बनाने का प्रयास किया। सकट के लिए बैंक की दुर्व्यवस्था को ही दोषी ठहराया गया। इस प्रकार के कानून आर विशेषकर बैंक की शाखाओ पर दबाव डालने वाले कानूनो के सम्बन्ध मे न्यायालय को उस कानून की साविधानिकता के बारे मे निर्णय करने के लिए कहा गया, जिसके कारण बैंक का चार्टर बना। मार्शल ने मैकुलोक बनाम मेरीलेण्ड (१८१९) के मामले मे बैंक के पक्ष मे जो निर्णय दिया और ओस्बोर्न बनाम बैंक आफ यूनाइटेड स्टेट्स (१८२४) के मामले मे अपने उक्त निर्णय की जो पुष्टि की, उससे सघीय सत्ता के न्यायिक विस्तार मे एक महत्वपूर्ण स्थिति का श्रीगणेश हुआ, क्योकि इसने स्पष्टत न्यायालय को अधिकारो के स्वरूप और मर्यादा सम्बन्धी हेमिल्टन के सिद्धान्त के पीछे छोड दिया।

मैकुलोक बनाम मेरीलैंड के मामले मे निर्णय की विशेपकर वर्जीनिया मे तीव्र प्रतिक्रिया हुई, जहा राज्य-न्यायाधिकारी वर्ग के प्रधान स्पेन्सररेने ने तीव्र आलोचना की और उसका समर्थन मेडिसन, रिचमोण्ड के 'इन्क्लोर' के सम्पादक थामस रिची और स्वयं जेफर्सन ने किया। जेफर्सन के विचार से '१८०० की क्राति' ने स्पष्ट रूप मे 'सघीय पद्धति' का जो समर्थन किया था, उसके बाद न्यायाधिकारी वर्ग ने 'सुदृढीकरण' का पक्ष ग्रहण करके राष्ट्र की वास्तविक इच्छा' के मार्ग मे पुन एक बार रोडा अटका दिया। उन्होने रेने से भी बढ कर उनके इस विचार का खण्डन किया कि अन्ततोगत्वा न्यायाधिकारी-

वर्ग ही सघीय सरकार के तीन सम्वद्ध भागो के बीच के सम्बन्धो के बारे मे निर्णय करेगा। न्यायाधिकारी-वर्ग का अनिर्वाचित और स्वतन्त्र होना ही इस दृष्टिकोण का खण्डन करने के लिए पर्याप्त था।

"इस मान्यता के आधार पर सविधान न्यायाधिकारियो के हाथ मे एक मोम की चीज है, जिसे वे तोड-मरोडकर किसी भी रूप मे वदल सकते हैं। राजनीति के इस शाश्वत स्वयसिद्ध सिद्धान्त को कदापि नही भूलना चाहिए कि सिद्धात मे ही किसी शासन मे जो सत्ता स्वतत्र होती है, वह पूर्ण भी होती है, किन्तु जब जनता की भावना उग्र होती है, व्यवहार मे वह उतनी ही शिथिल होती है। जन-साधारण के अतिरिक्त और कही भी स्वतन्त्रता मे विश्वास नही किया जा सकता। वह स्वभावत नैतिक विधान के अतिरिक्त सब चीजो से स्वतन्त्र होता है।"

दूसरी ओर, इस बात की भी उपेक्षा नही करनी चाहिए कि जेफर्सन के सामने एक नया धर्मसकट था, क्योकि मारबरी बनाम मेडिसन के मामले मे जहाँ मार्शल का मूल अपराध यह था कि उन्होने काग्रेस के एक कानून को अवैधानिक घोषित कर दिया था, वहा जेफर्सन इस बात का विरोध कर रहे थे कि उन्होने बैक चार्टर कानून को अवैधानिक घोषित नही किया।

किन्तु इस स्पष्ट असगति की जेफर्सन को चिन्ता नही थी, उन्होने हर मौके पर इस खतरनाक सिद्धान्त की निन्दा की कि सविधान ने सभी सावैधानिक समस्याओ पर न्यायाधीशो को अन्तिम पच बना दिया है।

उन्होने अपनी आत्मकथा मे लिखा, "एक साधारण सरकार, जिसके वे स्वय प्रमुख अग है और एक निजी राज्य—जिससे आशा या भय का उन्हे कोई कारण नही है,—के बीच एक निष्पक्ष निर्णय की हम आशा कैसे कर सकते हैं? हमने यह भी देखा है कि सभी उचित आदर्शो के विपरीत, उनकी आदत-सी बन गयी है कि वे अपने सम्मुख उपस्थित समस्या से परे चले जाते है, भावी प्रगति को और भी रोकने का प्रयास करते है। वे तब 'सफर मैनो' के दल का काम करते है और धीरे धीरे राज्यो के स्वतत्र अधिकारो का दमन करने तथा उस सरकार के हाथ मे सारी सत्ता को सुदृढ बनाने का प्रयास करते हैं, जिसमे उनकी महत्वपूर्ण करमुक्त सम्पत्ति होती है।"

वर्जीनिया मे फेयरफैक्स परिवार की भूसम्पत्ति के सम्बन्ध मे जो मुकदमे चले, उनमे मार्शल के साथियो ने स्वय राज्यो के न्यायालयो पर सर्वोच्च अधिकारो की ही पुष्टि की, और केरोलाइन के जान टेलर ने अपनी तीन पुस्तको

मे, जो १८२० और १८२३ के बीच प्रकाशित हुई, राज्यो के दृष्टिकोण को स्पष्टरूप से प्रकट किया। कोहेन्स बनाम वर्जीनिया के मामले मे, जिसका फैसला १८२१ मे हुआ, मार्शल ने सघीय दावे के पक्ष मे अपने व्यक्तिगत अधिकार का उपयोग किया। जेफर्सन ने राज्यो के अधिकार के सिद्धान्त का प्रबल समर्थन किया और टेलर को एक पत्र भेजा, जो उसकी अन्तिम पुस्तक मे विज्ञापन के रूप में प्रकाशित हुआ।

१८२१ मे जेफर्सन ने दोनो को लिखा, "मुझे सघीय न्यायाधिकारियो से अधिक भय है। गुरुत्वाकर्षण की भाँति अधिकारियो का यह वर्ग सर्वदा धीरे और चुपके से एक-एक कदम बढाता जा रहा है और जो कुछ मिल जाता है, उस पर दृढता से अपना पजा जमाते हुए बडी मक्कारी से विशिष्ट सरकारो को उस सरकार के जबडो की ओर खीचता जा रहा है, जो उनका पालन-पोषण करती है।

न्यायालय के विरुद्ध सघर्ष बढ जाने पर यह स्पष्ट हो गया कि उसके दावो के विरोध मे जेफर्सन यद्यपि मेडिसन से अधिक उग्र थे, फिर भी वे स्वय वास्तविक उग्रवादियो के लिए उतने उग्र नही थे। मार्शल का दृढ विश्वास था कि सविधान तथा स्वय सघ के विरुद्ध सचालित अभियान के पीछे जेफर्सन का प्रमुख हाथ था, किन्तु यह विश्वास बिल्कुल निराधार था और दोनो महान वर्जीनियन नेता एक-दूसरे के सामने आने पर सर्वदा सन्तुलन का जो असाधारण अभाव प्रदर्शित करते थे, उसका यह प्रमाणपत्र है।

वास्तविक प्रश्न यह नही था कि दक्षिण और पश्चिम के राज्यो को इन समस्याओ पर न्यायालय से सहमत होना चाहिए या नही, बल्कि असहमति होने पर उन्हे क्या करना चाहिए। वर्जीनिया और केण्टकी के प्रस्तावो से आविर्भूत समस्या पुन सजीव हो उठी। सघीय न्यायाधीशो की कार्यावधि को मर्यादित करने के उद्देश्य से सविधान मे सशोधन करने सम्बधी पुराने प्रस्ताव के पारित होने की अभी सम्भावना नही थी और जेफर्सन के इस प्रस्ताव का कोई परिणाम नही निकला कि काग्रेत को 'कोहेन्स बनाम वर्जीनिया' के निर्णीत सिद्धान्तो का विशेषरूप से खण्डन करना चाहिए।

अब प्रश्न यह था कि विरोधी के रूप में दक्षिण को—१८१२ के युद्ध मे न्यू इग्लैण्ड के राज्यो द्वारा अपनायी गयी कूटनीतियो को अपना कर—सघीय सविधान को, उसके कार्यान्वय मे सहयोग से इन्कार कर 'रद्द' कर देना चाहिए नही। इस प्रकार की कार्रवाई के सफल परीक्षण के लिए बैक का प्रश्न

अनुकूल नही था। जेफर्सन के जीवन के अन्तिम दो वर्षो मे, दक्षिण और पश्चिम मे, सघीय नीति मे दो नये परिवर्तनो का सक्रिय विरोध किया गया—'आन्तरिक सुधारो' के लिए सघीय समर्थन का और सरक्षणात्मक तट-कर का। जेफर्सन ने राज्यो की सीमाओ के अन्तर्गत नहरो और सडको पर सघीय राजस्व के व्यय का औचित्य सिद्ध करने के लिए साविधानिक निर्माण की प्रणाली का प्रबल विरोध किया और सुझाव रखा कि वर्जीनिया मे नये प्रस्ताव पारित कर राज्यीय सार्वभौमिकता के सिद्धान्त की पुष्टि की जाय, किन्तु वे सघ के साथ सम्बन्ध-विच्छेद की सीमा तक जाने को तैयार नही थे और चाहते थे कि जब असीम अधिकारसम्पन्न शासन के सम्मुख झुकने के अतिरिक्त और कोई मार्ग न रह जाये तभी जबर्दस्त कार्रवाई की जानी चाहिए।

राज्य-सरकारो के लिए पूर्ण अधिकार की आवश्यकता पर बल देते समय जेफर्सन साविधानिक व्याख्या के किसी आतरिक सिद्धान्त का सहारा नही ले रहे थे। उनके लोकतात्रिक सिद्धात का मूल अश यह था कि छोटी-छोटी इकाइया, जिनमे व्यक्तिगत नागरिक के उत्तरदायित्व अधिक स्पष्ट हो, एक विशाल सघ की अपेक्षा अधिक सन्तोषजनक होती हैं। वे राज्य-सरकारो को ही बलशाली नही बनाना चाहते थे, बल्कि उन काउण्टियो को भी सुदृढ बनाना चाहते थे, जिनमे दक्षिणी राज्य विभाजित थे और इन काउण्टियो को भी कथित वार्डो मे विभाजित करना चाहते थे, जो इगलैड के बराबर थे। इन वार्डो की अर्थात् लगभग ६ वर्ग मील की इकाइयो की तुलना सैकडो ऐंग्लो सैक्सन प्रदेशो से करते थे किन्तु उन्हे केवल पुलिस-अधिकार ही नही मिलने वाले थे, बल्कि उन्हे गरीबो की तथा प्रारम्भिक शिक्षा की भी व्यवस्था

ताकि अन्त मे प्रत्येक व्यक्ति की खेतीबाडी और अन्य मामलो का प्रशासन स्वय उसी के हाथ मे चला जाय और प्रत्येक चीज की देखभाल वह स्वय कर सके। ऐसा करने मे सब कुछ श्रेयस्कर होगा।"

पाच वर्ष बाद लिखी गयी अपनी आत्मकथा मे उन्होने एक ही वाक्य मे उस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया, जिसकी प्रतिध्वनि पूर्वापेक्षा आज अधिक जोर से सुनाई पडती है और वह है, "यदि हमे वाशिंगटन से निर्देश मिले कि कब बोना चाहिए और कब काटना चाहिए तो हमे जल्दी ही रोटी के लाले पड सकते हैं।"

सघीय सरकार के विरुद्ध मामले को बहुत आगे बढाने मे जेफर्सन की हिच-किचाहट का कारण निस्सन्देह एक दूसरी साम्प्रदायिक समस्या का उठ खडा होना था, जो पुरानी समस्याओ से भी अधिक महत्वपूर्ण थी और वह थी दासता की समस्या। सघ के नये प्रदेशो को गुलाम राज्य बनाना और इस प्रकार प्राचीन दक्षिण के नेतृत्व को सुदृढ बनाना था, जिसका अर्थ होता भूस्वामी-अर्थतत्र और उस पर आधारित समाज के और अधिक विस्तार को रोकना ? यदि सघ मे स्वतत्र राज्यो की सख्या बढायी जाती तो दास रखनेवाले राज्यो के सिनेट मे एक-तिहाई से भी कम सदस्य रह जाते, जबकि उन्हे अपने हितो के प्रतिकूल कानूनो पर निषेधाधिकार के उपयोग के लिए इतने मतो की तो आव-श्यकता थी ही।

यह समस्या पहलेपहल उस समय खडी हुई, जब मिसूरी ने राज्य के रूप मे सघ मे प्रवेश के लिए आवेदन किया। काग्रेस मे उत्तरी राज्यो के सदस्यो ने प्रवेश के लिए शर्त के रूप मे अपनी सीमाओ के अन्तर्गत गुलामी को निषिद्ध बनाने का प्रयास किया।

दिसम्बर, १८१९ मे जेफर्सन ने जान एडम्स को एक पत्र लिखकर घोषणा की कि इस प्रश्न के सामने अन्य सभी राजनीतिक प्रश्न महत्वहीन पड गये हैं। "मिसूरी की समस्या उस सीमा तक पहुँच गयी है, जहाँ हम मिसूरी को खो देगे और देश मे विद्रोह हो जायगा, और क्या होगा, यह ईश्वर ही जाने।" उसके बाद फरवरी मे एक पत्र मे उन्होने घोषणा की, "क्रान्तिकारी युद्ध के भयकरतम क्षण मे भी मैं इतना भयभीत कभी नही हुआ था।" अप्रैल मे उन्होने लिखा कि मिसूरी की समस्या ने सार्वजनिक मामलो मे मेरी सुसुप्त रुचि को जागृत कर दी है। "इस महत्वपूर्ण प्रश्न ने रात मे बजनेवाली खतरे की घण्टी की तरह मुझे जागृत और आतकित कर दिया है।" जेफर्सन ने सोचा था कि

इसके पीछे सघवादियो का हाथ है और वे रिपब्लिकनो मे फूट पैदा करना चाहते हैं, किन्तु अब वे अपने लेख में ऐसी भाषा का प्रयोग करते थे, जिमसे यह सिद्ध होता था कि उन्हे मालूम था कि पार्टी के साथ साथ और भी कुछ खतरे मे था। यह सच है कि मिसूरी के सन्तुलन के लिए एक पृथक स्वतत्र राज्य के रूप मे मेन को मान्यता प्रदान करके सम्प्रति समस्या का समाधान निकाल लिया गया था और इसके साथ ही साथ यह भी आदेश जारी कर दिया गया था कि मिसूरी की दक्षिणी सीमा के उत्तरी अक्षाश मे अब और किसी गुलाम राज्य को मान्यता नही प्रदान की जायगी, किन्तु उन्होने महसूस किया कि समझौता स्थायी नही हो सकता। "किसी भी समय जनता के क्रोधावश को रोकने के उद्देश्य मे सुविचारित नैतिक एव राजनीतिक सिद्धान्त के माथ साथ निर्धारित भौगोलिक रेखा कभी विलीन नही होगी।" किन्तु जब उन्होने यह स्वीकार किया, वास्तविक समाधान मे विकट बाधाए थी। "गुलामी को समाप्त कर देना चाहिए, किन्तु यह तभी होना चाहिए जब कि स्वतन्त्र नीग्रो लोगो को अन्यत्र भेज दिया जाय और अभी तक इनकी पूर्ति के लिए कोई व्यावहारिक सुझाव नही आया था। हम लोगो ने एक भेडिया पाल रखा है, जिसे न तो हम पकड सकते हैं और न उसे सुरक्षित जाने दे सकते है।" यद्यपि जेफर्सन स्वय उस उत्तर-पश्चिम अध्यादेश की धारा के रचयिता थे, जिसने पहले पहल गुलामी के प्रसार पर प्रादेशिक प्रतिबन्ध लगा दिये थे, फिर भी अब वे उसकी भौगोलिक सीमा को और अधिक परिसीमित करने के पक्ष मे नही थे। गुलामो को व्यापक क्षेत्र मे फैलाकर उनकी आबादी को बिखेर देने से उनकी दशा सुधर सकती है और अन्त मे शीघ्र ही उनको मुक्त भी किया जा सकता है, क्योकि मुक्ति का भार व्यापक क्षेत्र पर पडेगा।

फ्लोरिडा की ओर भी व्यापारिक लाभ की दृष्टि से देखा था, किन्तु अन्य देशो के बारे मे उन्होने जल्दबाजी न करना ही उचित समझा, ताकि ऐसा न हो जाये कि स्पेन से भी बढ कर उसका दूसरा कोई प्रबल उत्तराधिकारी आ जाय। मेडिसन शासन-काल मे मुख्यत स्पेन मे ही रुचि रखते थे (जहाँ अमरीका वेलिंगटन की सेनाओ के लिए रसद पहुँचा रहा था)। उनका विरोध फ्रास-समर्थक तत्वो ने किया, जिनकी नीति दक्षिणी अमरीका के विद्रोहियो के साथ जबर्दस्त सहयोग करने की थी और यह ऐसी नीति थी, जिसका अनेक रिपब्लिकन सैद्धान्तिक आधार पर समर्थन कर रहे थे। १८१२ के युद्ध के परिणामस्वरूप उत्तरी अमरीकी महाद्वीप तक ही अमरीका के हित सकुचित हो गये और ग्रेट ब्रिटेन ने दक्षिणी अमरीकी व्यापार मे अपनी स्थिति सुदृढ बना ली।

स्पेनिश बोरबन्स की पुनस्सस्थापना के बाद के वर्षो मे दक्षिणी अमरीका मे काफी राजनीतिक गडबडी रही और एक बार तो ऐसा लगा कि उन पर स्पेन पुन कब्जा कर लेगा। किन्तु १८१७ के बाद विद्रोहियो को निरन्तर विजय पर विजय मिलती गयी और अन्त मे जनवरी, १८२६ मे स्पेनिश सत्ता के अन्तिम अधिकारियो को भी सदा के लिए निष्कासित कर दिया गया। चार वर्ष पूर्व ब्राजील पुर्तगाल से अलग हो गया था और स्वतत्र साम्राज्य बन गया था। इन्ही वर्षो मे सयुक्त राज्य अमरीका का दक्षिणी अमरीका के साथ महत्वपूर्ण व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हो रहा था और इससे सम्बन्धित लोग अपने सह-नागरिको को यह विश्वास दिलाने का प्रयास कर रहे थे कि दक्षिणी अमरीका निश्चय ही सयुक्त राज्य अमरीका के शान्तिपूर्ण लोकतात्रिक मार्ग का अनुसरण करेगा।

जेफर्सन को इस प्रकार की आशाओ के परिणाम के बारे मे थोडा-बहुत सन्देह था। उनका विश्वास था कि इन देशो के निवासी स्पेनिश सत्ता को उलट फेकने मे सफल हो सकते हैं, किन्तु उन्हे अभी शासन-सचालन की अपनी क्षमता सिद्ध करनी थी, "स्वय उनके देश मे खतरनाक शत्रु सक्रिय है, जो अज्ञान और अन्धविश्वास, धार्मिक एव सैनिक निरकुशता के अन्तर्गत उनके मन और मस्तिष्क को बाध रखेगा।"

दिसम्बर, १८२० तक वे स्पेनिश उपनिवेशो की स्वतत्रता की औपचारिक मान्यता के विरुद्ध थे, क्योकि उनका विश्वास था कि इसके फलस्वरूप स्पेन के साथ युद्ध हो सकता है और यदि इगलैण्ड ने सोचा कि युद्ध से उसके

आन्तरिक संकटो का निवारण हो सकता है तो शायद उसके साथ भी युद्ध हो जायगा ।

इसी बीच नये विश्व मे रूसी रुचि के बढते हुए लक्षणो से स्थिति मे एक नयी जटिलता उत्पन्न हो गयी थी । सम्राट अलेक्जेण्डर का, जिसकी उदार भावनाओ मे जेफर्सन ने इतना अधिक विश्वास व्यक्त किया था, पवित्र गठबन्धन के पीछे प्रमुख हाथ था । प्रशान्त-तट, जहाँ जेकब एस्टर के ऊन व्यापार के जहाजो और लुई तथा क्लार्क के अभियान ने सार्वभौमिकता के लिए अमरीकी दावो के लिए आधार स्थापित कर दिया था, अब जबर्दस्त रूसी गतिविधि का केन्द्र बन गया था । दूसरी ओर, यह स्पष्ट हो गया कि दक्षिणी अमरीका मे विद्रोह को दबाने के लिए फ्रासीसी-रूसी सहयोग की किसी भी योजना का ब्रिटेन विरोध करेगा । मनरो ने १८१८ और १८१९ मे इस समस्या पर ब्रिटिश सरकार से सहयोग प्राप्त करने का प्रयास किया । किन्तु कैसिलरी इन योजनाओ का इतना जल्द स्वागत नही करना चाहते थे । उनकी नीति अभी भी यही थी कि स्पेन का उसके साम्राज्य मे कम से कम नाममात्र का प्रभुत्व कायम रहे । इसीलिए मनरो की प्रबल व्यक्तिगत सहानुभूति के बावजूद एक निश्चित दिशा मे अमरीकी आन्दोलन की गति धीमी पड गयी । मनरो के विदेश-सचिव जान क्विन्सी एडम्स मनरो की नीति तथा हेनरी क्ले की वैकल्पिक नीति के भी विरोधी थे । हेनरी क्ले की नीति यह थी कि युद्ध के अतिरिक्त उपनिवेशो की हर तरह से मदद की जाय और 'पवित्र गठबन्धन' के प्रतिकार मे दोनो अमरीका का एक प्रकार का सघ स्थापित किया जाय । एडम्स का विश्वास था कि अन्त मे अत्याचार और औपनिवेशिक शासन का सर्वत्र अन्त हो जायगा और अमरीका को तब तक के लिए प्रतीक्षा करनी चाहिए ।

१८२२ की वसन्त ऋतु तक अमरीकी सरकार विद्रोही सरकारो को मान्यता प्रदान करने के लिए करीब-करीब तैयार हो गयी, ताकि वे किसी यूरोपीय शक्ति के प्रभाव मे न आ जॉय । इस समाचार से भी काफी भय फैल गया था कि ब्रिटेन क्यूबा पर अधिकार जमाने का विचार कर रहा है । इस सम्भावना को देखते हुए अमरीकियो ने अपनी मूल नीति पर दृढ रहते हुए यही अच्छा समझा कि स्पेनिश शासन कायम रहे ।

आशाओ और आशकाओ के इस मिश्रित वातावरण मे अमरीका को १८२३ मे अपनी नीति को स्पष्ट करने की आवश्यकता पडी, जबकि स्पेन मे फ्रासीसी हस्तक्षेप की सफलता से मामले का अन्त होता दिखाई पड़ा और जब कि लन्दन

स्थित अमरीकी दूत रश के सम्मुख केनिंग ने कूटनीतिक सुझाव रखा कि ग्रेट ब्रिटेन और अमरीका के बीच अब सहयोग हो सकता है।

मनरो ने केनिंग के साथ रश की जो बातचीत हुई, उसकी रिपोर्ट जेफर्सन को भेजी और साथ ही साथ दोनो सरकारो द्वारा सयुक्त घोषणा के लिए केनिंग का वह प्रस्ताव भी भेजा, जिसमे स्पेनिश अमरीका की पुनर्विजय के प्रयास के विरुद्ध अथवा किसी भी उपनिवेश पर स्पेनिश प्रभुत्व को किसी अन्य शक्ति को हस्तान्तरित करने के विरुद्ध अन्य यूरोपीय शक्तियो को चेतावनी दी गयी थी। राष्ट्रपति ने केनिंग के प्रस्ताव को स्वीकार करने के साथ उसमे यह भी जोड़ने का सुझाव दिया कि स्पेनिश अमरीका पर आक्रमण अमरीका पर आक्रमण समझा जायगा, क्योकि यह माना जाता था कि यदि दक्षिणी महाद्वीप मे प्रजातत्रवाद के विरुद्ध अभियान सफल हुआ तो वह उत्तर की ओर भी बढ सकता है।

२४ अक्तूबर, १८२३ को जेफर्सन ने उत्तर दिया, जिसमे प्रस्तावित घोषणा के फलस्वरुप युद्ध होने पर भी, जो उनके विचार से ब्रिटेन की समुद्री शक्ति देखते हुए असम्भव था, उक्त प्रस्ताव का समर्थन किया गया था। उन्होने क्यूबा को अमरीका मे सम्मिलित किये जाने की अपेक्षा उसे स्वतत्र देखने की इच्छा व्यक्त की, क्योकि ग्रेट ब्रिटेन से युद्ध के बिना उसे अमरीका मे मिलाया नही जा सकता था। चूँकि जेफर्सन ने इस प्रकार उठाये गये प्रश्न को स्वतत्रता-प्राप्ति के बाद का सब से महत्वपूर्ण प्रश्न समझा, इसलिए उन्होने और अधिक सामान्य भाषा मे इसे अमरीकी नीति का आधार बनाने की जिम्मेदारी ली —

"हमारा प्रथम और मूलभूत सिद्धान्त यह होना चाहिए कि हम यूरोप के विवादो मे कभी न उलझे। हमारा दूसरा सिद्धान्त यह होना चाहिए कि हम यूरोप को अटलाटिक पार के मामलो मे कभी हस्तक्षेप न करने दे। उत्तरी और दक्षिणी दोनो अमरीका का अपना पृथक हित यूरोप के देशो से भिन्न है। इसलिए उसकी अपनी अलग और यूरोप से भिन्न प्रणाली होनी चाहिए।"

जेफर्सन का पत्र उनके प्रारम्भिक पृथकतावादी सिद्धान्त को मनरो-सिद्धान्त की रचना के साथ सयोजित करता है। वास्तव मे काग्रेस मे (२ दिसम्बर, १८२३) राष्ट्रपति के अभिभाषण के पूर्व मनरो ने ग्रेट ब्रिटेन के साथ सहयोग के बजाय, जैसा कि अक्तूबर मे सोचा गया था, अमरीका द्वारा एक पृथक नीति के पक्ष मे निर्णय कर लिया था। एक ओर ग्रेट ब्रिटेन और दूसरी ओर फ्रास और रूस के बीच मतभेदो के बावजूद, यह महसूस किया गया कि ग्रेट ब्रिटन सामान्य यूरोपीय प्रणाली मे इतना अधिक उलझा हुआ है कि उसके साथ

सहयोग सरल नही है और उसके शासकवर्ग के राजनीतिक आदर्श अमरीकी लोकतंत्र के आदर्शो से बहुत दूर हैं। "न तो बाह्य शक्तियो द्वारा अमरीकी महाद्वीप का और अधिक उपनिवेशीकरण और न विद्यमान उपनिवेशो के प्रभुत्व का हस्तान्तरण' ये ही मनरो-सिद्धान्त के दोहरे रूप थे और यही जेफर्सन की प्रमुख विचारधारा थी।

यह समझना भूल होगी कि जेफर्सन अपने जीवन के अन्तिम वर्षो मे, पूर्ण रूप से अथवा मुख्य रूप से भी राष्ट्रीय राजनीति की महान समस्याओ मे व्यस्त थे। इस अवधि मे उनकी रुचि राजनीति के बजाय शिक्षा मे थी, वे वर्जीनिया-विश्वविद्यालय के निर्माण मे व्यस्त थे। शिक्षा-प्रसार के लिए उनके उत्साह मे कभी कमी नही आयी। जनवरी, १८०० मे, जबकि सघवादियो और प्रजातन्त्रवादियो के बीच सघर्ष चरमसीमा पर था, उन्होने अग्रेज वैज्ञानिक जोजेफ प्रीस्टली को, जो क्रान्तिकारी विचारधारा से प्रभावित होकर १७९४ मे अमरीका मे बसने के लिए चले आये थे, वर्जीनिया मे एक विश्वविद्यालय की योजना के बारे मे लिखा था। यह इतनी विशाल, उदार और आधुनिक योजना थी कि साधारण जनता ने उसका समर्थन किया और अन्य राज्यो के युवक भी ज्ञानार्जन और वहाँ के लोगो के साथ भाईचारे के सम्बन्ध के लिए आकृष्ट हुए। उसी वर्ष जेफर्सन ने डुपोण्ट डे नेमूर्स को अपनी योजना के बारे मे लिखा, जिन्होने क्रान्तिकारी युग के फ्रासीसी विधान पर आधारित सार्वजनिक शिक्षा के बारे मे एक विशेष निबन्ध लिख भेजा।

अपनी राष्ट्रपति-काल की समाप्ति के बाद जब वे वर्जीनिया लौटे तो अपने साथ सामान्य शिक्षा के लिए व्यापक योजना भी ले आये। यह ठीक वैसी ही योजना थी, जैसी कि उन्होने ३० वर्ष पूर्व राज्य-विधानसभा के एक सदस्य की हैसियत से प्रस्तुत की थी, किन्तु प्रीस्टली, डू पोण्ट, डे नेमूर्स तथा डेस्डर डे ट्रेसी के साथ पत्रव्यवहार के फलस्वरूप उन्होने इसे काफी विस्तृत और व्यापक बना दिया था।

प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा का प्रस्तावित स्वरूप एक विधेयक मे समाविष्ट था, जो १८१७ मे वर्जीनिया-धारासभा मे प्रस्तुत किया गया था, किन्तु उसे समर्थन प्राप्त नही हुआ। जेफर्सनवादी लोकतन्त्र मे प्रगतिशीलता की अपेक्षा मितव्ययिता को अधिक स्थान प्राप्त था। फिर भी, दूसरे वर्ष वर्जीनिया-विधानमण्डल द्वारा प्राथमिक शिक्षा के लिए तथा एक विश्वविद्यालय के लिए एक योजना तैयार करने के लिए २४ कमिश्नर नियुक्त किये गये,

जिनमें जेफर्सन, मेडिसन और मनरो भी थे।

जेफर्सन ने ही चार्लो टेसविले मे विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए स्वीकृति प्राप्त की, उसके भवन का नक्शा तैयार किया, विधानमण्डल को और अधिक व्यय के लिए प्रभावित किया, पाठ्यक्रम की रचना की और कर्मचारियो की भर्ती की। पुरानी दुनिया के अपने मित्रो से उन्होने उपयुक्त प्राध्यापको की भर्ती मे सहायता करने के लिए कहा, क्योकि अमरीका मे अभी प्राध्यापको का पूर्ण अभाव था। सर्वप्रथम ७ प्राध्यापक नियुक्त किये गये, जिनमे से केवल एक ही अमरीकी था। यद्यपि जेफर्सन ने कार्रवाई मे ढिलाई की शिकायत की और अपने ही जीवन-काल मे इस कार्य की पूर्ति मे सन्देह व्यक्त किया, फिर भी वर्जीनिया-विश्वविद्यालय अन्तत मार्च, १८२५ मे खुल गया, जेफर्सन ने इगलैण्ड के पाच प्राध्यापको के बारे मे उत्साहपूर्वक लिखा और घोषणा की कि शिक्षा के लिए 'युवको का इतना अच्छा जत्था' एकत्र होते मैंने कभी देखा नही। जेफर्सन का विश्वास था कि वर्जीनिया मे किसी विशिष्ट धार्मिक सस्था से मुक्त उच्चतर शिक्षा की सस्था के इस आदर्श की पूर्ति उनके जीवन की महान सफलता थी। मार्च, १८२६ मे, अपने प्रथम पुस्तकालय को, धनसग्रह के लिए, काग्रेस को बेचने के बाद, जब जेफर्सन ने अपने द्वितीय पुस्तकालय का अधिकाश भाग विश्वविद्यालय को वसीयतनामा के तौर पर लिख दिया, तो उन्होने निर्देश दिया कि मेरी मृत्यु के पश्चात् मेरे मकबरे पर मेरा वर्णन इन शब्दो मे अकित किया जाय, "अमरीकी स्वतन्त्रता के घोषणापत्र तथा धार्मिक स्वतन्त्रता सम्बन्धी वर्जीनिया विधान के रचयिता तथा वर्जीनिया विश्वविद्यालय के जनक।" मूल्यो के जिस मापदड ने इन विशिष्टताओ को राष्ट्रपति और विदेश-मत्री की विशेषताओ से ऊपर रखा, वह उस महापुरुष के लिए विचित्र है, जिसने १५ वर्ष पूर्व लिखा था, "मै यह कभी समझ नही पाया कि किस प्रकार एक बौद्धिक प्राणी दूसरो पर प्रभुत्व जमा कर अपने सुख की कल्पना करता है।"

अध्याय–११

जेफर्सनवादी परम्परा

बाद के अमरीकी इतिहास में जेफर्सन की गणना महापुरुषो मे हुई है। उनके नाम का उपयोग तात्कालिक सीमित स्वार्थो की पूर्ति के लिए किया गया है और उनके कार्यो या उपदेशो को, जिन्हे उस समय उपयोगी नही पाया गया, सकट के समय सहर्ष स्वीकार किया गया। जैसा कि देखा गया है, जेफर्सन के दीर्घ जीवन तथा उनके अस्थिर और उत्सुक मन ने एक पूर्णतया स्थिर और निश्चित सिद्धान्त के सृजन मे बाधा उपस्थित की। इसलिए यह कोई आश्चर्य की बात नही है कि उन्हे एक ही विवाद के दोनो पक्ष मे उद्धृत किया जाता है। इस प्रकार १९३५ मे, अपनी पुस्तक 'अमरीकी लोकतत्र मे जेफर्सनवादी परम्परा' मे प्रोफेसर सी. एम. विल्ट्से ने घोषणा की कि फ्रैंकलिन रूज्वेल्ट के 'नये व्यवहार' का दर्शन वस्तुत जेफर्सन का ही दर्शन है, जब कि जेम्स ट्रस्लो एड्म्स ने एक वर्ष बाद अपनी पुस्तक 'दी लिविग जेफर्सन' मे 'नये व्यवहार' की अधिनायकवाद की दिशा मे एक प्रवृत्ति के रूप मे निन्दा की और उसके अन्तर्गत क्रियाशील हेमिल्टनवादी प्रवृत्तियो पर खेद प्रकट किया तथा अमरीकियो से अपील की कि वे थामस जेफर्सन के नाम पर इसके विरुद्ध सगठित हो जॉय।

दूसरी ओर, जेफर्सन के कथनो और लेखो से एक पूर्ण सम्बद्ध शास्त्रीय दर्शन का निर्माण करने के प्रयास से तथा उनकी व्यावहारिक और प्रयोगसिद्ध प्रवृत्ति की उपेक्षा से वैसा ही विकृतरूप उत्पन्न हो सकता है। उन्होने १८१६ मे जान एडम्स को लिखा, "मै ऐसी चीज को पढने का शौकीन नही हूॅ, जो केवल आदर्श हो और जो किसी उपयोगी विज्ञान के लिए तत्काल अव्यवहार्य हो।" अपने जीवन के अन्तिम वर्ष मे एक पत्र मे उन्होने घोषणा की, "मै सभी आध्यात्मिक अध्ययनो का विरोधी हूँ। दिवा स्वप्न भी रात्रि के स्वप्नो की भाँति विलीन हो जाते है, उनका कोई भी चिन्ह शेष नही रह जाता। जीवन का सम्बन्ध वस्तुत पदार्थ से है। वही हमे ठोस परिणाम प्रदान करता है। उससे सम्बन्ध स्थापित कर हमे कुल्हाडी, हल, वाष्प-नौका और जीवन की प्रत्येक उपयोगी वस्तु का ज्ञान होता है, किन्तु आध्यात्मिक मनन का मुझे कभी भी उपयोगी परिणाम नही दिखाई पडा।" सामान्य दर्शन के इन विचारो का प्रयोग सामाजिक और राजनीतिक दर्शन पर भी होता है। जेफर्सन का कार्य और कारण मे विश्वास था, न कि मत के प्रतिपादन मे।

भावी अमरीकी राजनीति पर जेफर्सन के वास्तविक प्रभाव को अन्य दिशाओ मे देखा जा सकता है। सर्वप्रथम उनके राजनीतिक दृष्टिकोण मे सामान्य मान्यताए निहित हैं, जिन्हे उनकी भाषा की भावप्रवणता के द्वारा स्थायी महत्व प्रदान किया गया है। दूसरा, एक पार्टी के नेता की हैसियत से, जेफर्सन ने कतिपय राजनीतिक कार्य-प्रणालियो का एक आदर्श प्रस्तुत किया, जो अमरीकी जनतत्र के ढाँचे का एक अग बन गया है।

जेफर्सन के युग के बाद अमरीकी राजनीतिक पार्टियो के इतिहास ने इस प्रकार की स्थिति को प्राय अनिवार्य सा बना दिया। मनरो के राष्ट्रपति-काल तक जेफर्सनवादी रिपब्लिकन-डिमोक्रेटिक पार्टी अपनी अभिजातवर्ग-विरोधी विचारधारा की स्वीकृति को किसी निर्वाचित पद के लिए लालायित व्यक्ति के लिए कसौटी बनाने मे इतनी अधिक सफल हो गयी थी कि वह देश मे सर्वथा एकमात्र राजनीतिक पार्टी बन गयी थी। जान क्विन्सी एडम्स जैसा लोकतत्र-विरोधी व्यक्ति भी उसी की परिधि के अन्तर्गत कार्य कर सकता था। जेफर्सन की ही विचारधारा मे जिस प्रक्रिया का अनुसरण किया जा सकता था, वही साधारण अमरीकी समाज मे क्रियाशील थी। व्यक्तिगत और अल्पसख्यक अधिकारो पर प्रारम्भ मे दिया गया जोर कमजोर पड गया और जन-सत्ता के प्रति आस्था वढ गयी। जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियो का कर्त्तव्य जनता की इच्छाओ को पूरा करना था। इस प्रणाली का आधार प्रतिनिधित्व नही, प्रव्यायुक्ति थी। राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र मे समानरूप से इसका इतना जवर्दस्त प्रभाव पडा कि तोकविल भी इससे विशेष प्रभावित हुए। उन्होने जेफर्सन की मृत्यु के बाद ६ वर्ष के अन्दर ही अमरीका की यात्रा की थी।

किन्तु राजनीतिक दृष्टिकोण की सामान्य एकरूपता के नीचे ही नीचे देश के तीव्र आर्थिक विकास के कारण नये मतभेद उत्पन्न हो गये। हेमिल्टन के सघवाद के अनेक रूप उस पार्टी के एक पक्ष मे पुन प्रकट हो उठे और पार्टी मे फूट पड गयी। हेनरी क्ले के नेतृत्व मे नेशनल-रिपब्लिकन पार्टी की स्थापना हुई, जो वाद मे 'विग' पार्टी के नाम मे प्रसिद्ध हुई। क्ले के नेतृत्व मे सगठित अधिकतर वडे वडे व्यापारिक स्वार्थो तथा उन्ही के द्वारा प्रतिपादित सघीय तौर पर नियत्रित सरक्षणात्मक 'अमरीकी प्रणाली' के विरुद्ध एण्ड्रू जेक्सन के नेतृत्व मे एक नया सयुक्त दल प्रकट हुआ, जिसकी शक्ति जेफर्सन के मूल अनुयायियो की शक्ति की भाँति दक्षिण के किसानो तथा पूर्वी तटवर्ती नगरो की शोषित जनता मे निहित थी। किन्तु जैक्सन का लोकतात्रिक दृष्टिकोण उस पार्टी के

दृष्टिकोण से मिलता जुलता नही था, जिसे जेफर्सन ने विजयी बनाया था। व्यक्ति, सुख और उच्च अधिकारो पर बल अवश्य दिया गया था, किन्तु यह एक भिन्न प्रकार का व्यक्तिवाद था। नये तत्व के स्वरूप का सर्वोत्तम प्रतिपादन 'साहसिक कार्य' शब्द से होता है—जेक्सन के अनुयायी, सर्वोपरि, आर्थिक क्षेत्र मे अवसर की समानता के लिए प्रयत्नशील थे। जेफर्सन ने जिस स्थिरता को प्राप्त करने और उसे सुदृढ बनाने का प्रयास किया था, वह नये युग के असन्तोष और लोभ के कारण विलीन हो गयी थी। जेफर्सन ने सर्वदा यही प्रयास किया था कि चुने-चुनाये लोगो को ही काम पर लिया जाय, किन्तु जब पद का अधिकार पार्टी के सिद्धान्त का अग बन गया और जब यह माना जाने लगा कि प्रत्येक नागरिक मे सरकारी काम करने की क्षमता हो सकती है, तब उस प्रयास का परित्याग कर दिया गया।

फिर भी, जेफर्सन के इस आग्रह का अभी भी अमरीकी राजनीतिक जीवन मे प्रमुख स्थान था कि सरकार पर नियत्रण जनता का होना चाहिए, अपने हितो का ज्ञान होना चाहिए और जनता पर विश्वास किया जाना चाहिए। इसकी प्रभावशीलता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि स्वय अनुदारवादी विग भी अधिकतर जेफर्सनवादी दृष्टिकोण को अपना करके ही सत्ता प्राप्त करने की आशा कर सकते थे और इसी प्रकार उन्होने उत्तरी मिसीसिपी घाटी के राज्यो मे, जो अभी भी कृषिप्रधान थे, अपने लिए एक दूसरा गट बना लिया। वास्तव मे दोनो ही दल जेफर्सनवादी थे, यहा तक कि विगो के औद्योगिक सरक्षणवादी पक्ष ने भी अपने देश के हितो और भाग्य के सम्बन्ध मे जेफर्सन के वाद के कुछ विचारो के आधार पर ही अपने सिद्धातो के औचित्य को सिद्ध करने का प्रयास किया।

होने पर राज्यो के अधिकारो का सहारा लेने की प्रविधि अपनायी गयी और उसका पुनर्विकास किया गया। जेफर्सन ने इसी अस्त्र का प्राय उपयोग किया था। सघ के साथ सार्वभौमिक राज्यो की समानता की दुहाई देकर मानव की समानता को मानने से इनकार करने का प्रयास किया गया।

दूसरी ओर, पुरानी डेमोक्रेटिक पार्टी के अनेक तत्वो ने उस रिपब्लिकन पार्टी मे स्थान ग्रहण किया, जिसका जन्म विगो के अवशेष से हुआ था। उन्हे वहा नेता के रूप मे लिकन मिल गये, किन्तु एक ही पार्टी मे जेफर्सन के राजनीतिक सिद्धान्त और हेमिल्टन के आर्थिक एव सावित्रानिक सिद्धान्त, दोनो एक साथ मिल कर उस सकट का अधिक समय तक सामना नही कर सकते थे, जो इनके सयोग से ही उत्पन्न हुआ था। गृह-युद्ध के परिणाम और पुननिर्माण ने रिपब्लिकनो और डेमोक्रेटो को फिर राष्ट्रीय पार्टियो के रूप मे अलग-अलग कर दिया, किन्तु यदि डेमोक्रेट औपचारिक वश परम्परा के नाते जेफर्सन के उत्तराधिकारी के रूप मे अधिक सबल थे तो रिपब्लिकन पार्टी के किसान-तत्व नये युग की माँगो के अनुकूल मूलत जेफर्सनवाद-विरोधी प्रवृत्ति के विकास को रोकने की गारण्टी के रूप मे थे।

हाल के अमरीकी इतिहास मे पार्टी के इतिहास और जेफर्सनवादी सिद्धान्तो के परिवर्तन का पता लगाने के लिए हमे बहुत दूर तक जाना होगा, किन्तु बाहरी प्रेक्षक औद्योगिक युग की नवीन समस्याओ के लिए प्रतिपादित समाधानो मे नवीनता के अभाव से सर्वदा स्तम्भित हो उठेगें। एक कृषक समाज मे गहराई से जमा हुआ व्यक्तिवादी दृष्टिकोण वाद के सुधार-आन्दोलनो मे भी विशेषरूप से कायम रहा। जबकि यूरोप ने आर्थिक जीवन में 'बडप्पन' के तथ्य को स्वीकार किया और सार्वजनिक नियत्रण को विस्तृत करने के लिए सरकार की क्षमता पर अपनी आशाओ को केन्द्रित किया, अमरीकियो ने स्वतत्र प्रतियोगितात्मक व्यक्तिवाद के लिए कृत्रिम स्थिति पैदा करने का प्रयास किया, और वित्तीय एव औद्योगिक पूँजी के विशाल सग्रह की उसी भापा मे निन्दा की, जिसमें कि औपनिवेशिक वर्जीनिया मे स्थिर सम्पत्ति की की थी।

ब्रायन, विल्सन और रुजवेल्ट के नेतृत्व मे समय-समय पर लोकतात्रिक भावनाएँ जेफर्सन और जेक्सन जैसे क्रान्तकारियो द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर उभडती रही। जेफर्सन ने वर्जीनिया और न्यूयार्क के वीच—दक्षिण के किसानो और पूर्व की नगरीय जनता के वीच मित्रता का जो सम्वन्व स्थापित किया और जेक्सन ने भी जिसे पुनरुज्जीवित किया, वही फ्रेंकलिन रुजवेल्ट की डिमो-

फिर भी, अमरीकियो को, लोकतान्त्रिक समाज और सार्वजनिक शिक्षा के बीच पूर्ण रूप से सम्बन्ध ढूंढने के लिए विवश होना पडा। विचित्रता तो यह है कि 'अविवेकपूर्ण देशान्तरवास की हानि' सम्बन्धी जेफर्सन की मान्यता को उनके द्वारा ठुकरा दिये जाने से यह स्थिति उत्पन्न हुई। यूरोप के विभिन्न भागो से देशान्तर-गमन की जो लहर चल पडी और जो उनके देहावसान के बाद पूरी शताब्दि भर जारी रही, उसका अर्थ यही था कि अमरीकी एक राष्ट्र के रूप मे अपने जीवन के लिए अपने समाज को आत्मसात् करने की क्षमता पर और नवागन्तुको तथा उनके उत्तराधिकारियो द्वारा अमरीकी दृष्टिकोण के मूल तत्वो के अपनाये जाने की गति पर अवलम्बित थे। इससे अवसर की समानता पर निरन्तर बल के साथ शिक्षा की सम्पूर्ण समस्या को जो महत्व प्राप्त हुआ, उससे शिक्षा-प्रणाली का अपूर्व विस्तार हुआ और यह अमरीका की अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना है। अब तो भविष्य मे अमरीकी समाज से की जानेवाली अधिकाधिक जटिल मॉगे सामान्यत स्पष्ट होती जा रही हैं और इस प्रकार की प्रणाली मे चुने-चुनाये तत्वो को स्थान देने की जेफर्सनवादी विचारधारा पर पुन विचार किया जा रहा हे।

जेफर्सन ने विरोधी के रूप मे जिन सावैधानिक सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया और अपने शासन-काल में जिन्हे कार्यान्वित किया, उनके बीच विरोधाभास अमरीकी शासन की हाल की अवधि मे स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ है। अभी भी सरकारी उद्देश्यो को सरकारी कार्यप्रणाली के समान ही महत्व प्रदान किया जाता है। फ्रेंकलिन रूजवेल्ट के अतर्गत सत्ताधारी जेफर्सनवादियो ने सघीय अधिकारो को उसी तरह विस्तृत किया, जिस तरह कि जेफर्सन ने लुइसियाना और व्यापारिक प्रतिबन्ध के सम्बन्ध मे किया था और अब फिर पीछे हट कर वही लोकतान्त्रिक आन्दोलन राज्यो के सावैधानिक अधिकारो को पुन प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है।

अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धो के क्षेत्र मे जेफर्सनवादी परम्परा मे निर्णायक द्वैतवाद स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। दूसरी ओर, प्रबल और निरन्तर शातिवादी तथा सैनिकवाद-विरोधी परम्परा है (जेफर्सन ने सशस्त्र नागरिको के सर्वोच्च गुणो की लोकतान्त्रिक क्राति का पूर्ण समर्थन किया)। "युद्धो का जन्म प्राचीन विश्व के अन्यायी और अलोकतान्त्रिक साम्राज्यवादो से हुआ हैं और अमरीका स्वत उनसे दूर रह सकता है।" जेफर्सन के व्यापारिक प्रतिबन्ध से लेकर अमरीका द्वारा 'लीग आफ नेशन्स'की अस्वीकृति तथा १६३० के तटस्थता कानून तक

प्रत्यक्षत' एक ही विचारधारा कार्य कर रही थी। दूसरी ओर, अमरीकी प्रणाली तथा उसके विस्तार के लिए आवश्यक प्रादेशिक भूमि के हेतु उसके उस अधिकार की पवित्रता मे विश्वास है, जिसके कारण जेफर्सन ने लुइसियाना को खरीदा और कनाडा पर अधिकार करने सम्बन्धी आन्दोलन का प्रबल समर्थन किया, फ्लोरिडा पर अधिकार किया गया और प्रशान्त सागर की ओर विस्तार किया गया तथा एक अच्छे जेफर्सनवादी डेमोक्रेट राष्ट्रपति पोल्क के अन्तर्गत मेक्सिको का युद्ध हुआ। इससे स्वय जेफर्सन को उन नदियो के सम्बन्ध मे अमरीकी अधिकारो के बारे मे आश्चर्यजनक सिद्धात प्रस्तुत करने की प्रेरणा मिली, जहाँ उनकी प्रादेशिक सीमाएँ थी। १७९५ के मिस्सीसिपी-सकट के पहले ही उन्होने लिखा, "भौतिक विज्ञान मे ही हम अन्य गोलार्द्ध से भिन्न नही पाये जायेंगे। मुझे प्रबल आशका है कि अपनी भौगोलिक विशिष्टताओ के कारण हमे अन्य राष्ट्रो के साथ अपने सम्बन्धो के बारे मे उससे भिन्न प्राकृतिक कानून सहिता बनाने की आवश्यकता पडेगी, जो यूरोप की परिस्थितियो के कारण वहा बनायी गयी है।"

स्वदेश-रक्षा के अमरीकी अधिकार और उनकी प्रणाली अन्य राष्ट्रो के अधिकारो तथा स्वशासन के उन सामान्य सिद्धातो से भी अधिक महत्वपूर्ण है, जिनके वे स्वय समर्थक हैं। इस प्रकार इस आशका से कि लुइसियाना के निवासी अपनी राजनीतिक स्वतन्त्रता का उपयोग कही सयुक्त राज्य अमरीका से अपने को पृथक करने मे न करे, जेफर्सन ने १८०३ मे उन्हे इस आधार पर एकतन्त्र शासन प्रदान करने का समर्थन किया कि वे "बच्चो की भाँति स्वशासन के अभी अयोग्य हैं।"

विचित्र बात यह है कि क्यूबा प्रत्यक्ष रूप से अमरीका मे मिलने से बचना चाहता था, किन्तु कैरिबियन द्वीप समूह और समस्त मध्य और दक्षिणी अमरीका को अमरीकी सुरक्षा-क्षेत्र के अन्तर्गत लाने के लिए राष्ट्रीय नीति बन गयी, जिसकी मनरो-सिद्धात मे व्याख्या की गयी और अमरीकी शक्ति के बढते ही यह एक राजनीतिक तथ्य बन गया। जैसा कि अभी हाल ही मे देखा गया है, इस सिद्धात ने कम से कम एक ओर आइसलैंड तक और दूसरी ओर जापानियो द्वारा समाविष्ट द्वीपसमूहो तक विस्तार की क्षमता प्रदर्शित की है।

यह समझना भूल होगी कि जेफर्सनवादी लोकतत्र साम्राज्यवाद का एक उच्च आकर्षक रूप मात्र है। जेफर्सन ने सर्वदा यही कहा कि स्वतत्रता के प्रति अमरीकियो की वास्तविक सेवा यही होगी कि वे अन्य राष्ट्रो को अपने मे मिलाने की अपेक्षा उनके लिए आदर्श बने और एक राष्ट्र पर दूसरे राष्ट्र का शासन अमरीकी प्रथा के सर्वथा प्रतिकूल बना रहे। इस क्षेत्र मे जेफर्सनवादी विचारधारा का सबसे स्थायी प्रभाव इस रूप मे पडा है कि अमरीकी किसी शक्ति से सघर्ष नही करना चाहते, उनका विश्वास है कि सही सिद्धान्तो का वक्तव्य ही स्वय एक नीति है और उन सिद्धातो को स्वीकार करने के लिए तैयार न होना समय और अवसर पर निर्भर करता है।

अमरीकी लोकतत्र के मूल राजनीतिक सिद्धात का श्रेय वास्तव मे जेफर्सन को ही नही प्रदान किया जा सकता। यह तो उस इतिहास के निर्माणकारी युग का अनिवार्य परिणाम है, जो ऐसे समय मे आता है जबकि एक अज्ञात मानव शक्ति अचानक आविर्भूत हो राजनीतिक एव सामाजिक जीवन के लिए उन निश्चित सिद्धान्तो को ढूढने का अपूर्व प्रयास करती है, जो न्यूटनवादी जगत के भौतिक विधानो से कम स्पष्ट न हो। स्वय जेफर्सन ने सर्वदा व्यावहारिकता पर विशेष बल दिया और कोरे सिद्धान्तवादियो की मूर्खताओ से वे सर्वथा दूर थे। फ्रासीसी क्राति से लेकर पुन स्थापित बोरबोनो (Bourbons—फ्रासीसी राजवश) के अन्तर्गत चरम प्रतिक्रिया तक फ्रासीसी राजनीति की आलोचना करते समय वे अपने इस मूल विचार पर दृढ रहे कि जो लोग स्वय-स्वशासन के पूर्णतया अभ्यस्त नही होते हैं, उनके लिए पूर्ण लोकतत्र निश्चय ही खतरनाक होगा। सर्वप्रथम मौलिक स्वाधीनताएँ समय पर अपने आप विकसित हो जायेंगी। इसके अतिरिक्त, उनकी लोकतात्रिक विचारधारा का यह मूल अग था कि सरकारो को उनके विचारो से आगे नही जाना चाहिए, जिनका वे प्रतिनिधित्व करती है। अधिभूतवादियो के साथ जेफर्सन के मतभेद

की शरण लेता हूँ, जहाँ यदि हमे टारक्विन, कैटिलाइन और कालियुला जैसे लोग मिलते भी है तो उनकी गाथाएँ हमे लिवी, सैलुस्ट और टेसिटस के नामो के साथ मिलती है और हमे यह सोच कर सन्तोष होता है कि सभी भावी पीढियो द्वारा की गयी आलोचनाओ ने इतिहासकार द्वारा की गयी निन्दाओ की पुष्टि की है और उनके स्मृति-पट पर स्थायी अपयश को ही अकित किया है—यह सन्तोप हमे जार्जो और नेपोलियनो से नही मिल सकता, बल्कि पूर्वज्ञान से मिल सकता है।"

यह १८वी शताब्दी की आवाज है—थामस जैफर्सन की आवाज!

पर्ल पुस्तकमाला

योगी और अधिकारी—आर्थर कोएस्लर द्वारा लिखित गवेषणापूर्ण निवध ।
मूल्य ५० नये पैसे

थामस पेन के राजनैतिक निवध— मूल्य : ५० नये पैसे

नववधू का ग्राम-प्रवेश—स्टिफन क्रेन की नौ सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ ।
मूल्य ७५ नये पैसे

भारत-मेरा घर—सिथिया वोल्स के भारत-सवधी सस्मरण । मूल्य ७५ नये पैसे

स्वातत्र्य-सेतु—जेम्स ए मिचनर द्वारा गेरी के स्वातत्र्य-सग्राम का अति सजीव चित्रण । मूल्य ७५ नये पैसे

शस्त्र-विदाई—अर्नेस्ट हेमिंग्वे का विश्व-विख्यात उपन्यास । मूल्य : १ रुपया

डा आइन्स्टीन और ब्रह्माण्ड—लिंकन वारनेट । आइन्स्टीन के सिद्धान्तो को इसमे सरल रूप से समझाया गया है । मूल्य · ७५ नये पैसे

अमरीकी शासन-प्रणाली—अर्नेस्ट एस ग्रिफिथ मूल्य ५० नये पैसे

अध्यक्ष कौन हो ?—केमेरोन हावले का सुप्रसिद्ध उपन्यास । मूल्य · १ रुपया

अनमोल मोती—जान स्टेनवेक द्वारा लिखित एक मर्मस्पर्शी कथा ।
मूल्य ७५ नये पैसे

अमेरिका में प्रजातन्त्र—अलेक्सिस डि टोकवील की अमर राजनीतिक कृति ।
मूल्य . ७५ नये पैसे

फिलिपाइन मे कृषि-सुधार—एल्विन एच स्काफ । मूल्य ५० नये पैसे

मनुष्य का भाग्य—लकॉम्ते द नॉय । जगत के मूलभूत प्रश्नो का· वैज्ञानिक विश्लेषण । मूल्य ७५ नये पैसे

जाति के नूतन क्षितिज—चेस्टर वोल्स की प्रख्यात पुस्तक । मूल्य १ रुपया

जीवट के शिखर—अर्नेस्ट के गैन । एक अत्यत लोकप्रिय उपन्यास ।
मूल्य १ रुपया

उनचार की घाटी—बोर्डेन डील । टेनेसी घाटी योजना की पृष्ठभूमि को लेकर लिखा गया एक अति रोचक उपन्यास । मूल्य १ रुपया

रूस की पुनर्यात्रा—लुई फिशर द्वारा लिखित स्तालिन के बाद के रूस का वर्णन ।
मूल्य ७५ नये पैसे

रोम मे उत्तर मे—हेलेन मेक् इन्नेस । एक रहस्यपूर्ण रोचक उपन्यास ।
मूल्य १ रुपया

मुक्त द्वार—हेलेन केलर। भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित हेलेन केलर की विचारपूर्ण कृतियो का सकलन। मूल्य ५० नये पैसे

हमारा परमाणुकेन्द्रिक भविष्य—एडवर्ड टैलर और अल्बर्ट लैटर। दो विशेषज्ञो द्वारा लिखित परमाणु शक्ति के तथ्य, खतरो तथा सभावनाओ की चर्चा। मूल्य १ रुपया

नवयुग का प्रभात—थामस ए डूली, एम डी। भयकर रोगो से ग्रसित जनता की सेवा के लिए दूर देश मे गये एक नवजवान डाक्टर की दिलचस्प कहानी। मूल्य ७५ नये पैसे

रुजवेल्ट का युग (१९३२-४५)—डेक्स्टर पर्किन्स। मूल्य ५० नये पैसे

अब्राहम लिकन—लार्ड चार्नवुड द्वारा लिखित एक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ। मूल्य १ रुपया

१९६० के नये प्रकाशन

शिशु-परिचर्या और बच्चो की देखभाल—डा बेंजामिन स्पोक, एम डी। अपने ढग की अनोखी, सचित्र पुस्तक। अगरेजी मे इसकी ८० लाख से भी अधिक प्रतियाँ बिक चुकी है। नव-दम्पत्ति व भावी माताओ के लिए अत्यत उपयोगी। मूल्य १ रुपया

परिवार मे परमाणु—लारा फरमी। परमाणु युग के निर्माता एनरिको फरमी की जीवनी उनकी पत्नी द्वारा लिखित। मूल्य ७५ नये पैसे

सयुक्त राज्य अमरीका का सक्षिप्त इतिहास—एलन नेविन्स और हेनरी स्टील कोमेगर। विश्व-विख्यात इतिहासकारो द्वारा लिखित अमरीकी राष्ट्र के विकास का रोचक वर्णन। मूल्य १ रुपया

न पाँच न तीन—हेलेन मेकिन्स द्वारा लिखित एक सनसनीखेज आधुनिक उपन्यास। मूल्य ७५ नये पैसे

गोल सीढी—मेरी राबर्ट्स राइनहार्ट द्वारा लिखित एक विचित्र रहस्यपूर्ण कथा। मूल्य ५० नये पैसे

ओ हेनरी की कहानियाँ—हेरी हान्सन द्वारा मूल रूप मे सपादित प्रख्यात रचनाएँ। मूल्य ७५ नये पैसे

चन्द्र-विजय—डब्ल्यू वान ब्रान व अन्य विशेषज्ञो द्वारा लिखित चद्रलोक तक जाने की सपूर्ण तैयारियो का वैज्ञानिक वर्णन, रगीन चित्रो व नक्शो सहित। मूल्य ७५ नये पैसे

मुक्त द्वार—हेलेन केलर। भवानी प्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित हेलेन केलर की विचारपूर्ण कृतियो का सकलन। मूल्य ५० नये पैसे

हमारा परमाणुकेन्द्रिक भविष्य—एडवर्ड टैलर और अल्बर्ट लैटर। दो विशेषज्ञो द्वारा लिखित परमाणु शक्ति के तथ्य, खतरो तथा सभावनाओ की चर्चा। मूल्य १ रुपया

नवयुग का प्रभात—थामस ए डूली, एम डी। भयकर रोगो से ग्रसित जनता की सेवा के लिए दूर देश मे गये एक नवजवान डाक्टर की दिलचस्प कहानी। मूल्य ७५ नये पैसे

रूजवेल्ट का युग (१९३२-४५)—डेक्स्टर पर्किन्स। मूल्य ५० नये पैसे

अब्राहम लिंकन—लार्ड चार्नवुड द्वारा लिखित एक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ। मूल्य १ रुपया

१९६० के नये प्रकाशन

शिशु-परिचर्या और बच्चो की देखभाल—डा बेजामिन स्पोक, एम डी। अपने ढग की अनोखी, सचित्र पुस्तक। अगरेजी मे इसकी ८० लाख से भी अधिक प्रतियाँ बिक चुकी है। नव-दम्पत्ति व भावी माताओ के लिए अत्यत उपयोगी। मूल्य १ रुपया

परिवार मे परमाणु—लारा फरमी। परमाणु युग के निर्माता एनरिको फरमी की जीवनी उनकी पत्नी द्वारा लिखित। मूल्य ७५ नये पैसे

सयुक्त राज्य अमरीका का सक्षिप्त इतिहास—एलन नेव्हिन्स और हेनरी स्टील कोमेगर। विश्व-विख्यात इतिहासकारो द्वारा लिखित अमरीकी राष्ट्र के विकास का रोचक वर्णन। मूल्य १ रुपया

न पाँच न तीन—हेलेन मेकिन्स द्वारा लिखित एक सनसनीखेज आधुनिक उपन्यास। मूल्य ७५ नये पैसे

गोल सीढी—मेरी राबर्ट्स राइनहार्ट द्वारा लिखित एक विचित्र रहस्यपूर्ण कथा। मूल्य ५० नये पैसे

ओ हेनरी की कहानियाँ—हैरी हान्सन द्वारा मूल रूप मे सपादित प्रख्यात रचनाएँ। मूल्य ७५ नये पैसे

चन्द्र-विजय—डब्ल्यू वान ब्रान व अन्य विशेपज्ञो द्वारा लिखित चद्रलोक तक जाने की सपूर्ण तैयारियो का वैज्ञानिक वर्णन, रगीन चित्रो व नक्शो सहित। मूल्य ७५ नये पैसे